

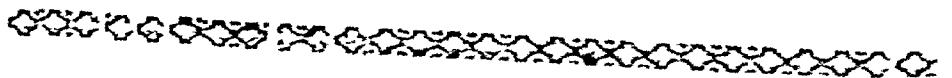
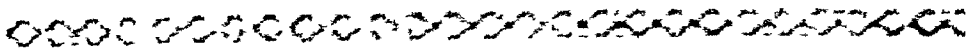
17262

आ
बारा

विद्यापीठिकावाचिकसंबलितं
संज्ञासूत्रं

संज्ञासूत्रं चतुर्थाङ्गसूत्रं प्रारभ्यते ॥

बनारस जैनप्रभाकर व्याख्यानं मे



॥ विज्ञानम ॥

—~~~~~

सकल सनान धर्मी श्रावक महाशयो से विनय पूर्वक निर्बन्धन करता हूँ कि दशविध कृत्रिम दुर्लभ मनुष्य शरीर पके ज्ञान वृद्धि के हेतु बल करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिससे जुआरी सहाय और और बल भिचारी इत्यादि दुष्कृति और परभव में अथ पग कृष्टी काक ह्यमि और कीड इत्यादि बगके पीडा देनवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और राजन इत्यादि सुशील और परभव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीर आरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख लोकसुख देने वाले कर्तव्य कर्म ज्ञान जाते हैं। ज्ञानी से ज्ञान मिलता है, यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनन्त है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है, क्योंकि ज्ञान बिना ज्ञानी और ज्ञानी बिना ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होने में श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य ज्ञान्य दर्शन इनका सहस्र अध्ययन

अध्यापन ऋषिगण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है, ऐसी आस्थायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय में मनुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कंठाग्र रहते थे। अन्य मतमें उनके वशीय लोग झ्रव भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य औ उपध्याय कहलाते हैं। प्रसिद्ध है कि उस समय में अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समझने लगे थे। और भी जो प्रथम गणधर तीर्थंकर महाराज के मुख से (उप्यबो इवा त्रिगमे इवा धुत्रे इवा) त्रिपदी सुन के १२ अक्षरों की रचना कर देते थे और रमण रखते थे इस्में केवल श्रुतज्ञान बलकं निवाय और कोई कारण नहीं समझा जा सकता। अधुनातन मनुष्यों को जो अहर्निद्रा अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनका तात्पर्य नहीं याद रहता है ज्ञानावरणीय के संवाय कौन कारण कहेंगे। ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नहीं हुआ किन्तु क्रमसे जाँ जाँ देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तो तों ज्ञानकी भी न्यूनता होती चली, हांत होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणसे १८० वर्ष (इंशवी सन् ४५४) विक्रम संवत् ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणने साँचा कि पुस्तक विनिलिखे यह स्मरणशक्ति

जाती रहैगी इसलिये वह भी प्रभु में साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होनेके कारण ताडपत्रके ऊपर लाह लेखनी से खुदबानेके पुस्तकालय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नहीं हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने में कस मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रथ चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहिये द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिसमेंनी यदि कोई तरहका विघ्न आय पड़े कार्य पूर्ण नहीं, क्योंकि एकतो श्रयांसि बहुविधानि, दूसरे मनुष्यायु अरुप, जब तक कार्य समाप्त नहीं चिता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म समाप्ति में है, ग्रथ सग्रह किये विना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा नष्ट हो जायगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रथ लुप्त होगये, और पीछे से मसलमानाने नष्ट किये, जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्तमान काल में पैतालीरा आगम एक

जगह नहीं मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगा (वाहिर काल महिना) रुप हेतु
 वर्तमान कालाचित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से रोरा सनी
 रथ जो के ५०० तकाने ४५ आगग का भजार काने की डक्का है चीप्रही सिद्ध हांगी, लिशने लिशाने के
 परित्रम से बचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें खल हांगी यदि कोई गुणी अधिकारी हांगा तो,
 यह कला हमको कृतार्ण करने का ही प्रचलित हुई है, काँडे उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए राहज और सुदर पृथ्वी
 पर इसके रोवाय नहीं हे ग्रंथ लपवाना सुखकिया । यह कला मुरूप देवीग अन्य धर्मियों से मास हुँ है,
 अशाह्य है, ग्रंथ लपवाने में आजातना होती है, इत्यानि शासना कर्षना अनुभिन हे, कर्षानि नस्तु का
 उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहै कोई ही सर्वोपकारिता, अल्पमालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुरातत्त्वमतादिक, जहा
 कार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने ग तथा पुरातक छपवाने में बडा उपकार
 पुण्यबधन हे दाप कुकुर भी नहीं हे, पक्षपात बाँड के ग्रहण करें । यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की ओर उल्लि
 धगा जातक तथा पार्ष्णी जो यावनी विद्या हे आप क्यों पढते हैं ? जो चीज उन लोगोंने पैदा की हे
 बहुतराी आपके परिभाग में डाती है, कलूरी गोलोचनानि नहां पैदा होता है और क्रिय कागर्षे आप रासन

करते है ? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दीपकों लौडदेना उचित है । इसलिए पुस्तक गुरु भता, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यंत सहज युगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नहीं करना या हिने, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्योंने बडे परिश्रम से परीपकारार्थ जो ग्रन्थ बनाये हैं किसी क देखने में न आवे और गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीडे खाजांय और ग्रन्थ का नाममात्रही लोग रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे उसके रोनाय कोई अविनय और आश्चर्यना 'कर्षवगका हेतु, नहीं है, वही ग्रन्थ तपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्द्वारा बहु लोक ज्ञान पावे डरसे आंके कांडे विनय और श्लेषकार्य नहीं है, यही सर्व कारण सोच में इस दुभ कार्यमें प्रयुक्त हुआ है आप लोगभी यथा शक्ति प्रयुक्त होय कि जिसे पुन जैनमत युवावस्था की प्राप्त होय इति चाम् ॥

शाय धनपतिबिह ब्रह्मादुर

नरसूदाबाद अजीमगज

भूमिका ।

समवाय नामक चउधे अङ्ग का अनुयोग स्थाननाम लतीय अङ्गानुयोग के अनन्तरही रूपसे ग्राह्य है ।

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धबहुदिप्रकाशितधर्मरतेषु श्री ५ रायधन
पतिस्त्रिजगद्गुरेषु खविनयमायदनम् ।

आग, सेन सुनाहे आप की एसी इच्छा है कि वैतालिसी जैनगम
की पुस्तके मूल टीका और आपाटीका संहित पाच रत्ना कापी रुपये और
साथु यात्रको क पठन पाठन क लिय पाच सौ स्थानसे पुस्तकालय
स्थापित हो सा यह प्रति आनन्दकी वानहै, परतु जिन महाशयों
का दय्य दक पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगों क निमित्त ज्ञी यदि
आप की आज्ञा हो तो नवन क वास्त पाचसौ भापी जन बृक सुबाइटी
की आर स नी कपवा ली जाये यह पुस्तक से अर्जासगज स प्रकाश
करूंगा अर्जे सुनय, सवत् । १९३३ । म० । अ० । ११

पजीमगज

अहर मुगसीरावार

६० जैन बृक सुबाइटी

कायम्भ्यादक

हनुमिसेठ

नकल चिठी २

श्रीविधिविद्याविचारतत्परेषु जंत बृक सुबाइटी शशैबुम्भादक
साम्प्रदायेषु प्रतिनिदिदनम् ।

आ नि पच नापका दय्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुबाइटी
की और स पैतालिनो जनागम की पाचसौ पुस्तके खरया लन की
आज्ञा क दिषय तें गया सा ये स्वीकार करत हू कि पाच जैन बृक
सुबाइटी की तरफ न आग की प्रत्यक पाच रत्ना पुस्तके बचने क
वास्त कपवा लये, परतु पाचसौ स अधिक्त खपनकी आज्ञा से नही
दता, यदि और काइ कपवाना चाहें तो उचित है कि परल सुज
से आज्ञा ललव कोकि इन ग्रन्थों पर रजतरी हुंके, अर्जे सुजम् ।
सवत् । १९३३ । म० । अ० । १३

धजीमगज

अहर मुगसीरावार

६१ रायधनपांतिधिह हरानुर

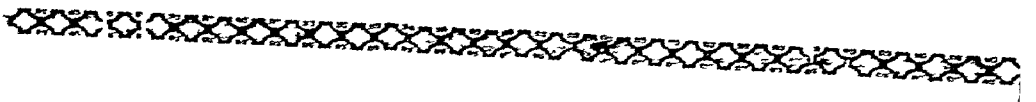
॥ विज्ञापनम् ॥



श्रीमज्जिनवरपदकमलमधुकरायमाण याचककल्पद्विजायमाण वङ्गदेशभूषण कृतदन्वृतीषणा जीमगञ्जवास्त्वय्य गुणगणसंख्य ज्ञातसार मानसारी
सवाल दीनहीनपाल धृतव्यापारधुर रागवहादुर च्छितिपति धनपति सिंहस्य धर्मापदेशेन शुभादेशेन ज्ञानवृद्धये मोहनिवृत्तये ध्यातजिनपतीनां
सकलयतीनां श्रेयीश्राहकाणां आवकाणां चोपकाराय सकलविद्याकरे कल्याणकपुरे वाराणसीनगरे रुचिराक्षरतन्त्रे जैनप्रभाकरयन्त्रे कृतसस्य-
रव्याख्यं समवायाख्यं जीवाजीवपरिच्छेदबीधकं हृदयमलशीधकं प्रवचनपुरषस्याङ्गमिव 'तुरीयमङ्ग' तपोधिनिना मुनिना सदाऽऽतन्द्रेण नानकच-
न्द्रेण सुन्दर मुद्रितमसूत्रं ॥

*

समवायाख्यसूत्रं 'तुरीयमङ्ग' मयातिसंशोध्य ॥
मुद्रितमितज्जनितं पुण्यं भविकांस्तदापातु ॥ १ ॥



॥ श्रीजिनायनमः ॥ श्रीवर्द्धमानमानस्य समवायांगर्भतिका । विधीयतेत्यशास्त्राणां प्राथःसमुपजीवनात् ॥ १ ॥ दुःसंप्रदायादसद्रूहनात्वा भणित्यतियद्वितयं
 मशेह । तद्बोधनैर्मानुष्ययद्भिः शीघ्रंमतार्थक्षितिरलुभिव ॥ २ ॥ इहस्था नाख्यतृतीयांगानुयोगानतरं क्रमप्राप्तएवसमवायाभिधानचतुर्थाङ्गानुयोगोभवतीति-
 सोऽधुनासमारस्यते तत्रचक्रलादिद्वारचिंतास्थानांगानुयोगवत्क्रमादवसेया नवरं समुदायाथायस्य समिति सम्यक् अव्याधिक्येन अयनमयः परिच्छेदो-
 जोवाजोवार्दिश्रिषपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौसमवायः समवयंतिवा समवतरंति संमिलंति नानाविद्याआत्मादयोभावाश्रमिधियतयायस्मिन्नसौ समवायइति
 सचप्रवचनपुरुषस्थांगमिवांगमितिसमवायांगं तत्रैकिलश्रीप्रवचनप्रहावीर कर्ममानन्नाभिनाःसंबंधी प्रचमोगणधरश्चार्वावसुधर्मस्वामीस्वशियजंबूनामानमभिस्र
 वायागार्थमभिविस्तुः भगवतिधर्माचार्येवहुमानमाविर्भावयन् स्वकीयवचनेनच समस्तवसुविस्तारस्वभावभासिकैवलालोककलितमहावीरवचननिश्चिततयवि
 गानेनप्रमाणमिदमिति । शिष्यस्यमतिचारोपयन्निदमादिवसंबंधसूत्रमाह ॥ सुयमेइत्यादि श्रुतमाकर्णितंभेभयहेआयुषन्चिरंजीवितजंबूनामन् तेषति यो
 सोनिर्मूलोक्लितरागद्वेषादिश्रिषमभावरिपुसेव्यतया भुवनभावावभासनसहसेवेदनपुरस्तराविसंवादिवचनतयाच त्रिभुवनभवनप्रांगणप्रसर्प्यत्सुधाधवल्लयश्रीरा
 शिस्त्रिनमहावीरेणभगवतासमग्रखर्यादियुक्तेन एवभितिवच्यमाणेन प्रकारेणाख्यात अभिहितमात्मादिवस्तुतत्वमितिगम्यते, अथवा आउसंतंति भगवतेत्यस्य

॥४५॥ श्रीविष्णुराजायनमः ॥ सुयमेऽष्टाउसंतं अगवयाएवमस्त्रायं इहखलुसमणेणं अगवयामहावीरेणं

॥ देवदेशजिननत्वा पार्श्वचन्द्रादिसङ्गुरुन् । समवायांगसूत्रस्य वार्तिकविदधाम्यहम् ॥ १ ॥ पांचमीगणधरसुभर्मास्वामीजंबूशियप्रतकेहृद्वै सांभल्योभिमगवंते
 समीप ॥ हेसयमसुइआजखानाधणोजन् तेषे भगवंतज्ञानवररूपवते एहोजे आगलकहीस्येतेकह्यो एहवीजिनप्रवचनेनेभिषेनिषे तेभगवंतकेहवाक्के अमण

लोक इतिव्युपत्यालोकालोकरूपसमस्तवस्तुल्लोमस्तभावस्थाखंडमार्तण्डमण्डलमिव निखिलभावस्तभावासासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल
 प्रवर्त्तनेनप्रद्योतं प्रकाशं करोतीत्येवंशीलोकप्रद्योतकरस्तेन ननुलीकनाथत्वादित्रिशेषयोगी हरिहरहिरख्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेनसभवतीतिकी
 स्वधिशेषद्वत्याशङ्गायात्त्रिंशेषाभिधानायाह नभयंदयतेप्राणापहरणरसिकोपसर्गकारिण्यपिप्राणिनि द्शतीत्यभयदयः अभयावा सर्वप्राणिभयपरिहार
 वतीद्यापृष्ण्यायसासावभयदयो हरिहरादिस्तुनेवमितितेनाभयदयेन नकेवलससावपकारकारिणामथनर्थपरिहारमात्रं करोत्यपित्वर्थप्राप्तिं ह्करोती
 तिदर्शयन्नाह चक्षुर्विचक्षुः श्रुतज्ञानयुभायुभार्थविभागकारित्वा तद्दयते इतिचक्षुर्दयस्तेन यथाहिलोकिचक्षुर्दत्तावांश्चितस्थानमार्गदर्शयन्नहीपकारी
 भवत्येवमिहापीतिदर्शयन्नाह मार्गसस्यादर्शनज्ञानचारिवात्कंपरमपदपथंदयत इतिमार्गदयस्तेन मार्गदर्शयन्नहीपकारीभवत्येवमिहापीति यथाहिलोकिच
 क्षुरध्वाटनमार्गदर्शनचकृत्वा चौरादिविस्तुमान् निरुपद्रवंस्थावंप्रापयन् परसोपकारी भवत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह शरणत्राणमज्ञानीपद्रवोपहतानांतद्र
 चास्थानतत्रपरमार्थतोनिर्वाण तद्दयतइतिशरणदयस्तेन यथाह लोकिकक्षुर्मागंशरणदानाद्रूस्थानजीवितव्यं ददातीत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह जीवनं

माणं लोगनाहाणं लोगहिणं लोगपईवेणं लोगपज्जोञ्जगरेण अजयदणुणं चस्कुदणुणं भग्गदणुणं सरणदणुणं

तिहांदेवासमानमित्यात्वअकारटाले लोकगणधरलोकनेहंप्रद्योतनाप्रकाशनाकरणहारतेणिसहितसर्वजीवनेअभयदाननादातारतेणिसमकितरूपलो-
 चनानादातारतेणिसूलात्राणैनिमोक्षमार्गनादातारतेणिसर्वजीवनेशरणनादातारतेणिसयमरूपजीवितव्यनादातारतेणिसीधिवीजसम्यक्तनादातारतेणिसधर्म

जीवीभावाप्रधारणमरणधर्मत्वमित्यर्थसंशयतइति जीवदशो जीविषुवा दयायस्यसजीवदशोऽतस्तेन इदंचान्तरोक्तं विशेषणकदंबकं भगवतो धर्ममयस्तत्वात्
संपन्नमिति धर्मात्मकतामस्य विशेषणपंक्तेनाह धर्मश्रुतचारिचात्मकं दुर्गतिप्रपतज्जुधारणस्वभावदयतेद्दातोति धर्मदयस्तेन तद्दानंचास्यतद्दियनादेवेत्यतो
आह धर्मश्रुतलक्षणं देशयति कथयतोति धर्मदेशकस्तेन धर्मदेशकत्वचास्य धर्मस्वामित्वस्येति ननु नयथानटस्येति दर्शयन्नाह धर्मस्वचायिक्रमज्ञानदर्शनचारिज्ञा
त्मकस्य नायकः स्वामी यथावत्यालनाहर्मनायकस्तेन तथा धर्मस्य सारधिर्धर्मसारधिः यथा रथस्य सारथी रथरथिक मखांचरत्तति एवं भगवांश्चारिचिधर्मगानां स
यमा नप्रवचनास्थानां रचणोपदेशाहर्मसारधिर्भवतीति तेन धर्मसारथिना तथा चयः समुद्रा चतुर्थो हिमवान् एते चत्वारः अत्रतः पृथिव्याः पर्यन्तास्त्रेषु स्वामि
तथा भवतीति चातुरंतः सचासीचक्रवर्ती च चातुरंतचक्रवर्ती वरश्चासीचातुरंतचक्रवर्ती चेति वरचातुरंतचक्रवर्ती राजातिशयः धर्मविषये वरचातुरंतचक्रव
र्ती धर्मवरचातुरंतचक्रवर्ती यथाहि पृथिव्यां शिषराजातिशयो वरचातुरंतचक्रवर्ती भवति तथा भगवान् धर्मविषये शेषप्रणेत्दृशं मध्ये सातिशयत्वात्तथो

जीत्रदणुणं वोहिदणुणं धम्मदणुणं धम्मदणुणं धम्मनायगेणं धम्मसा
रहिणा धम्मवरचाउरंतचक्रवहिणा अण्प्यन्निहयवरनाणदंसणधरेणं

नादातारतेणैकस्यो धर्मोपदेसनाकहणहारतेण धर्मनानायकअधिकारीतेण धर्मनासारथीभूलाप्राणोनिमागेअण्णतेणे चारिगतिनोअंतकारकधर्मतेणे करीच
क्रवर्त्ति सरीखां निभुवननीराज्यपालतेणे द्वीपनीपेरसरणानात्राणआधारदेणहार चातुर्गतिकससारतेहनिवारिनेविषिआधारसूत अप्रतिहतअस्खलित

धातयामुक्तत्रेपि सर्वत्रैतसर्वदर्शिनान्तुमुक्तावस्थायां दर्शनंतरा इतिमतपुरुषेष्वभाविजडत्वनि तथाशिवसर्वाधारहितत्वात् अचलेस्वाभाविकप्रायोगिक
 चलनहेत्वभावात् अश्जसमिद्यमानरोगशरीरमनसोरभावात् अनंतमनंतार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अक्षयमनाशं साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् अक्षतंवापरि
 पूर्णत्वात् पूर्णैमाचंद्रमण्डलवत् अत्र्यावाधमपीडाकारित्वात् अपुनरावतक समिद्यमानपुनर्भावात्तरं तद्विजभूतकर्माभावात् सिद्धिगतिरितिनामधेयंयस्यतत्
 सिद्धिगतिनामधेयंतिष्ठतिरिमन्कर्मकृत् विकाररहितत्वेन सदा वस्थितो भवति तत्स्थानंशौण्णकर्मणोजीवस्वरूपलीकाग्रंवाजीवस्वरूपविशेषणानितुलोका
 ग्रस्याधेयमीणाभाधरिथारोपादवसेयानितदेवंभूतस्थानं संप्राप्तुकामेनयातुमनसा नतुतत्प्राप्तेन तत्प्राप्तस्याकरणत्वेन प्रज्ञापनाभावात् प्राप्तुकामेनेति
 यदुच्यते तदुपचारादन्यथाहिनिरभिलाषाएवभगवंतःकेवलिनो भवति मीचेभवेचसर्वत्र निस्पृहोसुनिसत्तम इतिवचनात् तदेवमगणितगुणगणसंपदुपेतेन
 भगवताइमिति इदं वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्ष्यमासन्नद्वादशांगानियस्मिंस्तद्वादशांगं गणिनश्चाचार्यस्यपिटकभिवपिटकं गणपिटकं यथाहिवालंजुकवाणिक

सिवमयलस्यमणंतमस्त्रयमष्ट्यावाहमपुनराविधिसिद्धिगइनामधेयं
 टाणंसंपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणपिठगे पन्नते ॥ तंजहा ॥

नोअंतनथी जेहनीबयनथी जिहांकिसीआवाधानथी जिहांथकीजपराठीआविवोनथी सिद्धिगतिएहवी जेहनोनामधेयच्छे एहवठामे मीचेजाइवानीबांछा
 करेच्छेतेमहावीरएहवाद्वादशांगीसूत्रगणीकहिथेआचार्यतेहेनेपेटीसरिखाछे जिमव्यापारीयांनेपेटीरत्नादिकधननीआधारहीइ तिम आचार्यनेएहद्वादशां

॥
 स्यापिपिटकं सर्वसाधारभूतमिति एवमाचार्यस्य पादशांगं श्रानादिगुणरत्नसर्वसाधारकल्पं भवति इति भावः प्रश्नस्य तीर्थकरनामकर्मोदयं वर्तितया प्रायः
 कृतार्थोनापिपरीपकारायप्रकाशितं तत्रैतद्यथेत्थुदाहरणोपदर्शने प्राचारइत्यादि द्वादशपदानि वचामाप्नानि निर्वचनानीतिकठानि तद्व्यंति तत्र द्वादश्यांशेण

श्यायरे १ सूयगळे २ ठाणे ३ समवाए ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाउ ६ उवासगदसाउ ७
 अंतगळदसाउ ८ अणुत्तरोववाइदसाउ ९ परहावागरणं १० विवागसुए ११ दिठिवाए १२

गीसूत्रज्ञानादिकगुणरत्ननी प्राधारुळे करोळे तेकळे प्राचारंगसूत्रप्रथम १ जेहमाहिमाधुनी प्राचारपामीये । बीजुंसूत्रतांग जेहमांशि ससमयपरसमयनी
 यत्तव्यतापामीये २ बीजुंशानांग तेमाहिएकथकीमाडीदसलगेसंख्यानादसप्रथयनळे २ । चीथीसमवायांगजिराएकथकीमाडीकोडाकीडिनीसंख्या ४ पांच
 मीविवाहप्रज्ञसीजेहमाहिएकीससहस्रगत्रपांमीथीएतलेभगयतीसून ५ छेडीज्ञातापर्मकथांगजिज्ञा १८ न्यायप्रनेपजंठकीछिधर्मकथाएऊंशे १ सातमीउपासक
 दशांगउपायकशावकतेहनादयप्रथयनळे ७ आठमी प्रंतकतदथांगजेणयतीएससारनी प्रंतकीधीतिहनापाठवर्गजिमांदि छे नयमीप्रणुत्तरोपपातिकासूत्रजेह
 यती प्रनुत्तरविमांनिजपनतिहनातीनवर्गजिरांपामीये ८ दृगमीप्रश्रव्याकरणजेहमाहिअंगुष्टादिकप्रज्ञेनाप्रधिकारंतीरिवळांपांचप्रा अवपांचसंवरहारइम
 १० प्रथयनळे १० प्रयारमीविपाकसूत्रजिहसुखदुःखनीविपाकळेएतले १० सुखविपाकीयां १० दुखविपा तीयाप्रथयनळे ११ यारमीदृष्टिवादते १४ पूर्वएक

मिश्रं करि यत्तच्चतुर्थमंगं समत्रायइत्याख्यातं । तस्यायमर्थः आकादिरभिधीयते तदतिगम्यते तद्यथेति वाचनं तद्वितीयसंबंधारमन्त्रव्याख्येति । इह च विदु-
 धाम्पदार्थमभिदधता सक्रमेण वासा वनिधातव्यइति व्याख्येयस्त्वाचार्थः एवात्वादि संख्याक्रमसंबद्धानर्थान् वक्तुकाम आदाविकलवियिष्टानात्मनश्च सर्वपदार्थाभा-
 जकलेन प्रधानत्वादात्मा शीन्सर्वस्यवस्तुनः सप्रतिपक्षत्वेन सप्रतिपक्षनिव एणे आया इत्यादिभिरष्टादशभिः सूत्रैराह स्थानांगेकार्थानि प्रायस्वथापि किंचिदुच्यते
 एकत्र आकार्यविदितमिति गम्यते इदञ्च सर्वसूत्रेष्वनुगमनीयं तत्र प्रदेशार्थतया अस्रव्यातप्रदेशोपि जीवइत्यर्थतया एकः अथवा तत्रिचण पूर्वस्वभावबयाऽपरस्वरूपो
 त्यादयो गेनानंतभेदोपि कालत्रयानुगामि चैतन्यमात्रपेक्षया एक एवात्मा अथवा प्रतिसंतानं चैतन्यभेदेनाऽनंतत्वेत्यात्मना संग्रहनयाश्रितसामान्यरूपपेक्ष
 येकत्वमा मनइति तथान आत्मा अनात्मा षट्पदिपदार्थः सोपि प्रदेशार्थतया ऽसख्येयानंतप्रदेशोपि तथा विधैकपरिणामरूपद्रव्यार्थपेक्षया एक एव संतानपेक्ष

तत्पर्यं जेसेचउत्प्रेक्ष्यंगे समवापुत्तिञ्चाहिते तस्सणञ्चयमठे पं० तंजहा एणेञ्चाया एणेञ्चणाया

अंगएद्वाद्दगंगोतेवाद्दशंगोमहिजेहेतेह चोथोअंगएतलेप्रवचनरूपपुरुषनेअंगसरीखीअंग समवायांगसूत्र आहियेकहोसमवायांगकहतांसम्यक्प्रकारेअधि-
 कपयेजीवाजीवादिपदार्थजिहनेविषे तेसमधायागकहिये अर्थाधिकारसूत्रकहेतेमाष्टप्रधानसकलपदार्थनीभोत्तारआत्माहेतेमाष्टप्रधानपण्यायकीआत्माप्रथम
 अतस्वीचितनावतआत्माकहोयेयद्यपिसंसारमांहिजोवअनंताहेपरंधट्द्रव्यनोअपेचाएजोवद्रव्यएकजकहोयेएमआगलसगलपदेजाणिवी १ तेसमवायांगोएअ
 र्थकहियेके १ तेअमक्रमेकहेके एकआत्माजीवसामान्यप्रकारेएकपणेएमसर्वत्र एकअनात्माजीवरहितषट्पदिपदार्थ एकदंडंभूडोव्यापारवीयोगत्रणिनेतिदंड

सृष्टे मध्यमावसेयति एवमेकसागरोपमं त्रयोदशप्रसृष्टेउत्कृष्टास्थितिरिति असुरिद्वज्जियाणतिचमरवलिवर्जितानां भोमेष्णांति भवनवासिनांभूमौप्रुधि
 व्यांरत्नप्रभाभिधानायां भवलात्तेषामिति तेषांचैकंपत्नीपमं मध्यमास्थितिर्यतउत्कृष्टा देयोर्गंधेपलोपमे साआहच दाहिणदिवदृपलियं दोदेसुणुत्तरिष्णाण
 ति असंखेज्ज्यादि असंख्येयानिवर्षाख्यायुयंषति तथा तेचतेसन्निसमदस्त्राखेचते पंचेद्वियतिर्द्यगोनिकाद्येत्वंख्येवर्षायुः सन्नपंचेद्वियतिर्द्यगोनिका
 स्त्रेप्रांकेषांचिवेहै मयतैरख्यतवर्षयो रत्यत्रा स्त्रेषा मेकंपत्नीपमस्थिति रेवंमनुष्यसूत्रमपि नवरं गभेगर्भाशयव्युक्तातिरत्यतिर्द्योषांतिगर्भव्युक्तांतिका नसमूच्छंन

असुरकमारिंदवज्जियाणं त्रोमिज्जाणदेवाणंअथ्येगइअ्याणं एगंपलिउवमंठिई प० । अ्यसंखिज्जवासाउय
 सन्नपंचिदियतिरिखजोणियाणं अ्यथ्येगइअ्याणं एगंपलिउवमंठिई प० । अ्यसंखिज्जवासाउयगअ्यवक्षति
 यमणयाणं अ्यथ्येगइयाणंएगंपलिउवमंठिई प० । वाणमंतराणंदेवाणं उक्षीसेणंएगंपलिउवमंठिई प० ।

काहो असुरकुमारिंदचमरेन्द्रवलन्द्रवर्जिने भवनपतीदेवतानो एकैकानोकिंतलाएवानी एकपत्नीपमस्थितिआजखोकाहो । असंख्यातावर्षनाआजखानासन्नो
 गर्भजपंचेद्वियतिर्द्यवनीएतलेहैमवंतैरख्यतयुगलचेचनागर्भजतिर्द्यवनीयुगलियागर्भजमनुष्यतिर्द्यवनी आजषीउत्कृष्टीजहुवे अने जीवाभिगमनेविषे नपंस
 कागर्भजमनुष्यनंआजषंपर्वकीडिनंपूणिकहोकेतेमाटे अथ्येगइयाणंपाठग्रहोकेतसाएकनएकपत्नीपमस्थितिआजखोकाहो । अरंख्यातावर्षनाआजखानोगर्भज

जाद्रव्यं, वाणसतराणदेवाणति देवानामिव नतुदेवीना तासासर्धपथोपमस्यप्रतिपादितत्वात्जोइसियाणंदेवाणति चन्द्रविमानदेवानां न सूर्यादिदेवानां नापिचन्द्रादिदेवीना पलियंचसयसहस्र चन्द्राणविआउजाणो इतिवचनात् सीहस्मेकप्येदेवाणति इहदेवशब्देन देवादेव्योगृहीताः सीधमैहिपथ्योपमाद्धीनतरास्थितिर्जषव्यतीपिनास्ति इयचप्रथमप्रसूटेऽवसेया सीहस्मेकप्ये अल्येगइयाण देवाणंणंगसागरोवममिलन्न देवानामिवग्रहण नतुदेवीनांऽत्कृष्टतोपितत्रतासां पचाशत्यस्योपमस्थितिकत्वात् तथा एकसागरोपममितिसम्यक्सिख्यपेचया उल्लर्षतस्त्वनसागरोपमइयसङ्गावात् ऽसूटापेचयारत्नेषां सप्तभ्रस्तेमध्यसावसे

जोइसियाणं देवाणंउक्त्तोसेणं एगंपलिउवमं वाससयसहस्ससज्जहियं ठिई प० । सीहस्मेकप्येदेवाणं जहन्तेणं एगंपलिउवमठिई प० । सीहस्मेकप्ये देवाणंउत्थ्येगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प० । ईसाणेकप्येदेवाणं जह

संज्ञीपचेन्द्रियमाणसंनूएतलीहमवंतरैरख्यतचेन्नसंबंधीयगलियांसाणसनीकितलाएकनोपथ्योपमस्थितिआज्जुक्कह्योभगवतेवांणथंतरदेवनी उत्कष्टोएकपथ्योपम जषव्य १० सहसवरसनीकह्योजीतितीचंद्रमाविमानवासीदेवतानीउत्कष्टोएकपथ्योपमएकवर्षलाखेआधिकएवडीस्थितिकहीतीर्थकरदेवि । सीधमैप्रथम देवलीकिदेवनी जषव्यएकपथ्योपमस्थितिआज्जुक्कह्यो सीधमदेवलीकिदेवतानीकितला एकनो एकसागरोपमस्थितिआज्जुक्क देवीनोसागरोपमनकहिवाउत्कष्टोपचासपथ्योपमकह्यो ईशानबीजेदेवलीके देवनीजषव्यभाभेरी एकपथ्योपमएवडीस्थितअनंतयानीये कही ईशानेदेवलीके देवनीकितलाएकनो एकसाग

या । ईसाणैकप्येदेवाणमित्यत्र देवग्रहणेन देवादेव्यद्यगृह्यते यतस्त्रयसातिरेकपत्न्योपमादन्याजघन्यतः स्थितिरिवनास्ति ईसाणैकप्येदेवाणमित्यत्र देवानामेवग्रहणनदेवीनां तत्रतासामुक्त्वापत्तोपिपंचपंचाशत्यस्योपमस्थितिकत्वादिति तथा येदेवाः सागरं सागराभिधानमेवं सुसागरंसागरकांतं भवंमनुमानुषोत्तरं लोकहितमिहचकारोद्रष्टव्यः ससमुच्चयस्यद्योतनीयत्वादिमान देवनिवासविशेषमासाद्योतिरिति एतानिचविमानानि सप्तमप्रसूटेवसेयानिस्थित्यनुसारेणच देवानामुक्त्वासादयो भवन्ति तानुदर्शयन्नाह तेषामित्यादि येषां देवानामेकंसागरोपमस्थिति स्तोदेवाणमित्यलंकारे अर्द्धमासस्यांत इतिशेषः आनन्ति प्राणन्ति एतदेवक्रमेणव्याख्यायन्नाह उक्त्वसंतिनिःस्त्रसन्ति वाशब्देविकल्पार्थः तथा तेषामेववर्षसहस्रस्थान् इतिशेषश्चाहारार्थः आहारप्रयोजनमाहारपुत्र

त्वेणंसाइरेगुंगंपलिउवमंठिई प० । ईसाणैकप्येदेवाणं अल्प्येगइयाणं एगंसागरोचमंठिई प० । जेदेवासागरं सुसागरं सागरकतं त्रवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं उक्त्तोसिणं गुंगंसाग

रोपमनीस्थितकही । ईशान देवलकै सातमेप्रतरजेदेवताना सागर १ सुसागर २ सागरकांत ३ भव ४ मणुष ५ मानुषोत्तर ६ लोगहित ७ एणैविमाणै देवतपणैजपनाद्धे । ते देवतानी उक्कट्टी एकसागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवताएअर्द्धमासेएतलेएकणियखवाडे आणमंतिथोडोखासले पाणमंतिघणो लेआणमतिप्राणमतिएहअंतघत्तिखासउत्तरसंतिनीससंतिएहवाह्वत्तिकेइकअचार्यएमकहेद्धे जेदेवतानेजितलासागरोपमआजखीतेहनेतेतलेपखवाडेसासी

लानां ग्रहणमाभीगती भवति प्रनाभीगतस्तुपतिसमयमेव विग्रहादन्वन्नभवतीति गार्थेह जस्सजस्सागरीवमा डिद्रतस्सतति एहिंपक्खिहिं जसामी देयापंथा
ससस्सोहिं प्राहारोत्ति सति विद्यान्तएगइयाएवोक्तेचनभवसि विद्यति भवा भाविनोसिदिमुक्तिययाति भवसि शिक्षा भव्याः भवगगहणेणंति भवस्यमनुथजन्मनी
ग्रहणमुपादानं भवग्रहणंतेनसेत्स्यति अष्टविधमहर्षिप्राप्त्याभीत्स्यति केवलज्ञानगतत्व मोक्षतेवार्मराशोःपरिनिर्वास्यति कर्मकृतविकारहराच्छ्रैतीभविष्यन्ति कि
मुक्तंभयतिसर्वदुःखानामंतप्ररिष्यन्तीति ॥ १ ॥ सामान्यतयायथयादेकतया वस्तून्वभिधायाधुना विशेषमथायथाहिलेनाह दीदं डेल्यादि सुगममादि

रोवमंठिई प० । तेणं देवाणुगस्सञ्चुध्दमासस्स अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं
देवाणं एगस्सवाससहस्स अहारठेसमुपज्जइ संतेगइयान्नवसिद्धियाजेजीवा तेणुणंभवगगहणेणं सिज्जिस्सं
ति बुज्जिस्संति मुच्चिं संति परिनिव्वाइस्संति सब्बदुक्खाणसंतंकरिस्संति ॥ १ ॥ दादंकापन्नत्ता तं०

सासकहे तेतले सहश्रैवर्षे आहारनीप्रच्छाजपजे । जंचोस्सास ते उत्सास नीचोमेस्सिहोतीनीसास तेहदेवने एकसहस्रवर्षे आहारनीप्रथजपजे । संतेकह
तांहे एवोक्कभवसिद्धियाकहतांभाविनोहोणरेक्खिं दंज्जोसिद्धिजेहनेति भवसिद्धिकाभयजोव ससारमां हितेहलघुनामी एक्कभवनेनांतरेसीभस्ये कतार्थयास्ये दूभ
स्ये केवलज्ञानेवारीसकालससारनांपरमार्थजाणिस्ये कर्मकीधोविकारतेहनारहितपणाथकीटाटारोस्ये । सकलशारीरीदुःखनीमानमीदुःखनीप्रतकारिस्ये-
एतेस्येकाठाणीकहिंयो ॥ १ ॥ दिविवीजोन्नविकारकहेक्खेवेदडकहो भगवतेजेणेकारीपरनाप्राणदधीधेणियितेदंउकक्यो तेवार्थे अर्थदंड तेआत्मानेअर्थे पर

स्थावकसमाप्तिर्नवरमिह दंडराशे बंधनार्थसूत्राणां वदनञ्चत्रार्थचतुष्टयं स्थित्वर्धत्रयोदशकमुक्त्वासावर्धत्रयमिति तामार्धेनखपरिपकारलक्षणैः प्रयोजनेनदंडो
 हि साश्र्धदंडएतद्विपरितीर्णर्थदंडइति तथा रत्नप्रभायां द्विपत्न्योपमास्थितिचतुर्थप्रखटेमध्यमाद्वितीयायां द्विसागरीपथेस्थितिः पाट्टप्रखटेमध्यमात्रेया तथाश्रमु

अष्टादंशेचैव अष्टादंशेचैव दुवेरासी प० । तंजहा ॥ जीवरासीचैव अजीवरासीचैव दुवि
 हेबंधने प० । तजहा ॥ रागबंधनेचैव दोसबंधनेचैव पुष्ट्राफण्णुणीनस्कतेदुतारे प० । उ
 त्तराफण्णुणीनस्कतेदुतारे प० पुष्ट्राश्रद्धवयानस्कतेदुतारे प० उत्तराश्रद्धवयानस्कतेदुतारे प०
 इमीसेणंरयणप्पहाएपुठवीए अत्येगइअण्णनेरइयाणं दोपलिउवमंठिईप० । दुस्साएपुठवीए
 अत्येगइअण्णं नेरइअण्णं दोसागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइ

नेश्र्धत्रागलानामाणहृषीये तेऽर्थदंड निरर्थकपण्येपरमाणनेहृषीये तेऽनर्थदंडनिश्चे वेराशिसमूहकही तेकिमी कहंछे । जीवराशिविजीवनासमूह अजीवरा
 शि अजीवनासमूह वेप्रकारे बंधनकह्या तेकहंछे रागबंधण रागेकरिकर्मनीबंधपडे एमज द्वेषबंधपडे पूर्वाफाल्गुनीनचत्रनावेताराकह्या भगवते
 उत्तराफाल्गुनीनचत्रना वेताराकह्या पूर्वाभाद्रपदनचत्रना गितारा कह्या । उत्तराभाद्रपदनचत्रनावेताराकह्या एशीइये रत्नप्रभापहिलीनरकप्रथवीये
 केतलाएकनारकीनी चेधिपाथडे वेपत्योपमस्थितञ्चाजधंमध्यमकह्यो वीची नरकप्रथवीनिविषे केतलाएक नारकीनी छडेपाथडे वेसागरीपममध्यस्थितिञ्चा

पंचकं नक्षत्रार्थसाकं स्थित्यर्थनवकं मुक्तासायर्थधयमिति । तत्रदंष्ट्रातेवाग्निश्रव्यापह्वारतोऽसारीकियते एभिराकेतिदंडाहुः प्रयुक्तमनः प्रभृतयः मनएवदंडो
 मनोदंडो मनसायाहुः प्रयुक्तोनात्मनोदंडो दंडेनमनोदंडएवमितरावपि तथा गोपनानिशुभयः मनःप्रभृतीनामशुभप्रदृक्तिनिरोधनानि शुभप्रदृत्तिकारणानि
 चेति तथा तोमरादिगल्पानीषयाख्यानिदुःखदायकत्वात्मायादीनि तत्र मायानिकृतिः सैवशब्दं मायाशल्पणत्रिल्ललंकारे एवमितरेऽपि नवरनिदानं
 देवादिरिचीनादर्शनश्रवणाभ्या मितो ब्रह्मचर्यादिरनुष्ठानान्ममैताभूयासु रित्तिध्यवसायो मिथ्यादर्शनं मत्सार्थश्रवणमिति तदा गौरवाणिसभिमान

तजदंष्ट्रा प० तं० मणदंष्ट्रे वयदंष्ट्रे कायदंष्ट्रे । तजुगुत्तीञ्ज प० तं० मणगुत्ती वयगु
 त्ती कायगुत्ती । तजसह्या प० तं० मायासह्येणं निध्राणसह्येणं मिच्छादसणसह्येणं ॥

सर्वदुःखसारीरी तथा मानसी तेहनीभ्रंत करिस्त्रे ऐतले बीजोठाणी एरीथयो ॥ २ ॥ ह्रिवे तोजोठाणी कहैके । तीनदंडक
 ह्या जेणेकारी आत्मादंडीये चारिनरूपधनगमाडीये ते दंडकाहीये ३ मनिकारी आत्मादंडीये प्रसारकारीये ते मनोदंड १ एम वचनदंड २ कायदंड उपणिइमज
 ३ त्रिणिगुत्ती गोपथिवी ते गुति कहिये तिकाहैके मननो गोपवी ते मनोगुत्ती १ इम वचनगुति २ कायगुति ३ निनिष्णस्यके तीरनीपर शल्यसरीखा श
 ल्य भाल दुखदायकपणायकी ते कहिये मायाकपटतेहीजस्य तेमायास्य १ निदानस्य ते तपसंजमेकरी इन्द्रादिकपदवीनी वांछवी २ मिथ्यातस्य

लोभाभ्यामात्मनोऽशुभभावगुरुत्वानि तानिचसंसारचक्रबालपरिभ्रमणहेतुकर्मनिदानानि तत्र ऋद्धाननैर्द्रादि पूजाचार्यत्वादिब्रह्मणयागीरवमृद्विप्राप्त्यभिमानतदप्राप्तिप्रार्थनद्वारेणात्मनोऽशुभभावगीरवमित्यर्थः एवंरसेनगीरवंरसगौरवं सातयागीरवं सातयागीरवं सातागीरवंचेति तथाविराधनाः खंडनासूत्रज्ञानस्यविराधनास्त्रान्नविराधना ज्ञानप्रत्यनीकतानिऋत्वादिरूपाएवमितरेपि नवरं दर्शनंसम्यग्दर्शनत्वायिकादिचारित्रसामायिकादीनि । तथाऋत्सख्यातवर्षायुषांपंचेद्वि

तज्जगारवा प० तं० । इद्द्वीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं तज्जविराहणा प० तं० । नाणविराहणा दं सणविराहणा चरित्तविराहणा मिगञ्जिरनरुक्ततेतितारे प० । पुस्सनरुक्ततेतितारे प० । जेठानरुक्ततेतितारे प० । झ्यत्रीइनरुक्ततेतितारे प० । सवणनरुक्ततेतितारे प० । झ्यत्थेगइयाणं तेरइयाणंतन्निरालुवमाइंठिई प० । दो नरुक्ततेतितारे प० इमीसेणंरथणप्यन्नाएपुढवीए झ्यत्थेगइयाणं तेरइयाणंतन्निरालुवमाइंठिई प० । दो

तेशुद्धदेवगुरुधर्मनीअसद्दिवोविपरीतनीकरिवो ३ त्रिखिगरवच्छेज्जेकरोआत्माभारीथाय संसारचक्रबालमहिभमयानीकारणकञ्चोतिकहेछे । ऋद्दिगारव तेनैर्द्रादिकनीऋद्धितयाआचार्यादिकनीऋद्धितेकरोआत्माभारीकरे रसेकरीमधुरादिकखादिकरीआत्माभारीकरवो तेरसगारवकहियेर सातानगारवेकरीसातागारव ३ त्रिखि विराधनाखंडनाकहो तेकहेछे सूत्रादिकज्जानतेहनीविराधना प्रत्यनीकपणेकिवितेज्जानविराधना दंसणतेसम्यक् दर्शनत्वायकादिकसम्यक्तेहनुं विराधवंअणुवणंवादंनवोत्तितेदर्शनविराधना २ सामायिकादिकचारित्रनुं विराधवंखंडवुतेचारित्रविराधना ३ मुगसरनचन्नना

यतिर्यगमनुष्याणदिवकुर्वुतरक्षुरजस्रनां त्रीणिपस्थीपमानौति । तथाआभंकरं प्रभंकरं आभाकरंपभावारं चंद्रचंद्रावत्तं चंद्रप्रभं चंद्रकांतं चंद्रवर्णं चंद्रलेखं चंद्र
ध्वजं चंद्रशृंगं चंद्रसिद्धं चंद्रशूटं चंद्रोत्तरावतंसक विमानमित्यादि ॥ ४ ॥ चतुःस्थानकमपिसुगममेव नवरं कथायध्यानविकथासंज्ञाबंधयीजनार्थं सूत्राणांषट्

जेदेवा श्यामंकरं पञ्चंकरं श्यामंकरं पञ्चाकरं चंद्रं चंद्रावतं चंद्रप्यत्रं चंद्रकंतं चंद्रबन्धं चंद्रलेखं चंद्रज्जयं चं
दसिंघं चंद्रसिद्धं चंद्रकूटं चंद्रोत्तरवक्रिसिंघं विमाणं देवत्ताएउबवन्ना तेसिंघं देवाणं उक्तीसेणं तिनिसागरी
वमाइठिई प० । तेणं देवातिरहं अष्टमासाणं श्याणमंतिवा पाणमंतिवा जससंतिवा नीससंतिवा तेसिंघं दे
वाणं उक्तीसेणं तिहंवाससहरसेहिअ्याहारठेसमुपजाइ संतेगइयात्रवसिद्धियाजीवा जे तिहंअवगणहणेहि
सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संतिपरिनिव्वाइस्संति सब्बदुक्खणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥ चत्तारिकसाया

युगलियातेहनी उत्कृष्टी तीनपस्थीपम आउखी कच्चो । सौधर्मईशानदेवलीकनेविधि केतलाएकदेवनी त्रिणिपस्थीपमआउखी कच्चो सनत्कुमारमाहेद्रनी
जेचीथेदेवलोके केतलाएक देवनी त्रिणिसागरीपममध्यमआउखीकच्चो जेदेवताआभकर १ प्रभंकर २ आभाकर ३ प्रभाकर ४ चंद्र ५ चंद्रावर्त ६ चंद्रप्रभ ७
चंद्रकांत ८ चंद्रवर्ष ९ चंद्रलेख १० चंद्रध्वज ११ चंद्रशृंग १२ चंद्रसिद्ध १३ चंद्रशूट १४ चंद्रोत्तरावतंसक १५ विमानंसनत्कुमारमाहेद्रदेवलोकेदेवतापणे
उपनाहे तेहदेवतानीउत्कृष्टीत्रिणि सागरीपमआउखी कच्चो तेहदेवतानूत्रिहंअडमसवाडे थोडोखासले घणोखास जे चीखासतेउत्खासनीचीखासमंकावीते

कंनचत्रार्थिस्थित्यर्थेषु कंशेषु तथैव इत्यपि पाठः अर्थस्थित्यर्थेषु कंनचत्रार्थेषु तथैव अंतर्मुहूर्त्तयावच्छित्तस्यैकाग्रतायोगनिरोधध्यानं तत्रार्त्तं मनीषामनीष
 यद्युक्तियोगसंयोगादि निबंधनश्चित्तविकलबलक्षणं रोद्रहिंसानृतचौर्यधनसंरक्षणभिधानलक्षण । धर्ममात्रादिपदार्थस्वरूपपर्यालोचनेकाग्रताशुक्लं पूर्वगत
 श्रुतावलंबनध्याने तत्र मनसोऽप्यंतस्त्रिरतायोगनिरोधयेति । आत्मध्यानं तथा विषयव्यतिरेकप्रति क्ल्यादि विषयाः कथा विकथाः तथासंज्ञा असातवेद

॥

ममज्जाणे सुक्ताज्जाणे चत्तारिज्जाणा प० तं० इच्छिक्कहा जत्तकहा रायकहा देसकहा चत्तारिसससा प०
 प० तं० कीहकसाए माणकसाए लोचकसाए चत्तारिज्जाणा प० तं० इच्छिक्कहा जत्तकहा रायकहा देसकहा चत्तारिसससा प०

॥

नीसास ते हृदयताने उरक्कण्ठी विहुं वर्षसहस्रे भाहारो अर्थउपजिआभोगआहारलेखे एकेकसंसारमाहिभव्यजीव जेह विहुं भवनेभांतरे सीभसेकृतांथीस्थे बूझ
 स्त्रे कसंबंधकी मूकास्ये समस्तदुःखनीश्रंतकारस्ये इतिचीजीठाणीससक्तं द्विविचीठीठाणीकहेछेच्यारकषायकेकषकहीये संसारतेहनीआयलाभहुर्ये जेहथीक
 षायकहियेक्कीधिकरीसंसारनीलाभहुर्येतेमाटिक्रीधकषाय १ एममानकषायमानअहंकार २ मायाकषामायाकषपट ३ लोभकषायलीभतृण्णा ४ च्यारिध्यानक
 ह्याध्यानतेअतमुहुर्त्तलगेचित्तनुएकाग्रयुंतथायोगनिरोधतेकहे मनीषवखनीसयोगअमनीषवखनीवियोगनीचिंतविवीतिआर्त्तध्यान १ हिंसामुषाचीरीधन
 रचणनी चिंतविवीतेरुद्रध्यान २ भगवंतनीआत्मापदार्थनीआलीचवीतेधर्मध्यानपूर्वगतयुतनुंआलंबनुनिशोधोगनुंनिरोधवीते शुक्लध्यान जेणेकारीचारिआदिक

नीयमीहनीयकर्मोदयसंपाया आहाराभिलाषादिरूपाद्येतनयिशेषाः तथासकपायत्वाज्जीवस्यकर्मणोयोग्यानांपुह्लानां बंधनमादानबंधनम् । तत्रप्रकृत
यःकर्मणोऽग्राभिदाः श्रानावरणोयादयोऽष्टौतासाबंधः प्रकृतिबंधः तथास्थितिस्वासासमिवावस्थानं जव्यादिभेदिभ्रंतस्याबंधोनिर्वर्तनस्थितिबंधः तथाऽनुभा
वोविपाकस्तीव्रादिभेदोरसस्रस्रबंधोनुभावः तथाजीवप्रदेशेषुकर्मप्रदेशानामनंतानंतानंप्रतिप्रकृति प्रतिनियतपरिमाणानांबंधः संबंधनंप्रदेश्यबंधइति तथा

नन्ता तं० श्राहारसस्याय अयमेक्षणपरिगहसन्ना चउच्चिहेबंधे प० तं० पगइबंधे ठिइबंधे शृणुजागबंधे
पुसबंधे चउगाउणुजोयणे प० । शृणुराहानरकृतेचउतारे प० । पुष्टासाढनरकृतेचउतारे प० । उत्तरासा

नोविराधनाहीयतेविकथाचारकहीछि तेकहछे स्त्रीभलीवखाणोयिभूडौबखाणियितस्त्रीविकथा भातरांध्यानेश्रद्धनीवखाणबीविबीहवोतिभातविकथा १ राजा
नंभलसंडंकाहिवोतेराजविकथा देसएकवखाणोएकविडीजीतेदेसविकाथा ४ च्यारसन्नाकहीअसाताविदनीयमीहनीकर्मनेउदयेजपजेतसंज्ञाकहीयिआहा
रसंज्ञा १ भयनीविदवीतेभयसंज्ञाकहीयि २ मैथुननीअभिलाषतेमैथुनसंज्ञा ३ परिग्रहनीअभिलाषतेपरिग्रहसंज्ञा ४ चिंहुप्रकारेबधजीवनकर्मनेयोग्य पुरुल
नीबांधवोतेबंधकहीयि तिहांकर्मनाश्रयभेद ज्ञानावरणोयादिक ८ श्राठ तेहनीबांधवोतेप्रकृतिबंध १ तेहश्राठकर्मनी स्थितिरहिजीवव्यउरकाण्टकोशकाल
तीवृदिकभेदंअनकप्रकारेरसतेहनीबंधवोतेरसबंध जीवनाप्रदेशनविकी अंतकर्मप्रदेशतेस्थितिबंध प्रकृति दीठनियतपरिमाणोबांधवोतेप्रदेशबंध ४ उच्छेदां
गुल्यारराजनीएकयोजनकर्मोभयवते अनुराधानचक्रनाचारताराकक्षा पुर्वाषाढानचक्रनाच्यारतारा कक्षा उत्तराषाढानचक्रनाच्यार तारा कक्षा एणी

जरास्थानत्वंपुनरेपांसाधारणमिति । तदिहवामभिहितं । तथासमितयः संगताः प्रहृतयः तत्र्यासमिति गर्मने सम्यक् सर्वपरिहारतः प्रवृत्तिर्भा
 वासमितिनिर्वयवचनप्रवृत्तिः एषणसमिति द्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनभक्तादिग्रहणेप्रवृत्तिः आदिनिग्रहणे भांडमात्रेण रूपकरणपरिच्छदस्य निवेपणा
 वथा पादानसमितिः सुप्रयुषिद्वितादिसांगतेनप्रवृत्तिश्चतुर्थी १ । तयोच्चारस्य पुरीषस्य सूत्रस्य खेलस्य निष्ठीवनस्य सिंघाणस्य नासिकाश्लेषणो
 अक्रसाया अजोगया पचनिज्जरठाणा प० तं० पाणाइवायाउवेरमणं मुसावायाउ अदिन्नादाणानु मेऊणा
 नुवेरमणं परिगहानुवेरमणं । पंचसमिद्धं प० तं० इरियासमिद्धं आसासमिद्धं एसणासमिद्धं आयाणचक्रुम
 मथुन नवभेदैवैक्रियमैथुनएव १८ भेदैमैथुनयुक्तीविरमवी तेसर्वमैथुनविरमणचोथीसहाव्रत नवविधपरिश्रहय्थीविरमवी तेसर्वपरिश्रहविरमणपांचमीसहा
 व्रत पांचकामगुण कामियेअभिलखीयेते कामकहीये तेहीज गुणपुद्गलसंभावतेकामगुण अथवा काममदनतेहना दीपावक ते फामगुणकह्या तेकहेछे
 शब्दतेसांभलवी रूतते देखवी रसते आस्वाद गंधतेनाकनीविषय फरसतेकायनीविषय आश्रवते कर्मआववानीउपाय तेहेनेद्वारसरीखाद्वारतेह
 नेआश्रवद्वारकया तेकहेछे भियालतेविपरीतसदृहणा तेहपापआश्रवानी उपाय १ एअश्रविरतिअप्रत्याख्यान २ प्रमादतेप्रमत्तपणो ३ कषायतेजो
 धादिक ४ योगतमनीयोगादिक ५ पंचसंश्रद्धारणेकरी कर्मनीअणमलिवी तेसवर तेहनाद्वार तेउपायपांचकह्यातेकहेछे सम्यक्तेशुद्धदर्शन १ वि-
 रतिप्रत्याख्यान २ अप्रमादपणं ३ कषायनेटालिवी ४ अजोगतामनीजोगादिकनेरीषवी निर्लरतेदेश्यकीजीवनाप्रदेशहुंती कर्मपुद्गलनखपाव-
 णं जूश्रीकस्विने तानयानककहितांउपाय तेनिर्लराराणकह्यापंचिभेदे तेकहेछे जीवमारिवाथकीविरमवीजसरिवी एहकर्मखपाविवानीउपाय १

जन्मस्य देहमलस्य परिष्ठापनायाः परित्यागेसमितिः स्थंडिलादिदीर्घपरिष्कारतः प्रवृत्तिरितिपंचमी । प्रस्त्रिकायाः प्रदेशराशयः धर्मास्त्रिकाया-
 दयोगतिस्थित्यथागाहोपयोगसर्गादिलक्षणस्थितिः सूत्रेषुउल्काष्टादिविभागएवमनुगतव्यः । यदुतः । सागरसिंग १ सिय २ सत्त ३ । दस्य ४ सत्तरस ५ त
 इयजावोसा ६ ॥ तेत्तीसजावठिं ६ । सत्तसुविकामेणपुठवीसु ॥ १ ॥ जापठमाणसुज्ज्ञा । सावीयाएकच्छिष्ठ्याभणिया ॥ तरतमजोगोएसी । दसवाससहस्सरय
 पंचअत्यिकायाप० तं० धम्मत्थिय
 रोहणीनखत्तेपंचतारे प० पुणह्यसु
 पोगलत्थिकाए रोहणीनखत्तेपंचतारे प० पुणह्यसु

तानिकेवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजह्नपारिष्ठाविणयासमिई । पंचअत्यिकायाप० तं० धम्मत्थिय
 काए अथम्मत्थियकाए आगासत्थियकाए जीवत्थियकाए पोगलत्थियकाए रोहणीनखत्तेपंचतारे प० पुणह्यसु
 १ निरवयवचननीप्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषण्टालीभातेपणीनूलैवोतिण्णसासमतिकही ३ । आदानका
 एकमपावादेवरमण २ इम अदत्तादानविरमण ३ इममथुनवेरमण ४ परियहरीविरमण ४ सावधानपण्णप्रवर्त्तवोतेसमितियांचाकारकही तेकहेच्छे-
 चालतीसर्वजीवनेजोईप्रवर्त्तवोतेईयांसमिति १ निरवयवचननीप्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषण्टालीभातेपणीनूलैवोतिण्णसासमतिकही ३ । आदानका
 हतांभांडमात्रउपकरणे मूकतां समति पूंजीजोईलैवो जोईमूकवो तेचोथीसमतिकही उच्चार विष्ठा प्रअवण मूत्र खेल थूक सिंघाण नांकनीमल रिंठ
 जह्नमैलएतलापरउतांसमितिस्थंडलदोषटालीपवर्त्तवो एपांचमीसमतिजाणवी ५ पांचअस्त्रिकायअस्त्रिकहतांप्रदेशतेहनाकाय तेराश्रितेअस्त्रिकायकहीयि
 तेकहेच्छे धर्मकाहियेवलनस्वभावएहवाप्रदेशराश्रितेधर्मास्त्रिकाय १ अथम्मत्थियकायस्थितिलभाव २ आकाशास्त्रिकाय जीवने पुहलनेविषे अक्कासदेवा
 नीस्वभात्र जीवास्त्रिकायउपयोगलक्षण ४ पुहलास्त्रिकायसर्गलक्षणजाणिवो ५ रोहिणीनखत्तेनापांचताराकह्वा पुनर्वसुनखत्तेना पांचताराकह्वा ह

२ ॥ तथा । दो १ साहि २ सत्त ३ साहिय ४ । दस ५ चौदस ६ सत्तरेवग्रयराइ ॥ सोहआजावसुकी । तदुवरिइक्किमारोवा ॥ ३ ॥ पलियं १ दोसार
 २ साहिय ३ सत्त ४ साहिय ५ दस ६ षडहस ७ सत्त रस ८ सहस्रारे तदुवरिइक्किमारोविति तथावातंसवातमित्यादीनिद्वादशवाताभिलापेनिविमानना
 नरुक्तेपंचतारे प० हल्यनरुक्तेपंचतारे प० विसाहधिणिष्ठानरुक्तेपंचतारे प० इमीसिंरंयणप्यन्नाणुपुढवी
 ए अत्येगइश्याणनिरइयाणं पंचपलिनेवमाइं ठिई प० तच्चाणुणंपुढवीअत्येगइश्याणं नेरइयाणंपंचसागरो
 वमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्येगइयाणंपंचपलिनेवमाइंठिई प० सोहमीसाणेसुकप्येसु अत्येग
 इयाणंदेवाणं पंचपलिनेवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्येसु अत्येगइयाणंदेवाणं पंचसागरोवमाइंठिई
 प० जेदेवा वायं सुवायं बायप्यन्नं पञ्चंतरे वायावत्तं वायकंतं वायप्यहं वायवन्नं वायलेसं वायज्जयं वा
 स्तनच्चनना पांचताराकह्या विद्याखानच्चननापांचताराकह्या इणीयरत्नभापहिलीपुयवीने केतलाएक नारकीनी पांचपल्ली
 पममध्यआजपूंकहिये तीजेवालुकापुयवीनेविषे केतलाएकनारकीनी पांचसागरोपममध्यआजखीकहिये असुरकुमारभवनपतीकेतलाएकनेदेवतानीपांच
 पलीपमआजखीकह्यो भगवंतं सीधर्मईमान पहिले बीजेदेवलीके केतलाएकदेवतानी पांचपल्योपम आजखीकह्यो तीजेसनलुमारमाहिंदेवचउथेदेवलीकनेपि
 पेकेतलाएकदेवलीकना देवताने पांचसागरोपमआजपूंकह्यो भगवंते तीजेचउथे देवलीके जेदेवता वात १ । सुवात २ । वातप्रभ ३ । वीजेप्रतरे ४ ॥ वाताव
 र्त्तनामके ४ । वातकांत ४ । वातप्रभ ५ । वातवर्ष ६ । वातव्यज ८ । वातलेश ४ । वातव्यज ८ । वातलेश ४ । वातकूट ११ । वातीत्तरावतंसक १२ ए

शब्दः प्रयुज्यत इति तथा आह्वयतपः बाह्यशरीरस्य परिपोषणेन कर्मभ्रमणहेतुत्वादिति । आश्वत्तरं चित्तनिरोधप्राधान्येन कर्मभ्रमणहेतुत्वादिति तथा ह्यस्योऽन्वय

पम्हलेसा सुकलेसा हृजीवनिकाया ५० तं० पुढवीकाए च्याउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तस
काए ठव्विहे बाहिरेतवोकम्मे ५० तं० झुणसणे उणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चाउ कायकलेसो संली
णया ठव्विहे झुण्णितरेतवोकम्मे ५० तं० पायच्छित्तं विणउ वेयावच्चं सज्जाउ ज्जाण उस्सग्गो ठाउ

कथादिकपुद्गलनासंसर्गदकीआत्मानीपरिणाम अन्यथापणेपरिणमे ते लेश्याकहेचि उक्तंच कथादिद्रव्यसाचिव्या त्परिणामीयआत्मनः रफटिस्थितत्रायं ले
श्याशब्दः प्रयुज्यते । महाकाले पुद्गलेनीपनीक्षणलेश्या १ । नीलासूडने वण्णेतनीलेश्या २ । अलसीनाफूलसरीषीकापीतलेश्या ३ । हींगलपेरंलांसरीखा
तेजिलेश्याजाणिये हरतालसरीषीपद्मलेश्या ४ । संखसारीषीउजलीशुक्कलेश्या ६ । संसारमाहि ह्यप्रकारे जीवनिकाय जीवसमूहकहेके तेकहेके पृथवीकाय
पृथवीमाटीकायसमूह १ । एमज अपजलकायपाणी २ । तेयकायअग्नि ३ वायुकाय वायरी वनणतीकायतणवृत्तादिक ४ त्रसकायवेदियादिक पंचद्रियलग
ह्यप्रकारे बाह्यशरीरेने शेषिकर्मखपावे तेवाह्वयतप तेहनोकरिवो तेहवाह्वयतपकर्मकहिये तेकहेके अणसण उपवासएकथकीमांडी क्कमासलगी जणेदरीकरणे
पेटेजठिवी पूरेआरहानलेवी २ । वृत्तिसंचेप वृत्तिन करिवो ३ । रसनीपरित्वाग अंजिलनिवी प्रमुखकरिवी कायशरीरे क्कगतादितापलीचआतापनादि
कनींकरिवीसंलीनताअंगउपांगसंवरौ अणशनादिकनीकरिवी ह्यप्रकारेअश्वत्तरतप अंतरंगमल्लनी सोधणहारतप तेहनो कर्मकरिवी तेतपकर्मकह्यो तेस

स्याणसु कप्येसु अथ्येगइअणंदेवाणं प० सणकुमारमाहिदेसुकप्येसु अथ्येगइअणंदेवाणं
 ठसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सयंवाइं सयंअ सयंअरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किठिघोसं वीरं सुवीरं
 वीरगंत वीरसेणियं वीरवत्तं वीरपन्नं वीरकंत वीरवत्तं वीरसिद्धं वीरसिद्धं वीरकूळं वीरहरव
 ळसाणं थिमाणं देवताएउयवत्ता उअससतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं उअसिणंठसागरोवमाइंठिई प० तेणदेवाठणहंअरठसमुपज्जइ
 अणमंतिवा पाणमंतिवा उअससतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं ठहिवाससहस्सेहिं अाहारठसमुपज्जइ । सौध ॥

तोजीवालुकप्रभा पृथवीनेविषं केतलाएक नारकीनी छ सागरोपम आजखीकह्यो । असुरअुमारदेवतानो केतलाएकनो छपलीपमआजखीकह्यो । सौध
 मंडेग्रान देवलीकने विषं केतला एकदेवतानी छपलीपम आजखीकह्यो । तीजिसनलुगार चीथे माहेंद्र देवलीके केतलाएकदेवतानी छसागरोपम आजखी
 कह्यो । तीजिचीथे देवलीके जेदेवलीके जेदेवता सयवादी १ । खयंभू २ । स्वयंभूरमण ३ धीस ४ । सुधीस ५ । महाधीस ६ । ढाष्टिधीस ७ । वीरकूट १८ ।
 ८ । वीरगत १० । वीरसेनिक ११ । वीरावर्त्त १२ । वीरप्रम १३ । वीरकांत १४ । वीरवर्ण १५ । वीरध्वज १६ । वीरस्यंग १७ । वीरसिद्ध १८ । वीरकूट १९ ।
 वीरोत्तरावर्त्तसक २० । एह्वेविमाने देवतापणे जपनछे तेहदेवतानी उअक्यो छसागरोपम आजखीकह्यो तेदेवता छे अईमासे एतले छेपखवाडिसासे
 सासले षणोसासले उ चोलीवोतेअसास नोचोमिह्वोतीतोसास तेदेवताने छहजारवैषं आहारतो अर्थजपजे छेकेतलाएकमअजीव जेअमनेत्रांतरे सीमत्ये

इन्द्रियेष्वमनसा जन्तमानत्वादिति स्थितिसूत्रस्यैवादीनिधियतिविमानानोति ॥ ६ ॥ अयसप्तमस्थानकविविद्यते तच्चकंटकं
 नयरमिहभयसमुद्घातमहावीरोवर्षधरवर्षधीणमोहाथानिचसूत्राणिपट् नचत्रार्थानिपंच स्थित्यर्थानिनय उच्छ्वासार्थानिचोख्येति तत्रेहलीकभययत्न

संतगद्ग्रयान्नवसिद्धियाजीवाजेत्त्रिभ्रवगगहोहिसिज्जिस्संति जावसहृदुस्काणमंतंकरिस्संति ॥ ६ ॥
 सत्तन्नयठाणा प० तं० इहलोगन्नए परलोगन्नए आदाणन्नए अकम्हान्नए आजीवन्नए मरणन्नए असिलो
 गन्नए सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउद्धियसमुग्घाए
 तेयससमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए समणेन्नगवंमहावीरे सत्तरयणीत्त उहंउच्चत्तेणंहोत्या स

बूक्त्यै मंकासे भवमांहिथी सर्वदुखनी अंतकरिस्थे मीज्जजसे इतिच्छोठाणीसयत्त ॥ ६ ॥ हिंवेसातनो अधिकारकहेच्छे सातभयनाटासकह्या तेकहेच्छे
 खजातीयकीभय उपजेतेइहलीकभय परजातीयकी भयउपजेतेपरलीकभय द्रव्यआशीउपजेते प्रादानभयवाह्यनिमित्तविना प्रकस्सात् भयउपजेते आक
 क्षिकभय आजीविका जीवकानो उपयतेहनी भय तेआजीविकाभय मरणनीभय तेमरणभय अशोकअकीर्तितेहनीभय उपजेतेअशोकभय सातसमहातपद
 नी अर्थदण्णकह्नीत्तेकहेच्छे वेदनासमुद्घात कपाय समुद्घात मारणांत वैजियसमुद्घात तेजससमुद्घात आहारकसमुद्घात सातमीकिवलीसमुद्
 घाततेहकोइक केवलीच्यार अघातीयाकर्मखपावण्णैअर्थे केवलीसमुद्घातकरे पीतानां प्रदेशलीकांतलगे विस्वारी कर्मपुद्गलनिर्जर यमए तपस्वी भगवंतामहा

अभिजिदादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभभवति । एव मखिन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पृथ्वादीन्य परद्वारिकाणि स्वा
 ल्यादी न्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धांतगतमिह तु मतान्तरमाश्रित्य कृत्तिकादीनि सप्तपूर्वद्वारिकादीनि भूषितानि चंद्रप्रशस्तीतु बहुतराणि मतानि दर्शितानि ह्यार्थ

रुक्तादाहिणदारिद्र्या प० अणुराहाइन्द्र्यासप्तनक्षत्राश्चरदारिया प० धणिठाइन्द्र्यासप्तनक्षत्रा उत्तरदारि
 या प० पाठांतरेण । अग्नीयाइयासप्तनक्षत्रा प० इमीसेणरयणप्पन्नाणुठवीणु अत्येगइयाणं नेरइयाणं
 सत्तपलिउवमाइंठिई प० तच्चाणुणंपुठवीणुनेरइयाणंउक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० चउत्थीणुणंपुठवीणु
 नेरइयाणं जहत्तेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणंअत्येगइयाणं सत्तपलिउवमाइंठिई प०

य ३ । आजखी ४ । नामकर्म ५ । गोत्रकर्म ६ । अंतरायकर्म ७ । एहउदयकाले विदे भोगे मवानचत्रना सातताराकञ्जा कृत्तिकाआदिलेईने सातनचत्र पू
 र्वद्वारिकाकहा पूर्वदिशिजाणहारने भलूयाय । मघादिकसातनचत्र दक्षिणद्वारिकाकहा । अनुराघादिक सातनचत्र पश्चिमद्वारिकाकहा । धनिष्ठादिक
 सातनचत्रउत्तरद्वारिकाकहा । पाठांतरेकरीकाहियेछे । अभिजिदादिक सातनचत्रपूर्वद्वारिका अश्विनीथी सातनचत्र दक्षिणद्वारिका पृथ्वादिकसातनचत्र
 पश्चिमद्वारिका स्वातिआदिक सातनचत्र उत्तरद्वारिकायहमूलमतजाणिवी एणियेरत्तप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनीसातपत्थीपममध्य
 म आजखीकह्यो । तीजीनरकपृथिवीनेविषे नारकीनीउत्कष्टीसातसागरोपम आउखीकह्यो । चउथीनरक पृथिवीनेविषे नारकीनी सातसागरोपमजघन्य
 आउखीकह्यो । असुरकुमार भवनपती केतलाएकदेवतानी सातपत्थीपम आउखीकह्यो । सौधर्मईशानदेवलीकनेविषे केतला एकदेवतानूंसातपत्थीपम

सोहमीसाणेसुकप्येसुश्रुत्येगइयाणं देवाणंसत्तपलिउवमाइंठिई प० सणकुमारिकप्ये देवणंउद्धोसिणंसाइरेइंग्गा
 सत्तसागरोवमाइंठिई प० मांहिं देकप्येउद्धोसिणंसाइरेगाइंसत्तसागरोवमाइंठिई प० बंजलीएकप्येअत्येगइ
 याणं देवाणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० जे देवा समं समप्यं महप्यं पत्रासं त्रासुरं विमलं कंचणकूटं सणं
 कुमारवक्रिंसगं विमाणं देवत्ताउएववन्ना तेसिणं देवाणं उद्धोसिणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० तेणं देवा सत्तरहं
 अणुमासाणं अणुमासाणं उजसंतिवा पाणमंतिवा जे सत्तहिंजवगगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति जावसब्बु
 हारठे समुपज्जइ संतेगइयात्रवासिधियाजीवा जे सत्तहिंजवगगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति जावसब्बु
 पाउलीकणी । नीजासनत्तुभार देवलीके देवतानीउत्कण्ठी सातसागरीपम प्राउलीकणी । माहिद्रुचउथे देवलीके देवतानीउत्कण्ठी भांभेरीसातसागरीप
 म प्राउलीकणी । त्रासुराणमे देवलीके केतलाएकदेवतानी सातसागरीपमयाउलीकणी । सनत्तुमारदेवलीके जेदेवता सम १ । समगम २ । महाप्रम २ ।
 प्रभुसुद्धं भासुर ५ । विमल ६ । कंचनकूट ७ । सनत्तुमारयावतंसक विमान ८ । एएपाठ विमाननेति जेदेवताजपनाथे तेहदेवतानी उत्कण्ठीसात साग
 नीपम प्राउलीकणी । तेहदेवता सातमे पयवाले सासीसासले घणीसासलेने नीचीसासलेने । तेहदेवताने सातमे वर्षससे सातहजारज्ये आशरनी भ
 ७ ॥

इति स्थितिसूत्रे समादीनि अष्टौ विमाननामानौति ॥ ७ ॥ अथाष्टमस्थानकक्रया श्रायते । सुगमंचैतं श्रवर मिहसदस्थानप्रवचनमातृचल्यह्वयजंबू
 शाल्मलीजगती ऋवलिसमुद्घातगणधरनबभार्थानिसूत्राणिव स्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासादायार्थानित्रीणीति । तत्रमदस्याभिमानस्य स्थानानिजात्यादीनि तान्वेव
 मप्रधानतया दर्शयन्नाह जाइमएइत्यादि जाचामदीजातिमदएवमन्यात्वापि अथवामदस्य स्थानानि तान्वेवाह जाइमएइत्यादि शिषेतथैव तथाप्रवचनस्य द्वादशां
 गस्य तदाधारत्वा सवस्यमातरइव प्रवचनमातर ईर्यास्रमित्यादयोद्वादशांगिभिहिता आश्रित्य साचात्प्रसगतोवाप्रवर्तते भवति चयतो यत्प्रवर्तते तस्य तदा
 श्रित्यमातृकस्येति सत्रपद्येति यथा शिशुमोतरममुंच आकलाभंलभते एवंसंघसामसुचत्संघत्वंलभते नान्यथेतीर्यासिमित्यादीनां प्रवचनमातृकत्वमेविति तथा

स्काणमंतंकरिस्संति ॥ ७ ॥ अष्टमथष्टाणा प० तं० ज्ञातिमए कुलमए वलमए रूवमए तवमए सुय
 मए लाजमए इस्सरियमए अष्टपवयणमायाजु प० तं० ईरियासमिई ज्ञासासमिई एसणासमिई आयाण

हिवि आठनीठाणीकहैकै । आठमदनास्थानकआश्रय तेमदस्थानककह्या । तेकहैकै जातिमदजातिमातृपच तेणेकरीमद अभिमान तेजातिमद १ । इमकु
 लजेपिहपचतेणेकरीमद तेकुलमद २ । बलते शरीरनो सामर्थ्यपणी ३ । रूपतेसौंदर्यपणी ४ । तपतेच्छठ आठमादिक ५ । श्रुतजेशत्र घशोभणे तेणेकरीम
 द ६ । लाभतेफलप्राप्ति तेणेकरीमद ७ । ऐश्वर्यतेठशुराई ८ । यह आठमदकह्या । आठप्रवचनमाता प्रवचनद्वादशांगी अथवाद्वादशांगनूं आधारतिसंघ तेह
 ने मातासरिखी माताहितकारणी ते प्रवचनमाता कहीये । तेकहैकै ईर्यासमिति चालतांजीवने जोईचाले तेईर्यासमिति १ । भाषानिवद्यबोलि
 भाषासमिति २ । ४२ दूषणटाली आहार भातपाणीलेवे तेएषणासमिति ३ । उपकरणपूजिलिंवी मुंकायेते आदानसमिति ४ मलमूत्र पूजोनिदाप स्थंडिले

रपीनाधिकवानुमतव्येति सुभेत्वादिश्लोकः तथाऽष्टीनबन्नाणि चन्द्रेणसार्धसामर्द्धे चन्द्रीमध्येनतेषांगच्छतील्येवलचणयोगसंबंधयोजयन्ति कुर्वन्ति अनाथऽभिहि
तं श्लोकांशयम् पुण्यसुरीहिणीचिन्ता महाजिह्वणुराहकतियविसाहा चंद्रसयजोगति । यानिच दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्दयोगीन्यपिकदादिविज्ञपन्ति
यतीलोकश्रीटीकाकृतोक्त । एतानिनबन्नाषुभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरैणदक्षिणच युज्यन्ते कदाचिच्चद्रेण भेदमयुपयात्तीति ॥ तथाऽर्चिरादीत्येकादशविमान

चिन्ता ५ ।

तं श्लोकांशयम् पुण्यसुरीहिणीचिन्ता महा ४ चिन्ता ५ ।

यतीलोकश्रीटीकाकृतोक्त । एतानिनबन्नाषुभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरैणदक्षिणच युज्यन्ते कदाचिच्चद्रेण भेदमयुपयात्तीति ॥ तथाऽर्चिरादीत्येकादशविमान

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

अठनरकत्ताचंदेणं सठिपमर्दजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुण्यसु ३ महा ४ चिन्ता ५ ।

नामानोति ॥ ८ ॥ अथ नवमस्थानकं सुखावबोधम् । नवरमिह व्रतगुप्ति १ तदगुप्ति २ व्रतचर्याध्ययन ३ पार्श्वीयसूत्राणां चतुष्टयम् ज्योतिष्कार्थं च
यमस्य १ भोम २ सभा ३ दर्शनान्तरणार्थं चतुष्टयं खिल्याद्यर्थानि तथैव तत्र ब्रह्मचर्यगुप्तयो मैयुजविरति परिब्रह्मणोपायाः नोस्त्रीपशुपण्डकैः संसक्तानि संकी

पत्रंकरं ३ चंदात्रं ४ सूरान्नं ५ सुपइष्टात्रं ६ अग्निद्यात्रं ७ रिष्टात्रं ८ अरुणात्रं ९ अरुणुत्तरवक्रिस्रं वि
स्मानं देवताणुववन्ना तेसिणं देवाणं उक्तीरेणं अठसागरेवमाइठिई प० तेणं देवा अठरहं अरुमासाणं
अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससतिवा तेसिणं देवाणं अठहिं वाससहस्त्रेहिं अहारठेसमुपजइ
संतेगइयात्रविराष्टिआजीवा जे अठेहिं गवणहणेहिं सिज्जिस्सति बुज्जिस्सति जावअंतंकरस्सति ॥ ८ ॥

नववंजचेरगुत्तीउ प० त० नोइत्यीपसुप्रंजगसंस्तानि सिजासणाणि सेविसाजवइ नोइत्यीणं कइं कइत्ता ज्ञ

आठपत्थीपमआउखीकह्यो ब्रह्मलीके पांचमे कल्पे केतलाएक देवतानो आठसागरोपमआउखीकह्यो । पांचमे देवलीके जे देवता अर्चि १ । अर्चिसाली २ ।
वैरोचन ३ । प्रभंकर ४ । चद्राभ ५ । सूरभ ६ । सुप्रतिष्ठाभ ७ । अग्निराध ७ । अरुणाभ १० । अरुणीत्तरावतसक ११ । एम ११ विमाने देवता
पणे उपनछे । तेह देवतानी उक्कट्टी आठसागरोपम आउखीकह्यो तेह देवता आठपखवाडें खासीखासले जं चीसासले नीचीखासले नीचीखासमके तेह देव
ताने आठेवर्षसहस्रे गये आहारनोअर्थउपजे केतलाएकमथ्यजीव जे आठमवनेआतरे सीफस्से बूभास्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये । इति आठमोठाणीस
स्यत्तो ॥ ८ ॥ हिवेनवनेअधिकार सिखियेछे । नवमब्रह्मचर्य गुप्ति ब्रह्मचर्यरूप वृचने वाडिनीपरं राखिवानी उपाय ते ब्रह्मचर्य गुप्ति कहिये

र्षानि शय्यासनानि शयनीय थिष्ठराणि वसथासगानि वासेवसयिता भवतीत्येका १ नीस्त्रीणां कथा काथिताभवतीति द्वितीया २ नीस्त्रीगणान् स्त्रीसमुदा ;
 यान् सेवयिता उपासयिता भवतीति तृतीया ३ नीस्त्रीणा मिद्रियाणि नयननासा नेशादीनि मनोहराणि आक्षेपकरत्वात् मनोहराणि रम्यतया आलो
 कयिता दृष्टानि ध्याता तदेकाग्रचित्ततया दृष्ट्यभवतीति चतुर्थी १४ नोपपीतरसमीची गलत्सेहरस बिंदुकस्य भोजनस्य भोजको भवतीति पंचमी । नो
 पानभोजनस्थानिमात्रप्रमाणं यथा भक्त्वैव माहारकः सदाभवतीति षष्ठी । नोपूर्वत पूर्वकोडित अनुस्मर्त्ताभवति रत्नैशुनक्तीडितंस्त्रीभिः सहतद्व्याक्री
 डितिसप्तमी । नोशब्दानुपाती नोरूपानुपाती नोसर्गानुपाती नोस्त्रीकानुपाती काभीदीपकान् शब्दादीन् आत्मनीवर्णवादंब

वइ नोइत्थीणं गणाइं सेवित्ता नवइ वो इत्थीणं इंद्रियाणि मणोरभाइं श्यालोइत्ता निज्जाइत्ता
 नो पणीयरसन्नोई नो पाणन्नोयणस्स इण्डमायाए श्याहारइत्ता नो इत्थीणं पुब्बकीलिञ्चाइं समर

ते कहिछे । नहो रत्नोपपुण्डक संसक्त व्यासशयनपल्यंकादिक श्रासन ते बाजोटादिकसेयिताइयें । स्त्रीनोकथावार्तानकहे । स्त्रीना समुदायने सेवेनही
 स्त्रीना इंद्रिय नयन नासिकादिक मनोहर मनोरमनदेखें एकाग्रचित्तध्यायेनही । प्रणीतरसमीची नहीय गलत्सेहरसविभुजिमिनही पाणीसरस भोज
 न अधिकमात्राएश्रधिकजीमे नहीं वन्नीसकवलउपरांत जीमेनही स्त्रीने पाण्ड्यासंभोगपूर्वकीडा संभारे नही नशब्दानुपाती शब्दसरागी गीतादिकप्रते
 धनुरागीहीयनसांभले एमज रुडारूपजीवे नही रुडागंधनलेवे न रुडारसनीसादकरे न रुडासर्गपीताने शरीरलगडि आत्माभी स्वाषा मवंछि एतलीमं

नानुसरतीत्यर्थः इत्यष्टमी । नोसातसौख्य प्रतिबद्धापि भवति सातासातवेदनीया दुदयस्मात्प्रोद्यस्तीत्यतस्तथा अनेनच प्रथमसुखस्य व्यदार इतिनवमी
 इदं च व्याख्यानवाचनाद्वयानुसारेणकृतं प्रत्येकं वाचनयोरेवंविधस्तत्रभावादिति तथा कुशलानुष्ठान ब्रह्मचर्यं तल्लतिपादकाल्यध्ययनानि ब्रह्मचर्याणि तानि
 चा चारांगप्रथमश्रुतस्त्रंधं प्रतिबद्धानीति तथा अभिजित् नचत्रं साधिका नवमुद्गताद्यद्रेण साङ्गयोगं संबधं योजयति करोति सातिरेकत्वच तेषां चतुर्विंशो
 त्यामुद्गत्तस्य द्विषष्टिभागैः षट् पञ्चाच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्टिभागानामिति । तथाअभिजिदादीनि नवनचत्राणि चंद्रस्योत्तरेण योगंयोजयति तत्रोत्तर

इत्तान्नवइ नोसद्गणुवाइ नोरूवाणुवाइ नोगंधाणुवाइ नोरसाणुवाइ नोफासाणुवाइ नोसिलोगाणुवाइ नो
 सायासोरूपक्रपक्रिवद्धेयाविन्नवइ नवबंधचरेञ्चगुत्तिने प० तं० इत्यीपसुपंरुगसंज्ञाणं सिज्जासणाणसेवणया
 जावसायासुकरुक्कवद्धेयाविन्नवइ नवबंधचरे प० तं० सत्यपरिखा लोगविजने सोडुसणिज्जं सम्भत्तं
 ज्ञायंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुतं महपरिखा पासेणञ्चरहापुरिसादाणीए नवरयणीने उट्ट उच्चतेणहो

गार नकरे साता सुखेनविषे प्रतिबद्ध नहीये न डूवीरहे नवपूह्नचर्यनी अगुप्ति नविप्रकारि ब्रह्मचर्यं नरहे तेकहेछे । स्त्रीपयुपंडके संसक्तव्याप्तजे यथापत्यंका
 दिक आसनबाजोटादिक तेहेनसेवे नही एमपाळल्या नवबोल बखाण्छे ते उपराठालीजे एतले ब्रह्मचर्यनी अगुप्तिद्वय नडुमंबोले जेसातासुखेनविधि
 प्रतिबद्ध खूंचीरहे नवब्रह्मचर्यं एतले आचारांगसूत्रना प्रथमश्रुतस्त्रंधना नवअध्ययन काल्हा तेकहेछे । यस्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । श्रीतीणीय ३ सम्य
 क्त ४ । आयंती ५ । मतांतरे लोकसार धूताध्ययन ६ । मोक्षाध्ययन ७ । उपधानसूत्र ८ । महापरिज्ञा ९ । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुधर्मांहि प्रधाननवरलि

स्याद्विश्रुस्थितानि दक्षिणाशास्थित चंद्रण सहयोगमनुभवन्तीतिभावः बहुस्रमरमणिज्जाश्री इति अत्यंतसमी बहुसमी 5त एवरमणीयो ऽस्यतस्मान्भूमिभा
 गान्तेपर्वतापेक्षया नापि स्वाचारापेक्षयति तात्पर्य आवाहाएत्ति अतरेकत्वतिशेषः उवरिक्कित्ति उपरितनं तारारूपं तारजजातीयं चारंभमणं चरतिकरीति
 नवजीयणियत्ति नवयीजननायामा एवप्रविसन्ति लवणसमुद्रे यद्यपि पचयीजनसत्कामस्थ्याः समवति तथा नदीमुखेषु जगतीरध्रिभित्थिनैव तावद्यमाणाः ज
 त्या अश्रीजिनरुक्तेसाइरेगेनवमज्जते चं देणंसठिजोगेजोएइ अश्रीजियाइयानवनरुक्ता चंदरसुसुत्तरेणंजोग
 जोएइ तं० अश्रीजिसवणोजावन्नरणी इश्रीसेणरथणअज्जाएणुठवीए अज्जसमरमणिज्जाउ श्रूमिन्नागाउ नवजो
 यणसए उहुं अ्यावाहएउवरिक्षेतारारूवे चारचरइ जळूहुविणदीवे नवजोयणियामच्छापविसंसुवा ३ विजय
 नवहाथ जचपणे देहहुया अमीचनचन्नरुक्तेरी नवमुहत्तलगे चद्रमासोययोग जीजे सबधकरे अश्रीचियकी मंडीनव नचत्र चद्रमाने उत्तरदिसेयोगजेजिसं
 बंधकरे चालै तेकहैच्छे । अमीचि १ । अण्ण २ । धनिष्ठा ३ । श्रतभिषा ४ । पूर्वभाद्रपद ५ । उत्तरभाद्रपद ६ । रेवती ८ । अश्विनी ९ । भरणी ९ । एनव
 नचत्रजाणिया । एणोयेरज्जप्रभा पहिलो दुधिवीनी घणोसमी घणोरमणीक जे भूमिभाग भूमिनोजपत्योभाग तेहथकी नवशतयीजनजं चि आंतरेएतले पृथि
 वीथकी नवशतयीजनजं ची जइय तिहांजपिल्लो तारारूप एतलेगनीखरनोतारीजं वीके लवणसमुद्रे पृथिवीथकी सातसेनेजयीजन तारामंडल्लि । ७९०
 योजने तारा १० । योजनेसूर्य ८० । योजनेचंद्रमा ४ । योजनेअठ्ठावीस नचत्र ४ योजनेबुधनीतारी ३ योजनेमंगल ३ योजनेशुनैश्वर सर्वमिली नवसेयीजन
 थया । जंबूद्वीपमांही नवयी जमलांवासच्छपेसेके लवणसमुद्रेमांही पांचसेयीजनतांमच्छे एणेजगतीनेच्छिद्रे नदीमुखे नवयीजननामच्छे जंबूद्वीपमांही

गतीरंघी विलिनएतावानेव प्रवशइति लीकानुभावीवायमिति विजय द्वारस्यजंबूदीपसंधिनाः पूर्वदिश्ववस्थितस्य एगसिगाएति एकैकस्मिन् बाहाएति बाहौ

रस्यणंदारस्सएगमेगाए बाहाए नवनवभौमा प० वाणमंतराणं देवाणं सन्नाउसुहम्मानुनवजीयणाइंउहं उ
 च्चत्तेणं प० दंसणावरणिज्जस्सणंकम्मस्सानउत्तवरपगळीउ प० तं० निद्दा निद्धानिद्दा पयला पयलापयला
 थीणत्थी चक्खुदसणावरणे अचक्खुदसणावरणे उहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे इभीसिणं रथणप्पन्नाएपुढु
 वीए अत्येगइयाणणेरइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढुवीए अत्येगइयाणंनिरइयाणं नवसागरो
 वमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्येगइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्ये

खाडोमाहीआवे जंबूहीपना विजयद्वारेने एकेक वाहानिपासे नवनवभीमानगरके तथा उचठासकळीछे बाणमतरदेवनी सभा सुधर्मा नवयीजन जं चीजंप
 पर्णकहीजाणवी । दर्शनाररणीयनीजोकम्म तेहकर्मनी नव उत्तरपल्लतिकही तेकरुके सुरे जागे तेनिद्रा बइठांआवे ते प्रचला २ दुखेजागे तेनिद्रानिद्रा ३
 चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला ४ । धीणहौ अर्धमासुदेवनी बलहुवे ५ । चक्खुदसणाकाहिंये आंखतेहनी आपरण पडल तेचच्चुदंसणावरण ६ । चच्चुविनाथीष
 थाकतां चारइन्द्रिय तेहनां आवरण तेअचच्चुदंसणावरण ७ । अर्धवि दसणावरण ८ । भिबलदंसणावरण ९ । एणीयेरत्तप्रभाधुथिवीनेविषे केतलाएक नार
 कोनी नवपत्थीपम आउखीकह्यो । चउथी नरकाधुथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी नवसागरीपम आउखीकह्यो असुरकुमार देवनी केतलाएकनी नवपत्थी
 पमआउखीकह्यो । सौधर्मेशानदेवलोक्केनेविषे केतलाएक देवतामी नवपत्थीपम आउखीकह्यो । ब्रह्मदेवलीकनेविषे केतलाएक देवतामी नवसागरीपम

तस्य स्थानान्ताशया भेदाया चित्तसमाधिस्थानानि तापसमीजीवादिद्रव्याणामनुयोगीत्यादादयः स्वभावाश्लेषां चिन्तानुमेता धर्मस्ववाप्तुतचारिचालवास्तु सर्वे
 प्रभङ्गितस्तु षड्रिहरादिनिर्गदितधर्मस्थः प्रधानीयमित्येव चिन्ताधर्मविताया शब्देवद्यमाशसमाधिस्थानांतरापेचया चिकल्पार्थः सद्रति च, कल्याण भागो
 तस्य ताधीरसमुत्पत्त्यपूर्वा पूर्वाश्रियादीतीत्यावे ऽनुपज्ञाता तदुत्पादेऽश्रयापि तु जलपरजत्तन्नि कल्पानश्यालम्भभावात् समुत्पद्येत जायितस किं प्रयोजनाय चैयम
 तपसात् सर्वं निरयगंधर्म जीवादि द्रव्यस्वभाव मुपयोगीत्यादादिनां शुतादिरूपया जा शित्तए षड्रिज्ञयाज्ञातु ज्ञात्वाच प्रत्याख्यान परिज्ञया परिहरणीय
 जगत्परिहर्तुमिदमु ांभवति धर्मचिन्ताधर्मज्ञानकारणभूता जायतद्रति प्रथंच समाधिमुत्पत्त्याशस्य स्थानमुत्पत्त्याशभवे भवतीति प्रथमं तथास्तस्य निद्रावश्रवि
 ज्ञापज्ञानस्य दृग्गोचरं देवसंबद्रर्पणं तदायाश्याणामिति रूपकासमुत्पत्त्यपूर्वं समुत्पद्यति यथाभवती मत्तवीरस्या ऽस्त्रिकाश्रामे शूलपाणियत्वीपसर्गायसानि किंप्रयो
 जनचेद मित्यात् षड्रहातय सुमिणापाशितएति यथा येनप्रकारेणात्थः सर्वथा निर्व्यभिचार इत्यर्थः तंस्तत्रं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुं ज्ञातुं प्रवृत्तं भाविनीकृतादिः
 ज्ञानप्रद मित्यात् षड्रहातय सुमिणापाशितएति यथा येनप्रकारेणात्थः सर्वथा निर्व्यभिचार इत्यर्थः तंस्तत्रं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुं ज्ञातुं प्रवृत्तं भाविनीकृतादिः

ज्ञानप्रद मित्यात् षड्रहातय सुमिणापाशितएति यथा येनप्रकारेणात्थः सर्वथा निर्व्यभिचार इत्यर्थः तंस्तत्रं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुं ज्ञातुं प्रवृत्तं भाविनीकृतादिः

ज्ञानप्रद मित्यात् षड्रहातय सुमिणापाशितएति यथा येनप्रकारेणात्थः सर्वथा निर्व्यभिचार इत्यर्थः तंस्तत्रं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुं ज्ञातुं प्रवृत्तं भाविनीकृतादिः

ज्ञानप्रद मित्यात् षड्रहातय सुमिणापाशितएति यथा येनप्रकारेणात्थः सर्वथा निर्व्यभिचार इत्यर्थः तंस्तत्रं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुं ज्ञातुं प्रवृत्तं भाविनीकृतादिः

ज्ञानप्रद मित्यात् षड्रहातय सुमिणापाशितएति यथा येनप्रकारेणात्थः सर्वथा निर्व्यभिचार इत्यर्थः तंस्तत्रं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुं ज्ञातुं प्रवृत्तं भाविनीकृतादिः

ज्ञानप्रद मित्यात् षड्रहातय सुमिणापाशितएति यथा येनप्रकारेणात्थः सर्वथा निर्व्यभिचार इत्यर्थः तंस्तत्रं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुं ज्ञातुं प्रवृत्तं भाविनीकृतादिः

छेदसंवदितुमिति कल्याणसूचका वितथसंप्रदर्शनान्नेभवति चित्तसमाधिस्थानमिदं द्वितीयं तथासंज्ञानसंज्ञा साचयद्यपि हेतुवाद्दृष्टिवाद् दीर्घकालिकोपदे
 शभेदेनक्रमेण विकलेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिसमनस्क संबंधिलात्विधाभवति तथाचाह दीर्घकालिकोपदेश संज्ञाग्राह्येति सायस्यारिक्त ससंज्ञीसमनस्कसायस्यज्ञानं
 सान्निधानं तच्चेहाधिकृतसूत्रान्वया सूपत्तेर्जातिस्ररणमेव से तस्यासमुत्पन्नपूर्वसमुत्पद्येत कस्मैप्रयोजनायेत्याह पुब्बभविसुमारिण्ति पूर्वभावारम्भतु र्मुत्तपूव
 भवत्यसवेगात्ममाधि क्लयत्यतेज्ञतिसमाधिस्थानमेतत् तृतीयमिति। तथादेवदग्धन वासितस्यासमुत्पन्नपूर्वसमुत्पद्यते देवाहितस्यगुणित्वाद्दर्शनं ददति किंफलमि
 त्याह दिव्यं देविप्रधानपरिवारादिरूपां दिव्यं देवव्युत्तिविशिष्टां शरिराभरणादिदीप्तिदिव्यं देवानुभावत्तमवैक्रियकरणदिप्रभावं द्रष्टुमेतद्दर्शनं नयेत्यर्थः दे
 वदर्शनाच्चागमायैशुश्रूहधानाद्यं धर्मबहुमानद्यभवति ततश्चित्तसमाधिरितिभवति देवदर्शनचित्तसमाधिस्थानमिति चतुर्थं तथाश्रवधिज्ञानवासेतस्यासमुत्पन्नपू

समुत्पन्नपुष्टे समुपज्जिजा पुष्टं वेसुमारित्तए देवदं सणेवासे अस्समुत्पन्नपुष्टे समुपज्जिजा दिव्वं देवाहिं दिव्वं
 देवजुत्तं दिव्वं देवाणुत्तावंपासित्तए उहिनाणेवासे अस्समुत्पन्नपुष्टे समुपज्जिजा उहिणालोगंजाणित्तए उहिदं

काहिये से कहतां तेहने अस्समुत्पन्नपूर्वं जपनं नथी सेइ अर्थजपजे पूर्वभवसंभारवाने अर्थ पूर्वभवसभरे विशेष संवेगउपजे एवीजं चित्तसमाधि स्थानका ३
 तथा देवदर्शन सेकहतां तेहनेअस्समुत्पन्न पूर्व पूर्वउपजनी नथी तेहजेने उपजे ते सेअर्थउपजे । दिव्यप्रधान देवतानी ऋद्धिपरिवाररूप प्रधानदेवतानी युति
 विशिष्ट शरीराभरणदीप्ति प्रधान देवतानी अनुभाव वैक्रिय कारिवानी समर्थीइ देखवानेअर्थ देवदर्शनथी धर्मनेविषे विशेषआदरहोय तेहथीचित्तसमाधिहु
 इ एहचउत्थठाणं ४ । अश्रवधिज्ञान तेहजेने पूर्वनथी जपनं तेहजेने जपजे अश्रवधिज्ञानिकरी बोकासरूप जाणवाने अर्थ विशिष्टज्ञानथी चित्तसमाधिहोय एपां

हाण्येति इदं तु केवलमरणं सर्वोत्तमसमाधिस्थानमेवेति दशममिति । तथा अकर्मभूमिकानां भोगभूमिजनानां भोगस्थानां दशविधारक्तात्ति कल्पवृक्षाः । उपभोगत्ताएत्ति उपभोग्यत्वाय उच्चस्थिति उपस्थिता उपनता इत्यर्थः तत्र मत्तांगकाः मद्यकारणभूताः भिङ्गन्ति भाजनदायिनः तु डिङ्गन्ति तुर्यंगसंपादकाः

मंदरेण पुद्गलमूले दसजीयणसहस्राइं विस्कर्त्तेणं प० अरिहाणं अरिठनेमीदसधणुइं उहं उच्चतेणं होत्या क
 रहणंवासुदेवे दसधणुइं उहं उच्चतेणं होत्या रामेणबलदेवेदसधणुइं उहं उच्चतेणं होत्या दसनरक्ता नाणवुहि
 करा प० तं० भिगसिरअद्वापुस्सो । तिन्निअपुद्वाइमूलमस्सेसा । हत्योचिन्तायतहा । दसवुहिकरायना
 णस्स १ अकम्मचूमयाणंमणुअ्याणं दसविहारुस्सा उवन्नोगत्ताए उवत्थियाप० तं० महंगयाय जिंगाय तुहि

अशक्रिवा नेत्र्ये ए इजेत्रलोमरणते सर्वोत्तमचित्तसमाधिस्थानकदशम १० मेरूपर्वत मूलनेविषे दशसहस्रयोजन विष्कम्भपरिपिहुलपरिष्कम्भो अरिहंतअरि
 टनेमी बावीसमीतीर्थंकर दशवनुजंचपणेहुया क्कणवासुदेव नवमी तेहनी देहदशधनुषं चोचंचपणेहुयो रामबलदेव बलभद्र दशधनुषं चा उंचपणेहुया
 दशनचत्र ज्ञाननां इदिकरणहार कक्षा भगवंते तेकहेच्छे सुगशिर् १ । आर्त्ती २ । पुथ ३ अणिपूर्वा पूर्वाफाल्गुनी ४ । पूर्वाषाढ ५ । पूर्वाभाद्रपद ६ । मूल ७
 आश्लेषा ८ । हस्त ९ चित्रा १० । एह दशनचत्र ज्ञानने वधारेह मांहि भणवबिसे तो काहीं विघ्ननउपजे अकर्म भूमिजिहां धर्मतथा कर्मसंबंधी क्रिया
 नही तेअकर्मभूमि ५७ अंतरद्वीप अनित्रीस अकर्मभूमि एवं ८६ क्षेत्र युगलियानां सासतांछि । तिहांनां माणसे युगलियानि दशप्रकारिह्व एतले कल्पवृक्ष ।
 उपभोगने अर्थे उपस्थिता समीप आइंरक्षा यकाभोग्यअवि बांछापूर्वे एहया कक्षातेकहेच्छे । मत्तांगका मद्यनाकारणभूत जाणिवा १ भाजनदातार २

इं ठिई प० अशुरिंदवजाणं श्रोमिजाणं अत्येगयाइणं जहन्वेणं दसवास सहस्साइंठिई प० असुरकुमाराणं
 देवाणं अत्येगइयाणं दसपलिउवमाइंठिई प० वाथरवणस्सइ काइएणं उक्कोसिणं दसवाससहस्साइंठिई प०
 वाणसंतराणं देवाणं अत्येगइयाणं जहन्वेणं दसवाससहस्साइंठिई प० सोहम्मरीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं
 देवाणं दसपलिउवमाइंठिई प० बंजलोएकप्पे देवाणं उक्कोसिणं दससागरोवमाइंठिई प० लांतकप्पेदेवाणं अ
 त्येगइयाण जहन्वेणं दससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्म
 रम्मगं रमणिज्ज मंगलावत्तं बंजलोगवट्ठिसगं विमाणंदेवताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसिणं दससागरो
 वमाइंठिई प० तेणंदेवाणंदसहंअरुत्तमासाणं अणमतिवा पाणमतिवा ऊरससंतिवा नीस्ससतिवा तेसिणं

८ जघन्य आउखी एकसागरीपम भाभेरोच्छे । असुरकुमार देवनीकेतलाएकनी मध्यमआउखी दसपत्थीपमकह्यो । बादर प्रत्येक वनस्सतीकायनी उत्कष्ट
 दसप हस्तत्रयं आउखीकह्यो भगवते । वानवतर देवतानी केतलाएकनी जघन्य दशसहस्रवर्ष आउखीकह्यो । सौर्यम ईशानदेवलीकनेविधि केतलाएक देवत
 नी दशपत्थीपम आउखीकह्यो । पांचमे ब्रह्मदेवलीके केतलानी उत्कष्टी दससागरीपम आउखीकह्यो । छठेहांतक देवलीकनेविधि केतलाएक देवतानी जघन्य
 दससागरीपम आउखीकह्यो । पांचमे देवलीके जेहदेवता घोष १ सुघोष २ महाघोष ३ नंदिघोष ४ सुखर ५ मनोरम ६ रम्य ७ रम्यक ८ रमणीक ९ मंग
 लावते १० ब्रह्मलीकावतसक ११ एणिविमाणे देवतापणीउपना तेहनी देवतानी उत्कष्टी दशसहस्रवर्षनी आउखीकह्यो भगवते । तेहदेवता दशेपखवडि स्वा

माणकृतोऽन्नात्स्याऽऽत्रिभोजिनः अन्नकच्छत्यपंगमासान् शपत्पंचमीप्रतिमाभवतीति उक्तञ्च अष्टमिवउद्दसी सुपडिमश्राणगराईया। पयाईं अस्तिशाणवि
 रतिपरिमाणकडी पडिमाणजेदिसुब्जेसुत्ति ५। तथा दियामिरानापपि ब्रह्मचारी अशिणाइत्ति अक्कायौसानपपरि
 यड्भोई मवलयडोदिवसंबंधारीएय। रतिपरिमाणकडी पडिमाणजेदिसुब्जेसुत्ति ५। तथा दियामिरानापपि ब्रह्मचारी अशिणाइत्ति अक्कायौसानपपरि
 वंजकः कविल्यठने अनिसाइत्ति ननीशायामतौलनिशोदी यियड्भोईइत्ति विक्कटे मज्जटपकांशेदिवानपनाविल्यथः दिगापि एवाऽप्रकाशदियेनमुलेऽग्रनायथ
 वहरतीति विक्कटभोजी मौलिकडेत्ति अन्नपरिधानकच्छइत्यर्थः पछीप्रतिमितिप्रकृतं अयमन्नभावः प्रतिमापंचकोत्तानुष्ठानयुक्तास्य ब्रह्मचारिणः षण्मासान्या
 वलषष्ठीप्रतिमाभवतीति तथा सचित्तइत्ति अन्नपरिधानकच्छइत्यर्थः पछीप्रतिमितिप्रकृतं अयमन्नभावः प्रतिमापंचकोत्तानुष्ठानयुक्तास्य ब्रह्मचारिणः षण्मासान्या
 प्रकृतं इयमन्नभावना पूर्वोत्तप्रतिमापट्कानुष्ठानयुक्तास्य मासुकाहारस्य सप्तमासान् यावत्सप्तमी प्रतिमाभवतीति तथाप्रारभः पुथिव्यायुपमर्दनलक्षणः परि
 ज्ञातस्त्वथैव प्रत्याख्यातीयेनासावारंभपरिज्ञातः शोऽष्टमीप्रतिमिति । इहभावना समस्तपूर्वोत्तानुष्ठानयुक्तास्थारंभवर्जन मष्टीमासान् यावदष्टमीप्रतिमिति
 तथाप्रैथ्याशारंभेण व्यापारणीयाः परिज्ञातास्त्वथैव प्रत्याख्यातायेन संप्रेथपरिज्ञातः श्रावको नवमीति भावार्थेव पूर्वोत्तानुष्ठानयुक्तास्य माससोतलगेकरे प्रासुकप्राहा
री रतिपरिमाणकडे दिव्याविराड्विबंनयारीश्रिसिणाई विज्युज्जोई मौलिकडे सचित्तपरिन्नाए श्रारं
 भोजीदिवसेजिमे मौलिकतनथी बांधोपहिरणानी कच्छेणोमासखलेगे छुडीप्रतिमा ६ सचित्त आहारनी परिज्ञा पञ्चखाण माससोतलगेकरे प्रासुकप्राहा
 रकरे सातमी प्रतिमा ७ श्रारंभमृथिव्यादिक उपमर्दनलक्षणते जीणपरिज्ञात पचख्योति श्रारंभपरिज्ञात श्रावक श्राठमासलगेकरे एत्राठमी प्रतिमा ८ पेख्या
 रंभनेविषे परिज्ञात पचखाणके जेहनेते प्रेख्यपरिज्ञा श्रावककक्षिये एतलेनवमासलगे परपाळिं कामनकरावे एनवमीप्रतिमा ९ तेआवकने निमित्ते उद्दसी

नवमासान् यावन्नवमी प्रतिमिति । तथाऽऽदिष्टं तमेवयावक मुद्दिश्यकृतं भक्तमोदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्ट भक्तपरिज्ञातः प्रतिमितिप्रकृतं
 इहायभावार्यः पूर्वोदित गुणयुक्तस्याधार्मिकभोजन परिहारवतः सुरमुडितगिरसः शिखावतीवा केनापि किंचिद्गृहस्थतिकरे पृथस्यतत् ज्ञानेसतिजानामी
 त्यज्ञानेचसति नजानामीति ब्रुवाणस्य दशमसान् यावदेवंविधविहारस्य दशमीप्रतिमिति । तथा अस्मति निर्गन्धसहैद्यस्वदनुष्टान कारणत् सत्रमणभूतः सा
 धुकल्पर्यर्थः चकारः समुच्चये अपिसंभावनभवति आकङ्क्षितप्रकृतं हेअमण हे आयुष्मन्इति सुधर्मस्वामिना जंबूस्वामिन मामन्वयतोक्त मिल्येकादशैति । इहचे
 यभावना पूर्वोक्त समग्रगुणो पेतस्य सुरमंडस्य कृतलीचस्यवा गृहीतसाधुनेपयस्य इर्यासमित्यादिकं साधुधर्म मनुपालयतो भिचार्यैर्गृहिकुल प्रवेशेसति अस्मणे
 पासकाय प्रतिपन्नाय भिच्चादेयेति भाषमाणस्य कस्त्वमिति कस्मिञ्चित्त्वृच्छति प्रतिपन्नअमणोपासकोहमिति ब्रुवाणस्वैकादशमासन् यावदेकादशी प्रतिमा
 भवतीति पुस्तकांतरेल्वंवाचना दसणसावणप्रथमा कथयकंहितीया । कथसामाण्ये तृतीया । पोसहोयवासनिरए वतुर्थी । राइभक्तपरिज्ञाए पंचमीसचित्त

अपरिन्नाए पेसपरिन्नाए उद्दिष्टग्रहपरिन्नाए समणश्रूण्णविअमइ समणाउसो लोगंताउ इक्कारसण्हि एक्का

भातकरी तेजणपरिज्ञात पञ्चस्यो तेजदिष्टभक्त परिज्ञात दसमासलगे दशमीप्रतिमा १० सघलीप्रतिमाएं पाच्छिली २ प्रतिमानौकिरिया सायलेता अइये
 एतलेइथारमी प्रतिमाएंअमण भूतइए यतीनीपरी आधाकर्मी आहारटाले सुरमुडितशिरहेय शिखामस्कराखे पांचघरनी भिच्चालेइ उपासकरे आवी
 जीमे मासइथारलगे इयारमीप्रतिमा साधुनोवियवहे भिच्चाएजाए तिवरिकहिये मुक्तअमणोपासकने भिच्चायोकीणकपूछीयोकी कहेहू आवकळूएतलेइय्या
 रमीप्रतिमाकही ११ श्रीमहावीर सुधर्मास्वामीने आमनेके हेआयुमन् चिरंजीवी सांभलि लोकनाळेहडाथकी इयारयीजनअधिक इयारसेयीजनेआवा

द्यमर्थो विमानशतंभवतीतिकृत्वा व्याख्यातंप्ररूपितं भगवता अन्यैककवलिभिरिति सुधर्मस्वामिचनम् तथामन्दरेणपव्वए धरणितालाश्रीसिहरतले एकारस
 भागपरिहीणे उच्चत्तेणंपन्नत्ते । अस्यायमर्थः मेरुभूतलादारस्थ शिखरतलमुपरिभागं यावद्विष्कभापिचयया अंगुलादेरेकादशभागेन परिहीणीहानिमुपगतस्स
 उच्चलेनोपर्युपरिप्रपन्नतः इयमत्रभावना मन्दरोभूतले द्ययोजनसहस्राणिद्विष्कभतः ततश्चोच्चलेनांगुलेगतैगुलस्यैकादशभागे विष्कभतीहीयते एवमेकादशस्रं
 गुलज्वंगुलहीयते एतै नवन्यायिनैकादशस्रयोजनेषु योजनं एवंसहस्रेषुसहस्रं ततीनवनवत्यायोजनसहस्रेषु नवसहस्राणिहीयते । ततोभवतिसहस्रविष्कभ
 शिखरेइति अथवा धरणीतलादरणीतलविष्कभात्सकाशाच्छिखरतलं शिखरविष्कभमाश्रित्य मेरुरेकादशभागेन परिहीणीभवति कस्यैकादशभागनेत्याह
 उच्चत्तेणंति उच्चत्वस्यतथाहि मेरीरुच्चलं नवनवतिसहस्राणि तदेकादशभागेनवतेहीनोमूलं विष्कभापिचयया शिखरतलेशिखरस्य साहस्रिकत्वाच्चमूलविष्कभ

हेठिमगेविज्जयदेवायं एकारसमुत्तरेगेविज्जविमाणसतंश्रवइतिमस्कायं मंदेरणंपन्नए धरणितलाउसिहरतले

लभ्राता ८ । मेतार्यं १० । प्रभास ११ । मूलनच्चत्रना इग्यारताराकह्या नवत्रैवैयकमानमाहें सघले हेठलीत्रिक तेह त्रिकविमानवासी देवतानां इग्यारत्र
 धिकएकसी विमानभवनछे भगवतैकह्या मेरुपर्वत भूतलयकी शिखरतिहां उपरिलीभाग जिहां पंडगविमानछे तिहालगे विखभनी अपेचाएं एकारसभाग
 परिहीन उपरिउपरिकीजे एतले मेरुपर्वत मूलैदशयोजनपिहुली मूलयकी इग्यार अंगुलजचा बडीये तिहां विखंभणें एकअंगुलहीन करीये एमइग्यार
 गाजयेगाज हीनकरिये । इग्यारयोजने इग्यारसहस्र योजन उगरा । पिहुलपणे एकसहस्र योजन घटाडिये । इमकरता नेजंसहस्र योजने अंचीवडिये
 तिहां नवसहस्रयोजन षटीयां उपरि एकसहस्र योजन जगरा । पिहुलपणे मेरुपर्वत एकसहस्र जगिणी जखीभूमिमध्ये नेजसहस्र भूमियकी अंचीस

माश्रमिश्रहाभिन्नप्रतिमा तत्रमासिक्याद्यः सप्तमासिकान्ताः सप्तमासिनमासेनीत्तोरत्तरं वृद्धाएकादिभिर्भक्तपानदत्तिभिश्चेति तथासप्तसमरात्रिदिवान्याहो

स्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणदेवाणं एकवारसहस्राणं व्याहारठसमुष्यजइ संतेगइअणवसिद्धि
अ्याजीवा एकवारसहिंभवगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चस्संति परिनिव्वाइस्संति सब्बदुक्काणमंतक
रिस्संति ॥ ११ ॥ बारसन्निकूपणिमाउ पन्नहा तंजहा मासिअ्यान्निकूपणिमा दोमासिअ्या
न्निकूपणिमा तिमासिअ्यान्निकूपणिमा चउमासियान्निकूपणिमा पंचमासियान्निकूपणिमा ढमासियान्नि
रूपणिमा सत्तमासियान्निकूपणिमा पढमासत्तराइंदिअ्यान्निकूपणिमा दोच्चासत्तराइंदिअ्यान्निकूपणिमा त

ने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानी इग्यार सागरोपम आउखीकछो । तेहदेवता इग्यारे पखवाडे अर्द्धमासे खासीखास घणाले जघो खासले नीचोखास
मंके तेहदेवतानी इग्यार सहस्रवर्षे आहारनीअर्थ वांछापजछे । संसारमाहे कोतलाएक भव्यजीव जेह ग्यारभव ग्रहणकरी एतले इग्यारभवने आंतरे सी
भस्से ब्रूमस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनी अंतकरिस्से । इतिइग्यारसंठाणंसंमंतं ॥ ११ ॥ हिवे बारमी अतिकार लिखियेछे । भित्तु उत्तमसंहनननी
धणी तथा जवन्य नवमा पूर्वन् वीजं वस्त तेहनी पारगामीहीय । उत्कृष्टो दसपर्व कोइएकगुरुनी आज्ञा मांगी गच्छमाहि पिणहोइ महासत्वनी धणीज
यति तेहनी बारप्रतिमा अभिग्रह रूपकही तेकहेछे । पहिली भित्तुप्रतिमा एकमासिकी एकमासलगे भात पाणीनी एकदायीले एकमासदीठ भातपाणी
नी एकीकदाती वधारे सातमासलगे सातमेमासे सातसात भातपाणीनीदातीले लवणखड मात्रदाती कहिये १ । बीजी प्रतिमा विमसिकी २ । बीजीप्रति

निकाचनच्छंदं निमंत्रणमित्यर्थं तत्रयथोपस्थाहारेः शिथ्यगणप्रदानेनसाध्यायेनच सम्भोगिकं निमंत्रणशुद्धः श्रेष्ठतथैव तथाश्रबुष्ठाशोतियावरेत्ति आभ्यु
 तानमासनत्यागरूपमित्यपरं सम्भोगासम्भोगस्थानमित्यर्थः तत्राग्युत्थानं पार्श्वस्थादिः कुर्वं स्वादिसम्भोग्युत्थानलक्षणत्वाच्चाग्युत्थानस्य किंकरतांचप्राच्युर्णकरत्वानायाय
 र्थायां किंदिगमणादि करोमीत्येवंप्रत्यक्षचणं । तथा अथासकरणे पार्श्वस्थादिधर्मीयुतस्य पुनस्त्वैवसंस्थानलक्षणं तथा अभिभक्तिंवापुत्रभावलक्षणं कुर्येन
 गुप्तो सम्भोग्यसायितान्वयथागम्यं कुर्वन्शुद्धः साधु र्वतिनस्त्वद्वेहल्लयानादिकारुंमयाक्तः ससूत्रमेवास्खलितदिगुणोपितसुधारयति एवमावर्त्तं शिरोनयनादियच्छक्तीति तल्ल
 तथैवासम्भोग्यसत्रचायविविधैः साधु र्वतिनस्त्वद्वेहल्लयानादिकारुंमयाक्तः ससूत्रमेवास्खलितदिगुणोपितसुधारयति एवमावर्त्तं शिरोनयनादियच्छक्तीति तल्ल
 रोल्लेवंचाग्रठग्रहत्तर्वदन विधिरितिभावः वेयावश्चकारणेद्रयति वेयाहृत्य माहारीपधदानादिना प्रथमगणादिमात्रकार्येणादिना अधिकरणोपग्रमनेनचोपष्टं
 भकरणं तस्मैयवियेसम्भोगोभवतीति । तथासमोसरणंति जिनस्त्वनेरथानुधानपट्टयात्रादयोबहवः साधयोमिलन्ति तल्लमवसरणं इहचक्षेत्रमाश्रित्यसाधूनां
 साधारणोवशाहोभवति वसतिमाश्रित्यसाधारणो ऽसाधारणोवेति अनेनचान्येयवगृह्णाउपलक्षिततत्त्वानिके तथा वर्षावगृह ऋतुब्रह्मावगृहो वृष्टवासावगृ
 ष्चति एकैकथायंसाधारणवगृहः प्रत्येकावगृहयेतिद्विधा तत्रयत्क्षेत्रंवीपकत्वावर्थं युगपत्पृष्ठादिभिः साधुभिर्भिन्नगच्छैरनुप्राप्यते ससाधारणोयत्क्षेत्रं
 करणे वेद्युवेद्युकरणेषु समेसरणं संनिसिज्जाय कहाण्ड्यपबंधणे दुबालसात्रत्वेकितिकम्मे प० तं० दुदुणयं
 नी ४ । सम्भोगी साधुभूषी वस्त्रशिथ्यादिकदेतो सम्भोगी पासत्यानिदेतो विसंभोगी ५ निकाचन निमंत्रण माहोमांही शिथ्युत्थानायायादिकै करतोशुद्ध ६ । व
 हेप्राबाएथके उठीउभा थाइवी ७ । अपरकहतां अनिरतबील तथा विविधिकरी कृतिकर्म वादणानो करवी बडानिबांदणानो देवी ८ । वेयावचनो करवी

कसाधेनुज्ञायात्रिताः सप्रत्येकीवगृह्णति । एवंचेतेष्ववगृहेषु आकुश्यादिना अभ्यास्यंमचित्तंश्लिष्य मचित्तंयस्वादिगृह्णन्तोऽनाभोगेनचगृहीतं तदमर्ण्यतः
 समनीज्ञाश्रमनीज्ञाय प्रायश्चित्तिनोभवंत्यसम्भोग्याः पार्श्वस्थादीनांवावगृह एवनास्ति तथापियदितत् चेन्नकुलकाम्यत्रैवचसंविगानिर्वहंतिततस्त्वक्षेत्रपरिहरं
 लेजयं पार्श्वस्थादीनांवावगृह्णन् विस्तीर्णं संविगान्याद्यन्न निर्वहति ततस्तत्रापि प्रविशति सचित्तादियगृह्णति प्रायश्चित्तिनोपिनभवतीति आहच समण
 श्रममणुत्रे अदिन्नश्रणा भवगिपहमणेवासम्भोगीसुकरणं पृथक्करणमित्यर्थः इयरेयश्रलंभेषुक्षिन्ति इतरान्पार्श्वस्थादीनित्यर्थः तथा सत्रिसिञ्ज्यायति निषद्या
 आसनविशेषः साचसम्भोगकारणभवति तथाहि सनिषद्यागत आचार्यो निषद्यागतेन सम्भोगिकाचार्येण सह श्रुतपरिवर्त्तनां करोतिशुद्धः अथामनीज्ञापा
 र्श्वस्थादिसाध्वीगृहस्थैः सह तदाप्रायश्चित्तीभवति तथाकहाएयपवधेति कथावादान्ननिषद्या विनानुयोगंकुर्वतः शृण्वतः प्रायश्चित्तं तथानिषद्यायामुपवि
 ष्टः सूत्रार्थोप्रच्छति अतिचारान्वालोचयति तदाकहाएयपबंधेति कथावादादिकापबंधात्तस्याः प्रबंधनंप्रबंधेनकरणं कथाप्रबंधनंतत्रसम्भो
 गाऽसम्भोगीभवतः तत्रसमश्रुपुगम्यपवाचयवेन अयावयवेनवाक्केन यत्तत्समर्थनंसकलजाति विरहितो भूतार्थाऽन्वेषणापरोवादः सएवच्छलजाति निर्गतस्थानप
 रोजस्यः यत्रैकस्यपक्षपरिग्रहोस्तिनापरस्य साद्रूप्यमात्रप्रवृत्तावितखडा तथाप्रकीर्णकथाचतुर्थी साचोत्सर्गकथास्तिकनयकथावां तथानिश्चयकथापंचमी । सा
 वापवादकथा पर्यायास्तिकनयकथाचेति तत्राथास्तिस्रः कथाश्रमणीवर्जैः सहकरोति अमणीभिसुसहकुर्वन् प्रायश्चित्तीचतुर्थविलायांवा लोचन्नपिविसम्भोगा
 ह्नुइति रूपकइत्यस्य संक्षेपार्थोविस्तारार्थसु निशीथपंचमीद्विकभाथाद्वसेयइति तथादुधालसावत्ते किइकस्मेति द्वादशावत्ते क्तिकमवद्वनकं प्रस्रतद्वाद
 शावत्ततामेवास्थानुवद्वनशेषांय तद्वर्मानभिधित्तिरूपकमाह दुश्रीणएत्यादि अवनतिरवनमुत्तमांगप्रधानं प्रणमनमित्यर्थः हेऽवनतियस्मिंस्त्वधवनतं तत्रैकंय

संवत्समापयतीति तथाथिजय राजधानी असंख्याततमेज्जूहीपे आद्यजंजूहीपथिजयाभिधान पूर्वद्वाराधिपस्य थिजयाभिधानस्य पत्न्योपमस्थितिकस्य देवस्यसं
बंधनीति तथारामोन्मयमीयलदेवः देवसिं गयति देवलंपंचमदेवलीके देवलंगतः तथासर्वजघन्यारात्रि रुत्तरायणपर्यताहोरात्रस्यरात्रिः साचद्वादशमौहृति

णसथसहस्राइं श्यायामविरुंक्रमेणं प० रामेणं बलदेवे दुवालसवाससयाइंसखाउथं पालित्तादेवतिंगए मंद
रस्सणं पद्मयससचूलिञ्चामूले दुवालसजोयणाइं विरुंक्रमेणं प० जंबूदीवस्सणं दीवस्स वेइञ्चामूले दुवालस
जोयणाइं विरुंक्रमेणं प० सख्जहन्निञ्चाराइ दुवालसमुज्जात्तिञ्चा प० एवांदिवसोविनायह्वो सख्ठसिठस्सणं

वर्त क्खवेला गुरुनेपगे वांदणाकीजे । अहीकाय एपाठकहीविहुवेलाथइ १२ आवतथया चीसरां ४ वेला गुरुनेपगे मस्सवानमाडिये । विणीगुप्ती मनवचन
कायानी गुप्तिकीजे । उपवेसवीविला वांदणानेअथे अयग्रहमाही आवीने एगनिखमण अयग्रहवाहिरि पहिलेबांदणे एकवेला नीकली बीजीविला गरुपगे बटा
ज वांदणे समापीएपाठकही एहसमवयांग वृत्तिनीभाव । जंबूहीपनी पूर्वनी पोलीनीधणी विजयदेवता तेहनीराजधानी असंख्यातमे जंबूदीपेछे बारयोज
नसहस्र एतले १२ लाखयोजन लांबपणेपिहुलपणेकही रामबलदेव कृष्णवासुदेवनी बडोभाई बारसेवर्ष सर्वआउखूपालीने देवपणूपास्या पांचमेदेवलीके पहुंचता
मेरुपर्वत उपरि सहस्रयोजन पिहुलीछे । तेहनेसेविचि ४०० योजनजंची चूलिकाछे । तेहनीमूल १२ योजनबीची आठउपरि थिखरे थारयोजन पिहुलपणी
कह्यो । जंबूहीपनी चोपखेर गढरूप वेदिका आठयोजन जं चीछे । जेहवेदिकानीमूल १२ योजनविचि ८ उपरि ४ योजन पिहुलपणेकही भगवते सर्वजय
न्यरात्रि उत्तरायणेने छेहडे कर्कसंक्रातिनी आसाढीपूनिमनी धणीनाद्धीरात्रि बारहमूर्तहुइ एतले २४ घडीनी रात्रिकही । एमदिवसपरिजाणिवी ।

काचरुधिरिति घटिकाप्रमाणा लोकप्रसिद्धासतिरिका सामान्या एवंदिवसोविति । सर्वजघन्योद्गादश मीहृत्तिकएवेत्यर्थः सचद्विषयनपर्यंतदिवसति ।

महाविमाणस्स उवारिस्नाउंचूलिच्छाउ दुवालसजोयणाइं उहुंउप्यइच्छा इसिपन्नारनामपुढवी प० इसिपन्ना
राणंपुढवीए दुवालसनामधिजा प० तं० इसिसत्तिवा इसिपन्नारत्तिवा तणुइवा तणुअरिस्तिवा सिध्दित्तिवा
सिधालएत्तिवा मुत्तीवा मुत्तालएत्तिवा बंन्नेत्तिवा बंन्नेत्तिवा लोकपरिपूरणात्तिवा लोगगचूलिच्छाइ
त्रिणायननी केहलोदिवस मकरसंक्राति पोसीपूनिमनी १२ मुरुर्तनी २४ घडीनी दिवसकह्ना सर्वश्रथं जिहंगई थकेसीधा एकावतारीपणामाटे तेहसी
वार्थसिध महाविमान कही तेहनी उपरिली चूलिका शिखराग्रथकी १२ योजनके ऊंची उव्यत्तिने जईने इषलाभार नामप्रथिवी सिध्दिशिलाकही रत्नप्रभा
दिक वीजी पृथिवीनी अपेजाये ईषप् थोडेके प्राम्भार विस्वार तथा पिण्ड जेहनी तेहईषत्प्रभार सिध्दिशिलाके तेहना १२ नामधिय कहवा नामकह्ना ते
कहेके । ईपप् कहीये थोडो ४२ लाखयोजन प्रमाणमाटे १ ईषलाभार बीजी पृथिवीनी अपेजाएं थोडा २ तनूपातलीविचि ८ योजन जाडेके हडेमाखि
नाआंख सरीखी पातली ३ तगुतरीघणीज पातली ४ तिहां पहुंचथके जीवनाकार्य सीमे तिसिद्धिकहिये ५ सिध्दश्रुच्छे तेहनुं आलयकहता घरते सिबाल
य ६ तिहां जीवपहुंताथकी कर्मथकी मंकारातमुत्ति ७ सुक्कजेसिध तेहनुं आलयघरते मुत्तालयः ८ ब्रह्मसकलोक तेहमाय ९ ब्रह्मावतंसक ब्रह्मसकलोक ते
हनी मुगुट रूप १० लोक १४ राजलोक तेजिणीकरी प्रतिपूरण ११ लोक १४ राजलोक तेहनेसाथे चूलिकाचोटी रूपशिखररूप तेली
कायचूलिका १२ एणीएरत्नप्रभा पहिलीपृथिवीनेविधि केतलाएक नारकीनी वारपलीपम आजखीकह्नी । पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविधि केतलाएक नारक

वा इमीसेणं रयणप्यन्नाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं बारसपलिउवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्ये
 गइयाणं नेरइयाणं बारसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं बारसपलिउवमाइं
 ठिई प० सीहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं बारसपलिउवमाइं ठिई प० लंतेकप्पेसु अत्येगइ
 याणं देवाणं बारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिंदे महिंदज्जयं कंबु कंबुगीवं पुंस्कं संपुंस्कं महापुंस्कं
 पुंठं संपुंठं महापुंठं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवळिसं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्को
 सेणं बारससागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा बारसणं अठमासाणं याणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा
 नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं बारसहिंवाससहस्सेहिं याहारठे समुप्यज्जइ सतेगइया त्रवसिंठिइया जीवा

नो बारसागरीपम आजखीकह्यो । असुरकुमार भवनपती देवतानी बारपत्तीपम आजखीकह्यो । सौधर्म ईयानकल्ये देवलीके केतलाएक देवतानी बार
 पत्तीपम आजखीकह्यो । तातक छठदेवलीके केतलाएक देवतानी बारसागरीपम आजखीकह्यो । तातककल्ये जेदेवता महिंदे १ महिंदेखज २ । कंबु ३ ।
 कंबुगीव ४ । पुंठ ५ । संपुंठ ६ । महापुंठ ७ । पुंठ ८ । संपुंठ ९ । महापुंठ १० । नरिंद ११ । नरिंदकांत १२ । नरिंदीतरावतंसक १३ । एणे १३ विमानि दे
 वतापणे जपनछि । तेहदेवतानी उक्कूथी बारसागरीपम आजखीकह्यो । तेहदेवतानी बारअईमासे पखवाडे खासोखास घणंलि जंचोले नीचोउखासले

क्रान्ताना व्यापाराणांप्रयोगः सन्नयोद्गविधः पंचदशानांप्रयोगाणामर्ध्वे आहारकाचारकान्निद्रलक्षणकायप्रयोगद्वयस्य तिर्यामभावात् तीहिसव्यभिचाम
 तसः मंत्रमयंतत्रसंयतमनुश्राणासिधे नतिर्यामिदिति तत्रसत्त्वासत्योभयासुभयसत्त्वावा द्यत्वारो मनःप्रयोगाः याक्प्रयोगश्चेति श्रुष्टीपुनरीदिकादयः पञ्च
 कायप्रयोगाः एवमयोद्गमिति । तथासूत्रमण्डलस्यादित्यविमानद्वयस्य योजनं सूत्रमण्डलयोजनं तत् । एतदित्यलंकारिच्योद्गयधिरियपद्धिमार्गे येषां भागानामिकम
 द्यायोजनंभवति तैर्भागेयोजनस्य सर्वधिमिकुनंप्रज्ञप्त मष्टचत्वारिंशद्योजनभागद्रव्यार्थः वज्राभिलापिनहादश वज्रराभिलापिन लोकाभिलापिन चैकादशविमाम

असन्नामोसमणपल्लगे सच्चामोसवइपल्लगे असच्चामोसवइपल्लगे उरालिअसरीरका
 यपल्लगे उरालिअमीससरीरकायपल्लगे वेउद्विअसरीरकायपल्लगे वेउद्विअमीससरीरकायपल्लगे कम्मससरीरकाय
 पल्लगे सूरसंढलं जोयणतेरसेहिं एणसठिअगेहिं जोयणस्सजणंइअसिणं रथणप्पअणु पुढवीए अय्येगइअ्याणं

मनीआपार साचीनही जूठोपिणनही ४ वचनयोग सांचीधीलवी तेसत्यवचनयोग १ एमठ्ठपावचनयोग तेहनंकारण २ । रात्यासत्य तेभिअभापाएं बोलयो
 २ । असलास्था तेअवहारवचनयोग जाइआबी लेदे एहवीभापा ४ । काद्याना सातायोगछे तेमाहि आहारक १ । माहारकमिअ २ । एह तिर्थवनेनहीय
 तेत्तेय तेहपूरधरनेत्तेई तेमाटे पांचकाययोगलीजि औदारिक शरीरकाययोग १ औदारिकमिअ शरीरकाययोग २ वैक्रियशरीरकाययोग ३ वैक्रियमिअय
 शीरकाययोग ४ पपर्याप्तावस्थाएं । कामणशरीर काययोग ५ । एममनीयोग ४ वचनयोग ४ काययोग ५ सर्वमिली १३ यथा सर्वानूंमांडलू योजनने एकसठोएतेरभा
 गेजंगीकही । एतले एकयोजनना ६१ भागकीजि तेहवा १३ भाग सर्वानूंमांडलं पिह्लूंछे । एतले एकसठोया ४८ भागसर्वानूंमांडलं पिह्लूंछे । एणीएरत्तप्रभा पहिली

नाण्यवायंचिन्ति यत्रज्ञानंमत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत्ज्ञानप्रवादमिति । सच्चयत्रायपुञ्जंति यत्रसत्यः संयमः सत्यवचनवा समेदेनयत्र प्रोच्यते तत्सत्यप्रवादपूर्वं तत्तत्त्रायप्यवायपुञ्जंति यत्रात्मजीवोनेकनयैः प्रोच्यते तदात्मप्रवादमिति कस्मप्यत्रायपुञ्जंति यत्रज्ञानावरणादिकर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्रवादमिति पञ्चकलाभंवेनवमन्ति यत्रगत्याख्यानस्वरूपवर्णते तत्प्रत्याख्यानमिति । विद्याशुशुष्यवायन्ति यत्रनेकविधा वर्यते तद्विद्यानुप्रवादं अवरूपपाण्ड वारसंपुञ्जंति यत्रसम्यग्ज्ञानादयोऽवंध्याः सफलवर्णन्ते तदवध्यमिकादय यत्रप्राणाजीवाश्रायुधानिकाधार्यन्ते तत्याणायुधितिवादाशंपूर्वं तत्तोक्तिरियविसालंति यत्रक्रियाः कायिक्यादिकाः विशालाविस्तीर्णाः समेदत्वादभिधीयते तत्विद्याविद्यालापुष्वं तह बिदुसारवत्ति लोकशस्त्रेऽत्रलुगोद्गुड्य. तत

वायं तत्तोनाणप्यवायंच सच्चप्यवायपुञ्जं तत्तोत्रायप्यवायंपुञ्जंच कस्मप्यवायपुञ्जं पञ्चस्काणं जवेनवमं वि
ज्जञ्चणप्यवायं श्रुवंऊप्राणान् वारसपुञ्जं तत्तोकरियविद्यालंपुञ्जं तह बिदुसारंच श्रुग्गोणीश्रुस्सणंपुञ्जस्स चज

प्ररुयो ४ । ज्ञानप्रवाद जेमाहि मत्यादिकज्ञानस्वरूपभेदेकहो ५ । सत्यप्रवादपूर्वं सत्यसंयम तथा सत्यवचन तेह जेहमां चिहुभेदेकहो ६ । तिवारपछे आत्मप्रवादपूर्वं जिहं आत्मजीव अनेकनयकरीकहो ७ । कर्मप्रवाद जिहं ज्ञानावरणीयादिककहो ८ । प्रत्याख्यानपूर्वनवसूं प्रत्याख्यान स्वरूप जिहं वर्येवो ९ । विद्यानुप्रवाद जिहं अनेकविद्याना अतिशयवर्णव्याछे १० । अवध्य इत्यारसू जिहं सम्यक् ज्ञानादिक अवध्यसफलवर्णव्या ११ । प्राणायु वारसूं पूर्वजिहं प्राणजीव अने आउखी अनेकधारवर्णव्या १२ । तिवार पछीक्रियाविशाल जिहं कायिक्यादिक क्रियाविशाल विस्तीर्णसातेकहो १३ बिदुसार जेह

सप्त तथा च जीवोत्तरा गच्छन्त्योऽयमथं तमुहं तं एवेति तथा संयोगीकमस्ती मनःप्रभृत्यतिव्यापारवान् केद्वत्तान्नीति तथा अयोगीकवली निरुधमनःप्रभृतिवोगः प्रे
 तिगती ह्यपवाचरो द्विरणमात्रं कांश्यायदिति चतुर्दशजीवस्थानमिति भरुह्यादि भारतैरवलीजीवि इह भरतमेव तत्तवारो पितृगुणको देडाकाररपनस्य ली च
 वेभवतः तत्र भरतस्य हिमवतोऽर्वागन्तराः प्रदेशाः अणिजीवाः ऐरवतश्चावगिरारिणः परतो गतप्रदेशाः भेषीति गरतैरावतजीवा चाउरंतचक्रवटिस्सत्ति च
 एया उवसंतमोहेया खीणमोहे संजोगीकेवली नरहेवयाउणजीवाउ चउद्सचउद्गराजोयणसहस्साइ चतारि
 अणुजतेरेजोयणसए बध्णुकू संजोगीकेवली इयारमोडकी वारमेवडितेह ११। वार
 पिमनि प्रवतरे अने पाछोपडेतो छे प्रावी र्पाहले एउपग्रमअशोनी धणी जीवपकअशोनी करतो दशसगुणठाणाशी इयलप्राणी १३। चौदमी असंयोगी केव
 मोजीणमीह सर्वथापि जीणछे मोहजिह्वंकिणवीतराण १४ गुणठानकाबमान मिच्छे १ सासण २ अपिरय ३ परभधियाउणसे सगुणठाणाप्रच्छसति
 लो मनप्रभृतिवोगत्रिण जिह्वंत्वाछे ऋसंपंचकरकाबलाय ४ पुष्पाणकीडिपणग ५ तेरसस १३। बहुपचकरचरस १४ अंतहुसे सगुणठाणा १८ धरतऐरवत एह्वविहु
 अेभगच्छाविश्याहोय सासणे १ तिनोसयरचाउय २ तिनोसयरचाउय ४ पुष्पाणकीडिपणग ५ तेरसस १३। बहुपचकरचरस १४ अंतहुसे सगुणठाणा १८ धरतऐरवत एह्वविहु
 ज्ञेनना जीव तिहा हिमवंतपर्वायजन सहस्रनी चारसेएकोत्तरयोजन एकयोजनना अोगणीसहाइयाकभागआयाम लांबापरिकेक्षा एकएवने राजनि पूर्वादिक्
 वो एहवीहुजीव चौदचौदयोजन सस्रनी चारसेएकोत्तरयोजन एकयोजनना अोगणीसहाइयाकभागआयाम लांबापरिकेक्षा एकएवने राजनि पूर्वादिक्
 चणिमसमुद्र चउथीहिमवंत पर्यंत एतलाबगी भूमिना अतभाग ४ छे। जिह्वंतिह भूमिनीधणी एह्ववी चक्रवती तेहने १४ रत्नहोय पोतानी जातिमांदि जि

त्वा रोक्ताविभागा यस्यांसाचतुरंताभूमिः तन्मश्वः स्वामितयेतिचतुरंतः सचासौ चकवत्तीचेतिविग्रहः रत्नानिखजातीयमध्ये समुक्कथंतिवस्तुनीति यदाह
 रत्ननिगद्यते तज्जातीयदुक्कृष्टमिति गाहावद्भूतिगृहपतिः कोष्ठागारिकः पुरोहित्यत्ति पुरोहितः शालिकर्मादिकारी बहुदृत्ति यद्विकिरथादिनिर्मापयिता मणिः
 प्रथिवीपरिणामः काक्किणीसुवर्णमयी अधिकरणौसंस्थानेति इहसप्ताद्यानिपचेद्रियाणि शेषाण्येकेन्द्रियाणीति श्रीकांतमित्यादीन्यष्टीविमानानां नामानीति

दुस्सरयणा प० तं० इत्यीरयणे सेणावद्भूयणे गहावद्भूयणे पुरोहित्यरयणे बहुदृयणे व्यासरयणे हल्यिरयणे
 व्युसिरयणे चक्षुरयणे लत्तरयणे चम्पूरयणे कागिणिरयणे जंबूद्वीविणदीवे चउद्वसमहानईले पुष्ट्या
 वरेणलवणसमुद्रं समुप्यति तं० गंगा सिंधु रोहिण्या रोहिण्यंता हरिया हरिकंता सीञ्या सीउदा नरकंता
 नारिकांता सुवसंकूला रूप्यकूला रत्ना रत्नवई इमीसेणरयणप्यन्नाए पुढवीए अत्येगइयायाणं नेरइञ्जाणं

उरुक्कष्टवस्तु तेहनरत्नकहिये तेकहच्छे । स्त्रीरत्न १ । सेनापतिरत्न ३ । गृहपतिरत्नतेकोठारी ३ । पुरोहितश्रांतिक कर्मकारी ४ । बाईकीसूत्रधार ५ । अश्व
 घोडोरत्न ६ । हस्तिरत्न ७ । एहसातयचंद्रियरत्न । असिखरत्न ८ । दुडरत्न ९ । चक्ररत्न १० । छत्ररत्न ११ । चर्मरत्न १२ । मणिरत्न ६ । पृथिवीपरिणाम १३ ।
 काक्किणीं सुवर्णमयी अहिरण्यसठाणि ७ एह एकेंद्रियरत्न चौद १४ अद्या । जंबूद्वीपनेविषीचौद महानदीजाणवी । पूर्वपश्चिम समुद्रसमर्थ्यं पृथुचच्छे । पूर्वलव
 णसमुद्रे ७ पश्चिमसमुद्रे ७ पृथुचे तेकहच्छे । गंगा १ । सिंधु २ । रोहिता ३ । रोहितंसा ४ । हरिता ५ । हरिकांता ६ । सीता ७ । सीतोदा ८ । नरकांता
 ९ । नारिकांता १० । सुवर्णकूला ११ । रूप्यकूला १२ । रत्ना १३ । रत्नवती १४ । एणीएरत्नप्रभा पहिली प्रथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी चीदीपल्लीप

चउदसपलिनेवमाइं ठिई प० पंचमीएणं पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० अ
 चउदसपलिनेवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं चउदससागरोवमाइं ठिई प०
 चउदसपलिनेवमाइं ठिई प० लंतएकएपेसुदेवाणं अत्येगइयाणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिक्कंतं सिरिसहि
 सुरकुमाराण देवाणं अत्येगइयाणं जहन्नेणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० देवत्ताए उववन्ना तेसिणं
 देवाण चउदसपलिने वमाइं ठिई प० अत्येगइयाणं जहन्नेणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० देवत्ताए उववन्ना तेसिणं
 महासुक्कोकप्पे देवाणं अत्येगइयाणं जहन्नेणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा चउदसहिं अत्थमारोहिं अत्तेगइयाणं
 अं सिरिसोमनस लंतयं काविठ महिंदं महिदकत महिदुत्तरवकिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं
 देवाणं उक्कोसेणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० चउदसहिं वाससहस्सहिं अत्थमारोहिं अत्तेगइयाणं
 वा उरस्ससत्तिवा नीरस्ससत्तिवा तेसिणं देवाणं चउदसहिं वाससहस्सहिं अत्थमारोहिं अत्तेगइयाणं
 म आउखीकळो पचमीधूमप्रथा पृथिवीनिविषे केतलाएक नारकीनी चउदसपल्लोपम आउखीकळो । असुरकुमार देवतानी केतलाएकनी चउदसपल्लोपम आउखीकळो
 खीकळो । सोधर्म ईगानदेवलोके केतलाएक देवतानी चउदसपल्लोपम आउखीकळो । लांतक देवलोके केतलाएक देवतानी चउदसपल्लोपम आउखीकळो । तेह
 महासुक्क सातमे दे३ लोके केतलाएक देवतानी जघन्यो, चउदसपल्लोपम आउखीकळो छहे देवलोके जेह देवता श्रीकांत १ श्रीमहादेवता २ श्रीसोमनस १ लां
 तक ४ काविठ ५ महेंद्र ६ महेंद्रकांत ७ महेंद्रीत्तरावतसक ८ एह आठ विमाने देवतापणे उपनाच्छे । तेह देवतानी उल्कणी चउदसपल्लोपम आउखीकळो । तेह
 देवता चउदसपल्लोपम आउखीकळो । तेह देवतानी चउदसपल्लोपम आउखीकळो । तेह देवतानी चउदसपल्लोपम आउखीकळो ।

अथपवदयस्थानके सुगनेपिक्कविल्लिख्यते इहस्थितेखाकसत्तसूत्राणि । तत्रपरमाद्यतेऽधार्मिकाद्य सक्लिष्टपरिणामत्वापरमाधार्मिकाः असुरविशेषा येतिसपु
 पु धृथिवीषु नारकान् कार्दर्थयतीति तत्रावित्यादिक्कीकव्यं एतेचव्यापारभेदेन पंचदशभवति तत्रत्रविति यःपरमाधार्मिकदेवी नारकान् हतिपातयति वध्ना
 ति नौत्वाधारं खतलेत्रिमुचति सइत्यभिधीयते १ अंबरिसेीचेवति यस्तुनारकात्रिहता कल्पनिकाभिः खंडशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति
 सौबच्छधीति २ सामेत्ति यस्तुरज्जुहस्तः प्रहारादितानधःशातमपतनादिकरोति वर्णतद्यश्यामइति ३ सबलेत्तियावरेत्ति श्रद्धलइतिचापरः परमाधार्मिकइ
 ति प्रक्रमः सचांचवसाहृदयकालियकादीन्युत्पाटयति वर्णतद्यशबल कार्दुरइत्यर्थः ४ रुदोवखदीति यःशक्तिजुत्तादिपुनारकानान् प्रीतयतिसरीद्रत्वाद्रैद्रइति

वसिष्ठिञ्चा जीवाजिचजइसहि नवगगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सइदु
 स्काणमंतंकरिस्संति ॥ १४ ॥ पद्धरशपरभाहमीञ्चा प० तं० ॥ अंबे अंबरिसेीचेव सामसव
 लेत्तिञ्चावरे रुद्दावरुद्कालेञ्च महाकालेत्तिञ्चावरे अंसिपत्तेधणकुंभे वालुण वेअरणीत्तिय खरस्सरेमहाधोसे

दमवयहणे सौक्खस्ये बूक्खस्ये मूक्खस्ये सर्वदुःखनी अंतकरिस्से मोचजास्से इति चीदमीठाणो सम्मतो ॥ १४ ॥ हिवे पनरनी अधिकार लिखिचेछे
 पनरभेद परमाधार्मिक असुरदेव विशेष महाअधर्मी सक्लिष्ट परिणामनाधर्मी त्रिगिनरकलगे नारकीने वेदनानादिणहारकत्त्वातेकहेछे । जेपरमाधर्मी देव
 नारकीने हथेपडे अंबर आकाये उच्छाले तेअबकहिये १ । हथ्यानारकीने रापथस्सेकारि अनिक खडकलीभावे पचिवायोग्यकरे तेअबरीषकहिये २ । जेहना
 रकीने हाथपगनें प्रहारेकरी मारीनेहेठापडे तेहने श्यामकहिये वर्णथकीकाला तेश्याम ३ । कर्बुरअनेरा नारकीना हइयाकालिजां जपाडेतेयबलकाकहि

५ यक्षुतीनामगोपांगानि भनक्ति सोल्यंतरोद्ग्लादुपरोद्गति ६ कालेति यः कंष्टादिपुपवतिवर्णतः कालश्चसकालः ७ महाकालिद्रतिवापरे परमाधानिक इति
 प्रक्रमः सचक्ष्मामांसानि खण्डयित्वा खादयति वर्णतश्चमहाकालइति असिपत्तेति असिः खण्डस्तदाकारपत्रवदनविकुर्व्य यस्तस्यमाश्रितनारकानसिपत्र
 पातनेन तिलशच्छिनत्तिसोऽसिपत्रः ८ धरुति योधगुबिमुक्ताईचन्द्रादिकाणैः कर्णादीना च्छेदनभेदनादिकरोतिसधरुति १० कुंभेत्तियः कुभादिशुतान्
 पचतिसकुम्भः ११ वालुति यः कदंबपुष्पाकारासुवज्जाकारासुवैक्रियवालुकाकारासु तत्तप्तसुचणकानिवतान् पचतिसवालुकाइति १२ वेतरणीयसि वेत
 रणेत्तिचपरमाधानिकः सचपूयराधिरत्रपुत्रांबादिभिरतितापाक्कालकायमानैर्भृतां विरूपतरणप्रयोजनमस्याते वेतरणीति यथाथानदीविकुर्वस्तत्तारणेन
 कदर्थयतिनारकानिति १३ खरस्सरीति योवज्जकण्टकाकुल शात्मलीहृच्च नारकमारोप्यखरस्सरं कुर्वंतकुर्वन्वा कर्षतिसखरस्सरति १४ सहावोसिप्ति योभो
 ६ खड्गमालानिविधे नारकीनेपाडे तेरुद्रप्रणयकी रुद्र ५ । नारकीना आंगोपांग भाजति अत्यतरोद्र ६ । नारकीने कडाहीमां घालीने पचवि तेकाल ७ ।
 महाकाल अपर अनरो तेहनारकीना सूक्ष्मासनां खंडकरीखाय वणिकरी पिणमहाकाल ८ शाखमीहृच्च हेठी नारकीना कर्णनासादिकने छेदे
 विजुर्वी तेह असिपत्रने पाडे वेकरी तिलतिलमात्र छेदते असिपत्र परमाधमी ९ । तेहना धनुपयकी अर्धचंद्रबाण तेषकरी नारकीना कर्णनासादिकने छेदे
 भेदे तेधनुवनाम १० । कुभत्ति कुभीमाहि तेहनारकीने पचवि तेकुम ११ । कदंबपुष्पाकार वैक्रिय तातीविलूकरी तेसाहि भाटीनाचणानेपरी पचवि तेवा
 लुक १२ । वेतरणीनदी विजुर्वी पूतिरधिरतरुतांबी महातप्त कलकलायमानेभरी तेसाहि नारकीने विलेकदर्थ तेहवेतरणीनाम १३ । खरस्सरइति वज्जम
 य कांटासहित शात्मलीहृच्च विजुर्वी तेह उपरिनारकीने घडवीनेताणे जिमकांटा उपरि खण्डनाखीने तांणी तेखरस्सर १४ महावोसिप्ति वीहता नासता

तवत् पलायमानान् नारकान् पशुन्द्वाटकेषु महाघोषं कुर्वन्विराट्केषु द्विसप्तसहस्रविंशति १५ इमेएपन्नरसाहियं एवमित्यंवादिक्रमेणते परमाधार्मिकाः पञ्च
 द्वाब्धाताः कथिताजिनैरिति ॥ ध्रुवराक्ष्णमित्यादि द्विविधोराहुः पर्वराहुर्ध्रुवराहुश्च तत्रयः पर्वण्यपीर्णमास्थामवास्थायांवा चन्द्रादित्योरपररां करोति
 सपर्वराहु र्यसुचन्द्रस्यसदयसन्निहितः संचरति सध्रुवराहुः आहव । किण्हंराहुविमाणं निञ्चचदेणहोद्दश्चिरहियं । चउरंगुलमप्यत्तं हंहाषन्त्सतंचरइत्ति ततो
 ऽसौध्रुवराहुः एमित्यलंकारि बहुलपक्षस्यप्रतीत्यस्य पाडिक्यन्तिप्रतिपदं प्रथमतिथिमादौकालेतिवाक्यशेषः पञ्चदशभागपंचदशभागनेति वीसायां द्विवचनदि

एतेपन्नरसाहिय्या णेमीणञ्चरहा पन्नरसधण्डूउहुं उच्चतेणहोत्या णिञ्चराज्जणं वज्जलपस्करसपफिवए पन्नरसति
 ज्ञाणेणं चंदलेसञ्चावेत्ताणं चिठ्ठति तं० पठमाणुपठमंजागं बीञ्चाएदुजागं तइयाएतिजागं चउल्यीएचउजागं
 पंचमीएपचजागं षठीएठजागं झ्ठमीएञ्चठजागं नयमीएनवजागं दसमीएदसजागं एक्कारसीए एक्कारसमं

नारकोने पशुनीपरि इचाडेवालीमेले पीकारकरे तानेरूधीमेले तेमहापाप परमाधर्मी एते पन्नरजातीना परमाधर्मीकक्षा १५ । नेमिनाथ अरिहंतएकवीस
 सा पन्नरधनुषजंचा जंचणकक्षा । राहुना विहिंभेद पर्वराहु ध्रुवराहु पर्वराहु पर्वविशेषे पीर्णमासीए अमावास्याएं चद्रादित्यनेत्रावरे ध्रुवराहु अधारापञ्च
 नीरात्रीएं चंद्रमाने पन्नरसभागे चंद्रमानी लेखादीप्ति आवरीने आच्छादीने तिष्ठेरहे तेकरहे । एक पडिधामाडि प्रतिदिने राहुचंद्रमानी एकएककला आ
 छदि पहिली पडिवाहोय १ । बीजदिने बीजीभाग २ । बीजदिने बीजीभाग ३ । चउधे बीयोभाग ४ । पचमीए पांचमीभाग ५ । छठ्ठेबीभाज ६ । सातम
 सातमीभाग ७ । आठमेदिने आठमीभाग ८ । नवमीए नवभाग ९ । दशमीए दशमभाग १० । एकादशीए इथारभाग ११ । वारसे वारभाग १२ । तेरसे

त्यमनःप्रयोगः एवंविधेष्वपि । नवरसीदारिकशरीरकायप्रयोग श्रीदारिकशरीरमेव युद्धलक्ष्मणसमुदायलेनीपवीयमानत्वात् कायस्त्रास्यप्रयोग इतिविग्रहः
 अर्धचपर्याप्तकस्यैव वेदितव्यः तथौदारिकमित्रकायप्रयोगः अर्धचापर्याप्तकस्यैति इहचोत्पत्तिमाश्रित्यौदारिकस्य प्रारब्धस्य प्रधानत्वादौदारिकी वैक्रियेषामि
 श्रायावद्वैक्रियपर्याप्तानपर्याप्तगच्छति एवमाहारकेण चौदारिकस्यमित्रतावसेयेति तथा वैक्रियपर्याप्तकस्य तथा वैक्रियमित्रशरीरकायप्रयोगादपर्याप्तकस्य

नुगे सच्चवइपनुगे मोसवइपनुगे सच्चामोसवइपनुगे उरालियसरीरकायपनुगे उरालिञ्च
 नुगे सच्चवइपनुगे वेउद्विञ्चमीससरीरकायपनुगे ज्ञाहारयसरीरकायपनुगे ज्ञाहा

योग १२ । आहारक काययोग १३ । आहारकमित्र काययोग १४ कामिणकाययोग १५ । जिवरे केवली ८ समयक केवलसमुद्घातकरे केवलीनिनीजे चौथे
 पाचमेकामिणकायहुया । एणैए रत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनी पनरपत्नीपमआउखीकह्यी । पांचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकी
 नी पनरसागरीपमआउखीकह्यी । असुरकुमारदेवताने केतलाएकनी पनरपत्नीपम आउखीकह्यी । सौधर्मईयानेदेवलीके केतलाएकदेवनी पनरपत्नीपम
 आउखीकह्यी । महाशुक्सातमे देवलीके केतलाएकदेवनी पनरसागरीपम आउखीकह्यी । सातमेदेवलीके केदेइता नंद १ । सुनंद २ । नंदावर्त ३ । नंदप्रभ
 ४ । नदकांत ५ । नदवर्ण ६ । नंदलेख ७ । नंदध्वज ८ । नंदमिथ १० । नदकूट ११ । नंदोत्तरादंतसक १२ । एहवारविमाने देवतापणे जपनाछे । तेहदेवता

देवस्य नारकस्यवा कर्मणि नैवलम्बि वैक्रियपरित्यागे वा औदारिक प्रवेश्याहायामौदारिको पादानायप्रवृत्ते वैक्रियाप्रधान्यादौ दारिकेणापि मिथ्यतेत्येकेत्वा
 हारकशरीरकाय प्रयोगसूदनिनिवृत्तौ सत्यां तस्यैवप्रधानत्वा तथाहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगः औदारिकेणसह आहारकपरित्यागे नंतरग्रहणायोद्यतस्य
 एतदुक्तं भवति यदाहारकशरीरी भूलाकृतकार्यः पुनरथ्यौदारिकंगृह्णाति तदाहारकस्य प्रधानत्वा दौदारिकप्रवेशं प्रतिव्यापार भावाद्यावत् संवयनपरित्य
 जत्याहारकं तावदौदारिकेण सह मिथ्यति आइनतत्तेनसर्वथापुक्तं पूर्वनिर्वर्तितं लिष्ठत्येवतत्कथं गृह्णाति सत्यं तथाप्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइतिगृ
 ह्णात्वेवं तथाकर्मणःशरीरकायप्रयोगी विश्रहसमुद्घातगतस्यच केवलिनस्तृतीय चतुर्थ पंचसमयेषु भवतीति ॥ १५ ॥ अथ प्रोड्यस्थान मुच्यते सुगमचेदं नवरं

रयमीसथसरीरकायप्यनुगे कम्पयसरीरकायपनुगे इमीसेणंरयणप्यनुगे पुठवीणु अत्येगइयाणं नेरइञ्च्याणं
 पन्नरस पलिनुवमाइं ठिई प० पंचमीणुपुठवीणु अत्येगइञ्च्याणं नेरइञ्च्याणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प०
 अ्सुरकुमाराणं देवाण अत्येगइयाणं पन्नरसपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं
 देवाणं पन्नरसपलिनुवमाइं ठिई प० महासुक्ष्मेकपे अत्येगइयाणं देवाणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प०
 जेदेवा णंदं सुणदं णंदावत्तं णंदप्पन्न णंदकत्तं णंदवस्सं णंदलेस णंदज्जयं णंदसिगं णंदसिष्ठं णंदकूळं णंदुत्तर

ने उक्कथी पनरेसागरोपम आउखीकञ्ची । तेदेवतापनरे पस्सवाडे सासीसासघणीले जंभीसासमूके तेहदेवतानो पनरवर्षसहस्रे आहा
 रनो अर्थउपत्ते । केतलाएक भय्यजीव पनरभवनआंतरे सीभस्ये वूमस्ये मंकास्ये सर्वदुःखमा अंतकारस्ये मोचजास्ये इति पनरमूठाणुसभत्तं ॥ १५ ॥

गाथाबोधनकादीनि स्थितिसूत्रप्रकारात्मकाणि तासूत्रजगतास्य प्रथममुत्क्रांतिं मोउग्राध्ययनानि तेषां च गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

ध्ययनं मोउग्रमिति गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

ध्ययनं मोउग्रमिति गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

ध्ययनं मोउग्रमिति गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

ध्ययनं मोउग्रमिति गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

ध्ययनं मोउग्रमिति गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

ध्ययनं मोउग्रमिति गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

ध्ययनं मोउग्रमिति गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

ध्ययनं मोउग्रमिति गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

ध्ययनं मोउग्रमिति गाथाभिधानं मोउग्रमिति गाथा भिधानं म

॥
 णां यथाभिधयनामानि समीसरणेति समवसरणं त्रयाणां षष्ठ्यधिकानां प्रवादिशतानां मत्तपिंडनरूपं अहातहिएत्ति यथावस्तु तथाप्रतिपाद्यते तत्रतद्यथा
 तयिका यथाभिधायकप्रथः जमइत्ति यमकीयं यमक्रानिवलसूत्रं गाहतिप्राक्तनपंचदशाध्ययनार्थस्य गानान्नाथीगाथायातल्लतिभूतत्वादिति मिरुनामसूत्रे गाथा

समाही मग्ने समीसरणे श्याहातहिणु गंथे जमइणु गाहा सोलसकसाया प० तं० झणंताणुबंधीकोहे झणंताणु
 बंधीमाणे झणंताणुबंधीमाया झणंताणुबंधीलोत्रे झुपच्चरकाणकसाएकोहे झुपच्चरकाणकसाएमाणे झुपच्चरका
 णकसाएमाया झुपच्चरकाणकसाएलोत्रे पच्चरकाणावरणेकोहे पच्चरकाणावरणेमाणे पच्चरकाणावरणाभाया पच्च
 रकाणावरणेलोत्रे संजलणेकोहे संजलणेमाणे संजलणेमाया संजलणेलोत्रे मंदरस्सणं पच्चयस्स सोलसनामधे
 या प० तं० मंदरे मेरू मणोरमे सुदंसणे स्यंपन्नयेय गिरिराया रथणुच्चए पिथदंसणे मज्जलोगस्ससनाचीय झु

॥
 नदे १ एम अनंतानुबंधीमान २ । अनंतानुबंधीमाया २ । एमज अप्रत्याख्यानक्रोव अणुवतआवीवा नदे वरसेलगेरहे १ । अप्रत्या
 ख्यानमान २ । अप्रत्याख्यानमाया ३ । अप्रत्याख्यानलोम ४ । प्रत्याख्यान वरणक्रोधसर्वविरती यतीधर्मने आविवानदे चारमासलगेरहे १ । एमज प्रत्याख्या
 नमान २ । प्रत्याख्यानमाया ३ । प्रत्याख्यानलोम ४ । संज्वलनक्रोध यथाख्यातचारित्र आविवानदेपगेरदिनरहे १ एम संज्वलनमान २ संज्वलनमाया ३ सु
 ज्वलनलोम ४ सर्वमिली १६ कषायथया । मेरुपर्वतनासीलह नामकह्या तेकहेछे । मदर १ । मेरु २ । मनोरम ३ । सुदंसण ४ । स्यंप्रम ५ । गिरिराज ६ ।
 रलोच्चय ७ । प्रियदर्शन ८ । मध्यम लोकनीनाभि १० । अर्थ ११ । सूर्यावर्त सूर्यमेरुनेपसिप्रदक्षिणदि १२ । सूर्यावरण रात्रे सूर्यने आवरेआच्छादि १३ ।

श्लोकस्य मन्त्रे लोकासनानीयति लोकमध्ये लोकनाभित्यर्थः उत्तरयति भरतादीना मुत्तरदिग् वर्तिलाद्यदाह सन्निहिततरीमिरिति दिसाश्चैयति दिशामादि रित्यर्थः नडिसेइयति श्रवतंसः श्रेखरः सद्भवतंस इतिचिति पुरिसादाणीयति पुरुषाणामध्ये आदित्येत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरव च्योर्दन्विणोत्तरीयो रसुरकुमारराजयोः उवारियाल्लिणति चमरचचावली चचाभिधान राजधानीर्मध्योद्गताऽवतरत्प्राश्चपीठरूपेऽवतारिकल्पयने षोडशयोग नसहसाख्यायामविक्रमभायांवृत्तलात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेपुद्गसु सहस्त्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्धं गतंतस्यचित्सेधवृद्धिं षोडशसहस्राख्यज्ज्

॥

रित्यर्थः नडिसेइयति श्रवतंसः श्रेखरः सद्भवतंस इतिचिति पुरिसादाणीयति पुरुषाणामध्ये आदित्येत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरव च्योर्दन्विणोत्तरीयो रसुरकुमारराजयोः उवारियाल्लिणति चमरचचावली चचाभिधान राजधानीर्मध्योद्गताऽवतरत्प्राश्चपीठरूपेऽवतारिकल्पयने षोडशयोग नसहसाख्यायामविक्रमभायांवृत्तलात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेपुद्गसु सहस्त्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्धं गतंतस्यचित्सेधवृद्धिं षोडशसहस्राख्यज्ज्

॥

नसहसाख्यायामविक्रमभायांवृत्तलात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेपुद्गसु सहस्त्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्धं गतंतस्यचित्सेधवृद्धिं षोडशसहस्राख्यज्ज्

॥

त्येच्च सूरिञ्चावते सूरिञ्चावरणेतिञ्च उत्तरेय दिसाइच्च वरिसेइच्च सोलसमे पासस्सणंञ्चरहतो पुरिसादाणी यस्स सोलससमणसाहस्सीत् उक्कोसीञ्चाणंसंपदाहेत्याञ्चायप्यवायस्सणं पुच्छस्ससोलसवत्यु प० चमरबली णं उवारियालेणेसोलसजोयणसहस्साइं ज्ञायामविक्रंजेणं प० लवणेणंसमुद्रेसोलसजोयण सहस्साइं उस्से भरतादिकचेन्नयकी उत्तरदिशश्चि तेमाटे उत्तरकक्षो १४ । दिशानी आदिक्केजेन्नयकी तेदिगादि १५ । अतस सर्वपर्वतनी मुगुट्ठपच्छे एम १६ नामह्

॥

या । पार्श्वनाथ अरिहत पुरुषमाहि प्रधान आदानीय महासीभागी तेहेनेसेलि अमण सहस्त्र उत्कष्टीसाधुनी संपदाहुइं जाणवी । आत्मप्रवादंनूपवं तेहना सोलह वस्तुजप्ता । भगवति अधिकार विशयिकाष्ठा । चमर चचावली चचानाम राजधानीनि मध्यभागे उपकारीक्षयन तेहप्रवासनी पीठीका सोलसहस्त्र योजनलांबपणे पिप्पुलपणेकक्षी । लवणसमुद्रयकी जगतीयकी पचाणं सहस्त्रयोजनेर्द्धतिहं मध्यभागेदगमाले दससहस्त्र योजननिविधि नगरना गठनीपरि

हपरिवह्नीए प० इमीसेणं रयणप्यन्नाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं सोलसपलिउवमाइं ठिई प० पंच
 मीए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइया
 णं सोलसपलिउवमाइं ठिई प० सीहम्भीसाणेषु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं सोलसपलिउवमाइं ठिई प०
 जेमहासुक्केकप्ये देवाणं अत्येगइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा अ्यावत्तं विअ्यावत्तं नदिअ्याव
 त्तं महाराणंदिआवत्तं अ्यंकुसं पलंबं ब्रह्मं सुब्रह्मं महाअइं सब्बउन्नदं शदुत्तरवक्किंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना
 तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवासोलसहिं अ्यद्धमासाणं अ्याणमंतिवा पाण
 संतिवा ऊरस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिण देवाणं सोलसवासएहस्सेहिं अ्याहारठेसमुअ्यज्जइ संतेगइयाअ

पाणी जंचोगयोच्छे । तेहनी जंचपणानीवृद्धि सोलसहस्र योजननीकही । एहरत्तमा मृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनी सोलिपत्थीपम आउखीकह्नी । पा
 चमी पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनी सोलिसागरोपमआजखीकह्नी । असुरकुमार देवनी केतला एकनीसोसिपत्थीपम आउखीकह्नी । सौधर्म ईशानदे
 वलीके केतलाएकदेवनी सोलिपत्थीपम आउखीकह्नी । मह्हायुक्कदेवलीके केतलाएक देवनीसोसिसागरोपम आजखीकह्नी । जेदेवता आवर्त १ । पिदावर्त २
 नदिकावर्त ३ । महानदिक्कावर्त ४ । अंजुय ५ । प्रलम्ब ६ । भद्र ७ । सुभद्र ८ । महामद्र ९ । सर्वतोभद्र १० । भद्रीत्तरावत्तंसक ११ । एह इय्यारद्विमाने देव
 तापणेषपनाच्छे । तेहदेवतानो उत्कथी सोसिसागरोपम आउखीकह्नी । तेदेवता सोलपखवाडिसोसिआघणेषि जंचीस्सासले नीचीस्सासमके तेदे

॥ देवसमासागाथाभिरवगंतव्यमिता । दसजीयणसहस्रा लवणसिंहचक्रयालठबंधा । सीलससहस्राठघ्ना सहस्रमेगंतुत्तगाढा । देखणमठजीयण लवणसि
 होवदिदगंतुकालदुगे । प्रतिगंर परिवट्ठइहायणवात्ति । अक्कतत्तिरिवेल धारंतिलवणीदिहिसानागाण । बायालीयसहस्रा ओसत्तरिसहस्रावाहरियं। सहीन
 नसहस्रा धरतिअरुणीदयसमुहस । वेलंधरआवासा लयणेयवडदिसचउरो । पुब्बादि अणुकमसी गोथुम १ दगभास २ यख ३ दगसीस ४ । गोथुम १ सित
 ए २ सखे ३ मणीतिले ४ नागरयाणी । आबुलधरवासा लवणीश्रिटिसासुसंनियाचउरो । ककळि १ पिळ्णुपे २ केलासरणपपेवेव । ककीडयकइमए केब
 सरणपपेथ नागरयाणी । बायालीससहस्रे गंतुडध्हिमिसेव्वि । चत्तारिजीयणसए तीसिकोसचउगयाभूसी । सत्तरसजीयणसए इगवीसेजसियासब्बि
सत्तरस जीयणसहस्राइं सव्वेणेणं प० इमीसेणे रयणप्यत्ताए पुठवीए बज्जसम रमणिज्जाउ श्रीमन्नागाउ
 तिह्विलंधरदेवताना आवासपर्वतच्छेगोथुम १ । एम दक्खिणादिकेदगभास २ । सख ३ । दगसीस ४ । तिह्वनाधणीगोथुम १ शिव २ । भद्र ३ । मणसिल
 आनुवेलधरनापर्वतविदिशिए ईग्रानकोणैककोट १ । एमजअग्निकीणैविद्युत्तप्रम २ । केलाग ३ । अरणप्रम ४ । एहनाधणीनागराजककोट १ कदंस २ के
 लास ३ अरणप्रम ४ नाम लवणसमुद्रे मध्यभागे दयसहस्रजीजन चक्रवालओटलाकारे समपाणीके तेहउपरि सीलसहस्रकगाल जवपाछे तिहां दिनप्र
 ति एवेकवेलधरे तेहनेधरेराखे तवेलधर वेलमाहिलेपारी जइहीपभणी ४२ सहस्रवाहिरौ धातकीखडभणी ७३ सहस्रदेवता छसहस्रगिच्छे वाटिकरी पा
 णीबांधता उपराठांमारुंछे । वेलधरअनुवेलधरनागराजना आवासपर्वत एकवीसजीजन अधिकसत्तरसजीजन अंचाजंवपणेकक्षा । जगतियकी पंचाणू यो
 जनसहस्रजइये समुद्रसांदि तिहां दससहस्रजीजन चक्रवालसमुद्रपाणीके विहांयकी सीलसहस्रजीजन अघिकसत्तरसजीजन अंचाजंवपणेकक्षा । जगतीयकी तीसमुद्रपाता

चारणायति जंघाचारणाकां विद्याचारणानां च तिर्यग् रुचकादि द्वीपगमनावयति तिगिच्छिकूट उस्मातपर्वतो यन्नागल्य मनुष्यद्वैत्रागमनायोस्त्यति सचेतो
ऽसंख्याततमे ऽरुणीदयसमुद्रे दक्षिणतोद्विचलारिश्यतं योजनसहस्राष्टतिकाम्यभवति रुचकेद्रोत्यातपर्वतस्वरूणीदयसमुद्रएव उत्तरत्यएवमेवभवतीति आ

सातरेगाइं सत्तरसजोयण सहस्साइं उहुंउप्यतिहा ततोपच्छा चारणाणं तिरिञ्चगती यावत्तती चमरस्सणं
असुरिंदस्स असुररसो तिगिंळिकूउप्यायपद्यए सत्तरसपुक्खवीसाइं जोयणसयाइं उहुंउच्चत्तेणं प० बलि
स्सणं असुरिंदरुञ्चगिंदे उप्यायपद्यए सत्तरसजोयणसयाइं सातिरेगाइं उहुंउच्चत्तेणं प० सत्तरसविहेमरणे प०

सामां हिज्जो एकयोजनसहस्रजंघो सोलहस्रसम्बन्धोणसर्वमिलो १७ सहस्रयोजनसमुद्रकक्षो । एणीएरत्तप्रभा पृथिवीनेविषे घणोरमणीकसमोभूमिभागच्छे
तेहयकोम्भाकेरीवीकीसञ्चिकसत्तरयोजन सहस्रलगेजंचीउत्यति उडेनिएतलेलवणसमुद्रनी शिखालगजचाउत्यत्तिविरोपच्छे जघाचारण विद्याचारणनी
तिरच्छीगति पर्वततले तिरिच्छिदीपे रुचिकवरद्वीपे एमन्दीश्वरद्वीपे जीवप्रतिमावादिवाजाई चमरेन्द्रनो असुरकुमारदेवतानो इन्द्रतेहनी असुरनाजानो तिगि
छकूट । उत्यातपर्वत जिहां चमरेन्द्रादिकपातालथकी आवीनमनुष्यत्ते आवीवामणीउत्यते उडेतेमाटे उत्यातपर्वतकहिद्ये । तेअसंख्यातमे अरणसमुद्रथकी
दक्षिणदिशे ४२ सहस्रयोजनजईये तिहां पांभिएते तिगिच्छकूट । १७१ योजन जंचीजचपणेकक्षो । बलीन्द्रनो असुरेन्द्रनो बलीरुचकेन्द्रनो उत्यातपर्वत सत्तर
से एकवीस जचीजंचपणे तेहीपणि अरणसमुद्र असंख्यातमी तेहमां हि उत्तरदिसे ४२ सहस्रयोजन जइयेतिहांरुचकेद्र उत्यातपर्वतपांभियेकक्षो । सत्तरप
कारेमरणकक्षो तेकहिच्छे । क्षणक्षणथितिं आउखनोदल उक्खायायते आवीचिमरण १ । अवधिमर्यादातिणेकरी मरवति अवधिमरण जिमनारकी नरका

तादेशविरतास्त्रैषांमरणं बालपंडितमरणं । तथाछद्मस्थमरणमेव केवलमरणंतु प्रतीतं । वेहासमरणंति विहायसिञ्चोमनिभवं वैहायसं विहायीभवत्त्वंच त
 स्य वृत्तयाखाद्युद्बद्धत्वसिति भवेत् तथागृहैः पञ्चिंशद्वैः रुपलक्षणलाञ्छुनिकाशिवदिभेदश्च सृष्ट सूर्यनयसिन्नु स्तद्गृहसृष्टं अथवागृहघ्राणांभक्ष्यं घृष्टमुपलक्षण
 लाउंदरादियत्र तद्गृहपृष्ट मिदंचकारिकरभादिशरीरभध्यपातादिनागृध्रादिभिरात्मानं भजयती महासत्वस्य भवतीति भक्तास्यावज्जीवं प्रत्याख्यानं यस्मिन्
 तत्तथा इदंच त्रिविधाहारस्य चतुर्विधाहारस्यवा नियमरूपं सप्रतिकर्मच भक्तपरिज्ञेतियदूहं । तथा इंग्यते प्रतिनियते देशएववेद्यति आसामनयनक्रि
 यामितीगिनी तथा मरणमिगिनीमरणं तद्विचतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यातुर्नि.प्रतिकर्मशरीरस्यै गितदेशाभ्यंतर वर्तिनएवेति तथा पादपस्त्रेवीपगमनभवस्था
 नं यस्मिन् तत्यादपोपगमनं तदेव मरणमितिविशहः इदंच यथापादपः कथंचित् पतितः सममससमिति भाविभावयत्रिश्चलमेवास्ते तथायीवर्त्तते तस्य

तमरणे बालपठितमरणे ठउमत्यमरणे केवलमरणे वेहासमरणे गिद्धिपिठमरणे अत्तपञ्चक्राणमरणे इंगि
 णीमरणे पाउवगमणमरणे सुज्जमसंपराणंजगवं सुज्जमसंपरायत्रावेवदृमाणो सत्तरसकम्मपगळीउ णिवंध

मरणतेपण्डितमरण ८ । आवकनंमरणते बालपण्डितमरण१० । छद्मस्थपणेमरते छद्मस्थमरण११ । केवलीपणेमरते केवलमरण१२ । गलेफांसीलेईमरतेविहा
 सकमरण १३ । गृध्रपक्षी तेणे सियालियादिके आंपणीआत्माखवाडीमरते गृध्रपृष्टमरण १४ । भातपाणीपस्त्रखीमरते भक्तप्रत्याख्यानमरण १५ । चारिआहा
 रपस्त्रखी भूमिनियमीसंस्थारमूये भवतोवियावचनकरावेते इगिनीमरण १६ । पादपृष्टचनीशाखाच्छिदी भूमिपण्डिचलतीहालेनही तिमसंथारिकह्या पछीसा
 धुहाले बीलेनहीपासुपालटे नहीतिपादपमरण१७ । सूक्ष्मसंपराय दशमंठाणं सूक्ष्मसलीभनीअसंख्यातमीभाग किट्टिरूपजिहनेइएते.सूक्ष्मसंपरायभावैवतंतीथ

तद्भवतीति । तथासूक्तसंपरायउपशमकः क्षपकीवासूक्तलोभकपाय किष्किविदकी भगवान् पूज्यत्वात् सूक्तसंपरायभावे वर्त्तमानस्तत्रैव गुणस्थानकेऽवस्थि
 त नातीतागत सूक्तसंपराय परिणामद्वयैः सप्तदशकर्म प्रकृतीर्निबध्नाति विश्रत्युत्तरे बंधप्रकृतिश्रुते श्रान्यानबध्नातीत्यर्थः पूर्वतरे गुणस्थानकेषुबंधप्रतीत्या
 न्यासांश्वच्छिन्नत्वाचथोक्तानां सप्तदशानां मध्यादेका साताप्रकृतिरुपशान्तिमीहादिषु बधमश्रित्यनयाति श्रेषाः षोडशैवैव्यवच्छिद्यते । यदाह नाणं ५
 तराय ५ दसगं दंशणवत्तारि ४ उष्व १५ जसकिची १६ । एयासीलसपयडी मुहुमकसायं भिवीच्छिन्ना । सूक्तसंपरायात्यनेनबंधतीत्यर्थः ॥ सामानादीनि सप्त

ति तं० श्रान्तिगिणाणावरणे सुयनाणावरणे उहिनाणावरणे मणपज्जवनाणावरणे केवलिनानाणावरणे चरु
 दंसणावरणं श्रुचरुदंसणावरणं उहीदंसणावरणं केवलदंसणावरणं साथावेयणिज्जं जसाकित्तिनामं उच्चोगो
 यं दाणंतरायं लाअंतरायं भोगंतरायं उवन्नोगंतरायं वीरिञ्चुंतरायं इमीसेणं रयणप्यन्नाए पुढवीए श्रुत्ये
 गइयाणं नेरइयाणं सत्तरपलीउवमाइं ठिइं प० पंचमीए पुढवीए श्रुत्येगइयाण नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त

को तथा क्षपभावैवततीयको एकसीवीसप्रकृतिबंधच्छे तेमाहिली सत्तरकर्म प्रकृतिनिबंधपाडे तेकहच्छे । आंभिनिबोध ज्ञानावरण मतिज्ञानावरण १ । एमशु
 तज्ञानावरण २ । श्रवधिज्ञानावरण ३ । मनपर्यवज्ञानावरण ४ । केवलज्ञानावरण ५ । चरुदंसणावरण ६ । श्रवधुदंसणावरण ७ । श्रवधिदंसणावरण ८ ।
 केवलदंसणावरण ९ । साताविदनी १० । यशकीर्तिनामकर्म ११ । उच्चैर्गोत्र १२ । दानांतराय १३ । लाभांतराय १४ । भोगांतराय १५ । उपभोगांतराय १६ ।
 वीर्यांतराय १७ ॥ एणीएरत्नप्रभापृथिवीनिषिषे केतलाएकनारकीनी सत्तरपत्नीपमन्नाउखीकह्यो । पांचमीधूमप्रभा पृथिवीए केतलाएकनारकीनी उत्तमष्टीस

रससागरोवमाइं ठिई प० बठीए पुढवीए अर्थ्येगइयाणं जहन्तेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकु
 माराणं देवाणं अर्थ्येगइयाणं सत्तरसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अर्थ्येगइयाणं देवाणं
 सत्तरसपलिउवमाइं ठिई प० महासुक्कोकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० सहस्सरिकप्पे दे
 वाणं जहन्तेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सामाणं सुसमाणं महासामाणं पउमं महापउमं कु
 मदं महाकुमदं नलिणं महानलिणं पौंठरीअं महापौंठरीअं सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहविअं चा
 विअं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा सत्तरस
 हि अथ्ठमासेहिं अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊरससंतिवा नीरससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्से

तरसागरोपमआजखीकह्नी । छ्ठीतमाथ्थिवीएं केतलाएकनारकीनी जघन्वी सत्तरसागरोपमआजखीकह्नी । असुरकुमारदेवतानी केतलाएकनी सत्तरप
 लीपमआजखीकह्नी । सीधर्मईशानदेवलींके केतलाएकदेवतानी सत्तरपत्थीपमआजखीकह्नी महाशुक्रदेवलींके सातमेदेवतानीउत्कष्टी सत्तरसागरोपमआज
 खीकह्नी । सहस्सर आठमेदेवलींके देवताने जघन्वी सत्तरसागरोपम आजखीकह्नी । सातमेदेवलींके जेदेवता सामायिक १ । सुसामायिक २ । महासामा
 यिक ३ । पदम ४ । महापदम ५ । कुमद ६ । महाकुमद ७ । नलिन ८ । महानलिन ९ । पौंठरीक १० । महापौंठरीक ११ । शुक १२ । महाशुक १३ ।
 सिंह १४ सिंहकांत १५ । सिंहविद १६ । भाविक १७ । एण्णिविमानेदेवतापणेउपनाच्छि । तेहदेवतानी उत्कष्टीसत्तर सागरोपमआजखीकह्नी । जेहदेवतासत्तर

श्रीभावर्यनं प्रति तं तथा आचारस्य प्रथमो गस्य सचूलिकाकस्य चूडासमन्वितस्य तस्य पिडिषणायाः पंचचूलाः द्वितीयश्रुतस्त्रोधात्मिकाः सचनषत्रपञ्चचर्याभिधाना
 धयनात्मक प्रथमश्रुतस्त्रोधा रूपस्त्रोधावचेदं पदप्रमाणं नचूलानां यदाह । नववर्षचरमर्द्धश्री अठारसपयसहस्राणि बहुबहुतरश्रीपयगेणति
 यस्य सचूलिकाकस्येति विशेषणं ततस्य चूलिकासत्रा प्रतिपादनार्थं नतु पदप्रमाणाभिधानार्थं यतोवाचि नदीटीकाकता अठारसपयसहस्राणि पुणपठमसुय
 खंधस्त्रनववर्षचरमर्द्धस्य पमाणं विविच्यथाशौच सुत्ताणि गुरुवए सर्वोत्तिसि अथोजांणियव्वीति पदसहस्राणीह यत्रार्थोपलब्धि सत्त्वं पदोति पदपरिमाणे
 नेति तथा वंभिति ब्राह्मीश्रादिदिवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संख्यादिभिदा वाशौ तामान्यितैव यादृशिताबरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्त्रा

नति तथा वंभिति ब्राह्मीश्रादिदिवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संख्यादिभिदा वाशौ तामान्यितैव यादृशिताबरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्त्रा
 नेति तथा वंभिति ब्राह्मीश्रादिदिवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संख्यादिभिदा वाशौ तामान्यितैव यादृशिताबरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्त्रा

गवतो सचूलिञ्जगस्स अठारस पयसहस्राद् पयगेणं प० बंन्नीणुंलिबीए अठारसविहलेखविहाणे प० तं०
 भोजनधिरति एमकायपट्क पंचप्रावरअनेच्छी उत्तमकाय एम १२ अकली अकल्पनीयपिडयथावस्त्रपात्ररूप पदार्थ १३ गृहस्थनेभाजन १४ । पत्यंकीमां
 चादिक १५ । निषदासिंहासन १६ । स्नानशरीरधीइती १७ । शोभावर्जन शरीरशृंगाररचना १८ । आचारांग प्रथमश्रुते पहिले श्रुतस्त्रोधि नवअध्ययनके
 तहनां पूच्यनांबीजी श्रुतस्त्रोधि पंचचूलिकाके तेषांचचूलिकामांही १६ अध्ययन अयताराके ती तेषांचचूलिकासहितना अठारपदसहस्रजेतले अर्थनीसमा
 ति तेहपदकहीए । पदार्थैसर्वसंख्याएंकाक्षा आचारांगी प्रथमश्रुतस्त्रोधि व्रह्मचर्याभिधान नवअध्ययन तेहनीसंख्या १८ सहस्रपद परंचूलिकाके । पांचवीजिञ्जु
 तस्त्रोधि १८ सहस्रपदमांहिनही उत्तंच । नववर्षचरमर्द्धश्री अठारसपयसहस्रीश्री । हयद्रयपंचचूला बहुबहुतरश्रीपयगेणंति । अन्नसत्रमांहि चूलिकायहीछे ती
 एकसत्रनासंबंधीमाटे परंतेहनीप्रमाण १८ पदमांहिनसीवो । ब्राह्मीश्रीश्रादिनाश्र भगवंतनीपुत्री तेहने अठारप्रकारे लेखविधान लिखिवानभेदकक्षा ।

आह्मालिपिर्णमित्यलंकारे लेखीलेखनं तस्याविधानंभेदो लेखविधानं प्रभ्रतं तद्यथा एतस्सरूपं नष्टमिति नदर्शितम् । तथायज्ञोक्ते यथास्त्रि यथावाना
 स्त्रि अथवास्याहादाभिप्रायस्तत्तदेवास्त्रिनास्त्रिचेत्येवं प्रवदतीत्यस्त्रिनास्त्रिप्रवादं तच्चतुर्थपूर्वतस्य । तथा धूमप्रभापंचमी । अष्टादशोत्तर मष्टादशयोजनसह
 स्राधिकमित्यर्थः बाहुल्येनपिडने पीसासाठेत्यादि रेवंयोजना आषाढमासेसकृदिति सकेदेकदा कर्कसंक्रातावित्यर्थः उल्लेखणीलक्षणेत्तोऽष्टादशमुहुत्तोदिवस

बंती जवणालिया दोसजरिया वरोहिया खरसाविया पहाराइया उच्चत्तरिया अस्करपुलिया भोगवयत्ता
 वेघणतिया णिरहइया अंकलिवि गणियलिवि गंधवुलिवि अ्यादस्सलिवि माहिसरलिवि दामिलिवि बोलिदि
 लिवि अय्यिनलियप्पवायस्सणं पुव्वस्सअठारसवत्थु प० धूमप्पआणुणं पुढवीए अठारसुत्तरंजोयण सयसह
 स्सं वाहल्लेणं प० पीसासाठेसुणं मासेसु सइ उक्कोसेणं अठारसमुज्जातादिवसेभवइ सइउक्कोसेणं अठारस

तेकहेच्छे । ब्राह्मीसंस्कृतादि भेदेकरी लिपिअचरस्थापना देखाही तेब्राह्मीलिपि १ । जवनलिपि २ । दोषजपरिका ३ । वरोहियाप्रभृति णिन्हइयापर्यंत
 नामविशेषजाणिवा ११ । अंकलिपि १२ गणितलिपि १३ । गंधर्वलिपि १४ । आदर्शलिपि १५ । माहिसरलिपि १६ । दामलिपि १७ । बोलिदिलिपि १८ ।
 आस्त्रिनास्त्रिलोएसासएविअसासएवि एहवी स्याहादाभिप्रायआस्त्रिनास्त्रि प्रकर्णपणे प्रवदेकहे तेआस्त्रिनास्त्रिप्रवादचउधंपूर्वं तेहना १८ वस्तु अधि
 कारविशेषकथा । धूमप्रभापांचमीपुथिवी अष्टादशसहस्रअधिक एकलाखयोजन बाहस्यपणे जाडपणेकही । पीसाआसाढमासइत्ति एकदाउल्लेखणपणे अ
 ठारमुहुत्तोदिवसहुए एतलेकर्क संक्रातिएं आसादीपुनीमे अठारमुहुत्तोदिवसहुए सतित्ति एकवार मकरसंक्रांति अठारमुहुत्तो रात्रिइई । एणीए, रत्नप्र

मुञ्जतारात्तीजवद् इमीसिंहरथणप्यत्राए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं अठारसपलिउवमाइं ठिईं प०
 बठीए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं अठारससागरोवमाइं ठिईं प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइया
 णं अठारसपलिउवमाइं ठिईं प० सोहम्मीराणेषु कप्पेषु अत्येगइयाणं देवाण अठारसपलिउवमाइं ठिईं
 प० राहससरिकप्पेषु देवाणं उक्कोसिणं अठारससागरोवमाइं ठिईं प० अणएकप्पेषु देवाणं अत्येगइयाण
 जहन्नेणं अठारससागरोवमाइं ठिईं प० जेदेवा कालं सुकालं महाकालं अण्जणं रिठिसालं समाणं दुसं म
 हादुमं विशालं सुसालं पउमं पउमगुम्भं कुमुदं कुमुदगुम्भं नलिणं नलिणगुम्भं पुंऊरीअं पुंऊरीयगुम्भं सह
 रसाएवठिसं विमाणं देवताएउववन्ता तेराण देवाणं अठारससागरोवमाइं ठिईं प० तेण देवाणं अछा

असाएवठिसं विमाणं देवताएउववन्ता तेराण देवाणं अठारसागरोपम आजखीकहो । असुरकु
 भा एथिचीनिविपे कीतलाएकनारकीनी प्रठारपमल्योपम आजखीकहो छहीतमा एथिचीं कीतलाएकनारकीनी अठारसागरोपम आजखीकहो । असुरकु
 मारदेवतनी कीतलाएकनी अठारपल्योपम आजखीकहो । सीधर्मेश्यायकल्ले कीतलाएकदेवतानी अठारपल्योपम आजखीकहो । सहस्रारआठमेदेवलीके
 कीतलाएकनीजवन्थी अठारसागरोपम आजखीकहो । आठमेदेवरीके जेदेवता काल १ । सुकाल २ । महाकाल ३ । अंजन ४ । रिष्ट ५ । साल ६ । समान
 ७ । दुम ८ । महादुम ९ । विथाल १० । सुसाल ११ । पदम १२ । पदमगुल्ल १३ । कुमुद १४ । कुमुदगुल्ल १५ । नलिन १६ । नलिनगुल्ल १७ । मौंडरीक
 १८ । पौंडरीकगुल्ल १९ । सहस्रारपवत्सका २० ॥ एम वीसविमाने देवतापण्णोपनच्छि । तेहदेवतानी अठारसागरोपम आजखीकहो । तेहदेवता अठारअ

भवति षट्त्रिंशद्वटिकाइत्यर्थः तथापौषमासे सकृदिति मकरसंक्रांती रात्रिरेवंविधेति कालसुकालादीनि विंशतिर्विमानानामनि ॥ १८ ॥

अथैकोनविंशतितमस्थान तत्र स्थितिसूत्रैः पंचसूत्राणि सुगमानिच नवरं ज्ञातानि दृष्टान्तं स्वात्यतिपादकान्यध्ययनानि षष्ठांगप्रथमश्रुतस्त्रंधवर्त्तानि उक्त्वि

रसेहिं झृष्टमासेहिं ज्ञाणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंति तेसिणं देवाणं झृष्टारसवांस सहस्से
हिं ज्ञाहारठेसमुष्यज्जइ संतेगइया नवसिच्छिथा जेज्जुठारसाहिं नवगगहणेहिं सिज्जिस्सति बुज्जिस्सति मुच्चि
स्संति परनिव्वाइस्संति सव्वदुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ १८ ॥ एकूणवीसणायज्जयणा प० तं० ।

उरिक्तत्तणाए संघाठे अंठेकम्मैज्ज सेलए तुंबेज्ज रोहिणी मल्ली मागंदी चंदमातिज्ज दावद्वे जंदगणाए मंठुक्के ते

ईमासे पखवाडे स्वासीस्वासले षण्णिले उंचीस्वासले नीचीस्वासमूके तेहदेवतनी अठारहर्षसहसे आहारनी अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव अठारभवनेअंतर
सीभस्से बूमसे मूकास्ये सर्वदुःखनीअंतकरिस्से मीच्चजास्ये ॥ इति अठारमंठाणं समत्तम् ॥ १८ ॥ हिविइशुणवीसनी अधिकारलिखियेक्के ।
ज्ञाताब्धोअग तेहने प्रथमश्रुतस्त्रंधे १९ ज्ञायरूपनीतिमार्गं सूचकअध्यनकह्या । तंकेह्खे यथाक्रमे । उत्तिम्मज्जाय जेहाथीएं पगडपाळी पगहेठियशलीरास्थी
तेहमेघकुमारइयो १ । धनावहसेठीनी संघाडकज्जाय २ । त्रीजमीरडीनाईडानी ३ । चउथीकाह्वानी ४ । पांचमी सेलकाचार्यनी ५ । छठीउच्छडानी ६
सातमी रोहिणीबधुवह्नी ७ । आठमीमल्लिकुमारीनी ८ । माकांदीसुतजिनरबतेजिनपालक ९ । दशमीचंद्रमानी १० । इयारमीदावद्वेवनामह्वनी ११ । वा
रमीउदकचीयजितयत्रु सुवुद्धिमंत्रीनी १२ । मंडुकडेडकानी नंदमणीयारनी १३ चीदमीतलीपुत्रमुहुतानी १४ । पनरमीनदिपलनी १५ । सोलमी अमरका

सेलादिसारूपककथामिदं च यथागाधिगमायसेयमिति । तथा जंबूद्वीपेणं श्रुत्वादेहीभावनात्रयः स्थाणानादुपरिचीजन शतंतपतोऽध्याष्टादश शतानि । तत्र स समभूतलौढीभवंति दशपापरविदेहजगतीश्रुत्वास्तदेशे जंबूद्वीपापरविदेहेहि निस्त्रीभवद्वेष्टमतिमविजयद्वयस्वदेशे श्रधोलोकदेशेसहस्रमिति द्वीपांतरसूयां स्मृश्रुतमधोष्ठयतानि क्षेत्रसमत्वादिति तथा शुकसूत्रेनक्षत्रादिति विभक्तिपरिणामात्तद्वन्नैः समसहचारंघरणं चरित्वाविधेयइति तथाकलाभोक्तिं पं

तलीइश्च नंदिफले अ्वरकंका आइसे सुंसमाइश्च अ्वरेश्च पौंरुसीएणाए एकूणवीसमे जंबूद्वीवेणदीवे सूरिश्चा उक्तीसेणं एगूणवीसजोयणसयाइं उहंमहातवयइ सुक्तेणमहगहेश्चवरेणं उइश्चसमणे एकूणवीसंगस्कृताइंस मंचारंचरिता अ्वरेणं अ्वस्थमणं उवागच्छइ जंबूद्वीवस्सणंदीवरस कलाउ एगूणवीसंठेअ्णणउ प० एगूणवीसं

राजधानीनी दुपदीनी १६ । सतरसी शान्तीपीठानो १७ । अठारसी सुसामाधनवह सेठीपुचीनो १८ । अपरअनेरो पुंढरीक कुंडरीकनी न्यायउगणीसमी १९ जंबूद्वीपनेविषे सूर्यउत्खाष्टी इशुणयीस योजगसत उपरिरेठि मिलीनेतपे एतले पीतानाविमानथी एकसीयोजन जचोतपे प्रकासे अनेससेभूतलेगइ आठरे योजन नीचोतपे वलीपशिममहाविदेहे जगतीपासे केहली विजयके जिहां तिहां मीरनी अपेचा एकसहस्रयोजन भुंज्जहीछे तिहां प्रकाशे एतले एव सी आठसे दससे सर्वमिली उगणीससय योजनलेगे उपरिरेठि प्रकाशे । शुकामहाशरू पशिमदिसे जगतीयकी उगणवीस नक्षत्रमाथी चारचरीने भमगकरौं पशिमदिसे अस्समनप्रति पासे जंबूद्वीपदीपनीकला उगणीसदिदना भागरूपएतले भरथचेन ५२६ योजन अनेउपरि छकलातेह एकयीजनना १९९ केदनाम

चमएकवीसे कृच्चकलाविल्याडंभरहर्वासमित्वादिषु जंबूद्वीपगणितेषु याः कलाउच्यन्ते तायोजनस्यैकोनविंशतिभागश्चेदना एकोनविंशतिभागरूपा इतिभावः
 आगारमञ्जेवसित्ति अगारंगेहं अस्थिकीनविशति चिरकालं राज्यपरिपालनतः आमर्यादायदीचां वसित्वाउधित्वा तत्रावासंविधायेति अञ्चेध्यप्रवृजिताः श्रे
 षास्तुपंच कुमारभाएवेत्याह । वीरअरिठ्ठनेमिं पासमक्खिचवासुज्जंच । एएमीसूणजिण्णे अवसयाआसिरायारोत्ति ॥ १८ ॥ अथविंशति तमस्या

तित्यथरा अगारवासमञ्जेवसित्ता मुंठेअवित्ताणं अगारानुअणगारिअंपुइअ्या इमीसेणं रयणप्पज्जाए पुढ
 वीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एगुणवीसपलिउवमाइं ठिईं प० उठीए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं
 एगुणवीससागरोवमाइं ठिईं प० असुरकुमारारणं देवाणं अत्येगइयाणं एगुणवीसपलिउवमाइं ठिईं प०
 सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं एगुणवीसपलिउवमाइं ठिईं प० अयाणयकएपे उक्खोसेणं एगु

गरूप एतलिभाग करी एहवौ ककला प्रमाकही । श्रीमहावीर १ । नेमिनाथ २ । पार्खनाथ ३ । मक्खिनाथ ४ । वासुपूज्य ५ । एपाचतीर्थकारविना बीजा
 उगणीसतीर्थकार गृहस्थाश्रमवसिने मुहपणंपास्या द्रव्यमुडलीचादिकभावमुंड तेकषायलाग गृहस्थाश्रमथकी अनगारपण्याथकी प्रवृज्याघरनथी जेहनेते
 अनगारीतेहपणंपास्या । एणी एरत्तप्रभापहिंली पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीने उगणीसपत्नीपम आउखीकह्यो । क्खीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएक
 नारकीने उगणीसपत्नीपम आउखीकह्यो । असुरजुरसार देवतानो केतलाएकनो उगणीसपत्नीपम आउखीकह्यो । सौधर्मईशानकल्ले केतलाएक
 देवतानोउगणीस पत्नीपम आउखीकह्यो । आनतनवमेकल्लेउरकह्यो उगणीससागरीपम आउखीकह्यो । प्राणतदयमे कल्पे केतलो एकदेवतानो

राजनीतिपरीभाणौ प्राचार्योदित्तु परिभक्तकारी सचालानमन्यांशासमाधौ योजयस्वीय ५ तथास्वविरा प्राचार्योदित्तरथः तानाचार्योदित्तु ग्रीवदोषिणश्च जा
 तद्विभिर्वाचकतोलियंशोलः सएवचेतिस्वविरोपघातिकः ६ तथाशुभान्त्येद्वियांस्तानन्वर्थत उपपत्तीति भूतोपघातिकः ७ तथासंख्यसूत्रोक्तं संख्यसूत्रः प्रतिश्रुतं
 नादिभिर्वाचकतोलियंशोलः सएवचेतिस्वविरोपघातिकः ६ तथाशुभान्त्येद्वियांस्तानन्वर्थत उपपत्तीति भूतोपघातिकः ७ तथासंख्यसूत्रोक्तं संख्यसूत्रः प्रतिश्रुतं
 रोपणः ८ तथाश्रोधनः सऊत्तुहोऽस्तुतस्तुमोभयति ६ तथापृष्टिनांसिकः पराशुसुखस्य परस्साययीवादकरी १० अमिक्षाणं २ भीक्षारयिक्तति यभीक्षामभीष्ण
 मगधारयितायंक्तित्सायार्थस्य निग्रंक्तित्सायार्थस्य निग्रंक्तित्सायार्थस्य निग्रंक्तित्सायार्थस्य दीयमानंभिचोऽन्तत्ताति तथायोऽस्थंङ्छिदादिः
 रमणति दासस्त्वचोरस्त्वमित्वादि ११ तथा अक्षिकरणानां कल्पहानां नवानां चोत्पादयति १२ पौराण्यंति पुरातनानां कल्पहानां चमित्तुसुप्रयमितानां
 चमित्तलेनीपश्रानां पुनरुदीरयितागवति १३ तथासंख्यसूत्रोक्तं सचितादिप्रथित्यां कल्पवित्ना अन्तरिताया मासनादिकरीति ससरजस्वापाश्चिपादश्च १४ त
 स्थण्डिलादी सक्तामसपादीप्रमाष्टि अथवायथायधिकारबो सचितादिप्रथित्यां कल्पवित्ना अन्तरिताया मासनादिकरीति ससरजस्वापाश्चिपादश्च १४ त
 रिज्ञासी थरोवघाद्ऽए चूनुवघाद्ऽए संजलणे कोहणे पिठिमंसए अन्निरुक्कणं उहारइत्तात्रवइ सविज्ञाणंपुणोदीरित्तात्रवइ ससर
 रणाणं अणुप्युप्यं उप्याएत्तात्रवइ पौराणाणंअधिकरणानं स्वामिअविउ स्वविज्ञाणंपुणोदीरित्तात्रवइ ससरजस्वापाश्चिपादश्च १५ । प्रद्वकीरे
 गाउलादिका तेषूंअनुत्तयच्छे उपनानथी तेषूअनुत्तयच्छे १२ । पुगतनज्जानेनाल्लाहाने राभापिनापणे उपशमात्याके तेषूनेपुनरपिजली उहारककुएदारे १३ ।
 सस्वजस्वापाणिपाद सचित्तस्वजस्वराएक्यांभिरिति प्रथयासंघित अथिा स्वंङ्छिज्जपगनपूर्व १४ । अकालिनाध्यायकारे पहिले प्रधरेअने पाष्टिले प्रध
 रे काश्चिकास्व उचत्तराश्रयनादिवने प्रयोधेप्रधरत्तरो उक्तानिक्क द्दश्ये काश्चिकनभणे १५ । अकालिनाध्यायकारे पहिले प्रधरेअने पाष्टिले प्रध

पा अक्वालेखाध्यायकारकः प्रतीतः १५ तथाकलहकारः कसहकारोहेतुभूतकार्तृत्वकारो १६ तथायुक्कारः रानीमहाराश्रु नोत्पापःखाध्यायादिकारको गृहस्थ
 भाषाभाषकोवा १७ । तथाभंभाकरीलिव येनगणस्य भेदीभवति तत्तत्करीयेनच गणस्यमनोदुःखंसमुल्यलयतीभक्ता १८ तथासूरप्रमाणभोजी सूर्योदयादस्त्रम
 यं यावद्यनपानाद्यस्थमहारी १९ एषणाअसमितत्वापि अनेपणानैव परिहृति प्रेरितयातीसाधुभिः कलहायते तथाअनेपणीय मपरिहरन् जीवीकोपराधी
 वर्तते एवंचाक्षपरयोरसमाधिकरणा दसमाधिसानमिदं विंशतितममिति २० तथापनीदधयः सप्तपृथिवी प्रतिष्ठानभूताः सामानिकाः इन्द्रसमानर्ष
 यः साहस्यः विंशतिसहस्राणि बन्धतीवन्धसमादास्यबन्धस्थितिः स्थितिवन्धर्थः प्रत्याख्याननामकंपूवेनवमं सातादौनिचैकविंशतिर्विमानानीति ॥

स्त्रपाणिपाण्डु कालसज्जायकारणं व्याजिजइ कलहकरे सद्दकरे ऊऊकरे सूरज्यमाणान्नोई एसणासमिते श्या
 विजत्रइ मुणिसुहृणुणञ्चरहा बीसधणइ उहुउच्चत्तेणहोत्या सब्बेविञ्चणंघणोदही वीसंजीयणसहरसाइं बाह
 ल्लेणं प० पाणयस्सणं देविंदस्सदेवरसोबीसं सामाणिञ्चसाहस्सीड प० णंपंसयेञ्चणिज्जास्सणं कम्मस्सवीसं

रात्रिएमटे सादेसज्जायकारेगृहस्थनेपरी षपडोवीले १७ । भंभकार जेणेकारी गच्छनीभिदेहीय एहवीकरे १८ । सूरप्रमाणभोजी सूर्यभाथमे तिहालगेन जिमे
 १९ । एषणाअसमित अस्सुक्तो भातपाणीले वीजीयती इसीषदेतां कलहकरे २० । एहवीसअसमाधिसानकहा २० । मुनिसुवत बीसमातीर्थकार बीसधनुष
 उंचाजचपणेशया । सातमेनरकपृथिवीने प्रतिष्ठानभूत आधारभूत घनीद्वि कठिनसलाभूतपाणी तेघनीद्वि । वीसवीजनसहस्र बाडपणेकह्णी । माणतदेन
 लीकदशमी तेहनीइन्द्र तेहनदिवतानी इन्द्र तेदेवदे तेहना देवतानी राजा तेहनवीसहस्रसामानिक देवताकहा । नपुसकवेदनीयंवामं अर्थात् नपुसकवामं

सागरोवमोकोठाकोठीत बंधत बंधाठिई प० पञ्चकाणपुष्टसशवीसंवत्सू उरसाप्यणिमंठले वीरंसागरोवम
 कोठाकोठीतकालो प० इमीसेणं रयणप्यन्नाए पुढवीए अर्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई
 प० ठठीए पुढवीए अर्थेगइयाणं नेरइयाण वीरंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अर्थेगइ
 याणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणसु कप्पेसु अर्थेगइयाणं देवाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प०
 पाणतेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं वीससरोवमाइं ठिई प० अरारणेकप्पेसु देवाणं जहन्नेणं वीससागरोवमा
 इ ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिद्धयं उप्पतं जितिलं त्तिगिच्छं दिसा रोवत्थियं पलं रुइलं पुणं सुपु
 इ ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिद्धयं उप्पतं जितिलं उक्कपिणी अवससपिणीमंड
 नी वीससागरोपम कीडोबंधसमयथकीमांडी बंधनी स्थितिकही । प्रत्यास्थान नवमापूर्वनावीसवसु अधिकारविशेषकहा । उक्कपिणी अवससपिणीमंड
 रानेविषे कालचक्रानेविषे वीसकोडीकालकही । एतलेदशकोडाकोडी सागरोपम उक्कपिणीकाल दसकोडाकोडी सागरोपम अवसपिणीकालकही । एणी ए
 रत्नभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनी वीसपत्थीपम आउखीकही । कृतेतमा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनी वीससागरोपम आउखीक
 ही । असुरकुमार देवतानी केतलाएकनी वीसपत्थीपम आउखीकही सौधर्मइशान देवलीके केतलाएक देवतानी वीसपत्थीपम आउखीकही प्राणतदशमेक
 ल्यं देवनीउत्कही वीससागरोपम आउखीकही । आरणइयारमेकले देवनी जवन्थीवीससागरोपमआउखीकही दशमेकले जेदेवता । सात १ । विसातर
 सिद्धार्थ ३ । उल्ल ४ । भित्ति ५ । तिगिच्छा ६ । दिसा ७ । सौवस्तिक ८ । पल ९ । रुचिर १० । पुष्य ११ । सुपुष्य १२ । पुष्यावर्त १३ । पुष्याप्रभ १४ ।

॥ २० ॥ अथैकविंशतितमस्थानके तत्रचत्वारिसूत्राणि स्थितिसुत्रैर्विनासुगमनानिच नवरेश्वलं कर्तुरं चारित्र्यः क्रियाविशेषैर्भवति तत्रशबला सा
 द्योगात्साधवीपिते एवंतत्रहस्तकर्म वेदविकारविशेष कुर्वन्उपलक्षणत्वात्कारयन्वा शबलीभवत्येकः १ एवंमैथुनप्रतिषेवनानि क्रामादिभिस्त्रिभिः प्रकारैः २

पुष्पं पुष्पावहतं पुष्पपत्रं पुष्पकतं पुष्पवसं पुष्पज्यं पुष्पसिद्धं पुष्पुत्तरवर्तिष्ठसंगं विमा
 णं देवताए उववन्ता तेसिणं देवाणं उक्तीसेणं वीससागरोवमाद्दं प० तेणं देवा वीसाए उरुमासाणं ज्या
 णमंतिवा पाणमंतिवा जस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं ज्याहारठेसम
 प्यज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेवीसाए भवगहणेहिं सिज्जस्संति बुज्जस्संति मुच्चिस्संति परि
 निघाइस्संति सब्दुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ २० ॥ एकवीससबला पन्नता तंजहा ।

पुष्पकांत १५ । पुष्पवर्ण १६ । पुष्पलेश १७ । पुष्पध्वज १८ । पुष्पशृङ्ग १९ । पुष्पसिद्ध २० । पुष्पीत्तरावतंसक २१ । एहविमाने देवतापणे उपनाच्छि तेह देव
 तानो उक्कथी वीससागरीपम आउखीकह्यो । तेदेवता वीसअईमासे पखवाडे स्वासीस्वास घणेलें उंचीस्वासले नीचीस्वासमंके तेहदेवतानो वीससहस्सवष
 आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेवीसभवनेआंतरे सीभस्से बुभस्से मूकास्से सर्वदुःखनो अंतकरिस्से भोचजास्से ॥ इतिवीसमूं ठायूं समत्तम् ॥

॥ २० ॥ हिवे एकवीसमी अधिकार लिखियेछे ॥ एकवीस सबलाकह्या जेणिकरी शबल चारित्र करबुरकीजे तेशबला एकवीस सबलाकार
 तीथकी साधुपणी शबलकह्यो तेकहेछे । हस्तकर्ममुष्टिजापकरती शबलकह्यो । १ । मैथुनप्रते सेवतीथकी शबल २ । रात्रिभोजन करतीथकी ३ । आधाक



तथाराशिभोजने दिवांगृहीतं दिवाशुक्लमिलादितिभिसत्त भिक्षुगज रतिशमादिभिशुंजानः ३ आधाकार्म ४ सागारिकाः खानद्रातातापिंडं ५ उद्विभिनं श्री
 तमाह्वयेयमानंशुजानः ७ प्रस्तः पयांसासानभेकतोगणाप्रणमन्यसंक्रामन् ८ श्रतमीसखीनुदकलिपान् कुर्दन् उदयलिपथ नाभिमामाणजलायगाहनमिति ९ श्रत
 प्रनादिभुजानः ९ प्रस्तः पयांसासानभेकतोगणाप्रणमन्यसंक्रामन् ८ श्रतमीसखीनुदकलिपान् कुर्दन् उदयलिपथ नाभिमामाणजलायगाहनमिति ९ श्रत
 मांसस्थनीणिमायाख्याना निस्थानमितिभेदः १० राजपिच्छंशुजानः ११ प्राकुब्जाप्राणतिपातंशुर्वन् उपेत्यपृथिव्यादिका हिंसत्रित्यर्थः १२ प्राकुब्जाप्राणत्यायाऽ
 हयकर्मंकरेमाणे सबले मेज्जणंपिच्छिसेवमाणे सबले उद्वेसियंकीयं आहृददिजामाणं चूंजमाणे सबले आहृददिजामाणं चूंजमाणे सबले आहृददिजामाणं चूंजमाणे सबले
 सागारियंपिंठं चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले राइजोश्चणंशुंजमाणे सबले आहृददिजामाणं चूंजमाणे सबले आहृददिजामाणं चूंजमाणे सबले आहृददिजामाणं चूंजमाणे सबले
 पिच्छियाइखेत्ताणं चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले
 वेकरेमाणेसबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले चूंजमाणे सबले
 र्माभोजन भुंजतीथकी ४ । नेहनी उपसरोरुयो, तिष्ठइस्थाना घरनीपिष्ठ प्राप्तरंजतीथकी ५ । उद्वेसकतेजि राशुने तिमिते उद्वेमी भातपणिक्के तेडइथ ,
 वातथा श्रीतवेवाती प्राखी प्राहृतसमाहृतप्राखी आहारते तीगबल ६ । श्रीपयशं बलीबली प्रप्रनादिप्र पधक्खीने जीमयी ७ । केहले क्ख्यासमांहि गळ
 पाबटयकी प्रबल ८ । एवमासमांहि निपिदगलिप करती नाभिमामाण जलावगाहन तीदगलिप ९ । मासमांहि तिणिठाण सेवतीथकी १० । प्राकुटीए प्रदत्तादान
 ती ११ । प्राकुटीएप्राणातिपातकरती पुथिव्यादिकनेकणती १२ । प्राकु टि एक्खमावाद वदती १३ । प्राकुटीए प्रदत्तादान प्रतिबोतीकी १४ । प्राकुटीए

दन् १३ अदत्तादानं टहन् १४ आहुतुअवानंतहितायांपृथिव्यास्थानं वानैधिवाचेत् यत्नायोगैस्वाध्यायभूमिं वाकुर्वन्वित्यर्थः १५ एवमाहुव्या सस्निग्धसरज
 स्नायापृथिव्या विस्वारवत्यां सचित्तवत्यां थिलायां लेष्टैवा कीलावासिदारणि कीलापुष्याः १६ अन्वस्निग्ध तथाप्रकारे सप्राणिसबीजादी स्थाना

करेमाणेसबले आउहियाए मुसावायंत्रदमाणे सबले आउहियाएअदिसाणंगिरहमाणे सबले आउहियाए
 अणंतरहियाए पुढवीएठाणं वानिसिहियंवावेलिमाणेसबले एवंआउहियाचिन्तमंताए पुढवीए एवंआउहि
 या चिन्तमंताए सलाएकुलावासंतिवादाएगुठाणं वासहियंवा चेतमाणेसबले जीवपइठिएसपाणेसबीएसहरीए
 सउत्तगेपणंगदगमहीमक्षेत्रासंत्ताणए तहपगारठाणं वासिज्जंवानिसहियंवा चेतमाणे सबले आउहियाए
 मूलज्जोअणवा कदज्जोयणवा तयान्जोयणवा पवालज्जोयणवा पुप्फज्जोयणवा फलज्जोयणवा हरियज्जोयणंवा

सचित्तं पृथिवीजपरि बैसती अथवा सूवती वा स्वाध्याकरती १५ । सचित्तमिला तथा पापाण पृथिवी सचित्तउपरि घुणसहितकाष्ठ जपरिबैसती सूवती
 अथवा स्वाध्याय प्रमुखकरती १६ । जीवप्रतिष्ठित एहवी सप्राण बीजप्रमुखउपरि बैसतीथकी एकेश्रिय वैद्वस्त्रिय तैश्रिय चउरिंद्रिय इत्यादिक जीवविराधना
 करतीअथवा उपरिसूती सज्जायकरती १७ । आहुटीएकरौ मूलभोजन अथवा वादभोजन त्वचाक्कहिये वृचनीछाल तेहनोभोजन प्रवालभोजन पुष्पभोजन
 वल्लीफलभोजन हरियभोजन करतीथकी १८ । एकवर्धमांहि दसदगलेपकरती सबल १९ । वर्षमांहि दसमायाठाण सेवतीथकी २० । अर्धमांहि वलीवली श्रती

सक चेतिषट्त्रिंशाननामनोति ॥ २१ ॥ हाविशतितमंतुस्थानं प्रसिद्धार्थमेव नदरं सूत्राणिषट्स्थितेरर्वाक् तत्रमार्गस्त्ववननिर्कारार्थं परिपद्यते इति परीपत्ताः दिगिच्छति बुभुक्षासैवपरीषद्दो दिगिच्छापरीषद्दति सहनचास्त्वमर्वादानुस्रवनेन एवमव्यत्रापि १ तथा पिपासाढट् २ शीतोष्णप्रतीति ४ तथाद शोधमशकाद्य दशमशकाडभयाप्येते चतुरिन्द्रियामहत्त्वामहत्त्वकृतत्रैषाविशेषो ऽथवा दंश्रीदशनंभक्षणमित्यर्थः तज्जधानामशका दशमशकाः एतेचयूकामलु शस्र्लोटकमविकादीना सुपलक्षणमिति ५ तथाचिदानांवरत्राणांवासगवधनवीनाऽवदात सुप्रमाणानां सर्वपांवाअभावः अचेलत्वमित्यर्थः ६ अरतिर्मानसोवि

च्चिरस्यति परिनिष्ठाइस्सति सध्रुस्काणमंतंकारिरसति ॥ २१ ॥ बावीसपरीसहा प० तं० ।

दिगंढापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइपरीसहे

मोवजासे इतिएकवीरज्जूं ठाणुससत्तं ॥ २१ ॥ हिवे बावीसमी शमवाय लिखियेच्छे । बावीस परीसह परिसामस्रपणे निर्जराने अथेसहिबो खमवो तेषरीसहकक्षा । तेकहेच्छे । दिगंका परीसह दिगकाशब्द देशीभाषण जुधा तेहनी सहिवो साधुमर्वादानो अनुस्रविवो तदिगकापरीसह १ । एम पिपासा ढपापरीसह २ । शीतठढ तेहनीपरीसह ३ । उष्णतापनीपरीसह ४ । डस मसा तथा जू साकणनो परीसहवो ५ । आंचलवस्त्रानी अभावनीपरी सह ६ । अरतिमानसी विकारपरीसह ७ । स्त्रीनोपरीसह ८ । चर्याशासादिकनेविषे अनियत विहारनोपरीसह ९ । सोपद्रवस्त्राधायापरीसह १० । अम

षाधिंयतिः सूत्राणि तत्र सर्वद्रव्यद्रव्यपर्याय नयाद्यर्थसूचनासूत्राणि छिन्नच्छेदयथाश्याइति इहयोनयः सूत्रं छिन्नच्छेदनेच्छति सच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगल
 मुकठमित्यादिश्लोकाः सूत्रार्थतः च्छेदनस्मिपती न द्वितीयादिश्लोकानपेक्ष्यते इत्येव यानिसूत्राणि छिन्नच्छेदनयवति तानिच्छिन्नच्छेदनयकानि तानिचस्वसमयायाः
 जिनमवाग्नितायाः सूत्राणांपरिपाटिः पद्धतिस्तस्याः स्वसमयसूत्रपरिपाठ्याभवन्ति तयावाभवतीति तथा अछिन्नच्छेदयथाश्याइति इहयोनयः सूत्रमच्छिन्नच्छे
 देनच्छतिसोच्छिच्छेदनयोयथा ॥ धम्मोमंगलमुकठमित्यादिश्लोको ऽर्थतोद्वितीयादिश्लोकमापेक्षमाय इत्येवंयान्यच्छेदनयवति तान्यच्छिन्नच्छेदनयकानिता
 निचाजीविकसूत्रपरिपाठ्या गोयालकमतानुसारिणोऽभिधीयन्ते यस्मात्ते सर्वत्र्यात्मकप्रतिवद्सूत्रपद्धत्यां तयावाभवन्ति अक्षररचनाविभागस्थितानध्यर्थतोच्यो

अबिन्वलेश्याइयाइं श्याजीवियसुत्तपरिवाणीए बावीससुत्ताइं तिणकणइयाइं तेरासिञ्च सुत्तपरिवाणीए

परिकर्म १ । सूत्र २ । पूर्वगत ३ । प्रथमानुयोग ४ । चूलिका ५ । तिहां बीजमेद दृष्टिवादना बावीससूत्र सर्वद्रव्यपर्याय सूत्रवाथकी सूत्रकहिये छिन्नच्छेदनया
 इतिनयक सूत्रतेछिन्न काहताच्छियांखंख्यांछेदेवेकरीनेतेछिन्नच्छेदनय काहिये जिमधम्मोमंगलमुकठं इत्यादिश्लोक सूत्रार्थयकी केदेवेकरीरश्लोबीजाश्लोकानी त्रपे
 चा वाछानकरे एहवा जीसून छिन्नच्छेदनयवंत तेछिन्नच्छेदनयकानि काहिये स्वसमय जिनमत आश्रितभूत परिपाटी सूत्रपद्धतिने विषेछे । बावीससून अ
 छिन्नच्छेदनयकके नयकहतां सूत्रच्छेदेकरी छिन्नथी खंडितनथी तेअछिन्न केदनय काहिये जिमधम्मोमंगल इत्यादिश्लोक अर्थयकी बीजाश्लोकनी वाछाकारी
 तेबावीससून अछिन्नच्छेदनयक आजीविक गोसालमत प्रतिवद्सूत्र परिपाटी सूत्रपद्धतिनेविषेछे । बावीससूत्र त्रिकनयवंत तेहगोसालकमतानुसारीय

गामे दुष्प्रिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कठुयरसपरिणामे झुंवलरसपरिणामे मञ्जर
 सपरिणामे करकफासपरिणामे मडुञ्जफासपरिणामे गुरुफासपरिणामे लङ्गफासपरिणामे सीतफासपरिणा
 मे उसिणफासपरिणामे णिष्ठफासपरिणामे लुरुफासपरिणामे झुगुरुलङ्गपरिणामे गुरुलङ्गपरिणामे इमी
 सेण रयणप्यन्नाए पुढवीए झुत्येगइयाणं नेरइयाणं वावीसपलिउवमाइं ठिई प० ल्छीए पुढवीए उक्कोसे
 णं बावीस रागरोवमाइं ठिई प० झुहेसत्तमाए पुढवीए झुत्येगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं वावीसं साग
 रोवमाइं ठिई प० झुसुरकुमाराणं देवाणं झुत्येगइयाण वावीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु

म ५ सुरभिसुगंध परिणाम ६ । दुरभि दुर्गंधपरिणाम ७ । तीखेरसे परिणत तेतीश्चरस परिणाम ८ । कटुकरस परिणाम ९ । कषायरस परिणाम १० ।
 अदिलरस परिणाम ११ । मधुररस परिणाम १२ । कर्कशस्यर्थं करी परिणतपुद्गल ते कर्कशस्यर्थपरिणाम १३ । मृदुस्यर्थपरिणाम १४ । गुरुस्यर्थ परिणाम
 १५ । लघुस्यर्थपरिणाम १६ । शीतस्यर्थ परिणाम १७ । उष्णस्यर्थ परिणाम १८ । रुचस्यर्थ परिणाम २० । अगुरुलघुस्यर्थ परिण
 तद्रव्य तेस्त्रिसिद्धिचेत्र घटाकारैरह्नामनुथचेत्र बाहिर जीतिषविमान २१ गुरुलघुस्यर्थ परिणतद्रव्य तेतिर्यगामि जीतिषविमान जाणिवी तथा वालुआ
 दिक २२ एणीयैरत्तप्रभाप्रथिवीनिविषे केतलाएकनारकीनी वावीसपत्योपम आजखीकह्नी छ्ठीतमाप्रथिवीयैउत्कष्टी वावीससागरोपम आउखीकह्नी हेठिसातम
 प्रथिवीयै केतालाएकनारकीनी जघन्वीवावीससागरोपम आउखीकह्नी असुरकुमारकेतलाएक देवतानी वावीसपत्योपम आउखीकह्नी सीधर्मैश्यानेद्वेलोके

तिल्यंकरा पुष्टे मंशुलिरायाणो होत्या तं० अजितसंचव अग्निगंदण जावपासोवष्टमाणोय उसन्नोणं अग्रहा
 कीसलिण पुष्टन्नवे चक्रवर्ही होत्या इमीसेणं रयणप्यन्नाण पुठवीण अत्येगइयाणं नरइयाण तेवीस सागरो
 वसाइं ठिई प० अहेसत्तमाणं पुठवीण अत्येगइयाणं नरइयाणं तेवीसं सागरोवसाइं ठिई प० असुर
 कुमाराणं देवाण अत्येगइयाण तेवीसं पलिन्नवसाइं ठिई प० सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्येगइयाणं तेवी
 स पलिन्नवसाइं ठिई प० हेठिम मज्झिमगेविजाणं देवाणं जहन्मेणं तेवीसं सागरोवसाइं ठिई प० जे
 देवा हेठिमहेठिमगेवेजयविभाणंसु देवत्ताण उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्खोसेणं तेवीसं सागरोवसाइं

गनापारगाभीहुया । तेकहंके । अजित १ । सभव २ । अभिनदन ३ । सुमति ४ । जावत्तुं पार्श्वनाथ छेहडे वर्डमानस्वामीलगे ऋषभनाथआदिअरिहन्त की
 शलदेशना जपना पहिलेभवे वज्जनाभचक्रवर्तिपणी चौद्यूवीहुया । जंबूद्वीपे भरतकेत्र एणी अवसरपिणीये वेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे मडलीक राजाहुया ते
 कहेके । अजितनाथ सभव अभिनदन यावत् वर्डमानस्वामीलगे ऋषभ अरिहत कोगलदेशना उपना पहिलेभवे वज्जनाभचक्रवर्तिहुया । एणीये रत्नप्रभा
 पृथिवीये केतलाएक नारकीनेतेवीस पत्नीपम आउखीकह्यो । हेठिसातमी पृथिवीये केतलाएक नारकीनी तेवीस सागरोपम आउखीकह्यो । असुरजुमारदेव
 तानी केतलाएकनी तेवीस पचोपम आउखीकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानी तेवीस पत्नीपम आउखीकह्यो । हेठिममध्यम शैविके एत
 ले बीजे शैविके देवतानी जबव्यतिवीससागरोपम आउखीकह्यो अदेवता हेठिम शैविके पहिले श्रविके विमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानी उल्लु

चत्वारिसूत्राणि अर्वाक्स्थितिसूत्रेभ्यः तत्र सूत्रकृतांगस्य प्रथमेशुतस्त्रयोषोडशाध्ययनानि द्वितीयेसततेषांचान्वर्थस्तदधिगमाधिगम्यइति ॥

तुर्विद्यतिस्थानके षट्सूत्राणिस्थितःप्राक् सुगमानिच नवरं देवानामिन्द्रादीनामधिकादेवाः पूज्यत्वाद्देवाधिदेवाइति तथाजीवाडति जंबूद्वीपलक्षणाहत्तत्रैत्रस्य

ठिई प० तेषं देवा तेवीसाए अष्टमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊरुसंतिवा नीससंतिवा तेसिणं दे
वाणं तेवीसाए वाससहस्रोहिं अ्याहारठे समुप्यजइ संतेगइया नवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए नववग्गाहणे
हिं सिज्जस्सति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइरसंति सहदुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ २३ ॥

चउल्लीसं देवाहि देवा प० तं० । उसन्न अजित सन्नव अजिनंदण सुमइ पउमप्यह सुपास चंदप्यह सुवि
धि सीअल सिज्जांस वासपूजा विमल णंत धम्म सति कुंथु अर मही मुणिसुव्वय नमि नेमी पास वट्टमाण

ष्टौ तेवीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेहदेवता तेवीसे पखवाडे स्वासीस्वासादिक बोलकरे जचोले नीचोमंके तेहदेवताने तेवीसवर्ष सहस्रे आहारनी वां

छाउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेतेवीसमवने आतरे सीम्हस्ये बूम्हस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्थे मोचजास्थे ॥ इति तेवीसमी समवाय मम्मत्तम्
॥ २३ ॥ द्विवे चौवीसमी समवाय लिखियेछे । चौवीस देवाधिदेव देवइद्रादिक तेषांहि अधिकादेव पूज्यपणायकीते देवाधिदेवकहा तेकहेछे ऋषभ १

अजित २ । समव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपाख ७ । चद्रप्रभ ८ । सुविधि ९ । शीतल १० । अयांस ११ । वासुपूज्य १२ । विमल १३

अनत १४ । धर्म १५ । शांति १६ । कुथनाथ १७ । अरनाथ १८ । मत्तिनाथ १९ । मुनिसुव्रत २० । नमिनाथ २१ । नेमिनाथ २२ । पाखनाथ २३ । वड्डमान

वर्षाणां वर्षधराणां ऋद्धिसीमाजीवीयते आरोपितज्याधनुर्जीवावाक्यत्वात्तयोश्चलघुहिमयच्छिखरिसत्कयोः प्रमाणं २४ ८ ३२ । अष्टविंशद्भागशयोजनस्य किं
 चिद्विशेषाधिकः अभागाथा षडभोसहस्राद् नययसएजोयणाथत्तसे च्छाहिमवंतजीपा आयाभिण्वालंबं चत्ति ॥ १ ॥ कलाधेभितिकोनविंशतिभागस्यासौ
 तथाष्टत्रिंशद्भाग एवभवतीति चतुर्विंशतिदेवस्थानानिदेवभेदा दशभवनपतीनां शष्टौव्यन्तराणां पञ्चज्योतिष्थानां एककल्पोपपन्न वैमानिकानां एवंचतुर्विंशतिः
 सैद्धान्तिकमरेंद्रादाधिष्ठितानियोगाणि चैवेयकानुत्तरसुरलक्षणानि अहं २ इत्येवं इन्द्रायिगुताव्यहमिद्राणि प्रत्यालेंद्रकाणीत्यर्थः प्रतएव त्रिंन्द्राणि त्रि
 दशमानगयानि अपुरोहितानि अविद्यमानशान्तिकर्मकारीणि उपलक्षणालात्पुंरंदरस्य त्रिदशमानसेवकजनानीति तथाउत्तरायणगतः सर्वाभ्यतरमण्डल
 प्रविष्टः सूर्यःकर्मसजातिदिनइत्यर्थः चतुर्विंशत्यगुलिकांपौरुथां प्रहरभवाच्छाया पौरुषीया तांछायां हस्तप्रमाणशंकोरितिगस्यते निर्वर्त्येच्छला शंवाक्यालंका

चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपह्ययाणं जीवाउ चउष्टीसं चउष्टीसं जोयणसहस्राइं षववतीसे जोयणस
 ए एगं अष्टतीसइन्नागंजोयणसस किंचिचिविसेसाहिअ्याउ ज्ञायाभेणं प० चउवीसं देवठाणासइदिया प० से

२४ । मेरुशकी तीनपर्वत दधिणदिसेछे तेमांहि छेह्ल्यो लघुहिमयंत उत्तरदिसे तीनपर्वत तेमांहि छेह्यथोशिसुरिए गिहुयर्षधरपर्वतनी जीवाचिन्ननी अने
 वर्षधर पर्वतनी सरलसीमाते जीवाकही ते २४८३२ योजन नवसे बन्नीस योजनना उगणीसभागकीजे तेहना अष्टीया ३८ थाय एहवी अर्षकला वांईक
 विशेषाधिज साबपणीकही । चीबीस देवनास्थानक देवतानभिद भवनपति १० अन्तर २७ ज्योतिषी ५ वैमानिक सर्वांगिली एकभेदे एह २४ भेदे देवता रोद्र

रेनिवर्तते सर्वाभ्यन्तरमंडलात्तद्वितीयमण्डलमागच्छति आह च आसाढमासेदुपयत्नादिपवहइति यतः स्थानाद्ददीप्रवहति षोडशवर्तते सचपद्मद्वादशोत्तोरणेन

साञ्जहमिंदा अपुरोहित्र्या उत्तरायणगतेणसूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीलायणिञ्चत्तइत्ताणं णिञ्चइति गंगा
 सिंधुनेणं महाणदीनुपवाहे सातिरेणेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० रत्ता रत्तवती उणंमहाणदीउ पवाहे
 सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइथाणं नेरइथाणं चउवीसं
 पलिउवमाइं ठिइं प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइथाणं नेरइथाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिइं प०
 असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइथाणं चउवीसं पलिउवमाइं ठिइं प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइथा

क इन्द्रसहितकक्षा । शेषथाकता नव त्रैवेयक पांचभगुत्तरना देवता अहमिंद्र सेवक स्वामीनीभावनही । उत्तरायणगत सूर्यहुए एतलेनिषधने माथे स
 वांभ्यन्तरमांडले कर्कसंक्रांतिदिने सूर्य चौबीस अगुले हस्तप्रमाणे त्रयणीछाया एपौरुषीछाया ग्रहरदिवसनी छाया प्रतिनिवर्तावीने निवर्तरेहे । आसाढे
 सि दुपयाइति वचनात् । गंगापूर्वसमुद्र गामिनी सिन्धुपश्चिमसमुद्रगामिनी महानदी । प्रवहे तीजस्थानकथकी पद्मद्रह्यकी निकली तेप्रवाहनेविषे साति
 रेकभाभेरी चौबीसकीस विस्तारे पिहुलपणेकह्यो भाभिरापणायकी २५ कोसहुइं । रत्तारत्तवती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी प्रवाहनेविषे पुढरीकद्रहने
 विषे सातिरेक भाभेरी २४ कोसविस्तार पिहुलपणेकह्यो भाभिरापणायकी २५ कोस । एणीएरत्तप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी चौबीसपल्योपम
 आउखीकह्यो । हेठीएं सातमी पृथिवीएं केतलाएक नारकीनी चौबीस सागरोपम आउखीकह्यो । असुरकुमार देवनी केतलाएकनी चौबीस पल्योपम आउखो

निर्गमइहसंभाव्यते नपुनर्यदल्यत्रप्रवहशब्देन मकारमुखप्रणालनिर्गमः प्रपातकुंडे निर्गमीवाविदसाक्षितसूत्रंहि जंबूद्वीपप्रज्ञस्थामिह चतुर्विंशतिक्रीसप्रमाणा ॥

णं चउवीसं पलिउवमाइं ठिईं प० हेठिमउवरिसर्गेवेज्जाणं देवाणं जहन्तेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिईं
प० जेदेवा हेठिममज्जिमर्गेवेज्जायविमाणेसु देवत्ताए उववन्ता तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोव
माइं ठिईं प० तेणं देवा चउवीसाए अण्ठमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसि
णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहि अ्याहारठसमुष्यज्जईं संतेगइया ञवसिद्धियाजीवा जे चउवीसाए ञव
ग्गहणेहि सिज्जिस्संति वुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परनिह्वाइस्संति सहदुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ २४ ॥

पुरिमपच्छिमगाणं तिल्यकराणं पचजामस्सपणवीसं आवणाउ प० तं० इरिअ्णसमिईं मणगुत्ती वयगुत्ती अ्ण
काही । सौधर्म ईथान देवलोके केतलाएक देवनी चौवीस पद्योपम आउखीकहो । हेठिम उपरिम त्रैवेयक तेवीजं त्रैवेयक तिहांना देवतानी जवन्थी चौ
वीस सागरोपम आउखीकहो । जेदेवता हेठिम मध्यम त्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाच्छे तेहदेवनी उल्कंथे चौवीस सागरोपम आउखीकहो । तेहदेवता
चौवीस पखवाडे खासीस्वासादिक चारिवीलकरं तेहदेवताने चउवीसवर्ष सहस्त्रे आहारने अर्थउपजे । केतलाएक मब्बजीव जेचौवीस भवने आंतरे सौक्क
से बूक्कसे मंकासे सर्वदुःखनी अंतकरसे मीळजासे ॥ इति चौवीसमी समवाय पूर्णथयो ॥ २४ ॥ हिंवे पचीसमी समवाय लिखियेछे । प

हिला श्रीआदिनाथनेवारं छेहलथा महावीर तीर्थकरनेवारं यतीना पचमहाव्रतनी पचवीस भावनाकहो महाव्रतराखिवाना उपाय तिहां पहिला महा

॥ पञ्चविंशतिस्थानकमपिसुबोधनवरमिहस्थितरवीर्गुनवसूत्राणि तत्रपञ्चजामस्यति पञ्चानांयामाना महाव्रतानांसमाहारस्तत्पंचयामंतस्यभावणा
 श्रौत्ति प्राणतिपातादिनिवृत्तिलाक्षणमहाव्रतसंरक्षणायभाष्यन्ते इतिभावनास्वाद्य प्रतिमहाव्रतं पंचपंचेति तत्रैर्यासमित्याद्याःपञ्च प्रथमस्यमहाव्रतस्य तत्रा
 लोकाभाजनभोजन आलोकनपूर्वभाजनपञ्चेभोजन भक्तादेरश्वहरण अनालोक्यभाजनभोजनेहि प्राणिहिंसासम्भवतीति तथानुविचिंत्यभाषणतादिकाद्विती
 यस्तत्रक्रीधविवेकः परित्यागः तथाऽवग्रहानुज्ञापनादिकासृतीयस्य तत्रावग्रहानुज्ञापना १ तत्रचानुज्ञातेसीमापरिज्ञान ज्ञातायांचसीमायांस्वयमेव उगह
 मिति अवग्रहस्थानुग्रहता पश्चात्स्वीकरणमवस्थानमित्यर्थः ३ साधर्मिकाणां गीतार्थसमुदायविहारिणां संविगानामवग्रहो मासादिकालमानतः पंचशो

लोयन्नायनोयणं श्यादानञ्जठमत्तनिरकेवणासमिद् ५ श्युण्डुंतिज्ञासणया कीहविवेगे लोन्नविवेगे जयवि
 वेगे हासविवेगे ५ उगहश्च्युणवता उगहसीमंजाणया सयमेवउगहंश्च्युणेरहणया साहस्रियउगहंश्च्यु

व्रतनी पांचभावनाकही तेकहेछे । ईर्यासमितिये मार्गे जीईचालवी एहप्राणतिपात निवर्तन लक्षण प्रथममहाव्रतने राखवानी उपाय १ । एमसगलेकहेछे
 मनीगुप्ति २ । वचनगुप्ति ३ । आलोकभोजने विपुलठामहे जिमवी ४ । आदानलेवी भांडकहतां पात्रादिकनी न्निचेप मूकवी तिहां समिति पूंजीकरी पछे
 लेवी मूंकिवी ५ । हिवे बीजा महाव्रतनी भावना पांच विचारी बोलवी १ । क्रोधनी त्यागछांडिवी २ । लोभनीत्याग ३ । भयनीत्याग ४ । हासनी छाडिवी
 ५ । हिवे बीजा महाव्रतनी भावना पांच । गृहस्थने श्रोतलादिके रहिवानीअर्थ अवग्रह आत्रानो जणावणी १ । अवग्रहगृहस्थेदीधियके सीमामर्यादानो ज
 णावणी २ । सीमाजाण्थके स्वयमेवपीतेज अवग्रहनी अगुगहकता अंगीकारकर्वि रहिवी ३ । साधर्मिक अनेरा यतीने अवग्रहमार्गिणं तथा उपाययने

॥
 भवत्यन्यथावारोधिर्तेतिवाचनान्तरे आवश्यकानुसारेणदृश्यंते तथा मिथ्यादृष्टिरेव तिर्यग्वासा संक्षिप्तपरिणामद्रव्युक्तमयमपि द्वौद्रियाद्यपर्यायादिकाः कामप्रका-
 तोर्वभातिनसम्बद्गृह्णित्वासां मिथ्यात्वप्रत्ययत्वादिति मिथ्यादृष्टिगृहणं विकलेन्द्रियोद्विचित्रुरिन्द्रियाणामन्यतमः समित्यलंकारे पर्यायीन्या अपिबभ्रातीत्यप
 यांसगृहणमपर्यायकएवहेता अप्रशस्तपरिवर्तमानद्वेतररूपावभातिसौघेताः संक्षिप्तपरिणामोवभ्रातीति संक्षिप्तपरिणामद्रव्युक्त मयमपिद्वौद्रियाद्यपर्याय

॥
सा उगग्रहपङ्क्तिमा सत्तिकसप्तथा ज्ञावण विमुत्ती ॥ २ ॥ निसीहज्जयणंपणवीसइमं सिच्छादिठिविगलिंदुर

॥
 सीय चूलिकानी अधिकारनथी परचूलिकावाही सूत्रमाहि तेमाटे इहानिसीयपद गृह्याख्य विमुक्त अध्ययन परिणनिसीय चूलिकासहित पचवीसनी जाणिवो
 आचारागे बीजीश्रुतस्त्वधके तेमाहि पहिलेश्रुतस्त्वधि नवअध्ययन तेमाहि नवमोअध्ययन महापरिज्ञानले तेहना उद्देशा १६ तेहदेवद्विगणि चमायम
 ये विच्छे दीपत्योपध्याये आठअध्ययन उगरा तेहना उद्देशा ४४ के एकावनमे ठाणिलिखाछे । हिवे बीजे श्रुतस्त्वधि अध्ययन १६ उद्देशा २५ तेचूलिकामाहि
 अंतर्भव्याच्छेती पहिला श्रुतस्त्वधना नवअध्ययन बीजे श्रुतस्त्वधि अध्ययन १६ एवं पचवीस अध्ययनकक्षा । अनी पहिला श्रुतस्त्वधना ८ अध्ययनना उद्देशा
 ६० बीजा श्रुतस्त्वधना उद्देशा २५ सर्वमिली ८५ उद्देशायया । हिवे बीजे श्रुतस्त्वधे १६ अध्ययनके तेमाहि पहिला सात अध्ययन पहिली चूलिका रूपच्छ
 आगत्या ७ अध्ययन एकसरां बीजी चूलिकारूप पनरमं अध्ययन नीजी चूलिकारूप सोलमं अध्ययन चौथी चूलिकारूप पांचसा निशीयाध्ययननी इहां अ
 धिकारनथी । मिथ्यादृष्टि । विकलेन्द्रिय वेदश्रिय तेन्द्रिय पदर्शन्द्रिय अपर्शोधायका संक्षिप्तपरिणामे महामंडीअध्यवसाये उपार्ज्यीकर्म तेहनी पचवीस उत्तर
 प्रकृतिबंधी तेकहेछे । तिर्यचगति नामकर्म १ । विकलेन्द्रिय जातिनाम २ । औदारिक शरीरनाम ३ । तैजस शरीरनाम ४ । कामण शरीरनाम ५ । हुडक

कपश्रीयवध्नाति तत्रविग्लिदियजायनामति कदाचित् वीद्वियजात्यासह पचविंशतिः कदाचित्नीद्वियजात्या एवमितरथापीति । गनेत्यादि पंचविंशतिगं
 व्यूतानि पृथुलेनयः प्रयातस्तेनेतिशेषः दुहश्रीति दयोर्दिशीः पूर्वतो गगा अपरतः सिधुखिलथः पञ्चद्विनिर्गते पच २ योजनशतानि पर्वतोपरिगलादधि
 णं अ्यपज्जत्तरुणं सकलित्तरुणमिगामरसकम्पस्सपणवीसंउत्तरपगळीत्तुणिवंधति तिरियगतिसामं विगलिं
 दियजातिनामं उरालियसरीरनामं तेअ्यगसरीरनामं कम्पणशरीरनामं ऊळ्ळगसठाणनामं उरालियसरीरंगीवंग
 नामं ळैवठसधयणनामं वसुनामं गधनामं रसनामं तिरियाणपुद्धिनामं अ्यगुरुलज्जनामं उवघाय
 नामं तसनामं बादरनामं अ्यपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अ्यसुन्ननामं दुज्जगनामं अ्युणादेज्जना
 मं अ्यजसोक्किहिननामं निम्भाणनामं २५ गंगासिंधूत्तुणंमहाणदीत्तुपणवीसगाज्जयाणि पोहत्तेणं घळ्ळमुहपवित्तिण
 सस्याननाम ६ । ओदात्कि शरोरना अगो भाग ७ । छेवठसधयणनाम ८ । वर्णनाम ९ । गंधनाम १० । रसनाम ११ । स्वर्धनाम १२ । तिर्यचनी आहुपूर्वी
 १३ । अगुक्क लुणनाम १४ । उपवातनाम १५ । चसनाम १६ । बादरनाम १७ । अपर्यायकनाम १८ । प्रत्येककायनाम १९ । अस्थिरनाम २० । अशुभनाम
 २१ । दोर्भाग्यनाम २२ । अनादियनाम २३ । अजस अकीर्तिनाम २४ । निर्माणनामकामं २५ । गगासिधूनदीपचवीस पचवीस गाज्जनेप्रवाहे पिहलपणे पच
 द्रहयकी निकली पांचसय योजन हिमवतपर्वत उपरचालीने दज्जिणदिशे प्रवती घडसुहपवत्तिण घडानामुखनीपरी पचवीसकीस पिहलीजीभीये मगर
 मुखपणालीये मुलावलीदारसंठाणे सस्थितप्रपात सययीजनीच हिमवतपर्वतधकी हेठीउतरी गगानदी गगाप्रपात कुडसां पड्ढे सिधुनदी सिधुप्रपाते पडे

षाभिमुखेप्रवृत्ते घडमुहपवित्तिरणंति घटमुखादिव पंचविंशतिकोशे पृथुलजिह्वाकात् मकरमुखप्रणालात् प्रवृत्ते गमुक्तावलीनाम मुक्ताशरीराणां योहारस्वत्सं
 स्थितेन प्रपतत्कालसतानेन योजनयतोच्छ्रितस्त हिमवतोऽधीवर्तिनीः स्वकीययोः प्रपातकुण्डयोः प्रपाततः एवरत्नारक्तवली नवरशिखरिर्षधरोपरि प्रतिष्ठित
 णं मुत्ताबलिहारसंठिएणंपवातेणपठति रत्नारत्नवईनेणं महाणदीनुपणवीसंगाऊयाणिपोहतेणं मकरमुहपवि
 त्तिरणं मुत्ताबलिहारसंठिएणंसंठिएणंपवातेणपठति लोगविंदुसारस्सणं पुष्टस्स पणवीसंवत्यू प० इमीसेणं रयणप्प
 न्नाए पुठवीए इत्येगइयाणं नेरइयाणं पणवीस पलिउवमाइं ठिई प० इहेसत्तमाए पुठवीए इत्येगइया
 णं नेरइयाणंपणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं इत्येगइयाण पणवीसं पलिउवमाइं दे
 ठिई प० सोहम्मसीसाणेणं देवाण इत्येगइयाणं पणवीसं पलिउवमाइं ठिई प० मज्जिमहेठिमगेवजाणं दे
 व्वाणवीसं पणवीसगाज पिहुलपणे पुंडरीकद्रुहयकी निकली शिखरी पर्वतउपरि पाचसय योजन चालीनि मगरमु
 छे । रत्नारक्तवती ऐरवतयेन सबधिनी महानदी पचवीसगाज पणवीस पय्योपम आजखीकह्यो । हेठीये सातमी पृथिवीये केतलाएकनी
 खप्रणालीये मुक्ताहारसंठाणप्रपातिकरि हेठीउतरीच्छे रत्ना रक्तकुडमाहिपडेछे रत्नती रत्नतीकुंडमाहि पडेछे । लोकविदुसार चौदमा पूर्वना पचवीसव
 सुत्रधिकार विविशकह्या । एणोये रत्नप्रभा पृथिवीनिविषे केतलाएक नारकीनी पचवीस पय्योपम आजखीकह्यो । हेठीये सातमी पृथिवीये केतलाएकनी
 २५ सागरीपम आजखीकह्यो । असुर कुमार देवतानी केतलाएकनी २५ पय्योपम आजखीकह्यो । सौधर्म ईशान देवलीके केतलाएक देवनी २५ पय्योप
 म आजखीकह्यो । मध्यम हेठिम गैवेयके एत्ते ऊचिगेवियक विमाने देवतानी जघन्व २५ सागरीपम आजखीकह्यो । जेदेवता हेठिम उपरिम गैवेयके ती

पृथ्वीकण्डाप्रपततइति तथा लोकिविन्दुसारं चतुर्दशपूर्वमिति ॥ २५ ॥ षड्विंशतिस्थानकंव्यक्तमेव नवरं उद्देश्यनकालायच्युतस्कन्धेऽध्ययनेच याव

वाणं जहन्तेणं पणवीसं सागरोत्तममाइं ठिई प० जेदेवाहेठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ते
 सिण देवाणं उक्कोसणं पणवीसुं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा पणवीसाए अण्ठमासेहि अणमंतिवा पाण
 मंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं अहारठेसमुप्यज्जइ सतेगइया न
 वसिष्ठियाजीवा जेपणवीसाए ऋवगगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सब्बदु
 स्काण मंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥ उब्धीसंदसकप्पववहाराणं उद्देश्यनकाला प० तं० । दसदसाणं

जेनेवियक विमाने देवतापणे उपनाच्छे तेहदेवतानो उक्कट्ठो २५ सागरोपम आउखीकह्वो तेहदेवता पंचवीसे पखवाडि खासोखास षण्णोलेजंचिले नीचीमंकी
 तेहदेवताने २५ वर्ष सहस्से आहारानो अर्थउपयोजि । केकेतलाएक भयजीव जेपंचवीस भवने आंतरे सीभस्सेबूभस्से मंकास्से संसारना परितापयकी ठाढाथा
 सी सर्वदुःखनी अतकारिस्से इति पंचवीसमी ठाणी समतम् ॥ २५ ॥ हिंवे छब्बीसमी समवाय लिखिछे । छवीस दयाकल्प व्यवहारना उद्देश्य
 नकाल जेह शुतस्कंधे जेतला अय्ययनहुया तेतलो उद्देश्यनकाल उद्देश्यनना अवसरकह्या तेकहिछे । दयदयानां उद्देश्यनकाल १० ककल्पना ६ दयव्यवहारना

त्रकष्यस दसववहारस अत्रवृत्ति सद्यथाणं जीवाणंमोहणिजसस कम्मसस त्वहीसंकमंसासंतकम्मा प० तं०
 मिच्छत्तमोहणिजं सोलसकसारं ध्या इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हासं अरति रति त्रयं सीगं दुगंवा इमी
 सेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं त्वहीसपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अ
 त्येगइयाणं नेरइयाणं त्वहीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं त्वहीसपलिउव
 माइं ठिई प० सोहम्मसीसाणेणं देवाणं अत्येगइयाणं त्वहीसपलिउवमाइं ठिई प० मज्जिम मज्जिम गेवेज्ज
 याणं देवाणं जहन्वेणं त्वहीसंसागरोवमाइं ठिई जेदेवा मज्जिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना

सर्वमिली २६ उद्देशन कालथया । जेहने अनादि अंत अभाव्यपणी सिद्धिनिष्पन्नछे ते अभव्याराष्ट कहिये तेहजीवने मोहनीकर्म चीथी तेहनीमूल २८ प्र
 क्तिछे तेमांहि अभव्यजीवने निपुजी करणतो आवरे छवीसकर्मना अशकर्मनी प्रकति सत्ताकर्मण्ये रहे तेकहेछे । मिथ्यात्व मोहनीय १ अनसीलि कषाय
 अनतावुबधौ क्रोध मान माया लोभ ४ एम अ प्रत्याख्यानौ ४ प्रत्याख्यानौ ४ सज्जन ४ सर्वमिली १६ कषाय अनेमिथ्यात्व मोहनी भेलातां १० । प्रकृति
 स्वीवेद १८ । पुरुषवेद १८ । नपुंसकवेद २० । हास्य २१ । अरति २२ । रति २३ भय । २४ । शोक २५ । दुगच्छा २६ । एणिविरत्नप्रभा पृथिवीयै कीतलाएक
 नारकीनी छब्बीस पत्थीपम आउखीकह्यो । हेतुयै सातमीपृथिवीयै कीतलाएक नारकीनी २६ सागरीपम आउखीकह्यो । असुत्तुमार कीतलाएक देवतानी
 २६ पत्थीपम आउखीकह्यो । सौधर्म इशाने कीतलाएक देवनी २६ पत्थीपम आउखीकह्यो । मध्यम २ ग्रैवियके एतले पांचमे ग्रैवियके देवतानी जघन्य २६

म्यभयनान्मुःशकाया तनतापंतएवउद्देशनकालो उं ईशावसराःश्रुतीपचाररूपाइति । तथा अभव्यानांनिपुजीकरणाभावेन रास्यक्तमित्थरूपं प्रकृतिद्वयं सत्ता
 यांनभवतीति पड्विंशतिः सत्तामार्गाभायतीति ॥ २६ ॥ सप्तविंशतिव्याजकमपिव्यक्तसीव वीवलं षट्सूत्राणिस्थितिरवीक् तत्रअनवाराणां साधूनां
 गुणायादिविशेषाः अनगरगुणाः वत्रमहातानि र चिद्विद्यनिगूहार्थपंच क्रीधादिविकाराद्यत्वारः सत्यानिनीणि तत्रभावसत्यंशुद्धांतरात्मना कारणसत्ययत्र

तेसिणं देवाणं उक्त्वासेणं ब्रह्मीसंसागरोवसाइ ठिई प० तेषं देवा ब्रह्मीसाए अरुमासेहिं श्राणमंतिवा
 पाणमंतिवा ऊससतिवा नीससतिवा तेसिणं देवाणं ब्रह्मीसंवाससहस्सेहिं श्राहारठेसमुष्यज्जइ संतेगइया
 अत्रसिद्धिया जीवा जेब्रह्मीसेहिं अत्रपूणहणेहिं सिज्जिस्सति बुज्जिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइरसंति सद्धु
 स्काण मत्तंकरिरसति ॥ २६ ॥ सत्तावीसंश्राणगारगुणा प० तं० । पाणाइवायाउ वेरमणं
 मुसावायाउ वेरमणं अइदिक्कादाणाइ । वेरमणं भेज्जणानु वेरमणं परिणहाउ वेरमणं सोइद्वियनिगहे चरिक्कं

सागरीपम आउखीकहो । जेदेवता मध्यम हेठिस एएले चउथे श्रैवेयक विमाने देवतापणी उपनाळे तेहदेवतानी उक्खथी २६ सागरीपम आउखीकहो । ते
 हदेवता छब्बीसे पखवाडे खासीस्वाम घणिले जचोले, नीचीभिले तेहदेवतानि २६ वर्षं सहस्से आहारनी अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीवजे २६ भवने आतरी
 सीभस्से बूभस्से मंकास्से ससारुःखनी अतकारस्से भोजजास्से इति छब्बीसमी समवाय पूरीथयो ॥ २६ ॥ हिंवे सत्तावीसमी समवाय लिखिळे
 सत्तावीस अणगोरना साधूना चारिच विशेषरूपगुणअह्या तकहेळे । प्राणतिपातनी विरमण १ । स्रधावादनो विरमण २ । अदत्तादाननो विरमण ३ ।

समदिनं तत्रोक्तरूपोक्त्योच्छ्रया भवति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशतिस्थानकामपिब्यक्तं नवरसिंहपंच स्थितेः प्राक्सूत्राणि तत्राचारः प्रथमांगस्तस्य

गइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अर्थे गइयाणं सत्तावीसं पलि
उवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणे सुकप्पे सु अर्थे गइयाणं देवाणं सत्तावीसं पलि उवमाइं ठिई प० मज्जिम
उवरिमगेवेज्जायाणं देवाणं जहन्तेण सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्जिमगेवेज्जायविमाणे सु देव
त्ताए उववन्त्वा तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा सत्तावीसाए अठ्ठमासे
हिं ज्ञाणमतिवा पाणमतिवा ऊससतिवा नीससतिवा तेसिणं देवाणं सत्तावीस वाससहस्से हिं अहारठे स
मुप्पज्जाइ संते गइया अवासिस्थिया जीवा जेसत्तावीसाए अवग्गहणे हिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति
परिनिव्वाइस्संति सव्वदुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ २७ ॥ अठ्ठावीसविहे ज्ञायारपकप्पे प० तं० ।

सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानी सत्तावीस पल्लोपम आउखीकह्त्वा । मध्यमउपरिम त्रैवेयके एतले छठ्ठे विमाने देवतानी जघन्य सत्तावीस सागरो
पम आउखीकह्त्वा । जेदेवता मध्यम त्रैवेयके एतले पांचमे त्रैवेयके विमाने देवतापणे उपनाच्छे ते देवतानी उल्लुथी सत्तावीस सागरोपमनी स्थितिकही । ते
हृदेवताने सत्तावीसे वर्षसहस्रे आहारनी अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव सत्तावीस भवने आंतरे सौभस्ये बूमस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनी अंतकारिस्थि मीबजा
स्ये इति सत्तावीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ २७ ॥ हिंवे अठ्ठावीसमी समवाय लिखेछे । अठ्ठावीस प्रकारे आचारप्रथमांग तेहना प्रकल्प अध्ययन विपिश

प्रकल्योध्यनविशेषोनिशीथमित्यपराभिधानस्यवाचारस्य वासाञ्चाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्योध्यवसायमित्याचारप्रकल्पः तत्रक्वचित्ज्ञानाद्याचारविषये अप्रपराधमापन्नस्यकसचित् प्रायश्चित्तदत्त पुनरन्यसपराधविशेषमापन्नस्ततस्तत्रैवमात्तनेप्रायश्चित्ते मासवहनयोग्यमासिकं प्रायश्चित्तमारोपितमित्यत्र मासिक्यारोपणाभवति तथापचरान्त्रिकशुद्धियोग्यमासिकश्चशुद्धियोग्यवापराधद्वयमापन्न स्ततःपूर्वदत्तप्रायश्चित्ते सपचरान्त्रिभासिकप्रायश्चित्तारोपणाल्पचरान्त्रमासिक्यारोपणाषट् ६ एवद्विमासिक्यः ६ त्रिमासिक्यः ६ चतुर्मासिक्यः ६ चतुर्विंशतिरारोपणाः तथासाहदिनद्वयस्य पचस्यचोपघातनेनलघूनांमासादीनांप्राचीनप्रायश्चित्ते आरोपणाउपघातिकारोपणा यदाह ॥ अद्वेणक्विसस एब्बद्वेणतुसञ्चयकाण्डं ॥ देज्जायलहपुहाण गुरुदाणतत्तयचेवत्ति ॥ यथामासाहं १५ पचविंशतिकार्ष साहंद्वादशवर्षसर्वमीलने साहंसप्तविंशतिरितिलघुमासाः तथामासद्वयाहं मासोमासिकस्याहंपच उभयमीलनेसाहोमासइति लघुद्विमासिकं २५ तथातेषामेवसाहंदिनद्वयाद्यनुघातनेनगुरुणमारोपणा अनुघातिकारोपणा २६ तथायावतानपराधानापन्नस्त्वावतीनांतच्छुद्धौनामारोपणाक्वत्कारोपणा

मासियाञ्चारोवणा सपचराइमासियाञ्चारोवणा सदसराइमासियाञ्चारोवणा सपस्सरसराइमासियाञ्चारोव

अथवा आचार तेषानुनाआचार ज्ञानादिकविषयतेहनी प्रकल्पस्यापिबो तेषाचारप्रकल्प अष्टावीसभेदेकज्ञातेकहंदि । किहांएक ज्ञानाचारविषये अप्रपराधप्यो तेहनी कांइक प्रायश्चित्तदीधी वली अनरो अपराध सेव्यो तेओ तिहां पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे मासवहवायोग तेषासिकी प्रायश्चित्त आरोथी तेषासिका रोपणाइई पहिली १ । संपंचरायेति पंचरात्रिये शुद्धियोग्य तथा मासे शुद्धियोग्य एहवा अपराध प्राप्तने पूर्वदत्त प्रायश्चित्तनेविषे पचरान्त्रिसहित मासप्रायश्चित्त आरोपणाथकी सपचरान्त्रि मासिकी आरोपणाकही बीजी २ । एमज दसरात्रिसहित मासिक प्रायश्चित्तने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे आरोपवो तेदसरात्रि

णा सवीसइराइमासियाञ्चारीवणा संपंचवीसराइमासियाञ्चारीवणा एवंचेवदोमासियाञ्चारीवणा उपघाइयाञ्चारीवणा अणुघाइया

मासिकारोपणा ३ । एमज सपनरसरात्रि मासिकारोपणा ४ । सवीसरात्रि मासिकारोपणा ५ । संपंचवीसरात्रि मासिकारोपणा ६ । एमज पूर्वनेप
री कहीने एकअपराधनी प्रायश्चित्तलायी वली बीजी अपराधसेव्यो तेहने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे वेमासयोग्य प्रायश्चित्त आरोयो तेवेमासिकारोपणाकही
७ । पचरात्रि प्रायश्चित्तयोग्य अनेवली २ मास प्रायश्चित्तयोग्य एहवा बीये अपराधे प्राप्तनेपूर्वदत्त प्रायश्चित्तने पंचरात्रिसहित वेमासिक आरोपणाकार
वी तेसंपंचरात्रि वेमासिकारोपणाकही ८ । एमज सदसरात्रि वेमासिकारोपणा नीमौ ९ । सपनरसरात्रि वेमासिकारोपणा १० । सवीसरात्रि वेमासि
कारोपणा ११ । संपंचवीसरात्रि वेमासिकारोपणा १२ । पूर्वनीपरीछे त्रिमासिकारोपणा एव १८ । चौमासिकारोपणा एवं २८ मासनीअई १५ । अनेपूर्व
पूर्वपंचवीसनीअई १२ ॥ उभयमिली साढासत्तावीस उपरि १ मास एतले लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तथा मासनंअई मासवली मासाई १५ विहूमि
ली देठमास एह लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तेहनेविषे साढाविदिनसहित १५ दिनएतले साढासतरे १७ ॥ दिनआरोपी तेहउपघातकारोपणा पंचवी
समी २५ । यदाह । अईणछिणसेसं गुब्बडेणतु संजओकात्री । देज्जायलहुपहाणं गुरुदाणंतत्तियचिव ॥ वेमासमाहिथकी अढीदिनकाढी एतले १ मासदिन
साढासत्ताईस एहने उपघातकारोपणाकही तेमाहि अढीदिनघाति एतले पूरबेमासथया एहअनुघातिकारोपणा २६ तथा जेहने जेतली अपराधला
योहोय तेहने तेतलीपूरी आलीयणं आरोपी तेहकत्तारोपणा २७ जेहने घणीजघणो अपराधलायोछे परंछमासी उपरांत आलीयणनथी तेबीजा सग

२६ तथा बहून्परधानापन्नस्य षण्मासांतंतिसु इति षण्मासाधिकतपःकर्मतेष्वंतांतर्भाव्यं शेषमा रोष्यते यत्र सा ऋक्त्स्नारोपणं ल्यष्टाविंशतिरितेषु
सम्यग्निशीथविंशतितमीदृशकावगम्यमत्रैव निगमनमाह एतावांस्त्वावदाचारप्रकल्प इह स्थानके आरोपणमाश्रित्य विवचि तोऽन्यथा तद्द्व्यतिरेकेणापितस्यैत
द्वातिकरूपस्य भावात् अथ चैतावानेवायं तावदाचारप्रकल्पः शेषस्यात्रैवांतर्भावत्तथापलालवत्तावदाचरितव्यमित्यपितथैव देवगतिस्त्रैस्त्रिस्थिरास्थिरयोः शुभा

अ्यारोवणा कसिणाञ्च्यारोवणा अ्यकसिणाञ्च्यारोवणा एतावताञ्च्यारोवणा अ्यारोवणा अ्यारोवणा अ्यारोवणा
सिद्धियाणं जीवाणं अ्यथेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अ्यठावीसं कम्मंसासंतकम्मा प० तं० सम्मत्तवेअ्य
णिज्ज मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलसकसाया णवणीकसाया अ्यन्निणिबोहिअ्यणाणे अ्यठा

लायैकर्म क्कमासीमांहि अंतर्भव्याच्छे एमजाणी क्कमासीप्रते आरोपीये ते अक्त्स्नारोपणा १८ एतावता एतले आचार प्रकल्पनास्थानक आत्मीने एतलेत्तौ आ
चार आचरिवोक्कहो । जेहेने सिद्धिमुक्ति हीणारीच्छे तेभवसिद्धिका तेहजीवने केतलाएकने चौथामीहनीयकर्मनी अ्यठावीस कर्मनाअंशकर्मनीप्रकृतिसत्ताये
कही तेकहच्छे । सम्यक्त वेदनीय सम्यक्तमीहनीय १ । मिथ्यात्व वेदनी मिथ्यात्व वेदनी एतले मित्रमीहनी ३ । सोलकपाय अ्यणता
नुबधी यादिक कषकही संसार तेहनीअ्याय लाभहीय जेहयकी तेकपाय कषायसरीखूं फलदे तेहास्यादिकनव नोक्कषायकह्या सर्वमिली २८ प्रकृति मोह
नी कर्मनी एहसषली २७ मे ठाण्णिलिखीच्छे । आभिनिबोधिक ज्ञान ते मतिज्ञान अ्यठावीसप्रकारेकहो तेकहच्छे । अत्रिद्रियनी अर्थवग्रह अर्थनी सामान्य

शुभयोरादेयानादेयोद्यपरस्परं विरोधित्वेन कदाचन भावाद्व्यभचरद्भ्रमतीत्युक्तं तत्र चैकग्रहं भाषामात्र एवावसेयमिति नारकसूत्रे विशतिस्त्राएव प्रकृतयो
 वीसद्भिविहे ५० तं० सोऽिदियञ्च्युत्थावगहे चरिंदिद्यञ्च्युत्थावगहे घाणिंदिद्यञ्च्युत्थावगहे जिष्णिंदिद्यञ्च्युत्थावगहे
 फासिदिद्यञ्च्युत्थावगहे णोऽिदियञ्च्युत्थावगहे सोऽिदियञ्च्युत्थावगहे घाणिदिञ्च्युत्थावगहे जिष्णिदिद्यञ्च्युत्थावगहे
 फासिदिञ्च्युत्थावगहे सोतिंदिद्यईहा चरिंदिद्यईहा घाणिदिद्यईहा जिष्णिदिद्यईहा फासिदिद्यईहा नोऽिदियई
 हासोतिदिद्यवाए चरिंदिद्यवाए घाणिंदिद्यवाए जिष्णिंदिद्यवाए फासिदिद्यवाए नोऽिदियवाए सोतिदिद्य

प्रकारे गृहिवो ते अर्थवगृह १ समयरहे १ चक्षुरिद्रियकरी कांइक अर्थनी गृहिवो ते चक्षुरिद्रियार्थावगृह २ । एम घ्राणेद्रियार्थावगृह ३ । जिह्वेद्रियार्थाव
 गृह ४ । स्पर्शेन्द्रियार्थावगृह ५ । नोऽिद्रियमन तेहनी अर्थवगृह तेह नोऽिद्रियार्थावगृह ६ । शब्दना पुद्गलश्रावी कानना इद्रियमांहि भराई तिवारपक्षी
 शब्दज्ञान उपजे ते श्रोत्रेद्रिय व्यंजनावगृह ७ । गंधपुद्गल नासिकामांहि श्रावी भराई तिवारपक्षी गंधज्ञान उपजे ते घ्राणेद्रिय व्यंजनावगृह ८ । एम जिह्वे
 द्रिय व्यंजनावगृह ९ । स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावगृह १० । आंखीने अने मननो व्यंजनावगृह नहीय तेमटे ४ व्यंजनावगृह जाणिया । श्रोत्रेद्रियकरी शब्दनेविषे ईहा
 देवी आलीचवी जेह पुरुषनी शब्दकरस्त्रीनी एह श्रोत्रेद्रियईहा ११ । आंखेकरी आलीचवी स्थाणुवापुरुषीवा एह चक्षुरिद्रियईहा १२ । एम घ्राणेद्रियईहा १३
 जिह्वेद्रियईहा १४ । स्पर्शेन्द्रियईहा १५ । नोऽिद्रियईहा १६ । तेमनकरी आलीचवी । ईहा १ मुहूर्त्तलगेरहै । श्रोत्रेद्रियावाय श्रोत्रेद्रियेकरी निश्चयकरिये ते
 श्रोत्रेद्रियावाय १७ । एम चक्षुरिद्रियावाय तेखीलाने जपरिकागवइठी एखीलोज एहवी निश्चयार्थ ते चक्षुरिद्रियावाय १८ । इम घ्राणेद्रियावाय १९ । जिह्वे

ष्टान्तुस्थानि अष्टावत्याबध्नाति एतदेवाह एवंचिवेत्यादि नानात्वविशेषः ॥ २८ ॥ एकीनत्रियत्तमस्थानकमपिब्यक्तमेव नवरं नविहसूत्राणि
 स्थितिः प्राक् तत्रपापीपदानानिभुतानि तेषांप्रसंगस्तथासिबनारूपः पापशुतप्रसंगः । सचपापशुतानामिकीनत्रियद्विधत्वात् तद्विधत्तः पापशुतविषयतया

अर्थेगइयाणं अष्टावीसंपलिनवमाइं ठिई प० उवरिम हेठिम गेवेज्जायाणं देवाणं जहन्नेणं अष्टावीसंसा
 गरोबमाइं ठिई प० जेदेवा मज्जिम उवरिम गेवेज्जाएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ता तेसिण देवाणं उ
 क्कोसेण अष्टावीसं सागरोबमाइं ठिई प० तेषं देवा अष्टावीसाए अरुमासेहिं अणमंतिवा पाणमंतिवा
 जससंतिवा नीससतिवा तेसिण देवाणं अष्टावीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमुष्यज्जइ संतेगइया अवांसि
 धियाजीवा जेअष्टावीस अवगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुस्काण
 मंतकरिस्संति ॥ २८ ॥ एगुणतीसइविहेपावसुयपसणेणं प० तं । ओमे उप्पाए सुमिणे अं

पत्थीपमनी स्थितिकही । उपरिम हेठिम एतले सातमे येवयक विमाने देवतानी जघच्च २८ सागरीपमनी स्थितिकही । मध्यम उपरिम एतले सातमे क्कुअवे
 यक विमाने जेदेवतापणे जपनाछे तदेवतानी उक्कट्टी अष्टावीस सागरीपमनी स्थितिकही । तदेवता अष्टावीस पखवाडि सासोखास जंचोले घणोले नीचोमे ।
 ले तदेवताने अष्टावीस वर्षसहस्रगये आहारनी वक्काउपजे । केकेतलाएक २ व्यजीव जेअष्टाईस भवने आतरे सीभस्से बूभस्से मंकास्से सर्वदुःखनी अंतकर
 से मीच जासे अष्टावीसमी समवाय पूर्णथयो ॥ २८ ॥ हिंवे गुणतीसमी समवाय त्रिबियेछे । उगुणतीस प्रकारे पापशुत पापनाकारण जेहशु

पापशुताद्यैर्व्यतेऽतएवाह भोमेइत्यादि तत्रभौम भूमिधिकारफलाभिधानंप्रधान निमित्तशास्त्र तथाऽर्थात् सहजशोधिरवृद्ध्यादिलक्षणोत्पातफलनिरूपकं
 निमित्तशास्त्र एवस्वप्न स्वप्नफलाविर्भावकं अन्तरिक्षमाकाशप्रभवगृहशुद्धभेदादिभावफलनिवेदक अंगशरीरादयवप्रमाणसहितदिविकारफलोद्भावकं स्वर्जो
 वाजीवाश्रितस्वरूपफलाभिधायकं व्यञ्जनमषादिव्यजनफलोपदेशक लक्षण लाङ्घनायनिकविधलक्षणव्यात्यादक मित्यष्टवितान्येवसूत्रहत्तिवात्तिकभेदाच्चतु
 विंशतिः तत्रागवर्जितानामन्येषां सूत्र सहस्रप्रमाणं हत्तिलेखप्रमाणावार्त्तिकवृत्तेर्वाख्यानरूपकोटिप्रमाण मंगस्यतुसूत्रलक्षणहत्तिःटीकावार्त्तिकमपिपरिमि
 तमिति तथाविकथानुयोगोऽनर्थकामोपायप्रतिपादनपराणि कामन्दकवाख्यानादीनि भारतादीनिवाशास्त्राणि २५ तथाविज्ञानुयोगोरोहिण्यैप्रभृतिविद्या

तरिस्के ष्यंगे सरे वंजणे लस्कणे भोमेतिविहे ५० तं० सुते वित्ती बत्तिए एवंएक्षेक्ष्तिविहं विकहाणुजोगे

तशास्त्र तेषापश्रुत तेहनोप्रसंग सेवारूप तेषापश्रुतप्रसंग कक्षा । तेकहेछे । भौमशास्त्र जेभूमिकपादिक फलनी सूचकशास्त्र १ । उत्प्रातशास्त्र जेआकाशयो
 रुधिर वृद्ध्यादि लक्षण उत्प्रात तेहर्ना फलनी सूचक २ । शुभाशुभ स्वप्न फलनी सूचक शास्त्र ३ । अंतरिक्ष आकाशयो जपनो गृहदिकनी युद्ध तेहनी फल
 सूचक ४ । अगफुरकण विचारसूचक शास्त्र ५ । जीवना स्वरूप फलसूचक स्वरशास्त्र ६ । व्यजनमसतिलक फलसूचक ७ । लक्षण सामुद्रिक शास्त्र ८ ।
 प्रथम भौमशास्त्र कक्षो तेत्रिहुभेदै कहैछे । सूत्र १ । वृत्ति २ । वार्त्तिक ३ । भेदेकरी एमजपूर्व अष्टांग निमित्तकक्षो तेत्रिणभेदै । एव सर्वमिली २४ भेदशया
 विकथानुयोग अर्थकामगी उपायशास्त्र व्यासायन कीकशास्त्रादिक २५ । विद्यानुयोग रोहिण्यो प्रक्ष्ण्यादि विद्यासाधन शास्त्र २६ । मत्रानुयोग चेडादि

साधनाभिधायकानिशास्त्राणि २६ मंत्रानुयोगश्चेट्कादिमन्त्रसाधनाभिधायकानिशास्त्राणिपापधास्त्राणि २७ योगानुयोगी वशीकरणदिकानि हरमेखलादि
योगाभिधायकानिशास्त्राणि २८ अन्वतीर्थिकेभ्यः कापिलादिभ्यः सकाशाद्यः प्रवृत्तः स्वकीयाचारवस्तुत्वानामनुयोगी विचारस्तत्कारणार्थं शास्त्रसन्दर्भइत्यर्थः
सोऽन्यइति २९ तथाषाढाद्यएकांतरिताषमासा एकोनत्रिंशद्वात्रिदिवसपरिमाणेनभवति स्थूलन्यायेनकृत्वापत्रे प्रत्येकरात्रिदिवसैकसप्तत्रयादाहच । आसाढव
हुलाक्त्रे भद्रवृत्तिएयपोसेय फगुणवृत्तिसुय वीधव्वाओमरत्ताओत्ति १ इयमन्नभावना चन्द्रमासोहि एकीनत्रिंशद्दिनानि दिनस्यचद्विषष्टिभागानां द्वात्रिं
शत् ऋतुमासश्च त्रिंशद्देवदिनानिभवन्तीति चन्द्रमासपिच्यया ऋतुमासाऽहोरात्रिषष्टिभागाना त्रिंशतासाधिकीभवति ततश्चप्रथमहोरात्रं चद्रदिनमेकैकनद्विष

विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अस्सतिलियपवत्ताणुजोगे आसाढेणंमासे एगुणतीसराइदिञ्चइंरा
इदियगणेण ५० ऋद्ववणंमासे कत्तिणुणंमासे पोसेणंमासे फगुणेणमासे वइसाहेणंमासे मासोचंददिणाणं

कमन्त्रसाधनीपायशास्त्र २७ । योगानुयोग योग वशीकरणोपायादिशास्त्र हरमेखलादि २८ । अन्वतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग अन्य तीर्थी कपिलादिक शी प्र
वर्षी पीतानी आचार तेहनी अनुयोग मिथ्यालीना शास्त्रसमूह अर्थ २९ । आसाढमास गुणतीस रात्रिदिवसनी २९ रात्रीडिवस परिमाणे पूरोथाय
एकतियि अधारा पखवाडानी घटे एम एकांतरित छेपखवाडा गुणतीस रात्रिदिवसना घाय । यदाह ॥ आसाढबहुलपक्खे । भद्रवृत्तिएअपोसेअ ॥
फगुणवेसाहेसुअवीधव्वाओमरत्ताओ ॥ १ ॥ भाद्रवी मास २९ रात्रिदिवसनी । कार्तिक मास २९ रात्रि दिवसनी । पोसमास २९ रात्रि दिवसनी ।
फागुणमास २९ रात्रिदिवसनी । वैशाखमास २९ रात्रिदिवसनी । चद्रदिवस पडिवातियि एगुणतीससुहृत्तं भास्करानी २९ सुहृत्तनी कद्धी । जीवभला

ष्ठीभागीनहीयते इत्यवसीयते एवंद्विषष्ठ्याचंद्रदिवसानामेकषष्ठ्यहोरात्राणांभवतीति विशेषस्त्रिहचंद्रप्रज्ञांतरवसेयइति तथाचन्द्रदिशेषति चंद्रदिनं प्रतिपदादि
 कातिथिः तत्रैकोनत्रिंशद्भुक्ताः सातिरेकमुहूर्त्तपरिमाणेनेति कथंयतः किलचंद्रमासएकोनत्रिंशद्दिनानि . त्रिंशच्चदिनद्विषष्टिभागभवन्ति ततश्चंद्रदिन चंद्र
 मासस्यत्रिंशतागुणनेनमुहूर्त्तराशीकृतस्थत्रिंशताभागहारे एकोनत्रिंशद्भुक्तां द्वात्रिंशच्चमुहूर्त्तस्यद्विषष्टिभागालम्ब्यंतइतिजीवः प्रशस्वाध्यवसानादिविशेषे
 णवैमानिकेषुत्यत्तुकामीनामकर्मण एकोनत्रिंशदुत्तरप्रकतीर्वध्नाति ताश्चेमाः देवगतिः १ पंचेन्द्रियजातिः २ वैक्रियइय ४ तैजसकार्माणशरीरे ६ समचत
 रसंसंस्थानं ७ वर्णादिचतुष्कं ११ देवानुपूर्वी १२ अगुरुलघुः १३ उपघात १४ पराघातं १५ उच्छ्वासं १६ प्रशस्वाविहायोगतिः १७ त्रस १८ बादरं १९ पर्याप्त
 २० प्रत्येकं २१ स्थिरास्थिरयोरन्यतरत् २२ शुभाशुभयोरन्यतरत् २३ सुभगं २४ सुखर २५ आदियानादिययोरन्यतरत् २६ यशः कीर्तिः २७ निर्माणं २८ तीर्थ

**एगुणतीसंमुज्जते सातिरेगेमुज्जतेगेणं प० जीवेणंपसत्यज्जवसाणजुत्ते ऋविएसम्भादिठी तित्यकरनामसहिथानु
 णामस्सणियमा एगुणतीसउत्तरपगणीउनिबंधिता वेमाणिएसु देवेषु देवत्ताए उववज्जइ इमीसेणं रयणप्प**

अथवसाय युतायको भव्यक सम्यग्दृष्टि तीर्थकर नामकर्म सहित नामकर्मनौ नियं २८ उत्तर प्रकृति बांधीने वैमानिक देवतानेविषे देवतापणे उपजे । ते
 कहेछे । देवगति १ । पंचेन्द्रिय जाति २ । वैक्रिय शरीर ३ । वैक्रियागोपांग ४ । तैजस ५ । कार्मण ६ । समचउरससस्थान ७ । वर्ण ८ । गंध ९ । रस १० ।
 सार्थ ११ । देवानुपूर्वी १२ । अगुरुलघु १३ । पराघात १४ । यशनाम १६ । प्रशस्वाविहायोगति १७ । त्रस १८ । बादर १९ । पर्याप्त २० ।
 प्रत्येक २१ । स्थिर अस्थिर मांहियेक २२ । शुभ अशुभ मांहियेक २३ । शुभग २४ । सुखर २५ । आदिय अनदिय मांहियेक २६ । यशः कीर्ति २७ । निर्माण

आण पुढवीण् अर्थेगइयाणं नेरइयाणं एगुणतीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाण् पुढवीण् अर्थेगइयाणं
 नेरइयाणं एगुणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अर्थेगइयाणं एगुणतीसंपलिउवमाइं
 ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अर्थेगइयाणं एगुणतीसं पलिउवमाइं ठिई प० उवरिम मज्जिम
 गेवेज्जायाणं देवाणं जहन्वेणं एगुणतीस सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिम हेठिम गेवेज्जायविमाणेसु
 देवत्ताण् उववन्ना तेसिणं देवाण उक्कोसेणं एगुणतीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा एगुणतीसाण् अ
 रुमासेहिं अणमंतिवा पाणमंतिवा जससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाण एगुणतीस वाससहस्सेहिं
 अहारठे समुप्पज्जइ सतेगइया न्नवासिद्धिया जीवा जेएगुणतीसन्नवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति सु

२८ । तीर्थकरनामकर्म २९ । एणीयै रत्नप्रभा पहिली नरक दृथिवीनिविषे केतलाएक नारकीनीं २९ पत्थीपमनी आजखी कछी । हेठे सातमी दृथिवीयै
 केतलाएक नारकीनीं २९ सागरीपमनी आजखी कछी । असुरकुमार केतलाएक देवतानीं गुणवीस पत्थीपमनी स्थितिकही । सीधर्म ईशानेकल्ले केत
 लाएक देवतानीं २९ पत्थीपम आजखीकछी । उपरिम मध्यम ग्रैवेयके एतले आठसें ग्रैवेयके देवतानी जघन्यत. २९ सागरीपमनी स्थितिकही । जेहदेव
 ता उपरिम हेठिम ग्रैवेयके एतले सातमे विमाने देवतापणे जपनाछे तेदेवतानी उल्लुथी २९ सागरीपमनी स्थिति कही । तेहदेवताने २९ पखवाडि सासो
 सास चार प्रकारेहीय । तेहदेवताने २९ सहसें वर्षेगण आहारनी इच्छा उपजे । छे केतलाएक भव्यजीव जे २९ भवने आंतरे सीमस्ये बूभस्ये मंकास्ये स

करञ्चेति ॥ २६ ॥ त्रिशतसंस्थानकंसंगमं नवरं स्थितेरवांग्टोसूत्राणि तत्रमोहनैयसामान्येनाष्टप्रकारं कर्मविशेषतस्यतृतीयप्रकृतिः तस्यस्थानानिनि
 भित्तानि मोहनैयस्थानानि तथात्रावितसेत्वादिश्लोकः यथायंत्रसानुप्राणानुत्ख्यादीन् वारिमध्येविगाह्य प्रविश्योदकेन शस्त्रभूतनमारयति कायमाक्रम्यपादा
 दिनासद्गतिस्यते मार्यमाणस्यमहामोहोत्पादकत्वात्संक्षिप्तचित्तत्वाच्चभवयत्तदुःखवेदनीयमाल्लनोमहामोहंप्रकरोति १ तदेवभूतत्रसमारणनैकं मोहनैय
 स्थानमेवसर्वचेति १ सीसाश्लोकः शीर्षविष्टेनाद्र्चमादिमयेनयः कश्चिद्विष्टयतिख्यादिद्रसानितिगम्यते अभीक्ष्णभृशन्तीव्रोऽग्रुभः समारासद्गति इत्यस्यगम्यमानत्वा
 त्समार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वेनआत्मनो महामोहप्रकुरत्तइति यावत्करणत् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनैयस्थानाभिधानेपरः श्लोकाः सूचिताः केषु

ञ्चिस्संति परिनिद्धाइस्संति सद्दुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ २९ ॥ तीसंसोहर्णिणयठाणा प० तं० ।
 जेयावितसेपाणे । वारिमज्जेविगाहिथा ॥ उदणुणकम्ममारेइ । महामोहंपकुच्चइ ॥ १ ॥ सीसावहेइजेकेइ ।

सारना परितापथी ठांढायासे सर्वदुःखनो अंतकरिस्सि मोच्चजास्से । इति गुणत्रीसनी ठाणी समत्तम् ॥ २६ ॥ हिवे तीससो ठाणी लिखियेच्छे
 वीस मोहनैकर्मना ठाणाकक्षा । तिहां सामान्येकर्म आठप्रकारना विशेषथी चतुर्थकर्म प्रव्वति तेमोहनैयकर्म तेहना स्थानक वीसकक्षा । तेकहेच्छे । जिकोइ
 स्त्रीआदिक त्रस प्राणीने पांणीमाहे बोलीने उदक शस्त्रे करीने आक्रमे तेमहामोहनैय कर्मवाधे । भवनाश्रतसहस्रसंगे वेदनीयकर्म उपाजे १ । शीर्षा
 वेष्ठनेकरी चर्ममय बाधेकरी जेकोइ प्राणीनी मसक अत्यथे बीटे तीव्र अग्रुभ समाचारनी धणी आगला मारताने महामोह उपजाविवा पणायकी आत्माने

मानत्वात् सद्मत्वात् गम्यमानत्वात् महामोहप्रकरोतीत्यष्टमं ८ जानानः यथा अनृतमेतत्परिषदः सभायांबहुजनसञ्चैत्यर्थः सत्यामृथा किञ्चित्कत्यानिवह
 सथानिवस्तूनिवाभाषते अचोषभक्तः अनुपरतकलहः यः सद्गतिगम्यते माहामोहप्रकरोतीति नवमः अनयकोऽविद्यमाननायको राजातस्यनयवान्
 नीतिमाननालः सतस्यैवराज्ञोदारान् कलत्र द्वारंवा अर्थ्यागमस्योपायं ध्वसयित्वा भोगभोगान् विदारयतीति संबधः किञ्चत्वा विपुलं प्रचुरमित्यर्थः विचोष्य
 सामंतादिपरिकरभेदेन सचोभनादनायकं तस्यचोभंजनयित्वर्थः क्त्वाविधाय णमित्यलंकारे । प्रतिवाद्या मनधिकारिणीं दारेभ्योऽर्थागमद्वारेभ्यो वादार
 न् राज्यवास्वयमधिष्ठायित्वर्थः । तथाउपगतमपि समीपमागच्छतमपि सर्वखापहारिण्यते प्रावृतेना तुल्योपमैः कर्णवचनैरनुकूलयितुमपस्थितमित्यर्थः भं
 पयित्वाऽनिष्टवचनावकाशंक्त्वा प्रतिलोमाभिरुस्य प्रतिकूलाभिर्वाग्मि वचनै रेतादृशस्तादृशस्त्वमित्यादिरित्यर्थः भोगभोगान् विशिष्टान् शब्दादीन्

कमंञ्जत्तकम्पणा ॥ अदुवातममकासिति । महामोहंपकुष्टइ ॥ ८ ॥ जाणमाणोपरिसत् ॥ सच्चमोसाइंजासइ
 अज्जाणऊंऊंपुरिसे । महामोहंपकुष्टइ ॥ ९ ॥ अणायगस्सनयवं । दारंत्तरोवधंसिया ॥ विउलंविस्कोजइत्ताणं

यकर्म उपार्जे ८ । जाणतीथको पर्यदाभाहि विसीने सत्यामृथा कांइक सांचीकांइक मंठी वाणीबलि कलहथकी ओसस्तीनथी निवत्थी नथीतेपुरषमहामी
 इनीयकर्म उपार्जे ९ । नथी विद्यमान जेहनी नायकराजा तेहवा राज्यना नयवंत अमाल्यमन्त्री तेहराजाना दारा कलत्रप्रति अथवा अर्थआयवाना उपाय
 प्रति ध्वसे विनसाडे स्युं करी ध्वसे प्रचुर सामंतादिकप्रति विचोभीने भेटपाडीने बली करीने स्युं करीने कलत्रथकी अथवा अर्थ्यागमद्वारथकी लेवने योग्य
 नथी एहवी राज्य बन्धीये पीतेज अविष्टान करीने तथा समीपे यावताने एतले सर्ववन लीयेथके दीमस्त्रेकरेरी चाटुवचनबोलतो एहवाने भांपीने सामी

विदारयतियोसौमहामीहं प्रकरोतीतिदशमं १० अकुमारभूती ऽकुमारब्रह्मचारीसन् यः कथित् कुमारभूतीहं कुमारब्रह्मचारी अहमिति वदति अथचस्त्रीषु
 गृहोवसकश्चस्त्रीणां भिवायत्तइत्यर्थः अथवावसतिआस्त्रे समहामीहप्रकरोतीत्येकादश ११ अब्रह्मचारी मैथुनादनिवृत्तौयः कश्चित्कालाएवासेव्यामन्नह्यचयं
 ब्रह्मचारी साप्रतमित्यतिधूर्त्ततया परप्रपचनायवदति तथाच एवप्रभोभापहं सतामनादिय भगन् गर्दभइवगवामध्ये विस्तरंनवषभवननोज्ञं नदतिमुच्चति
 नदनादगब्धमित्यर्थः तथाअएवंभण्नात्मनोऽहितौ नहितकारी बालोसूढी मायाम्पयादादगशाब्धानृतं प्रभूतभाषते यथैवनिदितभाषते कथा स्त्रीविषयगृह्या

किञ्चाणपठिवाहिर ॥ १० ॥ उवगंतपिऊंपित्ता । पळिलोमाहिबगुंहिं ॥ जोगत्रीगेवियारैइं । महामोहंप

कुबुइ ॥ ११ ॥ अकुमारभूएजेकेइं । कुमारभूएत्तिहंवए ॥ इत्याहिगिष्टवसए । महामोहंपकबुइइ ॥ १२ ॥

अवंअथारीजेकेइं बअथारीत्तिहंवए ॥ गहहेह्वंगवंमज्जे । विस्सरनयइंनदं ॥ १३ ॥ अुप्पणोअुहिणुबाले । माया

ओमित्याली करीने प्रतिकूलवचने करी रे तू एहवी नीचछे एहवा वचनेकारी भोग विशिष्ट शब्दादिकने भोगविवाने अर्थे विदारे हरे तेमहामीहनीय कर्म
 करे १० । नथी कुमार भूत एतले परस्थो छे जेकोई लोकमाहि हं कुमारभूतछु एतले बालब्रह्मचारी हं छूं एहवं कहे वली स्त्रीसाथे गृह लीलुप वली स्त्री
 ने आधीन अथवा स्त्रीसाथेवसे ते महामीहनीयकर्मकरे ११ । अब्रह्मचारीथकी जेकीई लोकमाहि हं ब्रह्मचारी एतले मैथुन विरत छूं एहवी कहे ते शोभा
 रहित साधुजनने अथाह्य गर्दमनीपरे गायना टोलामां वृषभनीपरे मनोज्ञ नथी एहवी शब्दकरे बोलि एहवी जे बोलि ते आपणा आत्मानो अहितकारी अ
 ने वार अज्ञानी स्त्रीसाथे लपट थईने माया सहित सृष्टा घणूं बोलि ते महामीहनीय कर्मकरे १२ । जेराजादिकप्रति आश्रितहोइ जीविकानि लाभिकारी

हेतुभूतया सद्बलभूतोमहामोहप्रकरोतीति द्वादशं १२ यंराजानंराजासाल्यादिकं वा निश्चितश्रान्धितउदहते जीविकालामिनात्मानंधारयति कथयशसातस्य
 राजादेः सक्तोयमितिप्रसिद्धाश्रमिगमनेन वषेवया श्रान्धितराजादे स्तस्यनिर्वाहकारणस्य राजादेर्लुभ्यतिवित्तद्रव्यैः समहामोहप्रकरोतीति त्रयोदशं १३
 ईश्वरेणप्रभुणा अदुवा अथवा आमिणजनसमूहेन अनीश्वरईश्वरीकृतः तस्यपूर्वावस्थायामनीश्वरस्य संग्रहहीतस्य पुरस्ठतस्य प्रस्वादिनाश्रीलक्ष्मीरतुलानसाधार
 णाश्रागताप्राप्ता अतुसंधायथाभवतीत्येव श्रीः समागता आगता श्रीकथप्रस्वायुपकारकाविषये ईर्ष्यादीषियाषिष्टीयुक्तः कलुषिण द्वेषलोभादिलक्षणपापिनातिल
 माजुलवाचेतीयस्य सतथा यंतरायंब्यवच्छेदं जीवितश्रीभोगानां चेतयतेकरेति प्रस्वादे रसोमहामोहप्रकरोतीति चतुदशं १४ सर्पानागीयथाअखण्डं

मोसंबज्जंसे ॥ इत्थीविसयगेहीणु । महामोहंपकुञ्जइ ॥ १४ ॥ जनिस्सिणुउद्धइ । जससाहिगमिणवा ॥
 तस्सलुअइवित्तमि । महामोहंपकुञ्जइ ॥ १५ ॥ ईसरेणअणुअुजगामिणं । अणिससरेईसरीकणु ॥ तस्ससंपयहीण
 स्स । सिरीअुतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेणअुणविष्ठे । कलुसाबिलचेयसे ॥ जेअुंतराअुचेणुइ । महामोहंपकु

आत्मानिधारे अने राजसंबंधनी प्रसिद्धिकी तथा सेवायकी तेअश्रित राजाना धग्नेविषे लोभकरे तमहामोहनीय कर्मकरे १३ । ईश्वरेठानुरे अथवा आमि
 जनसमूहे अनीश्वरहुतो तेइश्वरकीधी असमर्थहुतो तेसमर्थकीधी ते जेपूर्वे अनीश्वरहुतो सपदा रहितहुतो तेहने ठाकुरादिप्रसादेकारी श्रीलक्ष्मी अतुल असा
 धारण आवी पामीछे जेहनेते उपकारी मूलगी ठाकुर तेहनेविषे ईर्ष्यादीषे मच्छरदीपिकरी याविष्ट सहित द्वेष लोभादिकलक्षण पापिकरी आकुल व्याथी
 छे चित जेहनी एहवो जेकीइ उपकारी प्रसुने अंतरायप्रति चेतकरे तेहनी आजीविकानो विच्छेदकरे ते महामोहनीय कर्मकरे १४ । सर्पिणी जिम पीता

अण्डककूटं स्वकीयमण्डकसमूहमित्यर्थः अण्डस्यावापुटं संबद्धदलद्वयरूपं हि नस्ति एवं अर्त्तारं पोषयितारं यो विहितस्ति सेनापतिराजानं प्रमास्तारममालं धर्मपा
 ठकवासमहामीहं प्रकरोतीति तन्मरणे बहुजनदुःखताभवतीति पंचदशं १५ यो नायकं वा प्रभुराष्टस्य राष्ट्रमहत्तरादिकामितिभावः नेतारं प्रवर्तयितारं प्रयोजनेषु
 निगमस्यवाणिजकसमूहस्य कश्चिन्नं श्रीदेवताङ्कितपट्टबद्धाङ्कितभूतं बहुरवंभूरिशब्दं प्रभुतरयथसमित्यर्थः इत्या महाभो हम्भुक्ते इति षोडशं १६ बहुजनस्य पच
 पादीनां लोकानां नेतारं नायकं हीपद्रवद्वीपः संसारसागरमतानामास्त्रासस्थानं अथवा दीपद्रवदीपो ऽस्त्रानाधकाराहततद्विद्विष्टिप्रसाराणां शरीरिणां ह्योपादे
 यवसुखीमप्रकाशकत्वात् तं अतएव चात्थमापद्रुचं प्राणिनां एतादृशं यादृशागणधरादयो भवति नरं प्रावचनिकादिपुरुषहत्वामहामीहम्भकरोतीति सप्तदश

वृद्धं ॥ १७ ॥ सप्यीजहाञ्छं ऊरुं । अक्षरं जीविविहंसि ॥ सेणावइपसत्यारं । महामीहंपकवुद्धं ॥ १८ ॥
 जेनायगंचरठस्स । नेयारं निगमस्सवा ॥ सेठिवज्जरवंहंता । महामीहंपकवुद्धं ॥ १९ ॥ बज्जजणस्सनेयारं ।
 दीवंताणंचपाणिणं ॥ एयारिसंनरंहंता । महामीहंपकवुद्धं ॥ २० ॥ उवठियंपठिविरयं । जेत्तिरकुंजगजीवणं ॥

ना ईखानापुटं समूहं हण्णेमारे । तिम पीताना भर्तारं पीपकने हण्णेमारे सेनापतिये राजारिये प्रभुस्त प्रधानने धर्मशास्त्रपठिकने हण्णेमारे तेमहामीहनीय कर्म
 करे १५ । जेकीइ राष्ट्रना देयना नायकने तथा निगम वणिक्समूहं तेहना नेताने प्रवर्तकने तथा अेठि नगरमुख्य लक्ष्मीञ्जिकित पट्टबद्ध तथा धणायथमनो
 धणी एहवाने हण्णेमारे ते महामीहनीय कर्मकरे १६ । बहुजननी घणालोकनो नेता नायकहेइ एहवाने तथा हीपसरीखा संसारसागरमां आश्रयभूत
 आपदायकी रजक एहवा प्राणीने हणे ते महामीहनीय कर्मकरे १७ । प्रव्रज्यानेविषे चपस्थित सावधानं धयेच्छे तथा सर्वसावधानं यकी निवर्त्यो जे कोइ

१७ उपस्थितप्रब्रज्यायांप्रविभ्रजिषुमित्यर्थः प्रतिविरतं सावद्ययोग्योनिवृत्तं प्रव्रजितमेवेत्यर्थः संयतसाधुंशुतपस्विनं तपांसिकृतवंतशोभनंवातपः श्रितसा श्रित क्वचित् जेभिक्षुजगजीवश्रुतिपाठः तत्रजगन्ति जगमानि अहिसकलेनजीवयतीति जगज्जीवनस्त्वं विविधैः प्रकारैरुपक्रम्य बलादित्यर्थं धर्माच्छ्रुतवा रिचलक्षणज्ञं श्रयतियः समहामोहम्प्रकरोतीति अष्टादश १८ यथैवप्राक्तन मीहनीयस्थान तथैवदमपि अनतज्ञानिना ज्ञानस्थानतविषयत्वेन अन्नयत्वेनवाजि नानामहंत्वा वरदर्शिना चाधिकदर्शनत्वात् तेषा येज्ञानाद्यनेकातिशयसपदुपेतत्वेनभुवनत्रयेप्रसिद्धाः अक्सवअवर्णवादीवक्तव्यत्वेनयस्यास्तिमी ऽवर्णवान् यथाना स्तिकवान् सर्वज्ञोन्नियस्थानतत्वात् उक्तंच अज्जविधावइनाणं अज्जवियअणत्तञ्चोअलोगीवि अज्जविनकीइविउहं पावतिसब्बसुंजीवी अहपावतितोसमोहोइ अ लोउनवेयमठत्ति अदूषण्चैतदुत्पत्तिसमयएव केवलज्ञानं युगपल्लोकालौकी प्रकाशयदुपजायते यथापवरकातर्वर्तिदीपकाशिखापवरकमध्यमित्यभ्युपगमा दिति बालोऽज्ञीमहामोहं प्रकरोतीति एकोनविंशतितम १९ नैयायिकस्यन्यायसनतिक्रातस्य मार्गस्य सम्यग्दर्शनादेः मोक्षपथस्यदुष्टोद्दिष्टीवा ऽपकरोति

कम्मधम्माउअसेइ । महामोहंपकुएइ ॥ २१ ॥ तहेवाणत्तणाणीणं । जिणाणंवरदंसिण ॥ तेसिञ्चवसुवंबवा ले । महामोहंपकुएइ ॥ २२ ॥ नेञ्चाइञ्चस्समग्गस्स । दुठेञ्चवयरईबज्ज ॥ तंतप्यियतोअसेइ । महामोहंप

भिन्नु जगजीवन अहिसादि धर्म जगतना जीवनभूत एहवा यतीने विविधप्रकारे करी बलाकारे धर्मथकी भ्रसे पाडे तेमहामोहनीय कर्मकरे १८। तिमज पूर्वनीपरी अनतज्ञानी अनत ज्ञानना धणी राग द्वेषना जयकरणहार वरप्रधान दर्शन चायक सम्यक्तना धणी एहवने अवर्णवाद बोले बाल अज्ञानी ते महामोहनीय कर्मकरे १९। जे न्यायानुसार मार्गनी दुष्टप्राणी अपकारकरे द्रोहकरे धणी तथा ते मार्गने निदाकरी भासे बोले मिथ्यात्वे घाले ते महा

अपकारं करोतीति बहुअत्यर्थपाठांतरणपरहरि मङ्गलं विपरिणमयतीतिभावः तंमार्गतिष्यतीति निदन्भावयति निदयाद्वेषिणवावासयति आत्मानं परं
 चयःसमहासोहंशकरोतीति विप्रतितम २० आचार्योपाध्याययोः श्रुतस्वाध्यायविनयच चारित्रशाहितः भिक्षितः तेनैवखिसतिनिव्यति अल्पश्रुताएतइत्यादि
 ज्ञानतः अन्यतीर्थिकंससर्गकारिणइत्यादिद्वयनतः मन्धर्माणः पार्श्वस्थादिस्थानवर्त्तिनः इत्यादि चारिन्तः यःसएवंभूतोबालो महामोहंशकरोतीत्येकविंश
 तितम २१ आचार्यदीनश्रुतदानात् खानावस्थाप्रतिचरणादिभिस्त्रिष्वितवतः उपकृतवतः सम्यक्नतान्प्रतितर्पति विनयाहारीपध्यादिभिर्नगल्पुपकरोतीति
 तथा अप्रतिपूजको न पूजाकारी तथासुखीमानवान् समहामोहम्रकरोतीति द्वाविंशतितम २२ अबहुश्रुतशयः कश्चिद्व्युतेन प्रविकल्पते आत्मानन्नायते श्रुत
 वानहमनुयोगधरोहमित्येवं अथवा कस्मिंश्चिन्मनुयोगाचार्यो वाचकीविति प्रकृति प्रतिभयति आत्मनःस्वाध्यायवाद् वदति विशुद्धपाठकोहमित्यादिकथः स

कुच्छइ ॥ २३ ॥ श्यायिरियउवकाएहिं । सुयंविणयं चनाहिणु ॥ लेखेजखिराईबाले । महामोहपकुच्छइ ॥ २४ ॥
 श्यायिरियउवज्जायाणं । समंनोपठितप्पइ ॥ श्युप्यठिपूग्रथरु ॥ महामोहपकुच्छइ ॥ २५ ॥ श्युवज्जसुणुयजे

मोहनीय कर्मकरे २० । जेणे आचार्ये उपाध्याये श्रुतशास्त्र तथा विनय चारित्र ग्रहिवाषी सिखाषी तेहीज आचार्यने खीसे निदे बाल अज्ञानीते महामी
 हनीय कर्मकरे २१ । जेकीइ आचार्य उपाध्यायने श्रुतदानादिकना महा उपकारीने सम्यक् प्रकारे तर्पेनही उपरांठी उपकार नकरे तथा ते आचार्यनी
 पूजा नकरणहार तथा सुख्य अभिमानी ते महामोहनीय कर्मकरे २२ । अबहुश्रुत अपंडितथकी जेकीइ श्रुतकारी शास्त्रकारी आत्माने प्रविकथे शाघयिंहं श्रु
 तवतकुं एम कहे वली स्वाध्यायवाद् वदे विणुशशास्त्रनीहुं पाठककुं एमकहे ते गहामोहनीय कर्मकरे २३ । अतपस्वी थकी जेकीइ तपेकारी पीताना आत्माने

तेषुवा गृह्यत्वत्प्रिमगच्छत् प्रास्वादते अभिलपति आश्रयतिवा समहामीहं प्रकरोतीति श्रष्टाविश्रतिसं ॥ २८ ॥ ऋद्धिर्विमानादिसस्यत् द्युतिः शरीराभर
 णदीप्तिः यथाःकीर्त्तिं वर्यः शक्तादिः शरीरसंबन्धौ देवानां वैमानिकानांबलशारीरं वीर्यजीवप्रभवं पस्वत्यध्याहारः तेषामिहप्रवेगस्यमानत्वात् तेषामपिदेवाना
 मनेवातिशायिशुण्वतामवर्णवान् अज्ञावाकारी अथवा अवर्णवान् केनोक्तापिन देवानामृद्धिदेवानां द्युतिरित्यादिका काव्याख्यं नक्तिविदेवानामृष्टादि
 कामस्तीत्यवर्णवाद्वाक्यभावायः यएवभूतः समहामीहं प्रकरोतीति एकीनत्रियत्तम २९ ॥ अपश्यन्योव्रतपश्यामिदेवानित्यादिरूपेणाज्ञानी जिनस्यैवपूजाम
 र्थतयः सजिनपूजार्थी गोशालकवत् समहामीहं प्रकरोतीति त्रियत्तम ३० ॥ रौद्रादयीमुद्भृताद्यादित्योदयादारभ्य क्रमेण भवन्ति एतेषाचमध्यमध्याः षट्

अद्भुवापारलोइगु ॥ तेतिष्ययंतोअ्यासयइ । महामीहंपकुछइ ॥ ३२ ॥ इह्हीजुइजसोवन्नो । देवाणंबलवी
 रिय ॥ तेसिंअ्यवणवंबाले । महामीहंपकुछइ ॥ ३३ ॥ अ्यपस्समाणोपस्सामि । देवेजस्केयगुज्जगे ॥ अ्यसाणी
 जिणपूयठी । महामीहंपकुछइ ॥ ३४ ॥ थरेणंसंअियपुत्ते तीसंवासाइंसामस्यपरियायंपाउणित्ता सिद्धे बुद्धे

देवतानो बल शरीर प्रभव वीर्य जीवप्रभव एहवा देवतानो अवर्णवाद बोले ते महामीहनीय कर्मकरे २९ । देवताने तथा यजने व्यंत्तर विशेपने गुह्यकने अ
 नादरतो थको हुश्रादरछु एमकहे तेस्वरूपथी अज्ञानी केवल जिननी अरिहंतनी पूजानी अर्थीछे गोशालानीपरे ते महामीहनीय कर्मकरे ३० । एह ३०
 मीहनीय स्थानकाहा । स्विर मडितपुत्र क्को गणधर तीस वर्षलगे सामान्य पर्याय दीजा पालीने सिधथयी । छतार्थथयी तलनी जाणकार थयी यातत्

जावसह्रदुःकप्पहीणे एगमेगेणंअहोरत्ते तीसंसुज्जत्ते मुज्जत्तेगणंप ० एएसिणंतीसाएमुज्जत्ताणं तीसंनामथेज्जा
 प० तं० रोद्धे सत्ते मित्ते वाऊ रुपीएअचिचदे माहिंदे पलंबे वंजे सच्चे अणदे विजए विस्ससेणे पाया
 वच्चे उवसमे ईसाणे नठे नाविअप्पा वेसमणे वरणे सतरिसन्ने गंधच्चे अग्गिवेसायणे अ्यातवे अ्यावत्ते नठवे
 अूमहे रिसन्ने सच्चठसिद्धे ररकसे ३० । अ्यरेणंअ्यरहा तीसंधणु उहंउच्चत्तेण होत्या सहस्सारस्सणं देविंदस्स दे
 वरसो तीस सामाणियसाहस्सीत्तु प० पासिणंअ्यरहा तीसवासाइं अ्यागारवासमज्जे वसित्ता अ्यागाराअु अ्यण
 गारियं पछइए समणेअगवं महावी रे तीसंवासाइं अ्यागारवासमज्जे वसित्ता अ्यागाराअु अ्यणगारिय पछइए

अच्चेकरी कर्मथकी मूकाणो सर्वदुःखथकी प्रचीणथयो । एकएक अहीरात्र त्रीस मूर्हतनी होय । ते त्रीसमुद्धतना त्रीसनामधियनामकच्चा । तेकहेच्छे । रोद्धे १
 अत्त २ । मित्र ३ । वायु ४ । सुपीत ५ । अभिचद्र ६ । माहिंद्र ७ । प्रलव ८ । ब्रह्म ९ । सत्य १० । आनद ११ । विजय १२ । विखसेन १३ । प्राजापत्य १४ ।
 उपथम १५ । ईशान १६ । नष्ट १७ । भावितात्मा १८ । वैअमण १९ । वरण २० । अतच्छषम २१ । गाधर्व २२ । अग्निवैश्यायन २३ । आतप २४ । आवत्ते
 २५ । नष्टवान् २६ । भूमहान् २७ । ऋषम २८ । सर्वाथिसिद्ध २९ । राचस ३० । अरनाथ अठारमा तीर्थकर त्रीस धनुष अंधपणियया । सहस्सार नामा आठ
 मा देवेंद्रना त्रीस हजार सामानिक देवताकच्चा । पार्श्वनाथ अरिहंत त्रीस वर्षलगे गृहस्थावास मांहि वसीने गृहस्थथकी अनगारपणी यतीपणी पास्या
 अमण भगवंत श्री महावीर तीसवर्षलगे गृहस्थावासे वसीने घरवास छांडीने यतीपणी पास्या । रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस लाख नरकावास कच्चा । एणीयें र

रयणप्यन्नाएणं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा प० इमीसिणं रयणप्यन्नाएणुढवीए अत्येगइयाणं नेरइ
 यणं तीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएणुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प०
 यणं तीसंपलिउवमाइं ठिई प० उवरिसउवरिमगेवेजायाणं देवाणं जहब्बेण
 अत्तुक्कुमारणं देवाणं अत्येगइयाणं तीसंपलिउवमाइं ठिई प० उववन्ना देवत्ताए उववन्ना तेषिणं देवाणं
 अत्तुक्कुमारणं देवाणं उवरिममज्जिमगेवेजाएणु विमाणिसु देवत्ताए उववन्ना पाणमंतिवा उरस्सं
 तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिममज्जिमगेवेजाएणु अत्तुमासेहिं अणमंतिवा जवसिच्छियाजी
 उद्धारेण तीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा तीसाए अत्तुमासेहिं समुप्यज्जइ संतेगइया जवसिच्छियाजी
 तिया निरस्ससतिवा तेषिणं देवाणं तीसाएवासहस्सेहिं अ्याहारछे समुप्यज्जइ परिनिह्याइस्सति सत्तुक्कुमाणमंतं करि
 वा जे तीसाए जवग्गहणेहि सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिह्याइस्सति सत्तुक्कुमाणमंतं करि
 तिया निरस्ससतिवा तेषिणं देवाणं तीसाएवासहस्सेहिं अ्याहारछे समुप्यज्जइ परिनिह्याइस्सति सत्तुक्कुमाणमंतं करि
 वा जे तीसाए जवग्गहणेहि सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिह्याइस्सति सत्तुक्कुमाणमंतं करि
 तिया निरस्ससतिवा तेषिणं देवाणं तीसाएवासहस्सेहिं अ्याहारछे समुप्यज्जइ परिनिह्याइस्सति सत्तुक्कुमाणमंतं करि
 वा जे तीसाए जवग्गहणेहि सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिह्याइस्सति सत्तुक्कुमाणमंतं करि

कदाचिद्दिनेऽन्तर्भवति कदाचिद्भ्रात्राविति ॥ ३० ॥

॥ एकात्रिंशत्संस्थानकं सुगमं नवरं सिद्धानामादौ सिद्धप्रथमएवसमयेगुणास्त्रैचाभिनिबीधिका

स्सन्ति ॥ ३० ॥ एकृतीसंसिद्धाद्गुणा प० तंजहा स्त्रीणे व्याप्तिणिबोहियणाणावरणे स्त्रीणे सुयणाणावरणे स्त्रीणे उहिणाणावरणे स्त्रीणे मणपज्जवनाणावरणे स्त्रीणे केवलनाणावरणे स्त्रीणे चक्रुदंसणावरणे स्त्रीणे उचक्रुदंसणावरणे स्त्रीणे लुहिदंसणावरणे स्त्रीणे केवलदंसणावरणे स्त्रीणे निद्रा निद्रानिद्रा स्त्रीणे पयला पयलापयला स्त्रीणे धीण्ठी स्त्रीणे सायावेद्यणिज्जे स्त्रीणे व्यसायावेद्यणिज्जे स्त्रीणे दंसणमो

२ सीमस्से बूमस्से मूकास्से सर्वदुःखनी अंत करिस्से मोचजास्से ॥ इति त्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३० ॥ हिंवे एकत्रीसमो समवाय लिखे छे । एकत्रीस सिद्धना आदिगुण प्रथमसमयमांडी जपना जे गुण ते सिद्धादिगुण कहा ॥ ते कह्छे । चौण थयोछे आभिनिबीधिक ज्ञाननो आवरण एतले सर्व थापि मतिज्ञानावरण चय गयो छे जेहनी १ । चौणथयो छे श्रुतज्ञानावरण २ । वली अवधिज्ञानावरण चय ३ । मनःपर्यवज्ञानावरण चय ४ । केवल ज्ञानावरणचय ५ । चक्षुदर्शनावरणचय ६ । अचक्षुदर्शनावरणचय एतले आंखटाली बीजा चारइ'द्रिय अचक्षु तेहना आवरणनी चय ७ । अवधिदर्शना वरणचय ८ । केवलदर्शनावरण चय ९ । सुखेजागे ते निद्रा तेहनीचय १० । दुःखेजागे ते निद्रानिद्रा तेहनी चय ११ । वैठाजभां आवि ते प्रचला तेहनीच य १२ । चालतां आवि ते प्रचलाप्रचला तेहनीचय १३ । धीण्ठी अईवामुदेवनी बल तेहनीचय १४ । सातविदनीयकर्मचय १५ । असातविदनीयकर्मचय १६ ।

वरणादिन्नयस्वरूपा इति मन्दरीभरः सषधरणीतलेदशसहस्रविष्कम्भइति कृत्वा यथोक्तपरिधिप्रमाणीभवतीति जयाशंखूरिएइत्यादि किलसूर्यस्य चतुरशीत्यधिकमखलशतभवति मण्डलवज्योतिष्कामार्गोभिधीयते तच्चन्द्रबृह्णीपस्थांतराशीत्यधिकेयोजनशते पचषष्टि सूर्यमण्डलानिभवन्ति तथा लवणसमुद्रं त्रीणित्रिं

हणिज्जे स्त्रीणे चरित्तमोहणिज्जे स्त्रीणे नेरइञ्चाउए स्त्रीणे तिरिञ्चाउए स्त्रीणे मणुस्साउए स्त्रीणे देवाउए स्त्रीणे उच्चागोए स्त्रीणे निच्चागोए स्त्रीणे सुत्तनामे स्त्रीणे द्वाणंतराए स्त्रीणे दाणंतराए स्त्रीणे लात्तांतराए स्त्रीणे न्नागांतराए स्त्रीणे उवन्नागांतराए स्त्रीणे बीरिञ्चंतराए ३१ मंदरेणंपह्णए धरणितले एक्कतीसंजोयणसहस्साइं उच्चेवतेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणापरिक्खेवणं प० जयाणं सूरिए सब्बाहिरेयिमंफ़लं उव

दर्शनमोहनिय एतले सम्पत्तमोहनिय चय १७ । चारित्रमोहनिय चय १८ । नरकायुचय १९ । तिर्यचायुचय २० । मनुष्यायु चय २१ । देवायु चय २२ । उच्चैर्गोत्रचय २३ । नीचैर्गोत्र चय २४ शुभनाम चय २५ । अशुभनाम चय २६ । दानांतराय चय २७ लाभांतरायचय २८ । भोगांतराय चय २९ बीयांतराय चय ३० । उपभोगांतरायचय ३१ । मेरुपर्वत भूमितले एकतीसहजार छसे त्रीवीस योजन कांइक न्यून परिधीये कक्षी । मेरुपर्वत भूमिने ऊपरै दसहजार योजन पिडुल पणेछे तेहनो परिधी त्रियुणित एतले एकतीस हजार छसे त्रीतीस योजन कक्षी । सूर्यना पैसेठ मण्डला निषधपर्वत उपरछे तेमाहि सगला पहिलो एतले सर्वाथंतर मंडल जगतीथकी एकसो अस्सी योजन छे । अने लवणसमुद्र माहि तीन से तीस योजन अथगाहीने एकसो अयोगणीस मण्डला छे । सर्वमिली जंबूद्वीप माहि एकसो चौरासी मंडल छे तेमाहि सर्ववाह्यमंडले उपसंक्रमी आविने सूर्य मकर सक्रांतिदिने भ्रमण करे । तेणे दिने भरतचे

शुद्धधिकानियोजनशतान्यवगाह्येकोनविंशत्यधिकं सूर्यमण्डलशतं भवति तत्र च सर्वबाह्यं समुद्रांतर्गतमंडलानां पर्यन्तं तस्य चायामपिष्कम्भी लक्षं षट्शतानि
 वयोजनानां षष्ठ्यधिकानि परिधिमुहूर्तचैत्रगणितन्यायेन त्रीणि लक्षानि अष्टादशसहस्राणि त्रीणिशतानि पंचदशोत्तराणि ३१८३१५ एतावच्चैत्रमादित्योऽ
 होरात्रद्वयेन गच्छति तत्र च षष्टिमुहूर्ता भवन्ति षष्ठाभागापहारि यत्संख्यं तत्कृत्वा गम्यहेत्रप्रमाणं भवति तत्र पंचसहस्राणि त्रीणिचपंचोत्तराणिशतानि ५३०५ ।
 १५ । ६० मुहूर्त एतच्च दिवसांश्चैत्रगुण्यते यदा च सर्वबाह्ये मंडले सूर्यश्चरति तदा दिनप्रमाणं षाडशमुहूर्ताः तद्वच्च षट् अतः षड्भिर्मुहूर्तगुणित मुहूर्तगतप्रमाणं
 चतुः सूर्यगतिप्रमाणं भवति एकत्रिंशत्सहस्राणि अष्टौचशतान्येकत्रिंशदधिकानि त्रिंशच्च योजनद्विषष्टिभागाः ३१८३१ । ३० अभिर्वर्षितमासोऽभिर्वर्षितसंवत्सर

संक्रमिता चारं चरद् इह गयस्स मणुस्सस्स एकतीसाए जोयणसहस्सेहिं अठहिअएकतीसेहिं
 जोयणसएहिं तीसाएसठिन्नागे जोयणस्स सूरिणचखुफासं हवुमागच्छइ अजिबहिणं मासे एकतीसं

अगत मनुष्येन एकतोसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर एकयोजनना साठिया पंचतीसभाग अधिक वेगलीयको सूर्यं चतुस्यं शीघ्र आवि । एतलिपो
 सी पूनिमे मकर सक्रांतिदिने एकतोसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर योजनना साठिया तीसभाग वेगली होय सूर्यं लवणसमुद्र मांहि तिवारे इहां
 ना मनुष्यने इष्टिगोचर आवि । अभिर्वर्षितमास त्रीजे वर्षे आवि तेरहमासनी वर्षे होय । ते अधिक मास एकतीस रात्रिदिवस प्रमाणे सातिरेक कारणका मां
 भेरोजांषिनी । एतले अहोरात्रिना १२४ भागना १२१ अधिक एकतीस रात्रिदिवस परिमाणे पूरोथाय । जेणे काले सूर्यं राशिभोगवि तेभादित्यमास सूर्यमा

णति मोक्षसाधनयोगसंग्रहाय शिष्टिणाचार्यायालीचनादत्ता १ निरवलावेति आचार्योपि मोक्षसाधकयोगसंग्रहायवदत्तायामालीचनायां निरपलापः स्या
 नान्यसकथयदित्यर्थः २ आवर्त्तसुदृढधम्मयत्ति प्रयस्तुयोगसंग्रहाय साधुनाऽऽप्तसुदृढ्यादिभेदासुदृढधर्मताकार्या सुतरां तासु दृढधर्मिणाभाव्यमित्यर्थः ३ अणि
 सिञ्जीवहाणियति शुभयोगसंग्रहायैवानिश्चितं तदन्यनिरपेक्षसुपधान परसाहाय्यानपेक्ष्यतपोविधयमित्यर्थः ४ सिक्खत्ति योगसंग्रहायशिञ्जासिवितव्या सा
 चत्तय्यग्रहरूपे प्रत्युपेक्षाबासेवनात्मिकाचेतिद्विधा ५ निष्पडिकम्मयत्ति तथैवनिष्प्रतिकर्मताशरीरस्थविधिया ६ अन्नाययत्ति तपसज्ञानतानकार्या यशःप
 जावर्धिलेनाऽप्रकाशयद्भि स्तपःकार्यमित्यर्थः ७ अलोभियत्ति अलोभता विधया ८ तितिक्वत्ति तितिक्षापरीषहाद्विजयः ९ अज्जवेत्ति आर्जवः ऋजुभावः १०
 सुद्धत्तिशुचिः सत्यसयमइत्यर्थः ११ सम्मदिठ्ठित्ति सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः १२ समाहियत्ति समाधिश्चैतः सास्थं १३ आयारविणञ्जीवणत्ति द्वारद्वयं तत्रा

निष्पडिकम्मया ॥ १ ॥ झुणायया झुलोनेय । तितिस्का झुज्जवे सुइ ॥ सम्मदिठ्ठी समाहीय । झायारे ॥

कही अनिराआगल न कहिये २ । प्रयस्तु योगसंग्रह भणी यतीने आपदा आयांथके दृढधर्म करिवी ३ । अनिशये अपेक्षाविना उपधान तपकरिवी ४ ।
 सूत्रार्थ ग्रहण रूप शिचानी सेवा ५ । शरीरनौ निष्प्रतिकर्मना करवी एतले सुश्रूषानकरवी ६ । यशपूजानि अर्थे अप्रकाशयतीथकी तपकरे ७ अलोभताकरवी
 ८ । तितिक्षा परीषहनी जयकरिवी ९ । आर्जव सरल स्वभाव १० । सम्यग्दर्शन शुद्धि ११ । चित्तनू स्वस्वपणू १२ । आचार सहित यद्दने
 मायानकरे १४ । विनय युक्तहोय मायानकरे १५ । अदीनपणू १६ । सवेग ससारथोभय अथवा मीबनी इच्छा १७ प्रणिधि कायादिकनोठामेराखिवी १८ ।

चारीपगतःसा नमायाकुर्यादित्यर्थ. १४ िन्योपगतीभवेन्नमायां कुर्यादित्यर्थ. १५ विद्मईयति धृतिप्रधानामतिधृतिमतिरदन्य १६ सर्वेगतिं सर्वेभः ससा
 राज्ञयमोज्ज्वलाशोभा १७ पण्डित्तिः शिविर्मादाशब्दनकायमित्यर्थः १८ सुविहि सदनुष्ठान १९ सवरथ आयवनिर्पोषः २० अतर्दागीवसहरेत्ति लक्ष्मीयदोष
 स्वनिर्पोषः २१ सव्वकामविरत्तयति समस्तविषयवेमुख्य २२ पञ्चकषायेत्ति प्रख्याख्यानमकशुणविषय २३ उत्तरगुणविषय २४ विउसनेति व्युत्सर्गोद्रव्यभावसे
 दभिनः २५ अथमाएति प्रमादवर्जनं २६ लषालवेत्ति कालीपलक्षण तेन चणे २ सामाचार्य्यनुष्ठानकार्यं २८ भाणसंवरजोगेत्ति ध्यानशैवसवरयोगी ध्यान
 सवरयोगः २८ उदरमारण्येति मारण्येति नोपिवेदनीदेहेनैभकार्यं २९ सगाण्यपरिखति संगानांनप्रिज्ञाप्रत्याख्यानपरिज्ञाभेदभिन्नापरिज्ञाकार्या

विणलवण ॥ २ ॥ धिईमई न संज्ञे । पणिहीगुचिहिलनरे ॥ अतज्ञेसोवसहरे । सद्गान्तविरत्तया ॥ ३ ॥

पञ्चस्काणे विउस्सग्गे । अ्यमडिलवालवे ॥ ज्जाणे सवरजोगेथ । उदणुमारणतिणु ॥ ४ ॥ संगानंयपरिखा

मम अनुष्ठानकवि १९ । संवर आयवनिर्पोष २० पोताना दोषनी निरीध शेकियो २१ । सर्वशियथी विमुखपणी २२ । पचक्खणनी करिवी २३ ।
 व्युत्सर्ग इच्चकौ उपधीनो त्याग भावथकी विणगौरवनी त्याग २४ । प्रमाद टालिवी २५ । क्रियानीकलि समाचरिवी २६ । धर्मव्यनानदि करिवी २७ ।
 संवरनी योग २८ । मारण्यतिक वेदना उपजे मनने चोग न करिवी २९ । सगनी परिज्ञा खजनानदिक सगनी पचक्खवी ३० । प्रायश्चितनी करिवी ३१ ।
 आराधना करी मरे ३२ । एह वचोस योग सग्रह जाण्णा ॥ वचोस देवेद्व कथा ते कहे के । चमेद्व १ । वलेद्व २ धरणेद्व ३ । भूतानेद्व ४ । वेणुदेव ५ ।

नसुभेदा द्यथाराजप्रभृकृताभिधान द्वितीयोपांग इतिसम्भाव्यते द्वात्रिंशत्यात्रप्रतिबद्धमितिकेचित् ॥ ३२ ॥ अथत्रयस्त्रिंशत्तमस्थानकं तत्र आय-
 सस्यगदर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तथाशातनाः खण्डनानिरुक्तादाशातनास्तत्र शैवीऽल्पपर्यायोरात्रिकस्य बहुपर्यायस्य आसनमासत्ति र्यथारजीचलादिस्तस्यलगति
 तथागन्ताभवतीत्यवभाषातनाशैत्यसर्वत्र पुरभीति अग्रतो गता भवति सपक्वति समानपत्र समपार्श्वयथा भवति समश्रेयान्गच्छतीत्यर्थं चिह्नतिस्था
 तात्राप्रिता भवति यावत्कारणा इशाशुताक्कन्यादुसारिणा न्या इह द्रष्टव्यास्तान्निवमर्थत आसनपुरः पार्श्वतः स्थानेन तिस्रोऽत्रनिषीदनचतिस्रः तथा विचारभूमौ

रसति ॥ ३२ ॥ तेत्तीसंश्यासायणालु प० तं० । सेहेराइणिअरुस पुरलु गंतात्रवइ श्यासाय
 णासेहस १ सेहेराइणियरुस सपरकंगतात्रवइ श्यासायणासेहस २ सेहेराइणियरुस श्यासन्बंगतात्रवइ
 श्यासायणासेहस ३ एवंगुणअञ्जिलावेणं सेहेराइणियरुस पुरलुचिह्नितात्रवइ श्यासायणासेहस ४ सेहेरा
 इणियरुस सपरकचिह्नितात्रवइ श्यासायणासेहस ५ सेहेराइणियरुस श्यासस्सचिह्नितात्रवइ श्यासायणासेह

इति वन्नीसमोसमवाय यथो ॥ ३२ ॥ हिवेत्तीसोसमवाय लिखियेके । तेत्तीस आशातना । ज्ञानदर्शनचारिभ्रामिनी सातवी खडवी तत्रा
 शातना कही तेकहेके । शिष्यप्रत्यकालीनदीचानोधणी रात्रिकघणी दीचानोधणी तेहने आसन्नी डूकडीगताहीय चालेणहपहिलीतिआशातना शिष्यने १ । रा
 त्रिकमडानेआगलथकीगताहीयचालेतेआशातना शिष्यने २ । रात्रिकने सपक्ककहतादरीचालवीते आशातना शिष्यने ३ । इम एणे अभिलापे शिष्यबडलि
 आगलजभोरहे तेआशातना शिष्यने ४ । शिष्यगुरुनेभागल जभोरहेतेआशातना शिष्यने ५ । शिष्यगुरुने बरावरजभोरहे तेआशातना शिष्यने ६ । शिष्यगुरु

गतयोः पूर्वतरमाचमतः शब्दस्थायातना १० एषं पूर्वगमनागमनमालोचयतः ११ तयारात्रौकोजागतीतिपृष्ठे राधिकेनतद्वचनमप्रतिश्रुतः १२ रात्रिकास्या

स्स ६ सेहेराइणियस्स पुरञ्जनिसीइत्ताअवइ आसायणासेहस्स ७ सेहेराइणियस्स सपस्सकनिसीइत्ताअवइ
 आसायणासेहस्स ८ सेहेराइणियस्स आसस्सनिसीइत्ताअवइ आसायणासेहस्स ९ एवाणुणञ्जिलोविणं
 सेहेराइणिणुणंसोद्धिवहिया विहारसूमिनिस्संतेसभाणे तत्थपुब्बामिवसीहतराणु आयासइपच्छाराइणिणु आसा
 यणासेहस्स १० सेहेराइणिणुणंसोद्धिं अहियाविहारसूमि वा निस्संतेसभाणे तत्थपुब्बामिवसीहतराणुआलोएइ
 पच्छाराइणिणु आसायणासेहस्स ११ सेहेराइणियस्सरात्रुवाविआलेवावाहरमाणस्स अज्जोकेसुत्ते केजागरित
 त्यसेहेजागरमाणेराइणियस्स अप्पथिणुणेत्याअवइ आसायणासेहस्स १२ सेहेराइणियस्स पुब्ब सलवत्ताणु तंपु

ने आगलथकीबेसे तेआयातनाशियने ७ । शिणुगुरूने बरावर वेसे तेआयातनाशियने ८ । शिथआशकहतां दुक्कओथकीयेसे तेआयातनाशियने ९ । एवणी
 आतिलापे ९ । आयातना । शिथगुरूबेहेकेगवाथका तिहाशिणुपडिलेथाचमनसेइ जलकुचि करे तेआयातनाशियने १० । शिथगुरूसथं वहिन्मिदडिले
 चैयजिनमूर्ति अथवा भूमिकाये जाताथका यडिगिय र्णि यावही पडित्तने एक्केगुरूपडित्तने तेआयातना शियने ११ । शिथगुरूनेपडिलेहीज आवाणहा
 रसाथे गुरु बील्पाविना बीले तेआयातना शियने १२ । शिथ प्रंतं गुरूये पूछी कवण रात्रियेसुत्ते अथवा कवण जागीछे एहवं पूछेथके णिथ जागतां थ

आगल्यद्दिप्रत्युत्तरदेयमिति यच्चस्याथातनेति ३३ तेत्तीसभोमिति भौसानिनगराकाराणि विगिष्टस्थानानील्यस्ये तथाजयाणसू एइत्यादि इहेसूर्यस्यमण्डलयो
 रतरं देहे योजनेऽष्टचत्वारिंशच्चैकपष्टिभागाः एतद्द्विगुणपचयोजनानि पचत्रिगचैकपष्टिभागा एतावताहौनविक्रमं सर्ववाह्यमण्डलाद्वितीयं मण्डलमभवति
 ततश्चतुश्चेत्तपरिधितः न्यायेनपरिधितः सप्तदशभिर्योजनैरष्टत्रिंशताचैकपष्टिभागेर्ध्वन द्वितीयमण्डलसर्ववाह्यमण्डलाद्भवति एवंतृतीयमण्डले एतद्द्विगुणनहीनम
 भवति तथाहि तद्विक्रमत्तएकादशभिर्योजनैर्नवभिक्षैकपष्टिभागैः पर्यन्तिमाहीनमवति परिधितसुपचत्रिंशतायोजनैः पचदशभिक्षैकपष्टिभागैर्व्यनभवति तच्च
 त्रौणिलचाणि अष्टादशसहस्राणि द्विशतएकोनाशौचत्तराः षट्चत्वारिंशच्चैकपष्टिभागाइति तथान्तिमण्डलाचण्डलेरद्वास्यासुहृत्तस्यैकपष्टिभागाभ्यांदिनवृद्धिभ

चैत्रपक्षिसुणित्तात्रवद् व्यासायणसेहस्स ३३ चमरस्सण अंसुरिदस्स अंसुरस्सो चमरचचाणुरायहाणीए एका
 मेक्षत्राराएतेत्तीसं २ श्रीमा प० महाविदेहेण वासे तेत्तीस जोजणसहस्साइं साइरेगाइं विरुद्धेणं प० जयाणंसू
 रिए वाहिराणंतरं तच्चं मण्डलं उवसंक्रमित्ताण चारंचरड तयाणं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोजणसहस्से

गुरुने समान आसने बैसे ते आशातना शिथले ३२ । गुरुर्ये कांइक वार्ता पूछ्यां यकां आसने बैठेई उत्तर दे ते आशातना शिथले ३३ । एहतेत्तीस आशा
 तना कही ३३ ॥ असुरेद्र असुर कुमारनी राजा एहवा चमरदनी चमरचचा राजधानीने विषे एकेके वारे तेत्तीस तेत्तीस नगरने आकारे भला स्थानक
 कक्षा । जंबूद्वीप संबधी महाविदेहेचेत्त तेत्तीस हजार योजन भाभेरो पिहुलपणे कक्षी । जिवारे सूर्य सर्ववाह्य मंडल थकी त्रीजे मंडले आवीने भ्रमणकारे
 तिवारे भरतचेत्तगत मनुष्यने तेत्तीस हजार योजनथकी दृष्टिगोचर आवि । ते पोसी पूनिसे मकर सक्राति पछे माह बदी १ एकम दिने सूर्य उत्तरायणे

वति तथाचतृतीयेमंडलेयदा सूर्यशरति तदाहादशमुहूर्त्तोरालारथैकघण्टिभागामुहूर्त्तस्य दिनप्रमाणम्भवति तद्वै चैकघण्टिभागीकृतेन अष्टषण्ण्यधिकं शतत्र
यलत्रणीन स्थूलगणितस्यविवक्षितत्वान् परित्यक्तांशाः ३१८२२८ तृतीयमंडलपरिधीगुणितेसति एकषण्ण्यचषण्टिगुणितया भागीहृतयत्नभ्यते तत्तृतीयमंडलेष
चुः सर्गप्रमाणम्भवति तद्यथात्रिंशत्सप्तसांख्येकीत्तराणि ३२००१ अंगानामेकषण्ण्यभागलब्ध्या एकीनपंचायतषण्टिभागा योजनस्य ४६ । ६० त्रयोविंशतिसैक
षण्टिभागा योजनषण्टिभागस्य २३ । ६१ एतत्तृतीयमंडले चतुःसर्गस्यप्रमाणं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यामुपलभ्यते इत्तुयदुक्तं त्रयस्त्रिंशत्किचिन्नना तत्रसातिरेकस्ययीज
नस्यपिन्यनसहस्रता विवक्षितिसम्भाव्यते चतुर्दशमंडलेपुनरिदं यथोक्तमिवप्रमाणंभवति प्रतिमंडलयोजनचतुरशीत्याः साधिकायाः प्रथममंडलमानेप्रथेप

हि किंचिविसेरूणेहिं चक्रुफ्रासं हव्यमागच्छुइ इमीसेणं रयणप्यन्नाए पुढवीए अय्येगइयाणं नेरइयाणं
तेत्तीसं पल्लेवमाइं ठिइं अहेसत्तमाए पुढवीए कालं महाकालं रोसुए महारोरुसु नेरइयाणं उक्कोसेणं
तेत्तीससागरोवमाइं ठिइं अय्यइठाने नेरइनेरइयाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिइं प०

षाल्यो निषध पर्वत भणी तिवारे त्रीजे सांडले तेत्तीस हजार भांभरो दृष्टिगीचर आवि । त्रीजे मंडले सूर्य चारकरे तिवारे वारे मुहूर्त्त एक मुहूर्त्तना एकस
ठिया चार भाग प्रमाणे दिवस होय । अने सर्वबाह्य मंडले सूर्य होय तिवारे अकतीस हजार आठ से एकतीस योजनना साठिया तीस वेगले थके इहां
ना माणसने दृष्टिगीचर आवि । एणीये रत्नप्रमा पृथिवीये केतला एक नारकीनी तेत्तीस पल्लोपमनी आउखी कह्यो । हेठे सातमी पृथिवीये पूर्वादिक दिस
थकीमाडी काल १ । महाकाल २ । पुरुक ३ । महारुपक ४ । एह चिह्न नरकावासाना नारकीनी उल्लष्ट तेत्तीस सागरोपमनी स्थिति कही । विवक्षे

णादिति ॥ ३३ ॥

अथ यत्परित्रयसमस्थानके किमपिलिख्यते बुद्धाद्रसंस्ति बुद्धानां तीर्थक्षतामप्यऽतिशेषा प्रतिशया बुद्धातिशेषाः श्रवस्थितमहृषि

असुराणं अत्येगइथाणं देवाणं तेतीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु अत्येगइथाणं देवाणं तेतीसं
पलिउवमाइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेतीसं सागरोवमाइं ठिई
प० जेदेवा सइठसिद्धे महाविमाणे देवताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अजहन्नामणुक्कोसेणं तेतीसं सागरो
वमाइं ठिई प० तेणं देवा तेत्तीसाए अरुमासेहिं अणमंतिवा पाणमंतिवा उरस्ससंतिवा निरस्ससंतिवा
तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं अहारठे समुप्यज्जइ संतेगइया श्रवसिद्धियाजीवा जेतेतीसन्नवग्गह
णेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति सइदुस्काणमंत करिस्संति ॥ ३३ ॥ चोत्तीसंबुद्धाइ

अथ इहाण नरके नारकीनी जघच स्थिति नथी उल्लष्ट तेतीस सागरोपमनी स्थिति कही । केतलाएक असुर कुमार देवतानी तेतीस पलोपमनी स्थिति
कही । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानी तेतीस पलोपमनी स्थिति कही । विजय १ वैजयंत २ जयंत अपराजित ४ विमाने देवतानी तेतीस
सागरोपमनी स्थिति कही । जेदेवता पिचले सर्वार्थसिद्ध महाविमाने देवतापणे उपनाके ते देवतानी जघच स्थिति नथी उल्लष्ट तेतीस सागरोपमनी स्थिति
कही । ते देवता तेतीस पखवाडे गयथके खासीखासले धणिले उंचोले नीचो मूके तेह देवताने तेतीस सत्तस वर्षगये आहारनी वांछा उपजे । ऊ केतला
एक भयजीव जे तेतीस भवने आंतरे सीभासे बृभासे मंथासे सर्वदुःखनी आंतकरसे मीच जासे । इति तेतीसमी समवाय संपूर्णम् ॥ ३३ ॥

अभाक्केशाशयिरोजाः सशूण्णिचकूर्चरोमाण्णिचशेषशरीरलीभानि नखाप्रतीतांइतिहृक्कालमित्येकः १ निरामया नीरोगानिरुपलेपानिर्मला गात्रयष्टिस
 बुलतेतिद्वितीयः २ गीचीरपाण्डुरंमांसशोणितमित्त्वतीयः ३ तथापद्मचकमलंगधद्रव्यविशेषीवा यत्पद्मकमिक्कूठ उथलंच नीलीत्पलमुत्पलकण्टवा गधद्रव्य
 विशेषस्ययीयोगधः सयन्नासि तत्सयोच्चासनिःश्वासमित्त्वतुर्थः ४ प्रच्छन्नमाहारनिर्हार अभ्यवहरणमूत्रपुरीषीक्षणी प्रच्छन्नत्वमेवस्फुटतरमाह अदृश्यमंसच
 क्षुपानपुनरवक्ष्यादिलीचनेन इतिपचम ५ एतच्चद्वितीयादिकमतिशयचतुष्वांज्यप्रत्ययं आकाशकेचक्रापठ तथाआगाशगतव्योमवति आकाशकंवा प्रकाशमि

सेसा प० तं० अ्ववठिणु केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुवलेवा गायलठी २ गोस्कीरपंडुरे मंससोणिणु ३
 पउमुप्लगधिणु उस्सासनिस्सासे ४ पच्छन्ते आहारनीहारे अ्वदिस्रो मंसचस्कृणा ५ अ्यागासगयं चक्षं ६

हिवे चौत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ चौत्रीस बुध कर्हतां तीर्थंकरदेव तेहना अतिशय ते बुधातिशय बीजा देवनी अपेक्षये अधिक पणो कक्षा तेकहेछे ।
 वधनहीमस्कागकेश्य स्मश्रुडाडीसूक्ष्म शरीरनारोम । नीरोगवलीनिर्मलशरीर २ । गायनाद्रुधसरीषोधवल मांस रुधिर ३ । पद्मकमलतेहनगंधसरीसो स्वा
 सोस्वास नी गध ४ । अदृश्यदीप्तिनही मांस चक्षुयंकरी वेतले चर्मचक्षुयंकरी एहवोप्रकृदगुप्तआहार जीमणनीविधि वलीनीहार मूत्रपुरीषनीत्याग ५ । एशी
 येकृदृश्यदृष्टीयें यैपांचअतिशययथा । तैमांहिपहिली सूक्ष्मीबीजायकीपचमालगें चारअतिशय जक्यकी माडी ने होय ५ । जेहनीआकाशगत धर्मचक्रचा
 ले ६ । आकाशगत क्वत्र ७ । आकाशगतवर प्रधान श्वेतचामर ८ । आकाशनीपरें अत्यंत निर्मल एहवास्फटिकरत्नमयीपादपीठसहितसिंहासन ९ । आका

लर्थः चक्रधर्मचक्रामितिप्रणः ६ आकाशलोकेत्रमितिप्रणमः एवमावाशंगच्छंछत्रयमित्यर्थः ७ आकाशक्रेकाम्रे श्वेतवर्चाम्रे प्रकीर्णलेइत्याद्यमः ८ आगा
 सफलियामयति आकाशमिवयदत्यत मच्छंस्फटिकं तन्वय सिंहासनसहपादपीठमितिनवमः ९ आगासगशीति आकासगतोऽत्यर्थतुङ्गमित्यर्थः कुडिभित्तिल
 घुपताकाः सभाव्यन्ते तत्सहस्रैः परिमडितशारावभिरामद्यातिरमणीय इतिविग्रहः इदञ्छ्रीति श्रेयध्वजापेक्षया तिमहत्वादिद्रयासौध्वजस्य इन्द्रध्वजइति
 पुरश्चीति जिनस्याश्रतो गच्छतीतिदशमः १० चिच्छ्रितिवानिसीयतिवेत्ति तिष्ठतिगतिनिवृत्त्यानिपीदुत्यपविशतिवल्गणादेविति तत्पञ्चणमैवाकालहीनमित्यर्थः
 पन्नेः सच्छिदइतिवक्तव्यप्राप्ततत्वात् सच्छत्रपद्मद्वयतां सचासीगुण्णपञ्चमसमाकुलयेतिविग्रहः पञ्चवा अक्षुराः सच्छत्रः सध्वजः सधंष्टः सपताकोऽशोकवरपादप

आगारागयं ठत्तं ७ आगासगयात् श्वेतवर्चामरात् ८ आगासफालियाभयं सपायपीठं सीहासणं ९ आगा
 सगत् कुकुरीसहस्रपरिमंक्रियाञ्चिरामो इदञ्जत् पुरत् गच्छइ १० जत्य जत्य वियणंश्वरहताभ्रगवताचिठं
 तिवा निसीयतिवा तत्य तत्य वियणं तरुणादेव सन्नपत्तपुष्पपल्लवसमाउलो सवतो सज्जत् सधंठो सपठा

शगत एतले अत्यंतजंची लघुपताकाना सहस्रकारी परिसंघित मनीहर एहवीइन्द्रध्वज अन्यध्वजनीअपेचार्ये मोटो तेमहेन्द्रध्वजजिननेआगलयकी चाले १० ।
 जिहा जिहां श्ररहंत भगवत जभारहे अथवा वैसे तिहांतिहां तलाल पत्ते करीकायी अने फूलपल्लविकारी सर्वतः व्याप्त ध्वजाराहित घंटापताका सहित
 वर प्रधान अशोकवृक्ष जपर छायाकरे ११ । वेगली धोडीपूठे मस्त्वाने प्रदेशे तेजमडल मामडल होय तेमामडल अधकारने दसीदिने नसाडे १२ । जिहां

दीयति प्राज्ञतादीनांषांभाषायांविशेषाणां मध्येयामागधीनासभाषा रसोलसीमागध्याभिव्यादिलक्षणवतीसा प्रसमाश्रितलकीयसमयलब्धार्थमागधीत्युच्यते
 तत्राथमभाख्याति तस्याएवातिकीमलत्वादिति हाविशः २२ भासिज्जमाणोति भगवताभिधीयमाना आरियमणारियाणति आर्यानाय देशोत्पन्नानां द्विपदा
 चीयति प्राज्ञतादीनांषांभाषायांविशेषाणां मध्येयामागधीनासभाषा रसोलसीमागध्याभिव्यादिलक्षणवतीसा प्रसमाश्रितलकीयसमयलब्धार्थमागधीत्युच्यते
 तथायथाप्यदागवादयः स्रगात्राटव्याः पशुवीयास्याः पचिष्णः प्रतीताः सरीसृपा हरःपरिस्पर्णसुजपरिस्पर्णोच्चिति तथाकिमात्मनत्रात्मनातया आत्मीयत्वर्थः
 मनुष्याद्यतप्यदागवादयः स्रगात्राटव्याः पशुवीयास्याः पचिष्णः प्रतीताः सरीसृपा हरःपरिस्पर्णसुजपरिस्पर्णोच्चिति तथाकिमात्मनत्रात्मनातया आत्मीयत्वर्थः
 भाषा तथा भाषामविनपरिणामतीतिसंबन्धः किभूतासीभाषित्याह हितमशुद्ध्यः शिवभोचः सुखयवणकालीन्नवसानदब्ददातीतिहितशिवसुखदेतित्रयोविशः
 २३ पूर्वभवातेरेनादिकालेषां जातिप्रलयबद्धं निकाचित वैरमित्रभावविषयितया तेषिच आसतांमध्येवैमानिका असुरानागासभवनपतिविशेषाः
 जस्का कळगुत्क्रियथत्रियन्नुया चामरुस्केवणं करंति २० पद्माहरत्ने वियणं हिययगमणीत्त ज्ञोयणनीहारी
 सरो २१ त्रगवंचणं अरुमागहीए त्राराए धम्ममाइस्सइ २२ सावियणं अरुमागहीत्रासा त्रसिज्जमाणी
 तेसिस्सेसि अरियमणारियाण दुप्पयचउप्पयमियपसुपरिस्पर्णसिवाण अप्पय्णोहियसिवसुहदायन्नास
 नलगे विस्सरतो शब्दहीय २१ । भागवंत छ भाषामाहि अर्थमागधीभाषापरसर्प एहनात्रालानेहित अशुद्ध्यविशेष मोक्षसुखआनंदतेहने
 नानिद्विपदसगुथने चतुष्पदगवादिक्वने स्रगत्राटवोजीव पशुशामसबधीढीर खेवर उरपरम्भुजपरसर्प एहनात्रालानेहित अशुद्ध्यविशेष मोक्षसुखआनंदतेहने
 देएहवीभाषाणीपरिणमे २२ । भवातेरे त्रनादिकाले अथवा जातिहेतुकवन्निकाचित वैर वाख्या जणे एहवदेव भावेनिक १ । असुरबागकुमार एहमवनप
 तीरेन सुएणे शोभननर्णोपेतते ज्योतिगोयत्त राजस जिनर किपुप एह चारब्बं । र विशिष गरुडलांछनपणायकी सौपरणकुमार भवनपति विशिष गधर्वमहोर

सुवर्णाः शोभनवर्णा एते च ज्योतिष्काय च राक्षसकिन्नराः किंपुरयाः ख्यं तरमेदाः गुरुडागुरुडलां कनलाए सुपर्णकुमारा भवनपतिविशेषाः गन्धर्वा महोरगाश्चर्यं तरवि
 शेषा एव एतेषां ह्येहः पसतचित्तमागसा प्रयाता निसमङ्ग तानि चिवाणि रागे द्वेषाद्यनेकविधविकारयुक्ततया विविधानिमानसान्द्यंताः कारणानि येषांते प्रयातचि
 नमानसा धर्मनिशामयति इति चतुर्विंशः २४ ह्येषां दत्तया इदमग्यदतिग्रयह्यमधीयते यदुत अन्यतीर्थिकमावचनिका अपिचणं यदंतोभगवंतमिति गम्यते
 इति पचविंशः २५ आगताः सतोऽहंतः पादमूले निःप्रतियचना भवंति इति पञ्चविंशः २६ जश्रीजश्रीवियगति यत्र यत्रापि च देशे तश्री २ त्ति तत्रतत्रापि च पंच
 विशती योजनेषु इति त्वीर्थाद्युपद्रवकारी प्रचुरसूयकादि प्राणिगण इति सप्तविंशः २७ मारिजिनमरकडल्लष्टाविंशः २८ स्वचक्रं स्वकीयराजसैन्यं तदुपद्रवका

ताए परिणमइ २३ पुह्वबद्धवेरावियणं देवासुरनागरुवशजकरकरकसकिनरकिंपुरिसगश्लगंधह्रमहोरगाश्चरहउ
 पायमूले पसंतचित्तमागसा धमं निसामंति २४ अन्नउच्छ्रियपावश्रणिथा वियणमागया वंदति २५ अगया
 समाणा अरहउ पायमूले निष्प्राक्रियवणाहवति २६ जह जह जह जह जह जह अरहंतो जगवंतो विहरंति तह तह

गन्धंतरविशेष एहसगला वैरभावच्छाडीने अरिहंतने पायमूले प्रसन्नचित्त प्रयातश्रीच्छे चित्तरागद्वेषादि यनेकविधविकार जेहना एहवार्थमप्रते साभले २४ ।
 अन्वतीर्थी अन्वयूथिकाकपिलादिक अन्व प्रवचन मिथ्यात्वशास्त्रनाशनीते हीपणि प्राव्यायकानभगवतप्रते वादे २५ । तेह प्रव्यशास्त्रानावादीप्रतिवादीप्राव्यायका
 अरिहंतना पायमूले निष्प्राक्रियवणा उत्तरदेवाभशी प्रसमर्थयथा २६ । जेषेप्रदेशे अरिहंत भगवतविहरे विचरे तिहां योजन पचवीसलगे ईति धान्याद्विउप
 द्रवकारी प्रचुर मूपकादिक न हीय २७ । मारी लोगमरखीनहीय २८ । स्वचक्र स्वदेशी कटक उपद्रवनकर २९ । परचक्र परदेशी कटकनी भयनहीय ३० ।

रिभभवतीति एकीनत्रिंशः २९ एवंपरचक्रं परराजसैन्यमितित्रिंशः ३० अतिइष्टिरधिवावर्धइत्येकत्रिंशः ३१ अनाहृष्टिर्वर्षाभावाइतिधात्रिंशः ३२ दुर्भिक्षदुः
 क्वालइतित्रयस्त्रिंशः ३३ उष्याइरावाहिति उत्पत्ताअनिष्टसूचका रुधिरवृद्ध्यादयस्त्रुहेतुकाये ऽनर्थास्त्रिंशो त्यातिका खयाव्याधीज्वराद्यास्तदुपशमोऽभावाइति
 घटुस्त्रिंशत्तमः ३४ अन्यच्च पक्षाहरश्चोदृतआरभ्यभिहितास्त्रे प्रसामंडलंचकर्मचयकृताः शेषाभवप्रत्ययेभ्योऽन्येदेवकृताइति एतेचयदन्यथापिदृश्यन्ते तस्मात्तर
 भेवमंतव्यामिति चक्रवद्विजयति चक्रवर्त्तिविजितव्यानिचेत्रखण्डानि उक्तीरेणएचोत्तीसतित्यागारासमुपज्जतिच्चिसमुद्यन्ते सभ्रवन्तीत्यर्थः नल्लेकासमयेजा

वियणं जोयणपणवीसाएण ईती नभवइ २७ सारी नभवइ २८ सचक्षां न भवइ २९ परचक्षां न भव
 इ ३० अइवुठी न भवइ ३१ अण्णावुठी न भवइ ३२ दुस्सिकं न भवइ ३३ पुसुण्णान्नावियणं उव्वाइया

अतिघट्टि त्रयिक दृष्टिनहीय ३१ । अनाहृष्टि श्रवणनहीय ३२ । दुर्भिक्षकालनहीय ३३ । पूर्वं उपना पिण उत्पत्तौ अनिष्टसूचकसंधिर दृष्ट्यादिका तथा
 व्याधि ज्वरादिका तल्लालेही उपशमं ३४ । एह एकवीसभायकीसांडी चीनीसमालने अनेप्रभाभडल एतला अतिशय कर्मचयथकीहीय श्रेयवौजाभवप्रत्यय
 थकी वीजादेवकृतच्छे मतांतरे अन्यथा परिच्छे । एहचौत्रीस अतिशयकक्षा ॥ जंबूहीपनेविषे चीनीस चक्रवर्त्तये' जीपवायोग्य एतलेसाधनकरवायोग्य क्षेत्रखं
 छ तेचक्रवर्त्तिविजय कक्षा तेकाहेछे । मरूथकी पूर्वापर महाविदेहेमिली ३२ विजय एकभरत एकएरेवत एवंसर्वमिली विजयखुड ३४ जंबूहीपनेविषे ३४ ।
 दीर्घवैतान्यकक्षा बचीस महाविदेह विजयभा ३२ । भरतएरेवतना २ एवजंबूहीपनेविषे उरघट्टआरे ३४ । तीर्थीकरउपजे विदेहना बचीसविजय भरतएरेवत
 ना २ एवं ३४ एकसमेजन्स्राथीचारहीय शैताथीतोदने बिहुकांडे एअरामये वेपहीय अनेपतता ३४ कक्षा । महाविदेहेरात्रीधितिवारे भरतएरेवते दिवस

ब्रह्मे चतुर्गामैवैकदाजन्मसंभवात्तथाहि मेरोपूर्वापरशिल्पातलयोद्बुद्धेसिंहासनेभवतोऽती इविपद्मविवाभिषिच्यतेतोद्वयोद्विथीरेवजन्मति दक्षिणोत्तरयोः क्षेत्रयो
 द्वादानोदिवससम्भावा अभरतैरावतयोजिनोत्तरैर्दरात्रएवजिनोत्तरैरिति पठमेत्यादि प्रथमायां पृथिव्यांविश्वरवासासनाल जाणि पचम्यांत्रीणिषष्ठ्यापचो
 नल्लजं साप्त्यां पंचनरका एवं सर्वं मीलने चतुस्त्रिंशत्स्थानकं सुगमम् नवरं सत्य वचनातिशया आगमे

वाही खिष्यामेवउवसमंति ३४ जंबूद्वीवेणद्वीवे चउत्तीसं चक्षुवाहिविजया प० तं० बत्तीसं महाविदेहे दो
 न्नरहेरवाणु जंबूद्वीवेणद्वीवे चोत्तीसं दूहवेयहा प० जंबूद्वीवेणद्वीवे उक्षोसपुचोत्तीसं तिल्यकरा समुष्यज्जाति
 चमरस्सणं अ्युरिंदस्स अ्युररन्तो चोत्तीसं न्रवणावाससयसहस्सा प० पढमपंचमठ्ठीसहस्रासु चउसु
 पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा प०

होय अनेद्वाराविहोय तिवारं तिहां दिवसहोय । तीर्थकारनी जन्म अर्धरात्रीयं होय तेमाटे चीत्रीसनी जन्मसमकालेनकह्यो । मेरुनी पूर्वपश्चिम शिलात
 लने उपर दीयदीय सिंहासनके एहथी वंकेनी हीच अभिषेक थाय एमाटे एकसमये वेवे तीर्थकारनी जन्म कहिवी । असुरकुमारनाराजा एहवा चमरेन्द्र
 असुरेन्द्रना चउत्रीसभवनवास गतसहस्र एतलेचउत्रीसलाख भवनकह्या । पहिली नरक पृथिवीयें ३० लाख नरकावासा पांचमीये ३ लाख क्खीयें पांचजणा
 एकलाख सातमीये पांच ४ एमचार नरकपृथिवीयांमिली चीत्रीसलाखनरकावासकह्या इतिचीत्रीसमीसमदाय सपूर्ण ॥ ३४ ॥ हिवि पैत्रीसमी

समवायलिखिके पैनीस सत्यवचनना अतिशयकह्या । सस्मारवचन सस्मतलक्षणवतपणी १ । उदात्तल जचेस्वरैवलवी २ । उपचारोपितल अग्रामीण वचनबील

न दृष्टा एतत्प्रयत्नोदृष्टाः संभावितवचनहिगुणवद्वक्तव्यं तद्यथा संस्कारवर्ग १ उदात्तं २ उपचरोपेतं ३ गभीरशब्दं ४ अनुनादि ५ दक्षिणं ६ उपनीतरागं ७
 महार्थं ८ अद्याहतपीर्वापर्यं ९ शिष्टं १० असदिग्धं ११ अपहृतान्योत्तरम् १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाद्यतीतम् १४ तत्वानुरूपम् १५ अप्रकीर्णप्रसृतम् १६
 अन्योन्यप्रसृहीतम् १७ अभिजातम् १८ अतिस्निग्धमधुरम् १९ अपरमर्विद्धं २० अर्थधर्माभ्यासानपेतम् २१ उदार २२ परनिदात्मोक्ताप्रविप्रयुक्तम् २३ उप
 गतज्ञाघं २४ अनपनीतम् २५ उत्पादितास्त्रिकौतूहलम् २६ अद्रुतं २७ अनतिविलम्बितम् २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिवितादिविमुक्तम् २९ अनेकजातिसम्प्रया
 द्विचित्रम् ३० आहितविशेषम् ३१ साकारम् ३२ सत्वपरिग्रहम् ३३ अपरिखेदितम् ३४ अयुच्छेदम् ३५ चेति । वचनम् महानुभाववक्तव्यमिति तत्रसंस्कार
 वत्त्वसंस्कारादिलक्ष्यणयुक्तम् १ उदात्तत्वमुच्चैर्तृत्तिता २ उपचरोपेतत्वमग्राभ्यता ३ गभीरशब्दमेघस्यैव ४ अनुनादित्वं प्रतिरवोपेतता ५ दक्षिणत्वसरलत्व
 म् ६ उपनीतरागत्व मालकोशादिग्रामरागयुक्तता ७ एतेसप्तशब्दपिञ्जाप्रतिशयाः अन्येतर्थाश्रयास्तत्रमहार्थत्वम् वृहद्भिधयता ८ अद्याहतपीर्वापर्यत्वम्
 पूर्वापरवाक्याविरोधः ९ शिष्टत्वअभिमतसिद्धांतोक्तार्थता वक्तुः शिष्टतासूचकत्वं वा १० असदिग्धत्व असशयकारिता ११ अपहृतान्योत्तरत्वम् परद्रूपणा
 विषयता १२ हृदयग्राहिल्वम् श्रीढमनोहरता १३ देशकालाद्यतीतत्वम् प्रस्तावोचितता १४ तत्वानुरूपत्वम् विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता १५ अप्रकीर्णप्र

बो ३ । गभीर जडस्वरवीलवी ४ । वीलतां प्रतिशब्दहोय ५ । सरसवचनवीलवी ६ । मालकोसादि राग सहित स्वरैर्बोलवी ७ । श्रीडिबचनेन अर्थघषणीएहवू वील
 बी ८ । पूर्वापर विरोध रहित ९ । सिद्धांतनी प्रतिपादक १० । संदेह रहित ११ । अनिरावादीना वचने पराभवे नही १२ । सांभलहारनी मगहरे १३ । दे

घृतत्वम् सुसंबंधस्थसतः प्रसरणे अथवाऽऽसंबन्धाधिकारित्वमिति विस्तरयोरभावः १६ अन्योन्यप्रगृहीतत्वम् परस्परैरेण पदानां वाक्यानां वासापेक्षता १७ अभि
 जातत्वंचक्षुः प्रतिपाद्यस्यैवभूमिकानुसारिता १८ अतिस्निग्धमधुरत्वम् घृतगुडादिवत् सुखकारित्वम् १९ अपरमर्मवेधित्वम् परममर्मानुदुग्धदनस्वरूपत्वम् २० अ
 र्थधर्माभ्यासानपेतत्वम् अर्थधर्मप्रतिबद्धत्वम् २१ उदारत्वअभिधायार्थस्यातुच्छत्वगुंफगुणविशेषवा २२ परनिदात्मोक्षप्रियुक्तत्वमिति प्रतीतमेव २३ उपगतज्ञा
 घत्वम् उक्तगुणयोगात् प्राप्तज्ञाघता २४ अनपनीतत्वम् कारककालवचनलिगादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेक्षता २५ उत्पादिताश्चिन्नकौतूहलत्वम् स्वविषयेश्चोदृ
 णा जनितमभिच्छिन्न कौतुकं येनतत्तथातद्भावस्त्वम् २६ अद्भुतत्वमनतिविलंबित्वंप्रतीतम् २७ विस्मयविशेषकिलिकिचितादिविमुक्तत्वम् विस्मयोवक्तृ
 मनसोऽन्नांतता विचिपस्त्वस्यैवाभिधायार्थं प्रत्यनासक्तता किलिकिंचित्तरोषभयाभिलाषादिभावानां युगपद्वासकूलरणमादिशब्दास्यनीदोषांतरपरिग्रहस्यैर्विमुक्तं
 यत्तत्तथातद्भावस्त्वम् २८ अनेकजातिसंश्रयाच्चिंचितत्वम् इहजालयोवर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि ३० आहितविशेषत्वम् वचनांतरापेक्षयादौकितविशेषता ३१ सा

शकाले उचितवचनबोलवी १४ अतिविस्तरकरी अणामिलतेनहीय १५ । कहिवाने वस्तुने अनुसरिहोय १६ । पहिलापदने पाच्छिंपद सापेक्षपणेबोलवी १७
 प्रत्यक्ष समभवायोग्य वात कहिबी १८ । घृतगुडनीपरे मधुर अशुभवे १९ । अनैराना मननेव्यथा नकरे एहवी २० । अर्थ धर्म सहित बोलवी २१ । उरकठ
 अर्थनू कथक २२ । परनिदा आलस्युति रहित २३ । प्रससा कर्वा योग्य २४ । कारक काल वचन लिंगेकरी शुद्ध २५ सांभलहारना चितने चमत्कारकरे २६
 बोलता उतावलीनहीय २७ । रही रही ने अजर उच्चारण करवूं गृहदोषरहित २८ । स्नातिरहित कहिवायोग्य वस्तुये संबद्ध क्रीधमयादि रहित बोल
 वी २९ । जे पदार्थ वर्णवे तेहनो विशेष रूप कहिबी ३० । वचन काहतां वचनांतरनीअपेक्षायि बोलवी ३१ । वेगला वेगला पदकारी अन्यय रूपेबोलवी ३२ ।

सप्तदशदशपूर्णिमाद्यामिति व्यवहारीनिश्चयतस्तु मेषसंक्रांतिदिने तुलासंक्रांतिदिने चैत्यर्थः षट्त्रिंशद्गुणिका पदत्रयमाना माहच चैत्तासीएसुमासेसुतिपया

मियाचारिया ११ अणहपवृज्जा २० समुद्रपालिज्जं २१ रहनेमिज्जं २२ गोथमकेसिज्जं २३ समितीउ
२४ जन्ततिज्जं २५ सामायारी २६ खलुकेज्जं २७ मोरुक्कमग्गइ २८ अप्पमाउ २९ तवोमग्गी ३० च
रणविही ३१ पमायठाणाइ ३२ कम्मपयफ्ठी ३३ लेसज्जयण ३४ अणगारमग्गे ३५ जीवाजीवबिज्जतीय
३६ चमरस्सणं असुरिदस्स असुररसो सत्तासुहम्मा वत्तीसजोयणाइ उट्टुअत्तेणं होत्या समणस्सणं अर
हत्त महावीरस्स वत्तीस अज्जाणंसाहरत्तीउ होत्या चैत्तासीएपुष्पमासीसु सइवत्तीसंगुलियं सूरिणु पोरीसी

पालनी २१ । रथनेमेनी २२ गौतम गणधर केयीअणगारस्वी २३ । सुमति गुप्तिनी २४ । जयघोष विजयघोषनी २५ । समाचारीनी २६ । खलुकीयं गर्गा
चार्यनी २७ । मोच मार्गनी २८ । अप्रमादनी २९ । तप मार्गनी ३० । चरण विधिनी ३१ । प्रमादस्थानकनी । ३२ । कर्मप्रकृतिनी ३३ । लिश्याध्ययन ३४ ।
अणगारमार्गनी ३५ । जीवा जीव विभक्तिनी ३६ ॥ असुरना राजा असुरेन्द्र चमरेन्द्रीसभा सुधर्मा छत्रीस योजन जची कही । अमण तपस्वी भगवंतजा
नवत महावीरने छत्रीस आर्याना सहस्स यथा । एतत्तं छत्रीस सहस्स साधवी हुई । चैत्रअने आसीज मासे सतिति सक्कत् पुनिमदिने छत्रीसे अगुले सूर्य
पोरुषी छाया नियर्त्तवि एतले चित्तासीएसुतिपया हीइपोरसीतिवचनात् ३६ द्वाद्य प्रमाणे त्थणी छायात् ३६ अगुल छाया त्रिणनी हीय ।

हीडपीरसीति ॥ ३६ ॥ सप्तत्रिंशत्स्थानकर्म, पंच्याताम् नवरम् कुथुनाथस्यैहसप्तत्रिंशद्गणधराउक्ता आबन्धुर्कोतुपञ्चिंशत् इतिमतांतरम् तथाहेमव तादिजीवीरुक्तप्रमाणसम्बादगाथा सत्ततीसरहस्या छन्नसयाजीयणाणवउयथरा हेमवयवासजीवा किंचूणासीलसकलायति कलाएकीनविंशतिभागोशो जनस्येति तयाविजयादीनिपूर्वादीनिजम्बूदीपद्वाराणि तत्रायकास्तत्रामतीदेवास्तीषाराजधान्यस्तत्रामिकाएव पूर्वादिदिब्रुवतीऽसंख्यतमे जम्बूदीपइति बुद्धि

त्वायंनिवृत्तइ ॥ ३६ ॥ कुंथुस्सणञ्चरहन् सत्ततीसंगणा सत्ततीसंगणहरा होत्या हेमवयपुरन्व
वयाउण जीवानु सत्ततीस जोयणसहस्साइं तमृचउसत्तरे जोयणसए सोलसय एगूणवीसइन्नाए जोयणस्स
किचिचिसेसूणानु ज्ञायामेणं प० सन्नासुणं विजय वेंजयंत जयंत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा स

तेवारि पीरुपी होय । इति छत्तीसमी समवाय संपूर्ण ॥ ३६ ॥ हिवे सैत्तीसमी समवाय लिखे छे ॥ कुथुनाथ अतिहत ने सैत्तीस गच्छ । अने से नीस गणधर कह्या । आवश्यके पत्तीस सांभलिजे छे तेमतांतर छे । हिमवंत जेव १ । एरवत २ । एहवेहु युगलजेवनो जीवा सैत्तीस सैत्तीस योजन सहस्र छे से चि हुत्तरियोजन ३७६७४ । १६ कला ऊपरि १६ भाग उगुणीसभाग हाइआ एक योजनना कांद्रक विशेषकणी लांवपणे कही । सगलाई जम्बूदीप ना पूर्वादि दिशे चार पीलीना धणी विजयादिकदेव तेहनी पूं विजय दत्तिणि वेंजयत पश्चिमे जयत उत्तरे अपराजित राजधानी ने विषे प्राकार गढ सैत्तीस योजन जंच पणे कही । तद्रिकार्ये लहुडीये विमान प्रविभक्तो कालिकश्रुत विषे पहिले वर्ग सैत्तीस उद्देशकाल अथयनदीठ उद्दिशाना काल कहतां अवसरकह्या । आ

हतरपमाधता तत्रवर्षधरास्त्रियं ज्बूहीपधातकीखण्डपुष्करार्द्धपूर्वापरार्द्धेषुच प्रत्येकं हिमवदादीनाषष्ठाभावात् सन्दराः पंचपुकाराधातकीखण्डपुष्करार्द्धयो.
 पूर्वतरविभागकारिणश्चत्वार एवमेवएकोनचत्वारिंशदिति दीर्घत्वादि द्वितीयायांपंचविंशति शतुर्थीं दश पचस्यात्रीणि षष्ठांपंचोनलक्षं सप्तम्यांपंचिति यथोक्त
 संख्यानास्काणामिति । नाणवरणिज्ज्यादि ज्ञानावरणीयस्यषष्ठ मोहनौयस्याष्टाविंशतिः गोत्रस्यद्वे आयुषश्चतस्रइत्येवमेकोनचत्वारिंशदिति ॥ ३८ ॥

स कुलपद्यथा प० त० तीसं बासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा दोस्र चतुत्य पंचम ठठ सत्तमासु णं
 पचसु पुढवीसु एगुणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स मोहाणिज्जस्स गोत्रस्स ज्ञा
 उयस्स एयासिणं चउरहं कम्मपगळीणं एगुणचत्तालीसं उत्तरपगळीउ प० ॥ ३९ ॥ अरहन

चेत्र अढाई द्वीप तेमांही ३८ । कुल पर्वत चेत्रना मर्यादा कारी तेमाटे कुल पर्वत कहा लोकमाहि परि कुलते लोक मर्यादाना कारणे तेकहेके । ज्वे
 द्वीप माही ६ हिमवंतादिक वर्षधर धातकीखंडमाहि पूर्वपश्चिम मिली १२ वर्षधर पुष्करार्द्धे मांहि पिण १२ एवं ३० वर्षधर यथा इषकार चार
 पर्वत बेधातकी खंड मांहि बेपुष्करार्द्धे मांहि एव ४ । मेरू ५ । जंबूद्वीप मांहि एक मेरू धातकीखंडमांहि २ मेरू पुष्करार्द्धेमांहि २ मेरू एवं ५ मेरू स
 र्वमि लीकुल पर्वत ३८ यथा । बीजो नरक पृथिवी ये २५ लाख नरकाबासा चउथी ये १० लाख पंचमी ये ३ लाख छठीये पंचि जंथा १ लाखसातमी
 ये ५ नरकाबासा सर्वमिली ३८ । लाख नरकाबासाकच्चा । ज्ञानावरणीय कर्मनो उत्तर प्रकृति ५ मोहनोयनो २२ । गोत्रनो २ आउखानी ४ एहचारकर्मनो
 प्रकृति उगुणचालीस उत्तर प्रकृति कही ॥ इति ३८ मीसमवाय सपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिंवे चालीसमी समवाय लिखे के । अरिष्टनमी

चत्वारिंशत्स्थानकव्यक्तं नवरं वरसाहपुष्पिमासिणीएति यत्केषुचित् पुस्तकेषुदृश्यतेसोपपाठः फगुणपुत्रिमासिणीएति अत्राध्येयङ्कयमुच्यते पीषिमासेचउपया
इतिवचनात् पीषीपूर्णिमास्यामष्टचत्वारिंशद्गुलिकासाभवति ततोमाषिचत्वारिंशत्गुलानिप्रतितानीत्येवं फाल्गुनपीर्णमास्यांचत्वारिंशद्गुल
कापौरुपीच्छायाभवति कार्तिक्यामयेवमेव यतः चैतासीएसुमाषिसुतिपयाहोइपोरिसी लुक्तं ततः पदत्रयस्यषड्त्रिंशद्गुलप्रमाणस्य कार्तिकमासातिक्रमे

णं अरिष्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीउ होत्या मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उहुंउच्चतेणं प०
संती अरहा चत्तालीस धणइंउहुं उच्चतेणं होत्या अयाणंदस्स णं नागरन्नो चत्तालीसं त्रवणावाससयसह
स्सा प० खुम्मियाएणं विमाणपवित्रतीए तइएवग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला प० फग्गुणपुसिमासिणीएणं सू

अरिहतने चालीस आर्यानासहस्र एतले चालीस हजार साध्वीनी संपदाथई । मेरुपर्वत जंवी एक लाखयीजनछे जपरथी पिहुली एक सहस्रयीजन ते
विचे चूलिका चीटीनोपरि जोगइ मेरुनो चूलिका चालीस यीजन जची कहो । श्रतिनाथ सोलमा अरिहत चालीस धनुष जचा उत्तरेंद्र नागराजा
मृतानेंद्रना चालीस भवनावासना शतसहस्र कह्या । एतले चालीस लाख भवन कह्या । बुद्रिका ये लहुडिये विमान प्रविभक्तिये एतले बीजे वर्गे ४० उद्देश्य
नकाला अध्ययनना उद्देशाना अवसर कह्या । एतले जेतला उद्देशनकाला तेतला अध्ययन कह्या । फागुणनी पूनिमे सूर्यहस्त प्रमाणे त्थानी छाया मावीये
तेहनी ४० अंगुल प्रमाणे पीरसी छाया प्रते निवर्तावीने चार भ्रमण करे । कार्तिकी पूनिमे परि एमज ४० अंगुल प्रमाणे पीरसी हुये पछे साते २ दिवसे

वाहाएत्ति व्यवधानापेचयाद्यदतरंतदित्यर्थः कालीयशोत्ति धातकीखण्डपरिवष्टके कालोदाभिधानेसमुद्रे गइनामेत्यादि गतिनामयदुदयाद्वारकारदित्वेन जीवोव्यपदिश्यते जातिनामयदुदयादेकोद्रियादिभवति शरीरनामयदुदयादैदारिकशरीरकरोति यदुदयादगानांशिरः प्रमृतीनांउपागानांचांगुल्यादीनांविभा गोभवति तच्छरीरोपागनाम बध्यमानानांच सबधकारण शरीरोपांगनाम तथाश्रीदारिकारिकादिशरीरपुद्गलानां पूर्ववद्धानां बध्यमानानांच सबधकारणशरीर बन्धनाम तथाश्रीदारिकादि शरीरपुद्गलानाटहीतानां यदुदयाच्छरीररचनाभवति तच्छरीरसघातनाम तथास्नायतस्थायिविधशक्तिनिमित्तभूतोरचनावि शेषीभवति तत्सहननाम सस्थानसमचतुरस्राणिलक्षणभवति तत्संस्थाननाम तथायदुदयाङ्गणादिविशेषवतिशरीराणिभवन्ति तद्वर्णादिनाम तथायदुदया

मुद्दे बायालीस चदाजोइंसुवा जोइत्तिवा जोइत्सतिवा बायालीसंसूरियापन्नासिसुवा ३ समुच्छिमन्नुयपरि
सप्याण उक्कोसेण बायालीसवाससहस्साइं ठिई प० नामकम्मे बायालीसविहे प० तं० गइनामे जाइनामे
सरीरनामे सररीरवंगनामे सररीरसंघायणनामे सघयणनामे संठाणनामे वन्ननामे गंधनामे

तेकहच्छे । नरकादिक नोगतिपाप्तवौ जेहने उदे तेगतिनाम १ एकेंद्रियादिक जाति पाप्तिये ते जातिनाम २ श्रीदारिकादि पांचशरीर जेहने उदे पाप्तिये ते शरीर नाम ३ एमजेकर्मने उदे सर्वत्र कहिये श्रीदारिकादिक त्रिणशरीरना अगोपाग अगते अगुलीनखादिते अग उपांग ४ श्रीदारिकादिक पाच शरीरनी बवनी करवी ते शरीर बंधननाम ५ श्रीदारिकादि पाचशरीरनांपुद्गल ग्रहीने रचनानो करिवी ते शरीरस घातनाम ६ शक्ति निमित्तभूत रचना ना विशेषतेसह नन नाम ७ सस्थान समचतुरस्रादिक लक्षण ८ वर्ण कृष्णादिक पांच ९ गव सुगंधादिक सुरति गंध दुरभिगंध १० रस मधुरादिक पांच

दुग्धलघु स्वशरीरजीवानां भवति तद्गुरुलघुनाम तथायतीश्रगावयवः प्रतिजिहिकादिरालीपघातकोजायते तदुपघातनाम तथायतीगावयन एवविपाल्म
कोदशत्वगाहि परिषामुपघातकोभभवति तत्पराघातनाम तथायदुदयांतरालेगतीजीवोयाति तदानुपूर्वीनाम तथायदुदयादुच्छासनिष्पत्तिर्भवति तदुच्छास

रसनामे फासनामे अगुरुलज्जयनामे उवघायनामे पराघायनामे अणुपुष्टीनामे उरसासनामे अ्याव
नामे उज्जीयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुज्जभनामे वायरनामे पज्जतनामे अपज्जत्तनामे
साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुयनामे अ्युयनामे सुयगनामे दुस्यगनामे

जाण्वा ११ स्यर्ग गुर्वोदिक आठ १२ जेह कर्मने उदे जीवनी शरीर अगुरुलघु हुये ते गुरु लघुनाम १३ जेह कर्मने उदे पडिजीभी प्रमुखिकारी आत्मान
उपघाते ते उपघात १४ जेह कर्मने उदे परने उपघात उपजे तेपराघात १५ आराख गतिये जोय जाय ते आनुपूर्वीनाम १६ उच्छास नीसासलीजे तेजसा
स नाम १७ जेह कर्मने उदे शरीर तापवंत होय ते आतप नाम १८ जेह कर्मने उदे शरीर उद्योतवंत होय ते उद्योत नाम कर्म १९ जेह कर्मने उ
दये भलो भंडो गति गमन सहित होय ते विहगगतिनाम २० जेह कर्मना उदय थकी जीव चलि ते वस नाम २१ जेह कर्मना उदय थो जीव स्थिर
रहै ते स्थावर नाम कर्म २२ जेह कर्मना उदय थो दृष्टि गोचर न होय ते सूत्र नाम कर्म २३ जेह कर्मना उदय थो जीव दृष्टि गोचर होय ते बादर ना
म कर्म २४ पूरी पर्याप्ति करे ते पर्याप्ति नाम २५ पूरी पर्याप्ति नकरै तेअपर्याप्ति नाम २६ जेह कर्मने उदये प्रनता जीवनी एक शरीर पाभिये ते
साधारण नाम २७ जेह कर्मने उदये एक जीव एक शरीर पवि ते प्रलोक नाम २८ स्थिर रहै जेहथी ते स्थिर नाम २९ अगोपाग ताथांथका तूटे ते

नाम तथायदुदयाज्जीवसापवच्छरीरोभवति तदातपनाम यथादिव्यबिंबदृष्टिवीकाशिकानां तथायतीतुलोद्योतवच्छरीरोभवति तदुद्योतनाम तथायतः शुभे
 तपनामनयुक्तोभवति तद्विहायीगतनाम त्रसनामादीन्द्यष्टौप्रतीतार्यानि तथायतः स्थिराणांदन्ताद्यवयवानां निष्पत्तिर्भवति तत्स्थिरनामयतश्चमूजिह्वादीनाम
 स्थिराणानिष्पत्तिर्भवति तदस्थिरनाम एवंशिरः प्रभृतीनांशुभानां तच्छुभनाम पापादीनामशुभनामइति शेषाणिप्रतीतानि नवरं यदुदयाज्जातो जीवदेहिधुस्थ्या
 दिर्लिंगाकारनियमोभवति तत्सप्तधास्मान निर्माणमिति पचमच्छेत्रीसमाउत्ति दुःखमाएकांतदुःखमाचैत्यथः पढमवीयाउत्ति एजातदुःखसादुःखमाचै

सुरसरनामे दुस्सरनामे आणुज्जनामे अथाणुज्जनामे जसाकात्तनभि अजसाकित्तिनामे निष्माणनामे
 तित्यकरनामे लवणे णं समुद्दे वायालीसं नागसाहसरीनि अश्रितरियंवल धारंति महालियाएणं विमाण
 पवित्रतीए वितिणवग्गे वायालीसं उद्देसणकालाप० एगमेगाएउसथ्थिणीए पंचमळ्ठीउसमालु बायालीसं

अस्थिर नाम ३० शुभनाम ३१ अशुभनाम ३२ । जेह कर्मने उदये सहने वल्लभ होय ते सुभगनाम ३३ । जेह कर्मथी सहने अनिष्ट होय ते दुर्भग नाम ३४
 जेह कर्मने उदये कउभलीहोय तेसुखर नाम ३५ । भूडोकउहोय ते दुखर नाम ३६ । जेहकर्म थो बचन सहने मान्यथाय तेअद्वियनाम ३७ । बचनकोइनमानि
 ते अनटिय नाम ३८ । यथकीर्त्ति वाधे ते जसोक्तिनाम ३९ यथ कीर्त्ति नहोय ते अजस कीर्त्ति नाम ४० । ठामो ठाम अगोपणेनी रचिवो ते निर्मा
 ण नाम ४१ । जेह कर्मना उदयथी सहने पूज्यथाय ते वीर्थेकार नामकर्म ४२ । लवण समुद्रने विधे बैतालीस हजार नागदेवता जवूहोप तरफनी पाणो
 नी बैला प्रते धरेछे । बडी विमान प्रविभक्तोय वीजिवर्गे ४२ उद्देशनकाल कथा अध्ययन कथा । एकक अवसरपिणी काले पडतेकाले पांचमी छठी दुःखमा

ति ॥ ४२ ॥ त्रिचत्वारिंशत्स्थानकोपिकिंचिसिष्यते कस्मिन्निवागज्जयणत्तिकर्मणः पुण्यपापात्मकस्य विपाकस्य फलं तत्रातिपादकाव्यध्ययनानि कर्मविपाकाध्ययनानि एतानि च एकादशांगद्वितीयांगयोः सभाभ्यतद्भति जंबूद्वीवस्सणभिल्यादिजंबूद्वीपपरीरस्थताद्गोस्तुभपर्वतो द्विचत्वारिंशद्योजनानां सहस्राणितद्विक्रमश्च सहस्रतद्विकाया द्वाविंशतरत्नत्वना विवक्षणा देव त्रिचत्वारिंशत्सहस्राणि भवन्तीति एव च उद्दिशति पिति उक्तदिगतर्भविन चतस्रो दिशउक्ता अन्यथा एवंति

वाससहस्साइं कालेणं प० एगमेगाए उसप्पिणीए पढमवीयाडु समाडु बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं प० ॥ ४२ ॥ तेयालीस कम्मविवागज्जयणा प० । पढमचउत्थपचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा प० जंबूद्वीवस्सणं द्वीवस्स पुरत्थिमिस्साडु चरमंताडु गोथुअस्सणं अ्यात्रासपहुयस्स पुरत्थिमिस्से चरमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अ्यबाहाए अ्यंतरे प० एवं चउद्दिशंसिपि दग्ग्राणे

दुखम दुखमा वेहुं मिलीनि ४२ हजार वर्ष प्रमाणे थाय एतले पांचमी आरी २१ हजार वर्षनी वेहुं मिली ४२ सहस्र प्रमाणे कळी एकेक उक्तर्षिणी काले चढतेकाले पहिली आरी अने दूजी आरी वेहुं मिली ४२ सहस्र वर्ष प्रमाणे कळी ॥ इति बैतालोसमी समवाय संपूथ ॥ ४२ ॥ हिवे तेतालीसमी समवाय लिखे ॥ तेयालीस कर्म मुख पाप रूप तेहना विपाक फलरूप तेहनां प्रतिपादक अध्ययन ते कर्म वि

पाक अध्ययन तेह सुगडांगना २३ अध्ययन अने दुख सुख विपाकना २० अध्ययन एवं ४३ अध्ययन कळी । पहिली ये ३० लाख चौथीये १० लाख पांच मीये ३ लाख एवं पहिली चौथी पांचमी नरक ष्ठीवी नां मिली तेयालीसलाख नरकावासा कळी । जंबूद्वीप नामा द्वीपनी जगतीना केहल्या प्रदेश

द्विसिपित्तिगायंस्यात् तत्र चैवमभिज्ञापाः जम्बूद्वीपस्य देवस्य दक्षिणाश्रीदश्रीभासस्येणं श्रावासपव्वयस्य दक्षिणक्षेत्रिमत एसिणं तेषालीसंजीयणसहस्रा
 रं श्रमज्ञाएप्रतरे पञ्चत्ते एयमन्यत्सू नह्यं नवरं पथिमायां संखी श्रावासपर्वत उत्तरस्यामुदकासीमद्रति ॥ ४३ ॥ चतुश्लारिंस्थानकोपिकिचिचिख्यते
 चतुश्लारिंयत् प्रसिमासियति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दिशालीसुयाभासियति देवलीकच्यतेः ऋषीभूतरामपितानि देवलीक
 च्युताभाषितामिणचिक्वाठः देवलीसुयाणं चीयालीसंद्रसिभासियज्जयणा पञ्चत्ता पुरिसजुगाद्रति पुष्यः शिथप्रशिथादिक्रमव्यवस्थिता युगानीयकालविशेषा

संखोदयसीमे महालियाएणं विमाणपविञ्चतीए तइयेवग्गे तेषालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥
 चीयालीसं च्युज्जयणा इसिन्नासिया दिशालीगञ्जुयात्रासिया प० विमलस्सणं च्चरहणं चउञ्जालीसंपुरि

थी माडोने गीसूभ नाम नागराजानां श्रावास पर्वतनी पूर्वनी चरिमांत छेहली प्रदेश ४२ हजार योजन प्रसाणे श्रावाधारे अंतर कक्षी एतले जगती य
 को ४२ हजार योजन गीसूभ पर्वतछे तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पण्छे एवं ४३ सहस्र योजन थया । एम चिहुदिगे दक्षिण जगतीथकी मांडो
 दक्षिण समुद्र मांदि दगभास २ पथिमे संख २ उत्तरदिगे दगसीम ४ थळी यिसान पथिभक्तिये नीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल प्रथयन विशेष कर्या ॥
 प्रति तेषालीसमी समयाय संपूर्ण ॥ ४३ ॥ दिवे चीयालीसमी लिख्छे । चीयालीस अथिभाषित अध्वयन कालिकश्रुत विशेषभूत तेषोहवाछे
 दे । लीक थी चथा जेह पछे ऋषिभूत कुआ तीणे प्राभाषित कर्या । विमलनाथ परिहृता चीयालीस पुरिसयुग शिथ प्रशिथादि क्रमे आवा काल विशे
 पनी परं अनुक्रमं सार्वर्मपणा थको पुरिसयुग कदिथे अनुच्छे सीधा निरंतर पणे ४२ पाट मीक्षे गया यावत् शब्दं करी सर्वदुःख थी प्रचीण थया । दक्षि

इव क्रमसाधर्म्यात्परशुगानि अणुपिठ्ति आनुपूर्व्यां अणुबधति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनुबंधेन सातत्वेनसिद्धानि जावंतिकारणेन बुधाद् मुचाद् सख्यदुग्ध
 पहीणाइतिदृश्य महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चतुर्थवर्गचतुश्चत्वारिंशद्देशनकालाःप्रत्रयाः ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशत्स्थानकेलिदंलिख्यतेसमयखेत्तेति
 कालीपलवितत्रेनं मनुथवेन्नमित्यर्थः सीमतएणति प्रथमष्टथिव्यांप्रथमप्रसूटे मध्यभागवतीवृत्तीनरकैः सीमतइति उद्धृदिमारोत्ति सीधमयानयोः प्रथमप्रसू

सजुगाइं ज्युणपिठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरगस्स णं नागिंदस्स नागरस्सो चोयालीसं ज्रवणावाससयस
 हरसा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवगगे चोयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४४ ॥
 समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहरसाइं ज्ञायामविक्कजेणं प० सीसंतएणं नरएणपणयालीसं जोयण
 सयसहरसाइं ज्ञायामविक्कजे णं प० एवउहुविमाणेवि ईसिपञ्जाराणं पुढवी एवंचेव धम्मणंजुरहा पणयालीसं

णदिशे धरणेद्र नागैद्र नागराजाना चौतालीस लाख भवनावास कक्षा । बडी विमान प्रवित्तिथे चउथे वर्गे चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष
 कक्षा ॥ इति चौतालीसमी समवाय सपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पेतालीसमी लिद्धे । पेतालीसलाख योजन प्रमाणे पहिली पृथिवीये पहिले पाथ
 डे मध्यभागवतीं नरकैद्र वाटलो सीमतो नरकावासी पेतालीस लाख योजन प्रमाणे लाबपणे पिहुलपणे कक्षो । एमज सीधर्म ईगाननां प्रथमप्रसूट विमान
 मांहि मध्यभागवतीं विमानैद्रवालो उहुनामा विमान पेतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कक्षो ईषयाभारा पृथिवी पेतालीसलाख योजन लांब

जगतामभ्यादि प्रह्वलमागणस्य जंभूनेपस्याभयतो ऽग्रीलुत्तरयोजनशते २५० ऽपनीति सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमंडलस्य विष्वाभोभयति तत्परिधिसी णिलवाणि
 ते जगतामभ्यादि प्रह्वलमागणस्य जंभूनेपस्याभयतो ऽग्रीलुत्तरयोजनशते २५० ऽपनीति सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमंडलस्य विष्वाभोभयति तत्परिधिसी णिलवाणि
 पत्रदयसरस्राणि एकीननयत्यविकानि २१५०८६ एतत्सूर्योमुर तर्नां० ष्णागच्छतोति पथ्याऽस्याभागाभिः सूर्यं तं गतिर्लीभ्यते साचपस्ययोजनसप्तस्रा णि द्वैचकापञ्चा
 पत्रदयसरस्राणि एकीननयत्यविकानि २१५०८६ एतत्सूर्योमुर तर्नां० ष्णागच्छतोति पथ्याऽस्याभागाभिः सूर्यं तं गतिर्लीभ्यते साचपस्ययोजनसप्तस्रा णि द्वैचकापञ्चा

गदत्तरीयोजनशते एतीनत्रियसप्तष्टिभागयोजनस्य ५२५१ । २६ यदाचाभ्यतरमण्वले सूर्यशरति तदाष्टादशमसूर्योर्त्तदिवसमामाणं तद्वर्षननवभिर्मुहूर्तैः सुरुत्त
 गतिर्गुण्यते ततश्चतयोक्तं चतुः सूर्यं प्रमाणमागच्छतीति प्रणिभापति वीरनाथस्य द्वितीयो गणधरस्यस्सचेष्ट साप्तत्वा रिगद्वर्षाखगारवासउताः प्रावश्यकोत्तण
 द्चत्वारिंशत् सप्तचत्वारिंशत्समयवर्षासासं पूर्णत्वादपिचचा प्रह्वलसंपूर्णस्यापि पूर्णविलेति सभावनयानपिरोधप्रति ॥ ४७ ॥ षष्टचत्वारिंशत्स्थानको
 तयाणं इहगयस्स मणसस्स सत्तचत्वालीरां जोयणराहस्योहि दोहियतेवठेहि जोयणराणहिं एक्षवीसाए
 यसाठिजागेहिं जोयणस्स सूरिणु चरुकुफासं हव्यमागच्छइ धरेणं ज्युगिज्जूई सत्तचत्वालीसंवासाइं ज्युगारमस्रैव
 सित्ता मुठेजवित्ता ज्युगाराउ ज्युगारासि ज्युगाराउ ज्युगाराउ ज्युगाराउ ज्युगाराउ ज्युगाराउ ज्युगाराउ ज्युगाराउ ज्युगाराउ ज्युगाराउ ज्युगाराउ ज्युगाराउ

सर्वाभ्यंतर मांडले प्राषाढी पूर्निसे जार्के सक्तोतिचे निषध पर्वतने जपरि ५५ मांडलाहे तेमांछिथी पहिले मांडले छपसप्तमीने भमणवारे तिवारि प्रहं भर
 तद्वेचगत मनुष्य ने सेतालोस हजार जेने तेसडि योजन शने १ योजनना ५० द्विया २१ भाग एतनो वेगलो थके दृष्टिगोचर प्राये । स्वधिर गडा वयपर्या
 यपुतेजरी प्रग्निभृति योजा गणधर सेतालीसवर्ष गृहस्थापथी यरीने द्रव्यभाव भेदे मुंड धईने गृहस्थापथी साधुपथी पास्या । प्रति सेतालीसमी समवाय
 संपर्ण ॥ ४७ ॥ हिंवे षठतालीसमी समवाय लिसेछे ॥ एकेका चिहुदिगिनां प्रंतना धणी चक्रवर्ति राजाने षठतालीस हजार पाटण जगा ।

किमपि लिख्यते । पट्टयंति विभिधदेशप्रख्यान्यागल्ययध्रपतति तल्पत्तननगरविशेषः पत्तनरत्नभूमिरिलाहुरेके धर्यास्सत्ति पंचदशमतीर्थंकरस्येहाष्टचत्वारिंशद्ग
 णागणधराद्येक्ता आवश्यक्तेतुत्रिचत्वारिंशत्यख्यते तदिदं मतांतरमिति सूरमंडलेति सूर्यविमान येषामागानामेकाषष्ठायाोजनंसवति तेषामष्टचत्वारिंशत् त्रयो
 दशनिस्त्रैर्यूनंयोजनमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ अथैकोनपचाशस्थानकोलियते । सत्तसत्तमियाणं सप्तसप्तमानिदिनानियस्यांसासत्त २ दिनानिमवति सप्तसु
 सप्तकेषु अतः सासप्तकेषु अतः सासप्तदिनसप्तकामयला देकोनपचाशतावादिर्नभवतीति पडिमति अभिग्रहः कृत्तलणभिक्षासएणति प्रथमेदिनसप्तकेपतिदि
 नमेकोतरयाभिचावृद्धा अष्टविशतिभिचाभवति एष इतराप्तस्वपियशब्दतिशियाशतस्ववति प्रथया प्रतिराप्तक मेकोचरयावृद्धायाद्योक्त भिचाकाजभवति तथा

वाहिरस्य अरुयालीसं पट्टणसहस्सा प० धर्यस्सणंअरहउ अरुयालीसंगणा अरुयालीसं गणहरा होत्या सूर
 संरुलेणं अरुयालीसं एकसठिअगी जोयणस्स विरकअणं प० ॥ ४८ ॥ सत्तसत्तमियाणं त्ति

धर्मनाथ अरिहत ने अठतालीस गच्छ अने अठतालीस गणधर हुआ । आवश्यके ४३ परिण लब्धाके तेमतांतरके । सूर्यने मंडल एक योजन ना एकसठि
 या ४८ भागप्रमाणे विष्कभरणे अने पिहुलपणे कही । एक योजनना एकसठ भाग करिये ते मांथी १३ भाग अछी सूर्य मंडलके ॥ इति अठतालीसमी
 समवाय सपर्ये ॥ ४८ ॥ हिवे एक्कनपचासमी लिखेछे ॥ सातदिन सात गुणाके जेहने विषे एहवी भिच्छुप्रतिमा साधुना अभिग्रह विशेष ते
 सप्तसप्तमिका भिच्छूनीप्रतिमा उगुणपंचास रात्रि दिवसे अहोरात्रिये पूरीयाय । एकसी कृन्नं १८६ भिचाये करी यथासूत्रोक्त विधिये सिद्धांतोक्तमार्गे आरा
 धी होय एतले पहिलेदिन १ बीजेदिन २ बीजेदिन ३ एम सातमेदिन ७ । एम बीजे सप्तके पहिले दिन २ बीजेदिन ४ बीजेदिन ६ एमसातमेदिन १४ । एम

रि प्रथमे सप्तके प्रतिदिनमेकैकभिन्नाग्रहणात् सप्तभिन्नाभवंति हीतियेष्टयो २ गुरुणाचतुर्दश एवं सप्तमे सप्तानां गुरुणा देकीनपंचाशदिल्लेखं सर्वमीलनेयथीत
 मानभागतीति षडसुतंति यथासूनपथागसंस्थङ्ग्यायेनष्ठाभवतीति शेषोदष्टव्यः सपत्राजीव्यणाभवंति नमातापितृपरिपालनासपेवंवद्रत्यर्थः षड्दत्ति
 प्रायुष्य ॥ ४६ ॥ तनपुरिसोत्तमति चतुर्थवासुदेवो जंतजिज्जिनकालभाषी तथाकंचपति उत्तरगुरुषु नीलवदादीनां पशानामानुष्वीव्यवस्थिता

रकुपन्निमाए एगुणपत्ताए राइदिएहिं छन्नऊयजिस्कासएणं झाराहिया जवह देवक्रुत्तरकरा
 सुण मणुया एगुणपत्तराइदिएहिं सपन्नजोइयाण उक्कोसेण एगुणपत्तराइदिया ठिइ
 प० ॥ ४९ ॥ मणिमुह्यस्सणं झरहने पंचासंझिज्जियाराहस्सीउ हीत्या झणंतेणं झरहा पन्ना

नीजे सप्तके पहिलेदिन ३ बीजेदिन ६ नीजेदिन ९ एम सातमेदिन २१। एम चौथे सप्तके पहिलेदिन ४ बीजेदिन ८ बीजेदिन १२ एम सातमेदिन २८। एम
 पाचमेसप्तके पहिलेदिन ५ बीजेदिन १० बीजेदिन १५ एम सातमेदिन ३५। एम छठे सप्तके पहिलेदिन ६ बीजेदिन १२ नीजेदिन १८ एम सातमे दिन ४२
 एम सातमे सप्तके पहिलेदिन ७ बीजेदिन १४ नीजेदिन २१ एम सातमेदिन ४६। एमसर्वमिली १६६ भिजाथरं। देवगुरु उत्तरगुरु ने विषे शुगलिया
 मनुष्य ४६ राति दिवसे ४६ प्रहोराचौर्ये संगारत यीवन होय एतले ४६ दिनलगे भाइत पालना करे पछे भाई बहिन धर्णी धणियापी यईने प्रवर्तें। तेइ
 दिव्य जीवने लक्षुडी ४६ रात्रि दिवसने आडखी कथी। इति ४६ समवाय संपूर्ण ॥ ४६ ॥ हिवे ५० मी समवाय तिखेइ। सुनिसुगत बीस

नामहाङ्गदानपूर्वापरपार्श्वीः प्रत्येकदशकांचनपर्वताभवति तेचसर्वशतं एवदेवकुरसुनिषधदीनां महाङ्गदानां पार्श्वतः शतश्रवति सर्वएतेजवृद्धीति
 शतमानाभवति तेयोजनशतीच्छ्रिताः शतमूलविक्षभा स्नामकदेवनिवाससूतभवनालकतशिखरतलाः ॥ ५० ॥ अथैकपचास्यस्नानं । तत्र

सं धण्डू उहं उच्चतेणं होत्या पुरिसुप्तमेणं वासुदेवे पन्नासं धण्डू उहउच्चतेणं होत्या सध्वविणं दीहवेयद्वा
 मूलेपन्नासं २ जोयणाणि विस्कन्नेण प० लंतएकूप्ये पन्नासं विमाणावाससहसा प० सद्वालेणं तिमिरस
 गुहा खरुगप्यवाले गुहाले पन्नासं २ जोयणाइं ज्ञायामेणं प० सध्वविणं कंचणगपद्वाया सिहरतले पन्नासं २

मा अरिहतने पचास आर्यानी साञ्जीनी संपदाना सहस्र शया । अनंतनाथ तेरमा अरिहत पंचास धनुष जंचा जंचपणे थया । अनंतनाथने वारे पुरषीत्त
 म नामा चौथी वासुदेव पचास धनुष जंचो जंचपणे हुयो । सगलाइ दीर्घ वैताब्ज ३४ जवृद्धीपना ईद धातकीखडना ईद पुष्कराईना एवं १७० दीर्घ वैताब्ज
 मूलने विषे पचास पचास योजन विष्कभपणे पिहुलपणे क्वा । लातक छे देवलीके पंचास सहस्र विमानावास क्वा । सगला जवृद्धीप ने विषे ३४ दीर्घ
 वैताब्ज पर्वत छे एकेक वैताब्जि वेवे गुफा छे तेमाहि तिमिश्यागुफा पैसारानी खडप्रपात गुफा नौसारानी एविहुं गुफा पचास योजन आयामपणे
 कही । उत्तर कुरने विषे नीलवंतादिक पांच द्रहअनुक्रमे रह्वाछे ते एकेक ऋदने पूर्व पश्चिमने पासे प्रत्येके प्रत्येके दश दश काचन पर्वतछे तेसर्बमिली एम
 ज देव कुरने विषे १०० सर्बमिली २०० कांचनगिरि हुत्रा । ते सगला काचनगिरि शिखर तलने विषे पचास योजन पिहुलपणे क्वा एकसी योजन ज

वभचैराणिति आचाराः प्रथमं शुतलक्ष्याध्ययनानां शस्त्रपरिज्ञादीनां तत्र प्रथमे सत्योद्देशिका इति सत्योद्देशनकावा एवं द्वितीयादिषु क्रमेण षट् चलारः चलारः एवं पंच अष्टौ चलारः षट् सप्तमेक पञ्चाशदिति सुप्यहेत्ति चतुर्थोवलदेव अनंतजिज्जिननाथकालभावी तस्यैकपचाशद्वर्षलक्षायायुः पुनरक्तमावश्यकेतु पचपचाशदुच्यते तद्विदमांतरमिति एकावन्नउत्तरपगढीओत्ति दर्शनावरणस्यनव नाकोद्विचलारिशद्लिकपचाशदिति ॥ ५१ ॥ अथद्विपचाश

जोयगाइं विस्कंनेणं प० ॥ ५० ॥ नवरहंवंजचैराणं एकावन्तं उद्देशणकाला प० चमरस्सणं
 अ्सुरिदस्स अ्सुररन्तो सन्नासुधम्मा एकावन्तखंजसयसंनिविठा प० एवंचेवबलिससवि सुप्यन्नेणं बलेदेवे
 एकावन्तं वाससयसहस्साइं परमाउ पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसह्दुस्सकप्यहीणे दंसणावरणनामाणं दोरहंक

चाच्छे । इति ५० समवाय सपूर्णं ॥ ५० ॥ द्विवे ५१ नो समवाय लिखे । आचारंगे प्रथमश्रुतस्त्वधे नव वल्लचर्याध्ययन शस्त्रपरिज्ञादिक ते
 हना ५१ उद्देशानाकाल कथा । प्रथमाध्यमे ७ उद्देशा द्वितीयाध्ययने ६ तृतीये ४ चतुर्थे ४ पचमे ५ षष्ठे ८ सप्तमे ६ अष्टमे ९ नवमे ७ सर्वमिती ५१
 उद्देशनकाला कथा । वीजो विचार २५ ठाणे जाणिवी सही । चमरेद्र असुरराजने सुधर्मासभा एकावतन से स्सभिकरी संनिविष्ट सहित कही । वल्लेद्र अ
 सुरेद्रनी असुरराजानी सभा सुधर्मा ५१ सेस्सभिकरी सन्निविष्ट कही । अनतनाथने वारे सुप्रभनामा चीथा बलदेव ५१ लाख वर्षनो उल्लूष्ट आउखी पालीनी
 सिद्धबुडथयी सर्वदुःखथको प्रचीणथयी मोचगयो । आवश्यके ५० लाखवर्षकाला तेमतांतर । वीजिकर्म दर्शनावरणेय तेहनी उत्तरप्रकृति ८ छठोनामकर्म तेहनी

स्थानक ॥ तत्र मोहिणिज्जस्रकस्सत्ति । इह मोहनीयकर्मणोऽवयवेषु चतुर्भुक्तोधादिकषायेषु मोहनीयमपचर्यावयवसमुदायोपचारन्यायेन मोहनीयस्यलुक्तं तथा पिकषायसमुदायापि जया द्विपचायन्नामधेयानि नपुनरेकैकस्यकषायमात्रस्यैवेति तत्रक्रोधइत्यादीनि दशनामानि क्रोधकषायस्य चडिकेत्ति चाडिकं तथा मानादीन्येकादय मानकषायस्य त्रनुक्तेसिति आत्मोक्तैः उक्तैः उन्नत उन्नामिति उन्नामः तथा मायादीनि सप्तदश मायाकषायस्य एतेति

स्माण एकावन्नं उत्तरकम्मपगळीउ प० ॥ ५१ ॥ मोहिणिज्जस्सणं कम्मस्स वावन्नंनमधे
ज्जा प० तं० कोहे कोवे रोसे दोसे झ्यसमा संजलने कलहे चरुक्को चंरुणे विवाए । माणे मदे दप्पे वंने
अणुक्कोसे गहे परपरिवाए उक्कोसे अणुक्कोसे उन्नए उन्नामे । माया उवही नियली बलए गहणे णूमे कक्को
कुरए दंने कूरे ज्जिमे किह्तिसे अणायरणया गूहणया बंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे । लोने इच्छा मुच्छा

उत्तरप्रकृति ४२ विहुकर्मनी ५१ उत्तरप्रकृतिकही । इति ५१ समवायथयो ॥ ५१ ॥ हिवे ५२ समवाय लिखि । मोहनीयचौथीकर्म तेहगा ५२
नामधेयकथा । मोहनीयकर्मसाहि ४ कषाय अतसाच्छे तेमाटे कोधकषायना १० नारुक्कता तिकहेदु । क्रोध १ कोय २ रीष ३ द्वेप ४ अद्वभा ५ सज्जरान ६
कलह ७ चाडिक्य ८ भंडण ९ विवाद १० । मानाश्रित ११ नाम मान १ मद २ दर्प ३ धम ४ आत्मोक्तैः ५ गर्व ६ परपरिवाद ७ उक्तैः ८ अपकर्ष ९
उत्त १० उवास ११ ॥ मायाश्रितनाम १७ माया १ उपधि २ निकृति ३ वलय ४ गहन ५ नूसनीची ६ कल्क ७ कुक्क ८ दम ९ ब्रूड १० जिह्न ११ किल्वि
धिक १२ आत्मरणता १३ गूहनता १४ बचनता १५ परिकुंचनता १६ सातियोग १७ । लोभाश्रितनाम १४ । लोभ १ इच्छा २ मूर्च्छा ३ कांचा ४ रट्ठि ५

जीयामहाहिमवशी ऋडकलाकृकलाश्रीति ॥ १ ॥ सवच्छरपरियागति संवच्छरमेकं यावत् पर्यायः प्रप्रज्यालक्षणी येषां ते संवच्छरपर्यायाः महद्महाबलसु
महाभिर्माणसुति महातिव तानि निस्त्रीणीमिच अतिमहालया द्यालतमुत्सवाश्रयभूतानि महातिमहालया सेषु महातिवतानिग्राह्यानि विमानानिचेति प्राप्य
विग्रहः एतेवाप्रतीता अनुत्तरोपमाविकागितु ये धीयते तत्र धयन्निशत् बहुवर्षपर्यायां चोति ॥ ५३ ॥ चतुःपचाशस्थानके लिख्यते । पार्श्वणत्तति प्राप्य

जीयामहाहिमवशी ऋडकलाकृकलाश्रीति ॥ १ ॥ सवच्छरपरियागति संवच्छरमेकं यावत् पर्यायः प्रप्रज्यालक्षणी येषां ते संवच्छरपर्यायाः महद्महाबलसु
महाभिर्माणसुति महातिव तानि निस्त्रीणीमिच अतिमहालया द्यालतमुत्सवाश्रयभूतानि महातिमहालया सेषु महातिवतानिग्राह्यानि विमानानिचेति प्राप्य
विग्रहः एतेवाप्रतीता अनुत्तरोपमाविकागितु ये धीयते तत्र धयन्निशत् बहुवर्षपर्यायां चोति ॥ ५३ ॥ चतुःपचाशस्थानके लिख्यते । पार्श्वणत्तति प्राप्य

जीवान् जीवान् तेवन्नं २ जीयणसहस्साइं साइरेगाइं श्यायामेणं प० महाहिमवंतरुष्पीणं वासहरपछ्याणं
जीवान् तेवन्नं जीयणसहस्साइं नवयगुगतीसे जीयणसु लङ्गणुणवीसइजाए जीयणसु श्यायामेणं प०
समणस्सणं ऋगवडमहावीरस्स तेवन्न श्यणगारासवच्छरपरियाया तेवन्नंवाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥

बिमाणेसु देवत्ताए उववन्ना समुच्छिमउरपरिसप्याणं उच्छोसिणं तेवन्नंवाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥
जीवा प्रत्यारूपे नैपननैपन योजन सहस्रु भ्राभेरी लांब पणे कही । महाहिमवत बीजी वर्षधर एह विहु वर्षधरनी जीवा प्रत्यंवा नैपन २ सहस्रु योजन
प्रमाणे उपरि नवसे एकत्रीस योजन एक योजन नाउगुण सहाइ ककला । ५३६३१ योजन १६ । ६ कला श्यायामे लात्र पणे कक्षा । अमण भगवंतमहावीर
ना ५३ ऋणगारयती सवच्छर पर्याया एकपर्वनी पर्याय दीन्ना जेहने एहवा ५३ हुया । पछे सथारीकरी प्रनुत्तर विजयादिक ऋतिमीटी घणी बिस्वीरे
महाविमान तेहने विषे देवता पणे उपना । समुच्छिम उरपर सर्पनी उलट्टी नैपन वर्ष सहस्रुनी ऋउली कक्षी ॥ इति ५३ मी समवाय पूर्ण थयी ॥ ५३

एगचिसेज्जाएति एकेनासनपरिग्रहेण वागरणाइति व्याक्रियते अभिधीयते इति व्याकरणानि प्रथे सति निर्वचनतापादमानाः पदार्थाः वागारिच्छति
 व्याकृतवांसानि चा प्रतीतानि अनंतनाथस्य ह चतुःपचायद्वया गणधरा शीक्ता. आवयक्तेतु पचागदुक्ता स्तदिद मतातरमिति ॥ ५४ ॥ पंचपंचायत्

अरहेरवणुपुणं वासेसु एगमेगाएउसप्यिणीए नुसप्यिणीए चउवन्न २ उत्तमपुरिसा उष्यज्जिसुवा ३ तं० चउवीसं
 तित्यकराबारसचक्कावही नवबलेदेवा नववासुदेवा अरहोण अरिठनेमी चउवन्नराइंदियाइं छउमत्थपरिया
 यपाउणिहा जिणेजाए केवली सव्वन्नु सव्वदरिसी समणेअगवं महावीरं एगदिबसेणं एगनिसिजाए चउप्यन्ना
 इं वागरणाइं वागरिस्या अणंतस्सणं अरहणं चउपन्नं गणहरा होल्या ॥ ५४ ॥ मन्निस्सणंअरह

दिवे ५४ मी समवाय लिखिछे । भरत ऐरवत जेवने विषे एककीयं अक्सपिणीयं एककीयं उत्सापिणीये चौपन २ उत्तम पुण्य उपना उपजे छे । उपजस्ये
 ते कहिछे । २४ तीर्थकर । १२ चक्रवर्ती । ६ बलदेव । ६ वासुदेव । सर्वभिलो ५४ यथा । अरिहत अरिष्टनेमी ५४ रात्रि दिवस लगे छद्मस्य पर्याय पाली
 ने जिन हुया केवली । सर्व जाणे ते सर्वत्र सर्वसकल ससारना भाग पदार्थ देखे ते सर्वदर्शी हुया । अमण भगवत श्रीमहावीर एके दिवसे एक निवद्या
 ये एके आसणे कैठे ५४ । व्याकरण प्रश्न प्रति व्याकृतवत कहता हुया । अनतनाथ अरिहतने ५४ गणधर हुया । इति चौपनमी समवाय यथी ॥

५४ ॥ दिवे ५५ मीसमवाय लिखिछे । मन्निनाग अरिहत पचावन वर्षसहरानगे उत्कथी आउखीपालीने भिदयथा बुदयथा यावत् शब्दे सर्वदुःख यकी

स्नानकेलिदं सिद्ध्यति। मंदरस्ये त्यादि इह मेरोः पश्चिमांतात् पूर्वस्य जम्बूद्वीपद्वारस्य पश्चिमांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि योजनानां भवतीत्युक्तं तत्र किल मेरो
 विंशत्यस्यमागात् पंचाशत्सहस्राणि द्वीपांती भवति लक्षप्रमाणत्वा द्वीपस्य मेरुविंशत्यस्य च दशसाहस्रिकत्वा द्वीपात् पचसहस्रत्रिंशत् पञ्चपंचाशदेव भव
 तीति इह च यद्यपि विजयहारस्य पश्चिमांत इत्युक्तं तथापि जगत्याः पूर्वान्त इति किल सम्भाव्यते मेरुमध्यात् पञ्चाशती योजनसहस्राणां जगत्यां ह्यन्ते पूर्य
 माणत्वात् जम्बूद्वीपजगतीविंशत्येन च सह जम्बूद्वीपलक्षप्रमाणीय लवणसमुद्र जगतीविंशत्येन च लक्षद्वय मव्यथा द्वीपसमुद्रमाना जगतीमाने पृथग्भरणे
 मनुष्यत्रैत्रपरिधिरतिरिक्तासात् साहि पचचत्वारिंशत्प्रमाणत्रैत्रापिच्छया भिधीयते तत शैव मतिरिक्ता सादिति अथचेह किंचिद्दूनापि पंचपचाशत्

उपपणपन्नंत्रारासहस्साइं परमाउ पालइत्ता सिधेबुधे जावप्यहीणे मंदरस्सणं पहुयस्स पच्चत्थिमिह्लाउ चरमंत्ता
 उ विजयदारस्स पच्चत्थिमिह्ले चरमंते एस्सणं पणपन्त जौयणसहस्साइं इब्ब्राहाए इंतरे प० एवंचउदिसिपि वि
 जयवेजयंतजयंतइपराजियति ससणेजगवंमहाबीरे इत्तिमराइयंसि पणपन्त इज्जयणाइ कल्लाणफलयनिवा

प्रचीण रहित थया । मेरू पर्वतना पश्चिमना चरिमांत थकी छेहन्ग्य प्रदेश थकी जम्बूद्वीपनी पूर्वनीद्वार विजयनाम तेहनी पश्चिमनी चरिमांत छेहलो प्रदे
 शएह ५५ योजन सहस्र आवाधा भिचालि आंतरी काली । मेरुथकी विजय दरवाजा ४५ सहस्र योजने हीय ते माहि दश सहस्रनी मेरुवालिये एतले सर्वमि
 ली ५५ सहस्र योजन थया । इहा यद्यपि विजय द्वारनी पश्चिमांत शहोक्खि परजगतीनी पूर्वांत लीजे ती पूरा५५ सहस्र योजन थया । एमज चिहुदिसे मे
 रू पर्वतमाहि घालता मेरुथकी दक्षिणदिसे वैजयत द्वारनी पश्चिमे जयंतनी उत्तरे अपराजितनी आंतरो जाण्णिकी । अमश भगवत महाबीर छेहलीरा

पूर्णतया विविचिंतति अतिमरायंसिद्धिं सर्वायुः कालपर्ययसानरात्री रात्रेरतिमि भागे पापायां मध्यमायां नगरीं हस्तिपालस्य राज्ञःकरणसभायां कार्त्तिक
 कामासामावास्यायां स्नातिनक्षत्रेण चन्द्रमसा युक्तेन नागकरणे प्रलूषसि पर्यकासनेनपशुः पंचपचाशदध्ययनानि कक्षाणफलविवागाइति कल्याणस्य पुस्य
 स्य कर्मणः फलं कार्यं विपाचते व्यक्तौ क्रियन्ते ये स्नानि कल्याणफलविपाकानि एवं पापफलविपाकानि व्याघ्रात् प्रतिपाद्य सिद्धीबुधः शवलकरणात् मुत्ते
 अतकडे परिनिब्बुडे सब्दुकुलप्यहीणेति दृश्यं पढमेत्यादि प्रथमायां त्रिग्रनरकलक्षाणि द्वितीयायां पंचविंशति रिति पचपंचाशत् दंसेत्यादि दर्शनावररी

गाइं पणपन्नं अज्जयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे पढमविइयासु दोसु पुढवीसु
 पणपन्न निरयावाससयसहस्सा प० दंसणावरणिज्जानामाउयाणं तिण्हं कम्मपगळीणं पणपन्न उत्तरपग
 ळीउ प० ॥ ५५ ॥ जंबूद्वीवेणद्वीवे त्ठप्पन्नं नरकताचंदेण सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ विमलस्सणं

त्रिये कार्तिकवदी अमावसनी रात्रिये पालठीवाली बैठेथके ५५ अध्ययन पावानगरीभि हस्तिपाल राजानी दानसभाये कल्याण शुभकर्मनीफल कार्यं विपा
 बीये प्रगटकरीये जेणे अध्ययने तेकल्याण फल विपाक कर्हीये सुबाहु कुमार प्रसुख ५५ अध्ययन जागिवा । पाप फल विपाक स्यादुत्तादिकना कक्षा सिद्धा
 तनेविषे सिद्ध थया बुद्धया वलीयावत्शब्दे सर्वदुःख थकी पचीणयया । पडिलीये ३० लाख नरकावासाकक्षा बीर्जथि २१ लाख त्रिहुं नरक पृथिवीना
 भिली ५५ लाख नरकावासा कक्षा । दर्शनावरणीय प्रकृति ८ नाम कर्मनी ४२ आउखानी ४ एमचीहु कर्मनी ५५ उत्तर प्रकृति कही । इति ५५ मो समवा
 यथयी ॥ ५५ ॥ हिवे ५६ मीसमवाय लिखेके । जंबूद्वीप द्वीपने विषे ५६ नचत्र चंद्रमा साथे योग सबध योजना करता हुया संबध करेके संबध

यस्य नव प्रकृतयो नाम्नी द्विचत्वारिंशत् आयुषश्चतस्र इत्यं पंचपंचाशदिति ॥ ५५ ॥ अथ षट्पंचाशत्स्थानके लिख्यते । जंबूहीविलादि तत्र

चन्द्रद्वयस्य प्रत्येकमष्टाविंशति भौवात् षट्पंचाशत्तत्राणि भवन्ति विमलखेह षट्पंचाशद्गुणा गणधरा दीप्ता. आवल्लके तु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिदं सतातर मिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते । गणपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिठकानि सर्वस्वभाजनानीति

गणपिठकानि तेषां आचारस्य श्रुतस्त्वन्वद्वयरूपस्य प्रथमांगस्य चूलिका सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यभिधानं माचारचूलिका तद्वर्जानां तत्राचारे प्रथमश्रुतस्त्वन्वद्वय मिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते । गणपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिठकानि सर्वस्वभाजनानीति

नवाध्ययनानि द्वितीयेषोडश नियोगाध्ययनस्य प्रस्थानांतरले नेहानाश्रयणात् षोडशाना मध्ये एकस्या चारचूलिकेति परिहृतत्वात् शेषाणां पंचदश सूत्रकृते

अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते । गणपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिठकानि सर्वस्वभाजनानीति

अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते । गणपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिठकानि सर्वस्वभाजनानीति

अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते । गणपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिठकानि सर्वस्वभाजनानीति

अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते । गणपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिठकानि सर्वस्वभाजनानीति

द्वितीयानीं प्रथमश्रुतस्त्वन्वेषीड्यद्वितीयेसप्त स्थानांगे द्वायैत्यव सप्तपंचागदिति गीगुभीत्यादी भाग्यार्थेषु द्विचत्वारिंशत् महस्त्राणि वेदिका गोलुभपर्वतयो रंतरं सहस्र गोलुभस्य विद्वम्भः द्विपचागद्रीगुभवडवामुख्यी रंतरं द्वायैत्यवसमानत्वा षडवामुगुविजम्भस्य तदानीं पचेति ततां द्विपचागतः पचाना च मीलने सप्त पचागदिति जीवाणधणुमिष्ठिति मण्डल खण्डाकारं तेन इह सूत्रे मन्मादगायाः सत्तात्रमहत्ता धणुमिष्ठेण्ड्यदुमयदमकालन्ति ॥ ५७ ॥

चरमंताडु वलयामुहस्स महापायालस्स वज्जमज्जेइसत्ताए एसणं सत्तावन्नं जोयणसहस्साडं अवाहाए अंतरे प० एवं दगन्नासस्स केउस्सय संखस्स य जूयस्सय दयसीमस्स इंसरस्सय मत्तिस्सणं अरहउ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्या महाहिमवंतरूपीणवासरपवृयाणं धणुपिठं सत्तावन्नं २ जोयणसहस्साडं

साहि पूर्वदिगे गोस्तुभनामा वेलधर नगराजानी आवासपर्वत तेरना पूर्गना चरिमातत्रकी छेहया प्रदेशयकी उडवापुख सदाणताल कलयती बहुमध्य देगभाग एहने ५७ योजन सहस्र आवाशये विचाने आंतरो कयो एतने गोस्तुभ पर्वतत्रकी गुड पर्व ५३ महस्स योजने वडामुख पाताल कलगच्छे श्रने ते वडवामुख १० सहस्र पिह्लो तेहनी मध्यभाग ५ सहस्रनी ५२ पत्तस भेगा जगता ५७ महस्स योजन थया । एम दणिगे दगभाम पर्वतना पूर्वना छेहला प्रदेशयकी माडी केतुक पाताल कलयनी मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। एमत्र पणि गयनामा वेलधयती माडी वृपजनामा पाताल कलगनी मध्यभाग ५७ सहस्र योजने । उत्तरे दगसीम वेलधर यकी इंगरनाम पाताल कलगनी मध्यभाग ५७ सहस्र योजने ५७ मन पर्यवज्जानी ५७०० थया । जम्बूदीप लजण मण्डलचेत्र तेमांही हिमवत बीजा वर्षधर रूपी पांचमी एहवीच वर्षधर पर्वतनी धणुगुटि ५७ योजन सहस्र वली विसय श्रने चाणी

॥
 ष्टित्तरमासी भवति द्वाभ्यां चताभ्यामृतुर्भवति तत एकोनषष्टिअज्ञीरात्राण्यसौभवति यस्नेहद्विषष्टि भागहयमधिकं तत्रविवक्षितं । सम्भवत्येकोनषष्टिः पूर्वं
 लघ्वाणि गृहस्थपर्याय इहेतः। आवश्यकीतु चतुःपूर्वांगाधिकसौकीति ॥ ५६ ॥ अथषष्टिस्थानकं तत्र एगमेगियादि चतुरथीलधिकयतसंख्या

राइदियाइ राइदियगेणं प० संचवेणं अरहा एगुणसठिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्जे वसित्ता मुंठे जाव
 पव्वइए मक्षिस्सणं अरहउ एगुणसठिं उहिनाणिराया होत्या ॥ ५९ ॥ एगमेगेणं मंऊले
 सूरिए सठिए सठिए मुज्जतेहि सघाइए लवणस्सणं समुद्धस्स सठिनागसाहस्सोउ अगुणोदयं धारंति विम

मासे ऋतु होय । अने एकेक मासे तीसतीस दिहाडा जोइये ती विहु मासना ६० दिन जोइये ती ५६ किम कथा । कृष्ण पखनी पखवाडा थी मांडी
 पनिमे मास पूरी शाय एके मासे दिन २६ अने एक दिनना वासठिया बतीस भाग होय एह २६ दिन बेगुणा करीये तिवारे ६४ भागनी १ दिन वे भाग
 शाय ते पाऊला ५२ दिन माहि वाबिंये एतले ५६ दिननी ऋतु हीय उपरि २ भाग उगस्या ते अल्पमाटेन लेख्ख्या जाणिवा । संभवनाथ अरिहत चीजा
 उगुणसठी पूर्व लाख लगे गृहस्थात्रम माहि बसेनी मुड इव्य भावमेदे होय आगाराप्री अणगारियं गृहस्थात्रम थकी अणगारितायती पणुंपास्या । अ
 वैश्यकी चार पूर्वीग लगे गृहस्थात्रम कहाी छे । मक्षिनाथ अरिहतेन उगणसठिसे अवधि जानी थया ॥ इति ५६ समवाय थयो ॥ ५६ ॥ हिवे
 ६० मीसमवाय लिखिछे । सूर्यना १८० मांडला छे एकेन मांडले सूर्य साठ साठ सुहसे बेअहीराधियेजगे । लवण समुद्रनी पगोदक शिखानी पाणी साठ
 हजार नागदेवता धरे छे एतले सोले हजार योजन जंची पाणीनी वेल तेजपर २ कौस पाणीघटे बधे ते अगोदक सीसा कहिए । विमलनाथ अरिहत

नां सूर्यमंडलानामैकैकं मंडलं तथाविधवारसूभिः सूर्यः षष्ठ्यापथ्यासुहृत्तैर्द्वीप्यां द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामित्यर्थः संघातयति निष्पादयति अयमत्रभावायः एका
 स्मिन् द्वियत्रस्थानि उदितः सूर्यः तत्रस्थाने पुनर्द्वीप्यामहोरात्राभ्यामुदेतीति अगोदयति षोडशसहस्रो द्विताया वेलायायदुपरिगव्यतद्वयमानं द्विविहानिस्वभा
 वतदशोदकमग्निसति श्रीदोद्यस्य असुक्नुमार गिन्नायराजस्य भवनं भस्वसति ब्रह्मलोकाभिधान पंचमदेवलोकेद्रस्य सङ्घित्त सौधभवात्रिशदीशानिवाढा
 वयतिप्रिमान लचाणोतिक्त्वा षडिस्तानिभवन्तीति ॥ ६० ॥ अथैकपण्डित्यानकांतत्रयचेत्यादि पंचभिः सव्यत्तरैर्निवृत्तमिति पदस्थावत्कुरिक तस्यणमि
 त्यलङ्कारै युगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासिन चंद्रादिमासिन मीयमानस्य एकषष्ठिः ऋतुमासाः प्रच्यताः इहचाय भावार्थः युगहि पंचसंवत्तरानिष्पादयन्ति

लेणं च्युरहा सठिंधणइं उहुं उच्चतेणं होल्या बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स सठिं सामाणियसाहस्सीउं प०
 बंअस्स ण देविंदस्स देवरत्तो सठिं सामाणियसाहस्सीउं प० सोहम्मीसाणेसु दोसुकप्पेसु सठिं विमाणा
 वाससयसहस्सा प० ॥ ६० ॥ पंचसंवच्छुरियस्सणं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इग

साठ धनुष जंचा जंचयणे हुया । वल्लेद वैरोचनेद्रे उत्तर अत्तर कुमारना राजाने साठ हजार सामानिक देवता आप समान देवता कह्या । ब्रह्मनामा ५
 मां देवेद्रे देवराजा ने साठहजार सामानिक देवता कह्या । सौधर्म देवलोकि ३२ लाख विमान ईशाने २८ लाख विमान बहु देवलोकनां मिली साठलाख
 विमानवास कह्या ॥ इति ६० समवाय संपूर्ण ॥ ६० ॥ हिवे ६१ मी लिखेके । चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्धित ५ एम पांच
 वर्षनी १ युगथाय ते ऋतुमासे करी मीयमानके चंद्रमासनीमान २८ अहीरात्रि अने १ अहीरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपचनी पडिवा थी पौर्ये

तथया चंद्रशुद्धीभिर्वर्षित्तराशौ भवति तत्र एकोनत्रिंशद्दहोरात्राणि द्वात्रिंशच्चद्विषष्टिभागा अहोरात्रस्थलेवं प्रमाणेन २८ । ३२ । ६२ । क्षणप्रतिपदामा
 रस्य पीर्णमासो निष्ठितेन चन्द्रमासेन षट्शमासपरिमाणेन सप्तस्य च प्रमाणाभिदम् त्रीणिशताव्यक्तां चतुः पञ्चाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्टिभागा
 दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ तथा एकात्रिंशदह्नां एकात्रिंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं
 १२४ चमासेन षट्शमासप्रमाणोऽभिर्वर्षित्तराशौ भवति सच प्रमाणेन त्रीणिशताव्यक्तां चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं चतुर्विंशत्पुत्रं
 ६२ तदेव यथा चन्द्रसंवलराशां द्वयोराभिर्वर्षित्तसंवलराशौ रेकीवारीजातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासच
 त्रिंशताहोरात्रं भवतीति त्रिंशताभागहारिलया एकघष्टिः ऋतुमासा इति । मंदरस्तेत्यादि इह मेरुनवनवतियोजनसहस्रप्रमाणी द्विधा विभक्तास्त्रायमीभागा

सठिं उजमासा प० मंदरस्सणं पट्टयस्स पठमेकंठे एणसठिजोथणसहस्साइं उहुं उच्चत्तेणं प० चंदमंऊले

मासीये पूरो थाय एहमास मान १२ गुणोकीजे तिवारे वर्षनीमान ३५४ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठिया थाय तेहने त्रिगुणो कीजे
 तिवारे १०६२ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां ६२ ठिया ३६ भाग थाय एम अभिवर्षित मासनीमान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां १२४ भागहाइय
 १२१ भाग प्रमाणे थाय तेहने १२ गुणो कीजे तिवारे अभिवर्षित वर्षनीमान ३८३ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ४४ भाग ६२ ठिया तेहने त्रिगुणोकीजे ७६७
 सातसे सडसठ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थाय तेहने पहिले ३ चंद्र वर्षका मानमाहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रि थाय ऋतु
 मासनी मान ३० अहोरात्रि तेमाटे १८३० ने ३० भागे हरियेती १ युगनिर्विषे ६१ ऋतुमास थाय । मेरुपर्वतनी पहिलोकांड ६१ हजार योजन जंचपा

एकषष्ठिः सहस्राण्युक्तः द्वितीयस्तु अष्टत्रिंशत्स्थानके षष्ठत्रिंशदिति प्रोक्तः क्षेत्रसमासे तु कन्देन सहस्रलक्षप्रमाणस्त्रिधा विभक्तं सूत्रं प्रथमकाण्डं सहस्रं द्वितीयत्रिंश-
 ष्ठी स्तृतीयषष्ट्युच्यते । चन्द्रमण्डले चन्द्रविमानणमित्यलक्ष्मणौ एगसद्विंशति योजनस्यैकषष्ठीभगिन षट्पचाशद्भागप्रमाणैर्विभाजितविभागैर्बुधवस्थापिते
 समांशसमविभागं प्रथमतः विषमांशं योजनस्यैकषष्ठी भागानां षट्पचाशद्भागप्रमाणत्वा तस्यचभागभागस्या विद्यमानत्वादिति । एवंसूर्यस्यापिमण्डलवाच्यम्
 षट्पचत्वारिंशदेकषष्ठीभागमात्रम् हितत्रचापरमंशांतरं तस्याप्यस्तीति समांशतेति ॥ ६१ ॥ अथद्विषष्ठीस्थानकपचत्वादि तत्रयुगेत्रयचंद्रसंबन्ध
 रामवन्ति तेषुषट्त्रिंशत् पौर्णमास्योभवल्लि द्वौचाभिषेधित संबन्धस्यैव तत्रचाभिव च्चित्संबन्धर स्त्रयोदशभिधंचंद्रमासैर्भवतीति तयोः षड्विंशतिः पौर्ण

एगसद्विंशतिं विभागविभाद्गु समसे प० एवंसूरससवि ॥ ६१ ॥ पंचसंवच्छरिगु णं जुगे आवाठिं
 पुन्निमानं बावाठिं च्युमावसानं प० वासुपुजसस णं च्युरहते वासठिं गणा वासठिं गणहरा होत्या सुक्ष्मपक्षक

कक्षी । मेरु पर्वत ८८ हजार योजन ऊचेच्छे तेहना वेपग कीजितेहगा पहिली भाग ६१ हजार योजन नी बीजी ३८ हजार योजनोकाही चिनसमासभितो
 वादसहित मेरु येकलाख योजन प्रमाणे छे तेहना तीनभागकीधाच्छे पहिली १ हजार योजननी बीजी ६३ हजार योजननी बीजी ३६ हजार योजननी
 चंद्रमानी मडल चंद्र विमान १ योजनना ६१ हाइया पू६ क्षणभाग प्रमाणे व्यवस्थापितच्छे तेमटे समांस समभाग कक्षीछे । चंद्रमाना मंडलमांहीयो पू
 विषमांस नीकल्या तीरह्या पू६ समांसणी परे सूर्यमंडल मांथी १३ विषमांस नीकल्या रह्या ४८ समांस ॥ ६१ ॥ मोसमवाय सपूर्ण ॥ ६१ ॥ हिवे ६२ मो
 लिखिच्छे । पांच संबन्धरनी युगहीय तेमांही ६२ पूनिम अने ६२ असावास्या कही १ युगमाहि ३ चंद्रवर्ष हीय तेमांही मास ३६ वारैत्रिक ३६ पूर्णिमाअने ३६

बावह्निं २ इत्यत्र द्विशष्टि २ भागानां दिवसे २ च प्रत्यहः मिल्यर्थः शुक्लपक्षस्य सम्बन्धिनि यत् परिवर्द्धते चन्द्र अतुरंशाधिकान् द्विषष्टिभागान् अययन्ति तदे-
 व कालेन तदेवाह पत्ररसइत्यादिना चद्रविमानं द्विषष्टिभागान् क्लियते ततः पञ्चदशभिर्भागो ऽप्यङ्गियते तत इत्वारी भागाः समधिका द्विषष्टिभागानां
 पचदशभागेन लभ्यन्ते अत उच्यते पचदशभागेन चीत्तलचणीन चद्रफ्रिक्त्वा पचदशैव दिवसां सुद्राहुविमान इवति एवमुपक्रामतीत्यपि भावनीयमिति
 अत्रा साभि रंथाष्टे लिखिते उपनीते बहुश्रुतै र्निर्णयः कार्यइति सोहस्रीत्यादि तत्र सौधर्मशानयो स्वयीदशविमानप्रसृटा भवन्ति सनलुमारमाहृद्रयो
 र्दश ब्रह्मलोकै षट् लांतके पंच शुक्ले चलार एवं सहस्रार आनत प्राणतयो इत्वार एव सारणाच्युतयोः श्रैवियके षधखानमध्यमीपरिसेषु त्रयः २ अनुत्तरे
 खे कइति द्विशष्टि इति भवन्ति एतेषां च मध्यभागे प्रत्येक सुडुविमानादिकाः सर्वार्थसिद्धविमानांता वृत्तविमानरूपा द्विषष्टिरिव विमानद्रका भवन्ति
 तत्पार्श्वतश्च पूर्वादिषुदिक्षु त्र्यस्रचतुरस्रवृत्तविमानव्रज्जेण विमानानासावलिका भवन्ति तदेव सौधर्मशानयोः कल्पयोः प्रथमे प्रसृटे सर्वाधखान इत्यर्थः षट्
 मावलियाएति प्रथमाउत्तरीत्तरावलिकापेचया आद्या अतस् अवालिकायस्सिन्स प्रथमावलिकाक खान अथवा प्रथमानूलरूतापि जानद्रकादारथ्य या चा

स्त्रीसाणेषु कल्पेषु षडमेपत्यन्ते षडमावलियाएणुगमेगाएु दिसाएु वासठिं विमाणा प० सव्वे वेमाणियाण

६२ भाग हीय वासठिया चार चार भाग दिन २ तेजघटे सौधर्म ईशाने देवलोके १३ प्रतखे तेमाहि पहिले प्रतरेपहिलौ आवलिकाये अण्णीये ४ अण्णीमां
 डिने तिहां पहिली अण्णिये पूर्वादिके चकेके दिशे आवलिकाये ६२ वासठ विमान वषणां मोटा कह्या । १२ देवलोके ६ श्रैवियके ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली
 वतानां ६२ विमान प्रस्तर प्रस्तराय परिमाणे कह्या सौधर्म ईशाननां १३ सनलुमार माहिद्रे १२ ब्रह्मे ६ लांतके ५ शुक्ले ४ सहस्रार ४ आनत प्राणते

षष्ठिरिति सोहमेत्यादि सौधमेद्वात्रियदीयाने ऽष्टाविंशतिः ब्रह्मलोकं च चत्वारि विमानलक्षाणि सर्वाणि चतुःषष्ठिरिति चउसष्टिं लक्षेण चतुःषष्ठिलक्षं
 नांशराणायस्त्रिंशत्सौचतुः षष्ठिलक्षिकः सुत्तमणिमयेति सुक्तायमुक्ताफलानि सण्यश्चक्रकातादिरत्नविशेषाः सुक्ता रूपावामण्योरत्नानिमुक्तामण्यस्त्रिंशत्कारो
 मुक्तामणिमयः ॥ ६४ ॥ अथ पञ्चषष्ठिस्थानक तत्रमीरियुत्तेत्यति सौर्यपुत्री भगवतोसहाबीरस्य सप्तमोगणधरः तस्यपञ्चषष्ठ्याष्ठवर्षाणि सृहस्य
 पर्याय आवख्यकेपेजमेवीत्तो नवरमेतस्यैव यो बृहत्तरोभाता अखितपुत्राभिधानः पृथोगणधरः तदीच्छादिन एवप्रब्रजित स्थावशकं निपचाग्रद्वर्षाणि सृह
 स्यपर्यायउक्तो नचबोधविषयमुगच्छति यतोबृहत्तरस्य पञ्चषष्ठिर्गुज्यते तागुतरस्यत्रिपचाग्रदिति सोहमेत्यादि सौधर्मावतसक विमान सौधमेद्वेवतीवास्यम

सोहम्मीसाणसु वंजलोण्य तिसुकप्यसु चउसष्टिं विभाणावासस्यसहस्रसा प० सद्दस्रसद्वियणं रत्नोचाउरंत
 चक्काबहिस्स चउसठिलठीए महर्घमुत्तामणिहारे प० ॥ ६४ ॥ जबूह्वीवि पणसठिं रूरमंरु
 ला प० थरेणंमोरियपुत्ते पणसठिवासाइ अगारसज्जे वसिस्ता मुंकेजद्विहा अगाराउअ्यणगारियं पइइए

जन प्रमाण कथा । सौधमे ३२ लाख विमान ईयाने २८ लाख विमान ब्रह्मलोकं ४ लाख विमान एहतीन देवलीके चौसठिलाख एतला विमानावास कथा
 सगलाने राजाने चातुरंत चक्रवर्तिने चिहुंदिशिन अंतना धरणीने चउसठिलक्षि कहतां शरी छे तिहां ते चतुष्पाष्टि कहिये एतले ६४ शरी महग्धी महार्घ्य
 बहुमय मीती सुक्ताफल मणि चंद्रकांतादिकरत्न विशेष तेहमय हारकथो ॥ इति ६४ ओसमवाय संपूर्ण ॥ ६४ ॥ हिये पैसठमी समवाय
 लिखिछे । जबूह्वीपने विधे १८० सूर्यमडलछे निषधमाये ६३ जगतो उपरि २ सर्बमिलो ६५ कथा । स्यविर वयश्रुत पर्याये वडा सौर्यपुत्र सातमा गणधर

अत्रयताद् अद्गरेगंनभवीयंनणाजीवाणसव्वदंति ॥ १ ॥ ६६ ॥ अथसप्तषष्ठिस्थानके किंचिद्विब्रियते तत्रपंचसंवहरेत्यादि नचत्रमासीये
 नकानेन चद्नेनचत्रमण्डलभुंक्ते सचसप्तविंशतिरहोरात्राणि एकाविंशति आहोरात्रस्यसप्तषष्ठिभागाः २७ । २१ । ६७ । युगप्रमाणचाष्टादशशतानि त्रिंशदधि
 कानोति प्राक्दशितम् १८३० तदेवंनचत्रमासस्योक्त प्रमाणरायिनादिनरास्यषष्ठिभागतया व्यवस्थापितेनत्रिंशदुत्तराष्टादशशतप्रमाणेनयुगदिनप्रमाणायाः
 सप्तषष्ठिभागतयाव्यवस्थापित एकलंबहविंशतिः सहस्राणिषष्टशतानिदशचिखेवरूपीविभज्यमानःसप्तषष्ठिनचत्रमासप्रमाणो भवतीति बाहाश्रीति लघुहिम

होत्या श्यात्रिणिबोहियनाणस्स णं उद्धोसेणं ढावठिं सागरोवमाइं ठिइं प० ॥ ६६ ॥ पंचसं
 बच्छरियस्सणंजुगस्स नरकत्तमासेणं मिज्जिमाणस्स सत्तसठिं नरकत्तमासा प० हेमवयपुरद्ववयानुणं बाहाउ

६६ सागर आउखी । तथा अच्युतदेवलीगे त्रीण बेलाजाय तिहां उल्लुट्ठी २२ सागरआउखी वाईती ६६ सागरहीय । विंसेसनुथनीभव करेते भाभेरा मांहि
 गणिये इति ६६ समवाय सपूर्ण ॥ ६६ ॥ हिवे ६७ समवाय लिखेछे । पचसवत्तरे युग १ पूरोथाप । तेयुग नचत्रमासिमावीये ६७ नचत्रमासहीय जणे
 काले चद्रमा नचत्र मडलनेभोगवे तेनचत्रमासकहिंये तेनचत्रमास २७ अहोरात्रि अने एकअहोरात्रिना सडसठिया २१ भा प्रमाणेहीय । पूर्व ६१ मेंठारे एक
 १८३० दिनकलाच्छिते ६७ गुणंकारियेतिवरि एकलाख बाईस हजारच्छसे दसभागहीय तेसडसठभागे एकअहोरात्रि वाधिये २७ अहोरात्रिये सडसठिया एक
 बीसभागे एकनचत्रमासहीय एहवे ६७ नचत्रमासे एकनचत्र युगपूराय । लघु हिमवतपर्वतनी जीवायकी पूर्वपक्षिमे प्रबईमान जेहिमवंतचत्रनी प्रदेशप

वज्जीवायाः पूर्वापरभागतो येप्रवर्द्धमानचेत्रप्रदेशपत्नी हैमवतवर्षजीवायावत्ते हैमवतबाहूउच्यते एवमेरख्यवतबाहूअपिभावनीयो इहप्रमाणसंवाद. बाहासत्त, ठिसइयणपद्मेतिद्वियकलात्रीति कलाएकीनविंशतिभागः एतच्चबाहुप्रमाणं हैमवतधनुःपृष्ठात् चत्तालासत्तसया अडतीससहस्र दसकलायधशुत्ति ॥ एव लक्षणात् ३८०४० । १० । १८ हिमवद्धनुपृष्ठे धनुपिठुकलचक्रक पणवीससहस्रदुसयतोसहियत्ति एवलक्षणे २५२३० । ४ । १८ । अपनीतयच्छेषतदर्शी क्तसद्भवतीति आयामिनद्वेष्येति मद्रस्सेत्यादि मेरोः पूर्वाताज्जबूहीपोपरस्थांदिशि जगतीबाह्यांतपर्यवसानः पचपचायवीोजनसहस्राणितावदस्ति ततः परद्वादशयीोजनसहस्रास्थतिक्रम्य लवणसमुद्रमध्ये गौतमद्वीपसिंधानीद्वीपीस्ति तम्विकल्पसूत्रार्थः सभावति पचपचाशतीद्वादशानांच सप्तषष्टिलभावात्

सत्तठिं सत्तठिं जौयणसयाइं पणपन्नाइं तिस्त्रियन्नागजौयणस्स ज्ञायाभेणं प० अंदरस्सणं पव्हयस्स पु रत्थिमिन्नाउ चरमंताउ गोयमदीवस्स पुरत्थिमिह्वे चरमंते एसणं सत्तसठिं जौयणसहस्साइं ज्ञवाहाए

त्तिच्छे हिमवतक्षेत्रनी जीवालगे तेहिमवंतक्षेत्रनी बाहुसरीक्षीवाहुक्के । एम शिखरीनी जीवाथकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेएरख्यवतक्षेत्रनी प्रदेशयंत्तिच्छे एर ख्यवंतक्षेत्रनी जीवालगे ते एरख्यवंतक्षेत्रनी बाहुकहिये । जेहिंयवत एरख्यवंतक्षेत्रनीबाहु६७से ५५ योजन एकयीजननाउगणीसहाय्यात्रिणिकला ६७५५ । ३ १८ यीजनना ३ भाग लानपणे कही । से ६ पूर्वतना पूर्वचरिमातयज्ञीपाडी लवणसमुद्रमांही पयिभदेश्मे १२ सहस्र योजन जइये तिहां सुस्थितनामि ल वणसमुद्राधिपति तेहनी निवासभूत गौतम द्वीपक्के तिवोपनी पूर्व चरिमांत एह सतसठ योजन हजार लगे आवाधायें विचले आंतरो कच्चो । भेरुप वंत १० हजार योजन विष्कामलीजे अने तिहांथी ४५ हजार पश्चिमे जगती तिहाथी १२ हजार गौतम द्वीप सबमिली ६७ हजार योजन आंतरो थयो

राइति सर्वसंख्यकीमसन्ततिरिति । मंदरस्थेत्यादि सवर्षसमुद्रं पश्चिमायां दिशि द्वादशयोजनसहस्राख्यगच्छा द्वादशसहस्रमानः सुस्थिताभिधानस्य लक्षणसमुद्राधिपतेर्भवेनालंछतो गौतमद्वीपीनामद्वीपीोऽस्ति तस्य च पश्चिमातीभिरोः पश्चिमांतादेकोनसप्ततिसहस्राणि भवति पचचत्वारिंशतो जंबूद्वीपसंबन्धिभाद्रादशशागामन्तरसत्रिणां द्वादशानामेव द्वीपत्रिष्वङ्गसंबन्धिनां च मीलनादिति । मोहनीयवर्जानां कर्मणां मेकोनसप्ततिरुत्तरप्रकृतयो भवतीति कथं ज्ञानापरणस्य पच दर्शना वरणस्य नव वेदनीयस्य त्रे आयुप्रद्युतसो नाको द्विचत्वारिंशद्भेदो नस्य द्वे प्रंतराथस्य पचेति ॥ ६८ ॥ अथ सप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते समर्पित्यादि वर्षा

सुयारा मंदरस्य पवृत्रस्य सपञ्चत्थि मिह्लाउ चरन्ताउ गोयमदीयस्य पञ्चत्थि भिल्ले चरन्ते एसणं एणुणसत्तारि
जीयणसहस्साइ अत्राहाएउत्तरे य० मोहणिज्जयज्जाण सत्तरहं कम्मपगळीण एणुणसत्तारि उत्तरपगळीउ

भरत हिमयन्तादिका चैव छे ते पाचसतां पचीस थाय एकैक मरुने भासे हिमवत सहाहिमवन्तादिका ६ । ६ । वर्षधर छे क्वपच नौस वर्षधर थया धात की खड मां हि २ इषुकार पर्वत छे पुस्कराई माहि २ एवं ४ इषुकार पर्वत थया सर्व मिली उगुणहत्तरि वर्षधर थया ६८ मरुनां पश्चिम चरमांत थी गौतम द्वीपनी पश्चिम चरमांत एहने ६८ हजार योजन नी भिचाले आंतरी कथ्यो । एतले ४५ हजार योजने पश्चिमनी जगती छे तेह थकी १२ हजार योजन गौतम द्वीप सुस्थितनामा लवण समुद्राधिपति देवतानो निवास भूत छे ते १२ हजार योजननी पिहुली छे ते सर्व एकी किये तिवारे ६८ हजार योजन थाय । मोहनीय कर्म वर्जां ने सात कर्मनो ६८ उत्तर प्रकृतिकहो । ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ८ वेदनीय २ आयु ४ नाम ४२ गीत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली उगुणहत्तरि प्रकृति थई इति ६८ समवाय संपूर्ण ॥ ६८ ॥ हिंवे ७० मी लिखे छे । अमण भगवान महावीर देव च्यारमास प्रमाण वर्षाकाल

पांचतुर्मासप्रमाणस्य वर्षकालस्यसर्विशतिदिवसाधिकीमासे व्यतितीतिपंचाशतिदिनेष्वतीति श्वित्यर्थः सप्तत्यांचरात्रिदिनेषुशेषेषु भाद्रपदस्यक्षपंचम्यामित्यर्थः
 वर्षीस्वावासीवर्षीपासःवर्षीवस्थानपञ्जीसवेद्वत्ति परिवसति सर्वथाकरोति पञ्चाशतिप्राक्तनेषुदिवसेषु तथाविधवसत्यभावादिकारणे स्थानातरसम्याश्रयति
 अतिभाद्रपदशुक्लपञ्चम्यां तु हचमूलादा वपि निवसतीति हृदयमिति पुरिसादाशीयति पुरुषाणामादानीयउपादेयः पुरुषादानीयः अवाह्णिया कम्पहि
 ई कम्पणिसीपणत्तति इह किलाकाशविशिष्टमेवजम्भुपुद्गलोपादानं कृत्वा उत्तरकालं ज्ञानावरणीयादिकर्मणां स्वस्वमाधाकालमुक्त्वा ज्ञानावरणीयादिप्र

प० ॥ ६९ ॥ समणेज्जगवंमहावीरे वासाणसवीसइराइमासे वइक्कते सत्तरिण्हिं राइदिण्हिं
 संसेहिं वासावासपञ्जीसवेइ पासेण झरहापुरिसादाणीए सत्तरिवासाइं बज्जपण्णिपुन्नाइं सामन्नपरियाणं
 पाउणिता सिद्धेसुद्धे जावप्यहीणे वासुपुज्जेण झरहा सत्तरिंधण्डं उहुंउच्चत्तेणं होत्या मोहणिज्जस्स णं

नी ते मांहि २० रात्रिये प्रथिक मास वीतियक्के एतले प्राषाढी पूनिम थकी पंचासमे दिहाडे भादों सुदि ५ दिने संवच्छरी करी पछे शेष थाकती ७० रा
 त्रिये वर्षाकाल रह्यो पञ्जीसवेइं संयथापि करे । पार्वनाथ अरिहत पुरुषां मांहि अष्ट प्रतिपूर्णं ७० वर्षं लगे सामान्य पर्याय पाली सिद्धयथा सर्वदुःखथकी
 प्रचीणयथा एतले ३० वर्षं गृहवासे ७० वर्षं चारित्र सर्वं मिलो १०० वर्षनी प्रायु जाणिवो । वासुपुज्य बारहमां अरिहत ७० धनुष जचपणे हुया । मोह
 नीय कर्मनी स्थिति ७० सागरोपम कोडाकोडि लगे अवाधायें ७ हजार वर्षं उथी ज्ञानावरणी यादि कर्मदल भोगविवाने अर्थ रचना पूर्व जे बाथीछे
 ते उदयकाले प्राणिवो एतले उत्कृष्टी ७० कीडाकोउ सागरोपमनीं जेणे समये मोहनीय कर्मनी बंधपाग्यो ते बंधकालयी मांडी ७ हजार वर्षं लगे तेकर्म

कर्तविभागतथा अनाभोगिकेन वीर्यणोदयसहितं तद्दलिकं निषिञ्चति उदययीयं रचयतीत्यर्थः अतो द्विविधास्थितिः कर्मलोपादानमात्ररूपा अनुभवरूपा च यतः स्थितिरवस्थानं तेनभावेनाप्राच्यवनं तत्र कर्मलोपादानरूपां तामधिकृत्य सप्ततिसागरोपमकोटीकोट्यः अनुभवरूपां लघिकृत्य सप्तवर्षसहस्रोनेति तत्र अवाहति किमुक्तं भवति बन्धावलिकाया आरभ्य यावत्सप्तवर्षसहस्राणितं तावत्कर्म न बाधते नोदयं यातीत्यर्थः ततोन्तरसमये कर्मदलिकं पूर्वनिषिक्त उदये प्रवेग्यति निषेकीनाम ज्ञानावरणादिकर्मदलिकस्याऽनुभवनाथं रचना तत्र प्रथमसमये बहुक्तं निषिञ्चति द्वितीयसमये विशेषहीनं तृतीयसमये विशेषहीन मेवयावदुक्लृष्टस्थितिकर्मदलिकं तावद्विशेषहीनं निषिञ्चति तथाचीनां मुत्तणसंगबाहुं पठमाएठिइएवहुतरद्वयं सेसेविससहीणंजायुक्तीसंतिसब्बेसिंति बाधलोडने बाधत इति बाधा कर्मणउदयइत्यर्थः नवाधाअवाधा अन्तरं कर्मोदयस्येत्यर्थः तथा जनिका आबाधोनिका कर्मस्थितिः कर्मनिषेकीभवतीत्येवमेकेप्राहु रन्येपुनराहु रवाधाकालेन वर्षसहस्रसप्तकलक्षणेना कर्मस्थितिः सप्तसहस्राधिकसप्तति सागरोपमकोटीलक्षणः कर्मनिषेकी भवतिसच क्रियानुच्यते सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीओत्ति ॥ ७० ॥ प्रथैकसप्ततिस्थानके लिख्यते किञ्चित् । चउत्थरसेत्यादि इहभावाथीयं युगेहि पञ्चसम्ब

कम्मस्स सत्तरिसागरोवमकोठाकोठीउं अ्वाह्णिया कम्मठिइं कम्मनिसेगे प० माहिंदस्सणं देविंदस्स देवरत्तो सत्तरिसामाणियसाहस्सीउं प० ॥ ७० ॥ चउत्थस्सणं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्का

उदयेतावे ते माटे ७० कोडाकोड सागर मांहि थी ७ हजार वर्षं जंथा कीजि एतली स्थिति मोहनीय कर्मनी कीइक कहेछे सात हजार वर्षं अधिक ७० कोडाकोडि सागर सचण कर्म निसेक हीय । माहेद्रे चीथा देवलीकना राजानि ७० हजार सामानिक देवता कह्त्ता इति ७० समवाय सपूर्ण ॥ ७०

क्षरा भवति तत्राद्यौ चन्द्रसम्बन्धरी तृतीयो भवति ससम्बन्धरः चतुर्थश्चन्द्रसम्बन्धरः पञ्चमस्तृतीयो भवति तस्य सम्बन्धर एव तत्रच एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचद्विष
 ट्तिभागैर्दिनस्य चन्द्रमासो भवति त्रयस्य द्वादशगुणः अर्द्धसंवत्सरो भवति त्रयोदशगुणश्चाथमेवा भवति ततोत्तरचन्द्राभिर्वाधैर्तलत्रये सम्बन्धरत्रयेर्
 नानासहस्रं निवतिः षट्षष्टिभागभवन्ति १०६२ । ६ । ६२ तथात्रादित्यसंवत्सरे दिनानांशत्रयं षट्षष्टिभवा भवति तत्रितयेच सहस्रमष्टनवत्यधिक
 भवति प्रहर्षिणवचन्द्रयुगमादित्ययुगं चाषाढ्या मेकंपूर्यते ऽपरशाशयणयुगप्रतिपदि आस्थते एवंचादित्ययुगसंवत्सरत्रयपि त्रयोदशचन्द्रयुगसंवत्सरत्रयं पंचभिर्दि
 नैः षट्षष्ट्युगताचद्विषष्टिभागैरुनंभवतीतिष्ठत्या आदित्ययुगसंवत्सरत्रय आवणकृष्णपचस्य चन्द्रदिनषट्कोसाधिकेपूर्यते चन्द्रयुगसंयत्सरायंलाषाढ्यां तत

सत्तरीण राइदिणुहिं वीक्षतेहिं सख्वाहिराउ मंगलाउ सूरिणुञ्चाउहिं करेइ वीरियप्पवायस्सणं पुब्बस्स

धिये ७१ नो लिखिक्के । १ युग मांहि ५ संबच्छर होय ते चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्धित २ चंद्र ४ अभिवर्धित ५ एह ५ मांहि तीन चंद्र संबच्छर एकेवो चंद्र
 मास २६ प्रहोराणि १ प्रहोराण्डेना ३२ भाग ६२ सठिया ते १२ गुणा जीषां चंद्र सांत्याय तेहनां ३५४ दिन मांकेरा थाय २६ । ३२ । ६२ प्रहोराणि १३
 गुणाकारिये ती अविमर्द्धित वर्षथाय तोदीय चंद्र संबत् १ अभिवर्धित संबत्ना येकासहस्र बाणूदिन वासठिया ६ भागहोय पुने आदित्य संबत्सरा त्रिय
 से कासठियाय एहवा त्रिण वर्षना एक हजार अठ्ठाणूदिन थाय एतले चंद्रयुग पुने सूर्ययुग येके प्रापाढी पुनिमदिने पूराथाय वीजोयुग आवण बदी प
 ठिवाये प्रारतिये एम आदित्ययुग संबत्सरानो अपेचाये चंद्रसंगत्सरात्रिण पांच दिहाडे साठिया कृष्ण भागे ऊर्णां कारिये । आदित्ययुग संबच्छर ३ आवण
 बदी पचना चंद्र दिन थकी कहे दिने अधिक पूराय चंद्रयुग संबच्छर २ प्रापाढी पुनिमे पूरे त्रियारपक्खी सावण बदी सातमदिन थकी दक्षिणायने

यथावणकृष्णपक्षसप्तमदिनादारभ्य दक्षिणायने नादित्य धरन् चंद्रयुगचतुर्थसंवत्सरस्य चतुर्थमासांतभूताया मष्टादशोत्तरयततमदिनभूतायां कार्तिक्यां षाड-
 शोत्तरयततमे स्वक्रोयमण्डले चरति ततश्चात्याख्येकसप्ततिसण्डलानि तावत्स्वेव दिनेषु मार्गशीर्षादीना वतुर्णाहेमन्तमासानां सम्बन्धिषु चरति ततोद्विसप्त-
 तित्तमे दिने माघमासे बहुलपक्षत्रयोदशीलक्ष्णे सूर्यः प्रावृत्तिं करोति दक्षिणायनाविह्वल्योत्तरायणेन चरतीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च ज्योतिष्कारण्डके पञ्चसयुगसम्बल-
 रेभूतरायणतिस्रयः क्रमैशैव यदुत्तमहुलसप्तमीए १ सूर्यशुद्धस्तोचउत्थीए २ बहुलसप्तयपाडिवए ३ बहुलसप्तयतेरसीदिवसे ४ सुद्धसप्तयदसमीए ५ पञ्चत्तएणं
 चनोउत्रावद्वी एयात्राउद्वीत्रीसव्वाओमाघमासमिति दक्षिणायनदिनानिचैवं पठमानबहुलपडिवए १ वीयावबहुलसप्ततेरसीदिवसे २ सुद्धसप्तयदसमीए ३ बहुल-
 रसप्तयत्तमीए ४ सुद्धसप्तचउत्थीए पवत्तएपचमीउत्राउद्वी एयात्राउद्वीत्री सव्वाओसावणेसासेत्ति वीरियपुव्वसत्ति ततोयपूर्वस पाहुडति ग्राभुतमधिकारवि-
 शेन्नः । अजिण्ण्यादि तस्यहि अष्टादशपूर्वलक्षाणि कुमारल निपञ्चाशच्चैकपूर्वांगविकाराज्यमित्येकसप्तमिति रिहच पूर्वांगमधिकनल्पला व विवचित मिति

एकसत्तरिंपाञ्जना प० अजितेणं अरहा एकसत्तरिं पुच्छसयसहस्साइं अगारभज्जे वसिन्ता सुंरुयवित्ता जा

सुगे चालतोयको चउया चंद्र युगना चउया मासमाहि अतर्भूतके एकसो अउरमा दिन कार्तिकीये येकसो वारसां पीतवा राजबसाहि सूर्यवार करे
 तिवारपके सोआला सवधौ नागधिरादिक मासमाहि एकतर मांडला सूर्य चरे पके गहत्तरिमें दिन साधसाषे वदौ १३ दिने समुद्रमांहिला सर्वनाह्वमां
 डला यको सूर्य आहृत्तिकरे प्रदक्षिणावर्तकरे उत्तरायणे सूर्य फिरे ॥ वीर्य प्रवाद त्रीजा पूर्व नां एकत्तरिं प्राभुतजा अधिकार विशेष कथा । अजितनाय

ग्रन्थमिमादोनां लेखविषयाणामप्यनेकत्वात् सथाविधप्रयोजनभेदाच्च अक्षरदोषा यैति श्रुतिकार्श्वमतिस्थौल्यं वैषम्यमांतिवक्रता अतुम्हानां वसादृश्य मभागीऽव
 यनेगुर्वेति ॥ १ ॥ तथा गणित सख्यानम् सङ्कलितान्यनिकभेदे स्माटीप्रसिद्ध २ रूप लेख्यधिलासुवर्णमणिचक्रचित्रादिषु रूपनिर्माणं ३ नाट्यकलाभरतमार्ग
 ग्रन्थिकलास्यविधान मित्यादिभेदादृष्टया नाट्यग्रहणात् वृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभिदा स्वरूप वाचभरत
 यनेगुर्वेति ॥ १ ॥ तथा गणित सख्यानम् सङ्कलितान्यनिकभेदे स्माटीप्रसिद्ध २ रूप लेख्यधिलासुवर्णमणिचक्रचित्रादिषु रूपनिर्माणं ३ नाट्यकलाभरतमार्ग
 ग्रन्थिकलास्यविधान मित्यादिभेदादृष्टया नाट्यग्रहणात् वृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभिदा स्वरूप वाचभरत
 यनेगुर्वेति ॥ १ ॥ तथा गणित सख्यानम् सङ्कलितान्यनिकभेदे स्माटीप्रसिद्ध २ रूप लेख्यधिलासुवर्णमणिचक्रचित्रादिषु रूपनिर्माणं ३ नाट्यकलाभरतमार्ग
 ग्रन्थिकलास्यविधान मित्यादिभेदादृष्टया नाट्यग्रहणात् वृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभिदा स्वरूप वाचभरत
 यनेगुर्वेति ॥ १ ॥ तथा गणित सख्यानम् सङ्कलितान्यनिकभेदे स्माटीप्रसिद्ध २ रूप लेख्यधिलासुवर्णमणिचक्रचित्रादिषु रूपनिर्माणं ३ नाट्यकलाभरतमार्ग

अञ्जं १९ पहेलियं २० मागहियं २१ गाहं २२ सिलीगं २३ गंधजुत्तिं २४ मधुसित्तं २५ अञ्जरण
 विही २६ तरुणी पठिकम्मं २७ इथीलरूपं २८ पुरिसलरूपं २९ हयलरूपं ३० गयलरूपं ३१
 गोगलरूपं ३२ कुक्कलरूपं ३३ मिंढयलरूपं ३४ चक्कलरूपं ३५ तत्तलरूपं ३६ दंरुलरूपं ३७
 अरिलरूपं ३८ मणिलरूपं ३९ कागणिलरूपं ४० चम्मलरूपं चदलरूपं सूचरियं राज्जचरियं गह
 चरियं सोत्तागकरं दोत्तागकरं विजागयं मतगय रहस्सगयं ४१ सत्तासुंचारं ४२ बूहं ४३ खंधावा

नीकला २० । मगधदेशसंबंधीगाथानीकला २१ । प्राक्ततबंध गाथानी जाणपणं २२ । शोक रचवानी कला २३ । गंध नया अब्बीरादिकनीयुक्ति २४ । मधु
 रादिक ६ रसनां प्रयोगनी कला २५ । आभरण घडवानी जडवानी पहरवानी कला २६ । तरुणी खोजातिनि प्रति क्रम क्रियाकलापनीसिखाविवी २७ ।
 स्त्रीनालक्षण जाणिवानी कला २८ । पुरुषना बत्तीस लक्षणजाणिवानी कला २९ । घोडाना लक्षण जाणिवानी कला ३० । हाथीना लक्षण जाणिवानीक
 ला ३१ । हयभ लक्षण कला ३२ कुकुडाना लक्षण कला ३३ । मीडाना लक्षण ३४ । चक्रना लक्षण ३५ । कुतना लक्षण ३६ । दंडवंशलहीनालक्षण ३७ ।
 खड्गना लक्षण ३८ । मणिवंद्रकांतादिकनालक्षण ३९ । काकिणीरत्न विशेषना लक्षण ४० । चर्मनीगुण अवगुण जाणिवी चंद्रनाग्रहणादिकनी जाणिवी स
 र्वनी चरित्र एहवी जय्योती एमथास्ये एम जाणिवी राहुनी चरित्रजाणिवी ग्रहनी चरित्र जाणिवी सौभाग्यनीकारण जाणिवी दौर्भाग्यनीकारण जाणिवी
 भिया प्रव्रप्ति रीहिणी तत्तत विचार मत्त आराधि हरिणोगमेत्तीआवि । रहस्सगति प्ररुत्त वसुनी जाणिवी सत्ताव वसु मात्रना प्रयोग चार कटक मानो उ

रमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वल्युमाणं ६४ खंधनिवेशं ४७ वल्युनिवेशं ४८ नगरनिवेशं ४९ ईसत्यं
 तरुष्यवायं ५० आससिस्कं ५१ हल्यसिस्कं ५२ धणुष्येय ५३ हिरक्षपाग ५४ सुवन्नपागं ५५ मणिपागं ५६
 धातुपाग ५७ बाल्जुष्टं ५८ लयाजुष्टं ५९ मुठिजुष्टं ६० जुष्ट ६१ निजुष्ट ६२ जुष्टाइजुष्ट ६३ सुतखेकं
 ६४ वहखेकं ३५ नालियखेकं ६६ चमखेकं ६७ पतखेकं ६८ ककगठेकं ६९ सजीवं ७० निजीवं ७१

तत्त्वि ४१ । शृद्ध कटक नी रचना ४२ । खडार कटक उत्तरिवातो प्रमाण जाणिवो ४३ । नगरवातिवानीमान ४४ वस्तुनामान गजतीलादिक ४५ । खडा
 रकटकनी निवासस्थापन ४६ । नगर विविधनी वासवो ४७ । वस्तुनीस्थापनावस्तुनिवेश ४८ । ईषदर्थ थोडानं षणू षणानं थोडू करवू ४९ । तरुखड्गुष्टित
 था नुराथाण तद्धत मिवाएनी जाणिवो ५० । थोडानी गति थिखाडवो ५१ । हाथीनी गति थिखाडवो ५२ । धनुर्वेद धनुर्धारी दानं ५३ । हिरख
 रूपानीपाक पचाववो ५४ । सुवर्णेनी पचाविवो ५५ । गरिणरत्नादिकनी पाक ५६ । धातुतांशादिकनी पाक ५७ । युद्ध सामान्य प्रकारे तेहनी जणि
 वो ५८ । निवुद्व अतिगय युद्ध जाणिवो ५९ । युद्धनेश्रति क्रम करीने जभवो ६० । सुट्टिये जभवो ६१ । लतावेलडोवेजभूवो ६२ । वाइथी जभूतीवा
 हु युद्ध ६३ । सूनी खेडवोअक तोमाडो सूत्रनी केडिवो ६४ । वर्त वाटवो खेडूं मांडीने जभूवो ६५ । नालिकाकमल डांडो तेहनी खडवो वेभूमांडीने वे
 धवू ६६ । चर्म खेडू वेडूमाडीविधिवो ६७ पच पाण्डानी केडिवां ६८ । कडग सुवर्णादिकनाचूडी कुडलादिकनी केडिवो ६९ । भूयामनुष्यतियचने मंत्रयत्तिक
 रो सजीव कवि ७० । जीवतानीनसचापोने निर्जीव करिवो ७१ । श्रुत पचीकाकादिकना खरभेदनी जाणिवो ७२ । एकलायई । समुक्किम खेबर

सर्वि दंष्ट्रभविऽवगन्तव्य इति ॥ ७२ ॥ अथ त्रिसप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते । हरिासेति अत्र सम्वादागाथा ॥ एगुत्तरानवसया तेवत्तरि
 मेवजोयणसहस्रा जीयासत्तरसकलाय अथकालाचेवहरिदरिति तथा विजयो अितोयोमलदेवस्वस्येह त्रिसप्ततिवर्षे लब्धायु रक्त मानशकौ पचसन्तति
 रितीदमपिमतांतरमेव ॥ ७३ ॥ अथचतुःसप्ततिस्थानके किंचित् लिख्यते । तत्रानिहूतिरिति महावीरस्वद्वितीयो गणधरः गणनायकस्वस्येह चतुः

सउणरुयं ७२ ॥ समुच्छिमखहरपंचिदियतिरिस्वजोगियाणं उक्कोसेणं वावत्तरिं वाससहस्साइं ठिई प०
 ॥ ७२ ॥ हरिवासरम्मयबासयानु णं जीवानु तेवत्तरि २ जोयणसहस्साइं नवयणुत्तरं जो
 यणसए सत्तरसयणुगणवीसइभागे जोयणस्स अरुत्तमागंच अ्यायमिणं प० विजणुणंबलदेवे तेवत्तरि वाससय
 सहस्साइं सहाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ७३ ॥ थरेणं अ्यागिअइ गणहरेचोवत्तरिं वा

पचीनी पंचद्वियतिर्यंचनी उल्लुथी ७२ हजार वर्षनी स्थिति कही ॥ इति ७२ मी संपूर्ण ॥ ७२ ॥ हिवे ७३ मी लिखिछे । हर वर्ष अने रस्यत्त
 एगुगल चैत्रसंबंधी जीवा धियचरूप तेइत्तरी २ हजार योजन जाणवी । नवसे एक योजन ७३६०१ योजन । एक योजनना उगणीसहाइया सत्तर भाग
 एकयोजननी वली उपरि अर्द्धभाग आयामपरी लांबपणिकही । विजय वोजो बलदेव ७३ लाख वर्षलगे पुरी आउखुंपालीने तिइथया सर्वदुःखथको प्रचीण
 थया । आयस्सके ७५ लाख वर्ष बगे सर्वायुपालीने सिद्धथया ते मतांतर छे ॥ इति ७३ मी संपूर्ण ॥ ७३ ॥ हिवे ७४ मी लिखिछे । स्थपिर व

सप्ततिवर्षीण्याय रत्नचयविभागः षट्चत्वारिंशद्वर्षीणि गृहस्यपर्यायः द्वादश क्वथस्यपर्यायः षोडशकैवल्यपर्यायइति निसहाश्रीणमित्यादि अस्यभावाथः
 क्लिप्तनिषधवर्षधरस्य विष्कम्भी योजनानां षोडशसहस्राणि अष्टोशतानि द्विचत्वारिंशत्कलाद्वयचेति तस्यच मध्यभागे तिगिच्छिमहाऋदः सहस्रद्वयविष्कम्भा
 यतुःसहस्रायाम स्तदेवपर्वतविष्कम्भाईस ऋद्विष्कम्भाईनन्यूनतायां शीतोदादेवोभवनाध्यासितमस्तकेन तद्दीपिनालककतमध्यभागे
 वाही भवति वद्वरामयाएजिधियाएत्ति वज्रमयाजिह्निकया प्रणालस्थमकरमुखजिह्निकया चतुर्योजनदीर्घया पञ्चाशद्योजनविष्कम्भया वद्वरतलेकुडत्ति नि
 षधपर्वतस्याधीवर्त्तिनि वज्रभूमिके अशीत्यधिकचतुर्योजनशतायामविष्कम्भे दशयोजनावगाहे शीतोदादेवोभवनाध्यासितमस्तकेन तद्दीपिनालककतमध्यभागे

साइं सद्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्यहीणे निसहउणं वासहरपद्ययाउ तिगिच्छिदहउं सीतोयामहानदीउ
 चोवत्तारिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुहीपवहित्ता वद्वरामयाए जिह्नियाए चउजोयणायामाए पन्ना

डा अग्निमूर्ति श्रीमहाबीरना वीजागणधर ७४ वर्ष लगे सर्वयुपत्तीने सिद्धयया सर्वदुःख रहित थया । तैकेम ४६ वर्ष गृहाग्रम १२ वर्ष क्वथस्यपर्याय १६
 केवल पर्याय एम ७४ सर्वायु । निषध वर्षधरपर्वत ४०० योजन ऊचो उपरि १६ हजार ८ से ४२ योजन २ कला उगणीसहाइया पिहुली तेहनां मध्यभागेति
 गच्छी महा द्रहच्छेते २ हजार योजन पिहुली ४ हजार योजन लांबेकि । निषध वर्षधर पर्वतयको तेगच्छीद्रहयको निकली एहवी सीतीदामहानदी ७४ से
 २१ योजन साधिक एक कला एतले प्रबाहे पर्वत ऊपरि उत्तरामिसुखी वहीने वज्रमईजीभीये ४०० योजन लांबीपू० योजन पिहुली वहीने जायच्छे । नि
 षध पर्वतने हेठे वज्रमयी भूमिकाके जेहनी एहवी ४८० योजन पिहुली १० योजन ऊंडी सीतीदा देवीये अलंकृत सीतीदाप्रपात वज्रमय कुंडे महया मो

शीतोदापप्रातःकृदे महयति महाप्रमानीन यत्पुनः दुहन्त्रीचिक्वाचित्दृश्यते तदपपाठइतिसन्वते घडमुहपवत्तिएयति घटमुखेनेव कलशवदनेनेव प्रवर्त्तित स्नेन मुक्तावलीनां मुक्ताफलशरीराणां सम्बन्धी हारस्तस्य यत्संस्थान तेनसंस्थितो यस्तेन प्रपातः पर्वता त्रपतज्जलसमूह स्नेन महाध्वनिना प्रपतति एवंशीतापि नवर नीलवर्ध्ववराइद्विणाभिसुखी प्रपततीति चउल्यवज्ज्यादि तत्र प्रथमायांविशत् द्वितीयायांपचविशतिः तृतीयायांपचदृश्य पचस्यात्रिणिलज्जाणि यध्यां पञ्चीनलजं सप्तस्यापचवेलतानि मौलितानि चतुःसप्तति भवन्ति ॥ ७४ ॥ अथ पंचसप्ततिस्थानके किमपिलिखते । सुविधे नवमतीर्थकरस्य ना

सजोयणविक्रंजाए वडरतले कुंठे महायाध्रुमुहपवत्तिएणं मुक्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महायासदेणं पवकइएवंसीतावि दक्खिणमुहीजाणियध्या चउल्यवज्जासु लसु पुढवीसु चोवत्तरि नरयावाससयसहस्सा प०

दो प्रमाणे घडाना मुखयक्ती जेमनीकले तेम प्रवाह मगर मुखधी प्रवर्त्ती निकल्यो एहवो मुक्तावली हारले सठारणे सस्थित एहवे प्रपति पर्वतयक्ती पाणी नो समूह मोटे सव्वे पडेके । एम नीलवंत पर्वत उपरि केसरीइहयक्ती निकली दक्षिणाभिसुखी प्रवर्त्तीहुती शीता महानदी नीलवंत पर्वत इठे शीताप्रपात कुडनेविषे पडेके । सर्व शीतोदा नदीनी परे जाणिवो । चौथी नरक शुधिवी टालीने श्रेय छ नरक शुध्वीने विषे ७४ लाख नरकावासाकह्या पहिलीये ३० लाख बीजीये २५ लाख त्रीजीये १५ लाख पांचमीये ३ लाख छठीये पांच जंणा १ लाख सातमीये ५ सर्वमिली ७४ लाख नरकावासा कह्या इति ७४ मो संपूर्ण ॥ ७४ ॥ हिंवे ७५ मो लिखेके । नवमा सुविधिनाथ पुषदत अरिहंतने ७५०० केवलीहुया । सीतलनाथ अरिहंत ७५००० हजार पूर्व लगे

सख्यामीलनेन सप्तसप्ततिदेवसहस्राणि परिवारः प्रज्ञप्तानीति तथैककीमुहूर्तः सप्तसप्ततिलंबान् लवाणैलवपरिमार्णेन प्रज्ञप्तः कथमुच्यते हठसूत्रानवगण ॥

सप्तथोवाणिसेखेवे सत्तथोवाणिसेखेवे लवाणसत्तहत्तरिए एससुहत्तेवियाहियति ॥
 सत्तपाणुणिसेथेवि सत्तथोवाणिसेखेवे लवाणसत्तहत्तरिए एससुहत्तेवियाहियति ॥
 सत्तपाणुणिसेथेवि सत्तथोवाणिसेखेवे लवाणसत्तहत्तरिए एससुहत्तेवियाहियति ॥

७७ ॥ अथाष्टसप्ततिस्थानके लिख्यते । सक्कसेख्यादि वेसमणमहारायत्ति सोमयमवरण वैश्वमणाभिधानानां लोकपालानां चतुर्थउत्तर दिक्पाल
 सत्तथोवाणिसेखेवे लवाणसत्तहत्तरिए एससुहत्तेवियाहियति ॥

सहितैश्वमणदेवनिकायिकानां सुपर्णकुमारदेवदेवीनां द्वीपकुमारदेवदेवीनां व्यतरव्यतरीणां चाधिपत्यकरोति तदाधिपत्याच्च तन्निवासानामध्याधिपत्यमसौ
 करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्याः सुपर्णकुमारद्वीपकुमारावासथतसहस्राणामिति तत्रसुपर्णकुमाराणां दक्षिणस्यामष्टत्रिंशद्भवनसहस्राणि द्वीपकुमाराणांच चत्वारिंश

दिव्यवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नदृश्यत इहवृत्त मितिमतांतरमिदं ग्राहेवच्चति आधिपत्यमधिपतिकर्मं पोरिवच्चति पुरोवत्तिल
 करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्याः सुपर्णकुमारद्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नदृश्यत इहवृत्त मितिमतांतरमिदं ग्राहेवच्चति आधिपत्यमधिपतिकर्मं पोरिवच्चति पुरोवत्तिल

देवाणं सत्तहत्तरि देवसहस्रस परिवारा प० पुगभेगेणं मुञ्जते सत्तहत्तरि लवेलयगेणं प० ॥ ७७ ॥
 सक्षारस्य देविंदस देवरत्नो वेसमणे महाराया अष्टहत्तरीण सुवल्ककुमारदीवकुमारावास सयसहस्रसाणं
 अष्टहत्तरीण सुवल्ककुमारदीवकुमारावास सयसहस्रसाणं

जानी वैश्वमण चौथोलोकपाल उत्तर दिशानी धरौ । दक्षिणदिशि सुपर्णकुमारना ३८ लाख भवना द्वीपकुमारना ४० लाख भवन एवेंद्रना ७८ लाख भव
 नश्चे तेहनी आधिपत्य पणो अग्रगामीपणो भटपणो स्वामिपणो महाराजापणो आज्ञाप्रधान सेनानायकपणो सेवकपाहिकरावती थकी आत्मानोपरे पाल
 तीथकी रह्छे । स्वविर श्री महावीर नी ८ मो अकपित गणधर अठहीत्तर वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धयथा सर्वदुःख रहित थया गृहस्थपणे ४८ वर्ष छद्म

मयगामिव मित्यर्थः भट्टित्ति भट्टलं पीषकलं सामित्ति स्वामिलं स्वामिभावलं महारायत्तंति महाराजलं लोकपालमित्यर्थः आणार्इसरसेषाववति
 आत्राप्रधानसेनानायकलं कारिमाणित्ति अनुनायकैः सेवकानां कारयन् पालिमाणित्ति आत्मनापि पालयन् विहरइत्ति आसौ अकंपितः स्वविरोमहावीरस्वा
 एमोगणधर स्वस्य चाष्टसप्ततिवर्षाणि सर्वायुः कथ गृहस्थपर्याये नव केवलि पर्यायेचैकविंशतिरिति उत्तरायणनियट्टणति
 उत्तरायणादुत्तरदिगमना त्रिवृत्तः उत्तरायणनिवृत्तः प्रारब्धदक्षिणायनइत्यर्थः सूरि एति आदित्यः पढमाग्नीमंडलाग्नीत्ति दक्षिणदिशंगच्छती रवे र्यप्रथम
 त्तस्मा ननु सर्वाभ्यन्तरसूर्यमार्गात् एकूणचत्तलीसइमेत्ति एकोनचत्वारिंशत्तमे मखले दक्षिणायनप्रथममखलापेक्षया सर्वाभ्यन्तरमखलापेक्षयातु चत्वारिंशे
 अत्तरिति अष्टसप्तति एगसठ्ठि भाएत्ति मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागान् दिवसखेत्तस्मत्ति दिवसखेत्तस्य क्षेत्रस्य दिवसस्यैवित्यर्थः निवुट्टत्ति निर्वाहाहापयिलेल
 धैः तथायणिखेत्तस्मत्ति रजत्याएव अभिनिवुट्टत्ति अभिनिवर्धच वर्षेयिलेलित्यर्थः चारं चरइत्ति भाष्यतौल्यर्थः भावार्थीस्यैवं चन्द्रप्रभ्रपितवाक्यैरपदर्शते

पिण्ड व्युत्थहत्तरिवासाइं सद्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उत्तरायणनियट्टेणं सूरिणुपढमात्तं मंरुलात्तं एणू

स्वपणे ६ वर्षं केवलीपणे २१ वर्षं सर्वमिली ७८ थया । उत्तरदिश गमन थक्की निवलीं प्रारथ्यो कै दक्षिणायन पणो जेणे एहवो सूर्यं पहिला मांडला थक्की
 एकोन चालीसमे माडले एक मुहूर्त्तना अउहीत्तरि एकसठ्ठिया भाग दिवस लक्षण क्षेत्रेने एतले दिवसने निवर्धनीने घटाडीने रजनी लक्षण क्षेत्रेने
 रात्रिने अभिवर्द्धवीवधारीने चार चरेके एतले आषाढी पूनिमे सर्वाभ्यन्तर मडले १८ मुहूर्त्त दिवसहीय तिवारे पछे दक्षिणायने सूर्यथयी तिवारे एक मुहूर्त्त

पोढयसहस्राणि भवन्ति घनोदधय सु यद्यपि सप्तपि प्रत्येकं विंशतिसप्ताणि सु स्वार्थायेतस्य ग्रंथस्य मतेन षष्ठा मसावेकविंशतिः संभाव्यते तदेवं ष
 ष्टपृथिवीवाहव्याहमष्टपञ्चाशत्घनोदधिप्रमाणं चैकविंशति रित्विव मेकीनाशीति भवति अथांतरमतेन तु सर्वघनोदधीनां विंशतियोजनसहस्रवाहल्यत्वा
 त्चमोमात्रियेद् सूत्रमवधेय यत स्वाहाहल्यमष्टादशीत्तरं लवगुलं यतआह पठमाशीरसहस्रा १ वत्तीसा २ अठवीस ३ वीसाय ३ अष्टार ५ सोल ६ अ
 ह्य ७ सहस्रलक्षोविरिंजुज्जति ॥ १ ॥ अथवा षष्ठाः सहस्राधिकोपि मध्यभागो विवक्षित एव मर्थसूचकत्वा बहुशब्दस्येति तथाजम्बूद्वीपस्य जगत्या सत्वा
 रिबाराणि विजयवेजयंतजयतापरजिताभिधानानि चतुर्थयोजनविक्रमानि गव्यतष्टुलद्वाराशाखानि क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु भवन्ति तेषांच द्वारस्यचत्वा

इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए हेठिल्ले चरमंते एसणं एगुणासिं जोयणसहसाइं अवाहाए अंतरे प० एवं केउ
 ससवि जूयससवि ईसरससवि ठठीए पुढवीए बज्जमज्जेदसन्नायाजे ठठसस घणोदहिस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं
 एगुणासीतिजोयणसहसाइं अवाहाए अंतरे प० जंबूद्वीवस्सणं द्वीवस्स बारस्सय बारस्सय एसणं एगुणा

हजार योजन आंतरी जाणिवी । क्खी नरक युथिवीना बहुमध्य देण्णभागयकी एतले क्खीनी जाडपणी १ लाख १६ हजार योजनके तेहनी मध्यभाग ५८
 हजार योजन क्खी पृथिवीनी घनोदधि यद्यपि २० हजारनी के तोही पणि इहां २१ हजार योजन घनोदधि एह ७८ हजार योजन आवाधायि विचा
 ले आंतरी क्खी । एतले क्खीनी मध्यभाग ५८ हजार योजन अनी २१ घनोदधि सर्वमिली जे एह अथने मते एतले तेहनी हेठिली चरमांत ७८ हजार
 योजन थयो । एह २१ हजार योजन घनोदधि पिंड परिमाण क्खी । तेएहने मते क्खीयिज कदिवी भन्थया सात नरकने हेठे घनोदधि पिंड २० हजार

रस्य चान्योन्य मिल्यर्थः एसणति एतदेकीनाग्रीतिथीजनसङ्ख्याणि सातिक्रापी त्वेवंलक्षण सबाधया व्यवधानेन व्यवधानरूप मिल्यर्थान्तर आत्रार कथं ज
 स्मूहीपपरिधिः ३१६२२७ योजनानि क्रोशाः ३ धनूषि १२८ अंगुलानि १३ सार्धानीत्येव लक्षणस्यापकर्षितबारशाखाविक्षिप्तस्य चतुर्विभक्तस्यै वंफलत्वादिति ॥
 ७९ ॥ अथाशीतितमस्थानके किञ्चिद्विहित्यते । श्रियांसएकादशोऽजिन स्त्रिष्टुष्टः श्रियांसजिनकालमावीप्रथमवासुदेवः अचलाः प्रथमवलदेवोपि तथा त्रिष्टुष्टवा

सीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७९ ॥ सेजंसेणं अरहा असीइं धण
 इं उहुंउच्चत्तेणं होत्या तिविठेणं वासुदेवे असीइधणइ उहुंउच्चत्तेणं होत्या अयलेणं बलदेवे असीइधणइ उहुं
 उच्चत्तेण होत्या तिविठेणं वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्या आउवज्जले कंठे असीइजोय

योजन कहिवो । जमूत्रोप नो जगतीना ४ द्वारके पूर्वोदिके विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एकेक दरवाजा चार २ योजन पिहुलीके । चार
 दरवाजानी परस्पर अंतर कांइक अधिक ७९ हजार योजननेके । जमूत्रोपनीपरिधी ३१६२२७ योजन विणगाज १२८ धनुष १३ अंगुल एतला मंहीथी
 ४ दरवाजानी पिहुलपणी काठीये पूठे उगरया योजन चिहु भागदीजती दरवाजानी आंतरी पाभिये । इति ७९ मो संपूर्ण ॥ ७९ ॥ हिंवि
 ८० मो लिखिथे । श्रियांस इयारमा अरिहंत ८० धनुष जंचा जंचपणे हुया । श्रियांस जिननेवारे त्रिष्टुष्ट वासुदेव पहिलो ८० धनुष जंचो जंच पणे थयो ।
 पहिलो अचल बलदेव ८० धनुष जंचो जंच पणे थयो । त्रिष्टुष्ट वासुदेव ८० हजार वर्षे लगे महाराज हुया ४ लाख वर्षे महाकुमारपणे दीजाराज्याव
 श्राये सर्वायु ८४ लाखवर्षे जाणिवो । रत्नप्रभा पहिलो पृथ्वी १ लाख ८० हजार योजन जाउपणेके तेइनां ३ कांठके । प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन

भ्रामस्य जंबूद्वीपात् प्रविश्य जंबूद्वीपएवेति अयमत्र भावार्थः किल चतुरशीत्यधिकं सूर्यमंडलगत भवति तत्र सर्वाभ्यन्तरे सर्वबाह्ये सकृदेवसंक्रामति शेषाणि
 तु द्वीवाराविति इह च द्वाशौतिवचन्यै वेद द्वाशौतिस्थानके ऽधीत नितिभावनीय यद्यपि जंबूद्वीपे पञ्चषष्ठिरेव मंडलानां भवति तथापि जंबूद्वीपादिकस्य
 चारत्रियला च्छेप्राण्यपि जंबूद्वीपेन विशेषितानीति समये इत्यादि आपाठस्य शुक्लपत्रषष्ठ्याभारथद्वाशौत्यांरात्रिदिवेषतिक्तांतेषु त्र्यशौतितसैवर्त्तमाने
 अश्वयुजः कृत्वात्रयोदश्या मित्यर्थः गर्भात् गर्भाशया देवानंदात्राह्मणौ कुञ्चित इत्यर्थः गर्भत्रियलाभिधानच्चत्रियाकुञ्चिं संहती नीती देवेद्रवचनकारिणा ह
 रिणेगमेयप्रिधानदेवेनेति इदं च सूत्रे द्वाशौतिरात्रिदिवान्यधिकृत्य द्वाशौतिस्थानकेऽधीयते त्र्यशौतितम रात्रिदिवमाश्रित्य तु त्र्यशौतितमस्थानके इति मद्वा

**समणेन्नगवंमहावीरे बासीएराइदिण्हं वीइक्कंतेहि गज्जाउ गज्ज साहरिणु महाहिमवंतस्सणं वासहरपव्वयस्स
 उवरिह्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स ककस्स हेठिल्ले चरमंते एसण वासीइंजोयणसथाइं अवाहाए अत्तरेप०**

समुद्रमांहिलो छेहिलो सर्वाभ्यन्तर मांडलो सूर्य एकवेला घरिसि एक कर्क संक्रांतिये शेष थाकता १८२ मांडला वेवेलाफिरस्ये सर्वाभ्यन्तर मांडलायकी
 जंबूद्वीपे निकलतो एकवेला जंबूद्वीप मांही पसतो एम वेवेला १८२ मांडला सूर्यचरे अग्नि गगने फिरि। अमण भगवंत श्रीमहावीर आषाढ शुक्ल षष्ठी यकी
 मांडी८२ रात्रिदिवस व्यतिक्रमे यके ८३ मीरात्री वर्ततेयके आशोजवदी १३ नीरात्रीये देवानंदानी कूखथकी गर्भ त्रियला देवीनी कूखविषे हरिणेगने
 की देयताये साहस्यी पहुचाबी ॥ महाहिमवत बीजी वर्षधर पर्वत २०० योजन जंचे के ते महाहिमवंतनी ऊपरली चरमांत छेहल्यो प्रदेश तेह यकी
 मांही रत्नप्रमाना सीगंधिक कांडनी हेठिलो चरमांत एह ८२ यत योजन प्रावाधायें बिचले आतरीकह्यो। कांड डूजी अपबहुल इतिमाही पहिचो कांड

॥
 हिमवतो द्वितीयवर्षधरपर्वतस्य योजनयतद्वयोच्छ्रितस्य उपरिस्ता भोक्ति उपरिमा धरसांतात् सौगन्धिककाण्डसा धरानयरमानो द्वयोत्तियोजनयतानि
 कथ रत्नप्रभापृथिव्यां हि त्रीणि काण्डानि खरकाण्ड पंककाण्डमल्लहलकाण्डं चेति तत्र प्रथम काण्डं षोडशविधं तद्यथा रत्नकाण्ड १ वष्पकाण्डं २ एवबैडूर्यं ३ सो
 द्विताञ्च ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भं ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतीरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ रिष्टकाण्डे
 ति १६ एतानि च प्रत्येकं सहस्रप्रमाणानि ततश्च सौगन्धिककाण्डसा दृशत्वा दशोति शतानि द्वे च शते महाहिमवदुच्छ्रय इत्येव त्रयोतिशतानीति
 एव क्विकीणो पि पञ्चमवर्षधरस्य याचं महाहिमवत्समानोच्छ्रयत्वात्स्येति ॥ ८२ ॥ अथ अशोतितमस्थानके किमपि लिख्यते । इह शीतलजिन
 स्य त्रयोतीर्गणा स्वयश्रीतिर्गणधरा उक्ता आश्वत्थकलेकाश्रीतिरितिमातरमिदमिति तथा स्वविरोमंडितपुत्री महावीरस्य षष्ठोगणधरः तस्य चतुश्रीतिवर्षा

एवं रुप्पिस्सवि ॥ ८२ ॥ समणेअगवमहावीरे वासीइ राइदिण्हं वीडक्कतेहिं तेयासीणु
 राइदिणु वहमाणे गअणु गअणु साहरिणु सीयलस्सणं अणरहणु तेसीइगणा तेसीइगणहरा होत्या थरेणं मअि

१६ भदे रत्नकाण्ड १ वष्पकाण्ड २ एम बैडूर्यं काण्ड ३ लोहिताञ्च ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भं ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतिरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११
 रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ मसारगल्ल १६ एह १६ काण्ड प्रत्येकं १ सहस्र योजन प्रमाणे तिसौगधिक काण्ड आठमो तो आठ काण्ड मि
 सीने ८० शत योजनयथा अने वैसे योजन महाहिमवत जषोच्छे सर्वएकहा कारतां ८२ शत योजनयथा । इति ८२ मी ठाणोथयो ॥ ८२ ॥ द्वि
 ८२ मी लिखेके । असण अगवत महावीर ८२ रात्रीदिवस गयेथके ८३ मी अहीराणि वर्त्ततां यत्तां देवानंदाना गर्भं यकी त्रिणलाने गर्भं साहसा हरिणे

॥
 णि सर्वायुः कथं त्रिपञ्चाशद्गृहस्थपर्याये चतुर्दश कृद्गस्थपर्याये षोडश केवलिलइत्येवं त्यशीतिरिति तथा कौशलिएति कौशलदेशेभवः कौशलिकः तेषीइति
 विंशतिः पूर्वलक्षाणि कुमारले त्रिषष्ठिराज्ये इत्येवं त्यशीतिः तथा भरतश्चक्रुर्त्तौ सप्तसप्ततिः पूर्वलक्षाणि कुमारले षट्चक्रवर्त्तिले इत्येवंत्यशीतिमगारवासम
 ध्युथ जिनेजातः राज्यावस्थस्यैव रागादिचयात्केवली संपूर्णासहायविशुद्धज्ञानादिप्रयोगात्सर्वज्ञो विशेषबोधा त्त्वर्भावदर्शी सामान्यबोधान्ततः पूर्वलक्ष

यपुत्रे तेषीइंवासाइं सखाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उसन्नेणं अरहा कोसलिए तेषीइपुवृसयसहरसा
 इं अणारमज्जे वसित्ता मुंअवित्ता णं जावपवइए अरहेणं राया चाउरंतचक्कावही तेषीइपुवृसयसहरसाइं
 अणारमज्जे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नु सव्वदरिसी ॥ ८३ ॥ चउरासीइनिरया बास

गमिसेयी पहुसाढा । शीतलनाथ दशमा अरिहत ने द३ गणधर आवश्यके द१ कक्षा ये मतांतरके । स्थविर मडित पुत्र छो म्हाबीरनो गणधर द३ वर्षल
 ने सर्बायुपालीने सिद्धययी सर्वदुःख रहित थयी ५३ वर्ष गृहस्थपरणे १४ वर्ष कृद्गस्थपरणे १६ केवलीपर्याये सर्वमिली द३ वर्ष थया । ऋषभ आदिनाथ अरि
 हंत कोसल देशना उपना द३ हजार पूर्वलगे गृहस्थावास मांही वसीने द्रव्यभावभेदे मुंडथयीने अगार गृहस्थयकी अणगारी यतीपणूं पाभ्या । २० लाख
 पूर्व कुमारपरणे ३६ लाख पूर्व राज्याश्रमे एव द३ लाख पूर्व वर्ष । भरत राजा श्रीआदिनाथनो पुत्र प्रथम चिहुंदिशिना अतनोधणी चक्रवर्ती एहवा ७७ लाख
 पूर्व कुमारपरणे ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती परणे एव द३ लाख पूर्व लगे गृहस्थमांहीवसीने गृहस्थपरणे जिनथया । राग द्वेषनो जयकरे तेजिन केवली असहज्ञान
 जेहनेछेते केवली विशेष जाणे ते सर्वसामान्य बोधयकी सर्वभावदर्शी थया । इति द३ मी समवाय थयी ॥ ८३ ॥ हिवे द४ मी समवायलिखेके ।

प्रव्रज्याग्रहणपूर्वकं केवलिलेन निहृत्य सिद्धति ॥ ८३ ॥ चतुरशीतिथानके किमपि लिख्यते। चतुरशीति नरकलक्षाण्यमुना विभागेन तीसा यपणवीसा २ पणरस ३ देसेव ४ तिनिय ५ ह्वर्तित पंषणसयसहस्रं पंचेव ७ अत्रुत्तरानिरयति ॥ १ ॥ अयांसएकादशस्तीर्थकरः एकविंशतिवर्षलक्षाणि कुमारले तांल्येव प्रव्रज्यायां द्विवत्वारिंशद्राज्ये इत्येवं चतुरशीतिमायुः पालयित्वा सिद्धः तथा तिविठुत्ति प्रथमवासुदेवः अयांसजिनकालभावीति अग्रतिष्ठ

सयसहस्सा प० उसन्नेणं अरहा कोसलिणु चउरासीइं पुब्बसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे एवं चरहो बाज्जवली बंभी सुंदरी सिज्जसेणं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयंपालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे तिविठेणं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अय्यइठ्ठाणे नरणु नेरइ

साते नरक मिली ८४ लाख नरकावासा कक्षा। पहिलीये ३० बीजीये २५ बीजीये १५ चौथीये १० पांचवीये ३ छठीये ५ जंथा १ लाख सातमीये ५ एवं ८४ लाख थया। आदिनाथ अरिहंत कोसल देशना जपना ८४ लाख पूर्व लगे सगली आऊ खोपालीने सर्वदुःख प्रक्षीण थया। २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व राज्यपणे १ लाख पूर्व तीर्थकर पणे एवं ८४ लाख पूर्व थया। एमज भरतचक्रवर्ती आदिनाथनोपुत्र सुमगला जातक ब्राह्मवली नदाजातक आदीश्वर नो पुत्र ब्राह्मी सुमगलाजातक आदिनाथनी पुत्री सुंदरी सुनंदा जातक आदिनाथनी पुत्री एहचार ८४ लाख पूर्व आयुपाली सिद्ध थया। अयास ११ मार अरिहंत २१ लाख वर्ष कुमारपणे ४२ लाख वर्ष राज्यपणे २१ लाख वर्ष दीक्षा एव ८४ लाख वर्ष लगे सगली आयुपाली सिद्धथया। सर्वदुःखी प्रक्षीणथया

नी नरकः सामगुथिथां पशानां मध्यस इति तथा समाणियति समानर्थयः तथा बाहिरयति जबूहीपकभेकव्यतिरिक्ता यत्नारी मन्दरा यत्नशीतिः सद्य
साणि प्रश्रुताः भंजणगपव्ययति जंबूहीपा दष्टमे नन्दीश्वराभिधाने द्वीपे चक्रवालविष्कम्भमध्यभागे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारो जनरत्नमया श्रद्धनपर्यताः हरि
यसिवादि चत्वारिभ्यः ज्ञेयस्सति एकोनविंशतिभागा इहार्थेगार्थां धरापिठकालचक्रं युलसीरसस्यसोत्सहियति तथा पंकवहुलंकागुळ द्वितीयं

यत्ताणु उववन्ते सक्षस्सणं देविंदस्स देवरत्नो चउरासीइसामाणियसाहस्सीउ प० सध्वेविणं वाहिरया मंद
रा चौरासीइं जोयणसहस्साइं उहुं उच्चतेणं प० सध्वेविणं धणुपिठा चौरासी जोयणसहस्साइं सो
लसजोयणाइं चत्वारियजाणा जोयणस्स परिस्केवेणं प० पंकवज्जलस्सणं कंठस्स उवरिल्लाउ चरमंतानु

धिपृष्ठ पहिली वासुदेव ज्ञेयांस जित्त काल भावी ८४ लाख वर्ष परमायुपाली ने सातमीये ५ नरकावासा के तेमांसी भिचले अपद्रुण नरकायासेनारकी
पणे उपनी । पहिला देवलीकनो राजा यत्नेद्र देवेद्र देवराजाना ८४ सहस्रसामानिक देवता काया । जबूहीप संबंधी सुदर्शन मेरटाली बीजासगलाधातकी
खंडना २ पुष्करार्पना २ मेर चौरासी चौरासीहजारयोजन जंचा जंच पणे कक्षा । १ सहस्र योजन ऊंढा के सर्वमिली ८५ हजार योजननाथाय जबूही
पथकी आठमे नदीश्वर द्वीपे चक्रवाल मध्यभागे पूर्वादिक् चिहुंदिशि ४ अंजनक पर्वत के चारोअजनक पर्वत चौरासी २ सहस्र योजन जंचा जंचपणे
कक्षा । १ सहस्र योजन ऊंढा सर्वमिली ८५ हजारना । हरिवर्षबीजी रम्यकपांचमी तेहनी धनुवती प्रत्याचा चौरासी चौरासी सहस्र योजन उपरि
सिले योजन उपरि चारभाग एकयोजनना परिनेपे परिधीये कही । रत्नप्रभाये विणकांउके तेमांही पंकवहुल बीजीकांडतेहनी उपरली चरमांत केहली

तस्य बाह्य चतुरशीतिः सहस्राणीति यथोक्त सूत्रार्थ इति तथा व्याख्याप्रकृत्यां भगवत्यां चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्र्येण पदपरिमाणेन इह च
 यत्रार्थोपलब्धिं स्वात्यदं मतास्तेरेणतु अष्टादशपदसहस्रपरिमाणलादाचारस्य एतद्द्विगुणद्विगुणलाच्च शेषाङ्गानां व्याख्याप्रकृतिर्द्वैलक्ष्ये अष्टाशीतिः सहस्राणि
 पदानाभवन्तीति तथा चतुरशीतिर्नागकुमारो वासलक्ष्याणि चतुर्ध्वारिण्यती दक्षिणाया षट्कारिण्यञ्चोचराया आवादिति चतुरशीतिर्नयोजीवोत्यति
 स्थानानि तएव प्रमुखानिद्वाराण्यीनिप्रमुखानि तेषां शतसहस्राणि लक्षाणि योनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रकृप्तानि कायं पुढविदग्गत्राणिमारुय एकेकेसत्त
 जोणिलक्षाश्री वणपत्तियश्रयते दसचउदसजोणिलक्षाश्री विगलिदिणसुदीदो षडरोचडरीयनारयसुरैसु तिरिणसुहोतिचडरो चोदसलक्षाउमणसुत्ति २

हेठिल्ले चरमते एसणं चौरासीज्जोयणसयसहस्साइं झुवाहाए झुंतरे प० विवाहपद्वतीए णं भगवतीए
 चउरासीइं पयसहस्सा पदगणं प० चौरासीइनागकुमारावाससयसहस्सा प० चौरासीइपइन्जगसह

प्रदेय तेहयकी हेठिलो चरमांत एह ८४ सहस्र योजनकळो । पांचमीअंग विवाहपद्वती भगवती सूत्रे विषे ८४ पदनां सहस्र के पदांशे पदने प
 रिमाणे जिहां अर्थनी समाप्ति होय तेपद कहोये मतांतरे आचारांगना १८ सहस्र पदके पके आगल्ये २ अंगे वेगुणा २ कीजे तिवारे पांचमी अंगे २ ला
 ख ८८ हजार पद थाय । नाग कुमारना दक्षिण दिशनाभवन ४४ लाख उत्तरदिशि ४० लाख सर्वामिली नागकुमारावासा ८४ लाख कक्षा । ८४सहस्र
 पइता यतीना कीधा शयविशेष कक्षा । ८४ लाख जीवायोनि जीवना उत्पत्तिस्थानक तेहीजके प्रमुखद्वार जिहां ९ लाख पृथिवी काय इत्यादिक यद्यपि
 जीवोत्पत्तिस्थानक असंख्यातके परिण समान बर्ण गंध रस स्पर्श होय ते एक योनिकही । पूर्वके आदि प्रथम अने शीर्षग्रहेलिका आंक पर्यवसान केह

प्रथमांगस्य नवाध्ययनात्मकप्रथमश्रुतस्त्वन्वरूपस्य सचूलियागस्तद्विति द्वितीयिहि तस्यश्रुतस्त्वन्वे पञ्चचूलिका स्नासुच पञ्चमी निश्रीयाख्ये ह नगृह्यते भिन्नप्र
 स्थानरूपत्वात्तस्या स्नादव्या स्रतास्र स्नासुच प्रथमद्वितीयेसप्तसप्ताध्ययनात्मिके तृतीयचतुर्थी चैकैकाध्ययनात्मिके तदेवं सह चूलिकाभिर्वर्त्तत इति सचूलि
 काक स्नासपञ्चाशीति रद्वैश्वनकाला भवन्तीति प्रत्यध्ययनं उद्वैश्वनकालाना मेतावत्संख्यत्वा तथाहि प्रथमश्रुतस्त्वन्वे नवसध्ययनेषु कर्मण सप्त षट् चलार
 चलारः षट् पञ्च अष्ट चलारः सप्त चेति द्वितीयश्रुतस्त्वन्धेतु प्रथमचूलिकायां सप्तसध्ययनेषु कर्मण एकादश त्रय स्वयः चतुर्षु द्वौ द्वौ द्वितीयायां सप्तैकास
 राणि अध्ययनान्वेवं तृतीयैकाध्ययनात्मिका एव चतुर्थ्यपीति सर्वमीलने पञ्चाशीतिरिति तथा धातकीखण्डमन्दरी सहस्रमवगाढी चतुरशीति सहस्राण्यु च्छि
 ताविति पञ्चाशीतियोजनसहस्राणि सर्वांगेण भवतः युक्काराईमन्दरावप्येवं नवरं सूत्रेनाभिहितौ विचित्रत्वात्सचगते रिति तथा रुचको रुचकाभिधानस्त्रयो

ध्यायारस्सणं जगवत् सचूलियागस्स पंचासीद् उद्देसणकाला प० धायइखंरुस्सणं मंदरस्स पंचासीद्दुजोयण

अध्ययने ७ उद्वैशा बीजे ६ त्रीजे ४ चौथे ४ पाचमे ६ छडे ५ सातमे ८ आठमे ४ नोमे ७ सर्वमिली प्रथम श्रुतस्त्वन्धे ५ उद्वैशा । बीजे श्रुतस्त्वन्धे ५ चूलिका
 तेमाहि पाचमी निशीय नासे ते इहां नग्रही बीजी ४ ग्रही तेमांहीली बीजी चूलिका मांहि सात सात अध्ययन तेमांहीपहिली चूलिकाना साते अ
 धयने अनुक्रमे ११ त्रिणि त्रिणि चिहुंअध्ययने वेवे उद्वैशा एव उद्वैशा २५ पहिली चूलिकाये अने बीजी चूलिकाये सातएकसराअध्ययन त्रीजी चौथी चू
 लिकाये एक एक अध्ययनना सर्व मिली ८५ उद्वैश्या कालायथा । ८५ उद्वैश्यानीधडी पूरी २५ मे समवायांगे मेल्कीछे । पूर्वापरधातकी खडे वेमेरुपर्वतछे ते
 वे मेरुपर्वत ८५ सहस्रु योजन सर्वाङ्गे सर्वपरिमाणिकाद्या एकसहस्रु योजनजडा ८४ सहस्रु जचा सर्वमिली ८५ सहस्रुयथा । एम पुष्कराङ्गे पणि कध्या ।

दृशहोपान्तगतः प्राकारारकतोरचक्रद्वीपविभागकारितयास्थितो ऽतएा माए विक्रपर्वतो मण्डलेन व्यवस्थितत्वा त्वच सहस्ररुक्मण्डकदत्तर्शीतिरञ्चित इति पञ्चाशीतिः सहस्राणि सर्वांग्रेणेति तथा नन्दनवनस्य मेरोः पञ्चयोजनयतोच्छ्रिताया प्रथममेखलाया व्यवस्थितस्या धस्याच्चरमांतात् सौगंधिककाण्डस्य रत्नप्रभाट्टयिथाः खरकाण्डाभिधान प्रथमकाण्डस्या ऽवांतरकाण्डभूतस्तष्टमस्य सौगंधिकाभिधानरत्नमयस्य सौगंधिककाण्डस्याधरूक्षरमातः पञ्चाशीतिर्योजनयतान्यंतरमाश्रित्य भवति कथं स्पष्टयति मेरोः सप्तयोजनि प्रेलिक सहस्रप्रमाणत्वात्पातरकाण्डाना मष्टसकाण्डमशीतिशतानीति ॥ ८५

सहस्रसाइं सद्गुणं प० रुयणं अंजलिपत्रुणु पंचासीद्विजोयणसहस्राडं सद्गुणेण प० नंदणवणस्सणं हेठिह्लाउं चरसंताउं सौगंधियस्स कंठस्स हेठिले चरसंते एसं पंचासीद्विजोयणसयाइं इयवाहाए इत्यंतरे प०

रुक्मणामापर्वत तैरसाद्वीप मांही गठने आकारे मडलाकारेच्छे तेमाटे मडलीकापर्वत १ हजार योजन जंभो ८४ हजार योजन जंभो सर्वमिली ८५ हजार योजन सर्वांगे सर्वपरमाणि कक्षी । भूमियकी ५०० योजन लगे मेरुपर्वत ऊ चोचढीये तिहा प्रथममेखलानिविपे नदन वन छे तेहनां हेठिला चरमांतयो रत्नप्रभानी आठमी सौगंधिक काण्ड तेहनी हेठिली चरमात एह ८५ से योजन अवाधये बिचाले आतरो कक्षी । रत्नप्रभाधि ३ काण्डे पहिली १६ हजारानो काण्ड एकेक हजार योजन प्रमाणे ती आठमी सौगंधिक काण्डे तो ८ काण्ड मिली ८० से योजन यथा । नंदन वनना ५०० सर्वमिली ८५ से योजन यथा इति ८५ समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवे ८६ मी समवाय लिखिछे । नवमा सुप्रिधिनाथ वीजुं नाम पुथदंत अरिहतेने ८६ गणधर हुआ आवस्यके

काशं मीलने स्तीत संख्यायादिति महाहिमवंतित्यादि महाहिमवंतपर्यवर्तते अष्टौ सिंहायतनकूटमहाहिमवत्कूटादीनि कूटानि भवन्ति
 तानि पञ्चशतीश्रितानि तत्र महाहिमवत्कूटस्य पञ्चशतानि द्वेशते महाहिमवत्तर्षधरोत्तयस्य अश्रीतिशतानि प्रत्येकं सहस्रमानानामटानां सौगधि
 काखापसानानां रत्नप्रभा खरकाण्डावात्तरकाखाना मिलितं मीलिते सप्ताश्रीति रत्नरश्वतीति एवं शृण्णिकूटस्यवित्ति रुक्मिणिपंचमवर्षधरे यद्वितीयं च
 निशूटाभिधानं कूट तस्याप्यत्र महाहिमवत्कूटस्यैवाचं समानप्रमाणत्वा त्थयोरपीति ॥ ८७ ॥ अष्टाश्रीतिस्थानके किञ्चिद्विव्रियते ॥

उवारत्नत्रजाणं सत्तासीइ उत्तरपगणीउ प० महाहिमवंतकूरसणं उवरिमंताउ सोगंधयस्स कंऊस्स
 हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसयाइं झुवाहाए अंतरे प० एवं रुण्णिकूरससवि ॥ ८७ ॥

मकर्म ४२ गोत्र २ सर्बमिली ८७ उत्तर प्रकृति थइ । महाहिमवंत बीजी वर्षधर तेह जंघी बेसत योजन तेह उपरि महाहिमवत कूटछेते ५०० योजन
 जघी पर्वतना कूटना मिली ७०० योजन थया । तेमहाहिमवत कूटनी उपरिलो घरमांत तेहथकी रत्नप्रभागे ३ कांड छे ते मांहि पहिलो खर कांड १६
 हजारनी तेमांही रत्नभादिके प्रत्येके २ हजार २ ना १६ कांडछे तेमांहि सौगधिककांड प्राठमी तेहनी हेठिलो चरमात एतले आठो कांडना ८० से यो
 जन थया अने महाहिमवंतकूटमिली ७०० सर्बमिली ८७०० योजन थया अवाधये बिचाले आंतरी कछो । महाहिमवत कूटनी परे पांचमोरूपीयवर्षधर प
 र्वतनी रूपी मामकूट अने सौगधिक कांडनी आंतरी जाणियो इति ८७ मी समवाय थयो ॥ ८७ ॥ हिंवे ८८ मी लिखे छे । चंद्रमा धर्यं चमस्य्या

एकैकस्यासंख्यातानामपि प्रत्येकमित्यर्थः चन्द्रमाद्यस्यैवचन्द्रमस्य तस्य चन्द्रस्यैवयुगलस्यइत्यर्थः अष्टाशीतिर्भागहाः एतेच यद्यपि चन्द्रस्यैवपरिवारी ऽव्यक्त
 भूयते तथापि सूर्यस्यापीदृशत्वा देतएवपरिवारतया ऽवसेया इति दिङ्मिवाएत्यादि दृष्टिवाद्स्य द्वादशाङ्गस्य परिकर्मसूत्रपूर्वगतप्रथमानुयोगचूलिकाभिदेन पय
 प्रकारस्य सुताइति द्वितीयप्रकारभूतानि अष्टाशीतिर्भवति जहानंदैएति अतिद्वैयतः सूत्राणि दर्शितानितानि चाग्रे व्याख्यास्यामः मदरस्येत्यादि सेरोः
 पूर्णान्तात् जञ्ज्वीपस्य पचचत्वारिंशद्योजनसहस्रमानत्वात् जञ्ज्वीपान्ताच्च षिषत्वारिंशद्योजनसहस्रेषु गोस्तुभस्य व्यवस्थितत्वा तस्यच सहस्रविक्रमत्वा वा
 योक्तः सूत्रार्थो भवतीति अनैव क्रमेण दक्षिणादिदिग्बद्धितान् दकावभाससखदकसीमाख्यान् वेत्तत्यरानगराजनिवासपर्वतानां श्रित्य वाच्यमतएवाह

एगमेगस्सणं चदिमसूरियस्स अष्टासीइ अष्टासीइ महग्गहा परिवारी प० दिठ्ठिवायस्सणं अष्टासीइसु
 त्ताइं प० तं० उज्जुसुयं परिणयापरिणयं एवं अष्टासीइसुत्ताणि अणियत्तुणाणिजहानंदीए मंदरस्सणं पद्ययस्स
 पुरत्थिमिस्सत्तु चरमत्तत्तु गोथुत्तस्स अ्यावासपद्ययस्स पुरत्थियभिल्ले चरमत्ते एस्सणंअष्टासीइं जोयणसहरसाइं

ताच्छे तेसहने प्रत्येके अठ्ठासी २ महाग्रह भौमादिके अठ्ठासीनो परिवार कश्चो । यद्यपि ८८ ग्रह २८ नक्षत्र परिवार चद्रमानोच्छेतीहीपणि सूर्य इंद्रच्छे तेहनी
 पिणएतलो ग्रहनी परिवार जाणिवो । दृष्टिवाद् पूर्व वारसोत्रग तेहना ५ भेद परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिकाभिदे ५ एह ५ प्रकारे पूर्व
 कञ्जातेहना सूताइति वीजी सूत्र पूर्वतेहना ८८ सूत्रच्छे तेकहेच्छे । ऋजुसूत्र १ परिणता परिणतएम ८८ सूत्रभणिया । जिमनदीसूत्रे कश्चोच्छे तेम जाणिवो । मेण
 पर्वतयको पूर्वनो जगती ४५ हजारयोजनच्छे तिहायको पूर्वसमुद्रमाहि ४२ सहस्र योजन गोस्तुभपर्वतच्छे ते १ हजारपिण्डुलोच्छे सर्वमिली ८८ हजार मेरुपर्वत

अत्र शतीनामि च नवसहस्राणि राज्यं श्रेष्ठाखिकादश शतानि कुमारत्वमाखिलिकलाऽनगारत्वेषु अवसेयानि इह शान्तिजिनस्यैकीननवतिरार्यिकासहस्राण्यु
 त्तान्यामश्रुत्वेऽप्यग्निः सहस्राणि शतानिचमडभिधीयत इति मतांतरमेतदिति ॥ ८८ ॥ अथ नवतिस्थानके किञ्चिदिदं व्याख्यायते । तत्रा

ए पच्छिमेन्नागे एगूणगणउए अष्टमासेहिं सेरोहि कालगए जावसहदुःकप्यहीणे सप्तणे ३ इमीसे उस
 प्यिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेन्नागे एगूणनउइए अष्टमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसह
 दुःकप्यहीणे हरिसेणेण राया चाउरंतचक्षत्रही एगूणनउइवाससयाइं महाराया होत्या सतिस्सणं अरहउ
 एगूणनउइ अजासाहस्सीउ उक्षोरिया अजियासपया होत्या ॥ ८९ ॥ सीयलेणं अरहा

अवसर्पिणी ने चौथे समाने दुखम सुखम समाने पाछले भागे ८८ पखवाडे श्रेय थाकतां चीथा अरालयण काल ब्यतिक्रमे गये थके सिद्ध थया सर्व दुःख
 प्रचीण थया । एतले श्रीमहावीर सोच गये पछो ३ वर्ष साढा आठ मास एतले ८८ पखवाडे गये थके चौथो आरी उत्तरी पांचमी आरी लाग्यो एह भाव
 जाणियो । नमिनायने बारे हरिणिण राजा दशमो चक्रवर्ती ८८ वर्षलगे एकसौवर्ष जणी नव हजार वर्षलगे महाराज चक्रवर्ती हुआ । श्रेय थाकतां ११००
 वर्ष माहिं कुमार पणे मडलीक पणे यतीपणे जाणिवा साधुपणू पामी सर्वायु दश सहस्र वर्ष पाली सुक्त गया । शान्तिनाथ अरिहंतने ८८ हजार साब्बो
 एको जणी हुई एतले ८८ सहस्र ६६६ उरकठौ आर्याताब्धीनो सपदा हुई इति ८८ मी समवाग थयो ॥ ८८ ॥ द्विवे १० लिखेके । श्रीतलनाथ

जितनाथस्य श्रान्तिनाथस्य चैह नवतिरिंगणधराशोभा श्रावण्यकोतु पचनवतिरजितस्य गट्टत्रिंशत्तु श्रान्तेरुक्ता खदिद्रमपि गतान्तरमिति तथा सययभूदतीय
वासुदेव स्वस्य नवतिवर्षीणि विजयः पृथिवीसाधनव्यापारः सर्वेसिणमित्यादि शर्वणो विंशतेरपि वर्दीलवैताल्यानां शब्दापातिप्रभृतीनां योजनसहस्रीच्छित्त
ल्लात् भोगन्धिकाकाण्डचरसान्तस्य चाष्टसु सहस्रेषु अवस्थितत्वा श्रवसु सहस्रेषु गवतेः श्रताना आवात् सूचीक्तामन्तरमनवद्यमिति ॥ ८० ॥

नउइं धणूइं उहं उच्चत्तेणं होस्या अजियस्सनं अरहञ्ज नउइगणा नउइगणहरा होत्या एवंसतिस्सविसयंजु
स्सनं वासुदेवस्स णउइवासाइ विजए होस्या सधेसिणं वहवेयहपह्णयाणं उवरिक्काञ्ज सिहरतलाञ्ज सोगधिय
कंऊस्स हेठिह्वेचरमंते एसणं नउइजीयणरायाइं अजाहाए अंतरे प० ॥

दयमा अरिहत १६ धनुष जचा जच पणे हुया । अजितनाथ बीजा अरिहतने नउ गछ नेज गणधर हुया । श्रावण्यको ८५ गणधर कथा एमतांतर । श्रां
तिनाथ १६ अरिहतने ८० गणधर हुया । श्रावण्यको ३६ पाछा ते सतांतर छे । पिमलनाथकालीन सयय नीजी वासुदेव तेहने ८० वर्ष लगे विजय पुथिवी

साधन व्यापार हुयो देय साधनाने ८० वर्ष लाग्या एमान । सगलाइं हस वैताण्य २० जंभुसाहि हिमवंत १ हरिवर्ष २ रम्यक ३ ऐरखवत ४ ए चिहं चित्रे
शब्दापाती प्रमुख ४ हस वैताण्य के धातकीखड माहि एणेजकेने आठ्छे पुआरोइ आठ सर्वमिलो २० हस वैताण्यके सगला १ सहस्र योजन जंचा छे सग
लाई वृत्त वैताण्य पर्वतना उपरिला शिखरतला थको रत्नप्रभाये ८ सहस्र योजने सौगंधिक कांड छे तेहनी हेठिली चरिमांत ८० से योजन अथाधावे
विचले आंतरी कथी । एतले वृत्त वैताण्य १००० योजन जंचा सौगंधिक कांडलग्गे ८० से योजन सर्वमिली ८० से योजन घया ॥ इति ८० समवाय

साधिकोरिति भाहीहियति नियतत्रैत्रिषयावधयः श्रायुः
 साधिकोरिति भाहीहियति नियतत्रैत्रिषयावधयः श्रायुः ॥

सप्तदशभिर्धनुःशतैः पंचदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाशुभैः
 सप्तदशभिर्धनुःशतैः पंचदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाशुभैः ॥
 सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः
 सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः

सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः
 सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः

सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः
 सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः

सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः
 सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः

सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः
 सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः

सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः
 सप्तत्यासहस्रैः शडभिःशतैः पचीत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः

तसमाधिप्रतिमा चारित्रसमाधिप्रतिमाच दर्शनं ज्ञानान्तर्गतमिति न भिन्नादर्शनप्रतिमा विवक्षिता तत्रश्रुतसमाधिप्रतिमा द्विषष्टिभेदा कथं आचारं प्रथ
 मे श्रुतशक्ये पच द्वितीये सप्तत्रिंशत् स्थानागे षोडश व्यपहारे चतस्र इत्येता द्विषष्टि एताश्च चारित्रस्वभावा अपि विशिष्ट श्रुतवताश्चवन्तीति श्रुतप्रधानत
 या श्रुतसमाधिप्रतिमालेनीपदिष्टा इतिसम्भावयामः पचसासायिकच्छेदोपस्थापनीयाद्या चारित्रसमाधिप्रतिमा उपधानप्रतिमा द्विविधा भिन्नुपयवकभेदा
 तत्र भिन्नुप्रतिमा मासाईसत्तवाइत्यादिना भिहितस्वरूपा वादश्रु उपपासकप्रतिमासु दसणवए इत्यादिना भिहितस्वरूपा एकादशेति सर्वास्त्रयोविंशति
 र्द्विविक्तप्रतिमा लिका क्रोधादेराभ्यन्तरस्य गणशरीरोपधिभक्तपानादे र्नास्त्रस्य विवेचनौयस्थानेकले प्येकत्वविवक्षणादिति प्रतिसलीनताप्रतिमाप्यत्रैव इन्द्रि
 यस्वरूपस्य पञ्चविधस्य नोइन्द्रियस्वभावस्यच योगकपायविविक्तशयनानभेदत स्त्रिविधस्य प्रतिसलीनताविषयस्य भेदेनाविवक्षणादिति पञ्चस्यैकविहारप्र
 तिनैकैव नचह सा भेदेन विवक्षिता भिन्नुप्रतिमास्त्रत्वाभावित्वादित्येवंद्विषष्टिः पञ्च त्रयोविंशति रेका एकाच द्विनवति स्ता भवन्तीति स्थविरइन्द्रभूति महा
 वीरस्य प्रथमगणनायकः सच शृहस्यपर्याय पञ्चाशत वर्षाणि त्रिंशति ऋद्धस्यपर्यायं वादशश्च केवलित्व श्वालघिला सिद्धइति सर्वाणि द्विनवतिरिति मंदर

इत्ता सिधे बुधे मंदरस्सणं पद्यस्स बज्जभज्जेसजागानु गोथुजस्स श्वावासपद्यस्स पच्चल्लियमिह्वेचरमंते

धादिकनी त्याग एकभेद प्रतिसलीन ताये इन्द्रियनी गोपिवी एकभेद एकविहार प्रतिमा भेद १ एवं ६२ पांच त्रैवीस एकएक सर्वमिली ६२ भेद प्रतिमाना
 थया।स्थविर इन्द्रभूति महावीरनी प्रथम गणवर शृहाश्रमे ५० वर्षं ऋद्धस्य पर्याये ३० वर्षं १२ वर्षं केवल पर्याये सगली ६२ वर्षनी श्वाउखोपालीने सिद्धथया
 मोचपहुता तत्वना ज्ञानीथया । मेरुपर्वतनी बहुमध्यदेशभाग ५ सहस्र योजन तेहथकी ५ हजार योजननी जगतीहुई तेहथकी वेलधर नागराजानी आ

चउणउरसहरसाहं कृष्णण्डियसयंकलादीय जीवानिसहस्रसिंसति ॥ ६४ ॥ अथ पंचनवतिस्थानके किंचित्स्थिते । लवणसमुद्रस्रोत्रोभयपार्श्वतोऽपि पंचनवतिः २ प्रदेशाउद्देशोत्सेधपरिहानिभ्यांविषये प्रज्ञप्ताः अथगन्धवायुः लवणसमुद्रमध्ये दशसाहस्रिकक्षेत्रस्य समधरणीतलोपलया सहस्रमुद्देशोत्खल मित्यर्थः तदनन्तरं पंचनवतिः प्रदेशाहीयन्ते ततोऽपिपचनवतिं प्रदेशान् गत्वा उद्देशस्य प्रदेशाः परिहीयन्ते एवं पंचनवति २ प्रदेशाति क्रमे प्रदेशमात्रस्योद्देशस्य हान्या पंचनवत्यांयोजनसहस्रैस्त्वितिज्ञोतेषु समुद्रतटप्रदेशेषु उद्देशतः सहस्रस्यापिपरिहानिर्भवतीत्यर्थः समभूतलत्वम्भवतीति तथा समुद्रमध्यभागपिचया तत्तटस्य साहस्रिकउत्सेधीभवति उत्सेधस्योच्चत्व तत्र समधरणीतलरूपा तत्तटा त्वंचनवतिःप्रदेशानतिक्रम्य एकप्रदेशिका उत्सेधस्य

निसह नीलवंतियालुणं जीवालु चउणउड् जोयणसहरसाहं एक्षं ठप्पन्तं जोयणसय दीन्विय एगूणवीसद्द
 आगे जोयणस्स अ्यायमेण प० अ्यजियसरणं अ्यरहलु चउणउड् उहिनाणिसया होत्या ॥ १४ ॥
 सुपासरसण अ्यरहलु पचाणउड्गणहसा होत्या जबूद्दीवस्स णं द्वीवस्स चरसंताउ चउड्दि

वा ६४ हजार योजन एकसौकृष्णन योजन उपरि वै उगुणोसहादया भागएकयोजनना ६४१५६ योजन १६ कला आयामपणे लांबपणेकही । अजितनाथ परिहतने ६४ से अ्रवधिघ्रान्नी हुआ । इति ६४ मी समवाय थयो ॥ ६४ ॥ हिवे ६५ मी लिखेके । सुपार्श्व सातभा अ्ररिहतने ६५ गळ ६५ गणधर हुआ । जबूद्दीपना चरमांतयकी पूर्बोदिक चिह्दिशि लवण समुद्रमांहि ६५ हजार योजन लगे गाहीने प्रवेश करीने चार महापाताल कलय जाणा । तैकहिंके । पूर्बे मुद्रमांहि बडवामुख । दक्षिणे कैतुक । पश्चिमे यूपक । उत्तरे ईसर । धातकीबउद्यकी समुद्रमांहि उरहामध्यभाग भणी ६५ सहस्र

परिहारिर्भवति ततोपि पंचनवतिप्रदेशान् गत्वा प्रादेशिकी चोत्सेधहानि भवति एव पंचनवतिपंचनवतिप्रदेशातिक्रमेणैवप्रादेशिका उत्सेधहान्या पंचनवत्यायोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रमध्यभागे सहस्रमपि उत्सेधस्य परिहीयते एवंसाहस्रिकोत्सेधपरिहानी साहस्रिकोद्विधता भवति लवणस्येति अथचोद्विधा र्थं चोत्सेधपरिहारिनिस्त्रयापंचनवतिः प्रदेशाः प्रपन्ना स्वेष्वतिलक्षितेषु उत्सेधवः प्रदेशेहान्यामुद्वेधः प्रादेशिकी भवतीति तथा कथुनायस्य सप्तदशतीर्थकरस्य कुमारत्वमडलिकलचक्रवर्तिल्वानगरत्वेषु प्रत्येक त्रयोविंशते वर्षसहस्राणा मर्द्दाष्टमवर्षशतानां च भावात्सर्वायुः पंचनवतिवर्षसहस्राणि भवतीति तथा

सि लवणसमुद्रं पंचाणउइ पंचाणउइ जौयणसहस्राइं लुगाहित्ता चत्तारिमहापायालकलसा प० तं० बल
या मुहे केऊए जूए ईसरे लवणसमुद्रस उज्जले पासपि पंचाणउथं पंचाणउथं पदेसाउ उद्वेजस्सेहपरिहा

योजन आवी जंबूद्वीपयुक्ती परहा ६५ हजार योजन लगे परही मध्यभाग भणी जईयेती बिहू ६५ मिली १ लाख ६० हजार योजन यथा विचाले दस स हस्र योजन लगे समीपीठिकानिरूपे पाणीछि तिहा पुखी तलनी अपेचाये १ हजार योजननी जडी खाड पडीछि १ हजार योजन लगे जंबोपाणी चक्या पछि पिहुला १० हजार योजन लगेछे तेहने दगमालकहिचे तीति मध्यपिड १० हजार योजनलगे दगमालयकी उभयपासे धातकी खंड भणीजाय । त था जबूद्वीप भणी उरहाआवीयेतीही ६५ आंगुले एकअंगुल तथा ६५ हात १ हात ६५ योजने १ योजन एम ६५ हजार योजन १ हजार योजनप्रदेशे २ मात्राये २ उद्वेधपणी जडपणीघटाडीये एमकरता ६५ सहस्र योजन अतिक्रमेयके समुद्रनीपाणी अनेभूमिबराबरीथाय जडपण सगलोटेले तथा समुद्रतट यकी ६५ आंगुले योजन २ समुद्रमध्यभागभणी जातां २ तट भूमिनी उत्सेधनी जचपणी प्रदेशे २ मात्राये २ हानिकरी भूमिजडीकरताजइये एमकरता

मौर्ययुद्धे मन्दावीरस्यसामगणधरस्यस्य पंचनवतिर्बर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थत्वं कृद्यस्थत्वं क्वद्यस्थत्वं केवलित्विकुमेण पंचषष्टिचतुदशषोडशानां वर्षाणांभावादिति ॥
 ८५ ॥ अथ यथवर्तित्थानके किमपि व्याख्यायते वायुकुमाराणांषणवतिर्भवनलक्षाणि दक्षिणस्यां पश्चात् उत्तरस्यां च षट्चत्वारिंशति भावादिति वाव
 हारिति व्यावहारिकी येन गव्यतादिप्रमाणं चिन्तते अव्यावहारिकी लघुदीर्घा वा भवत्युक्तप्रमाणान् दंडोहि चतुःकरउक्तः करचतुर्विंशत्यंगुलः एवं चतुर्वि

णीए ५० कुंभूणं अरहा पंचाणउइवाससहसाइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थरेणं मोरि
 यपुत्ते पंचाणउइवासाइं सखाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ॥ १५ ॥ एगमेगस्सणं
 रत्तो चाउरंतचक्खवहिस्स ठसउइं ठसउइं गाभकोणीउ होत्था वायुकुमाराणं ठसउइन्नवणावाससयसह

८५ हजार योजन अतिक्रमेथके तटभूमिनीर्जचपणी हजार योजननीटले १ हजारनो जंडपणी समुद्रनीधाय एतली । कुमुनाथ अरिहत्तर ३ सहस्र अने ७५०
 वर्ष कुमार यणी एतलाज वर्ष मांडलीक राजपणे एतलाज वर्ष तीर्थंकरपणे सगलासिली ८५ सहस्र वर्ष उत्कृष्टी आजखीपालीने
 सिद्धयया तलनाजाण थया सर्वदुःख रहित थया । स्वप्तिर मौर्य पुत्र महावीरनी सातमी गणधर ८५ वर्ष सर्वायुपालीने सिद्धयया । गृह्यायमे ६५ कृद्यस्थपणे
 १४ केवली पणे १६ सर्बमिली ८५ वर्षथया । इति ८५ मी समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवि ८६ समवाय लिखेके । एकेक चातुरंतचक्रवर्तीने ८६ कीडी
 गाम थया । वायुकुमार भवनपतीने ८६ लाख भवनायासा कक्षा । दक्षिणदिशे ५० लाखउत्तरदिशे ४६ लाख बिहुमिली ८६ लाख थया । व्यवहारिक दंड

श्रुतौ चतुर्गुणितयां षष्ठवतिः स्यादिवेति अशंतराश्री इत्यादि अभ्यन्तरादभ्यन्तरमण्डलमाश्रित्यर्थः आदिमुहूर्तः षष्ठवत्शुलच्छायः प्रज्ञप्तः अयमत्रभावायः
 सर्वाभ्यन्तरमण्डलेयवदिने सूर्यश्चरति तस्यदिनस्य प्रथमो मुहूर्त्तौषादशांशुलमान शंकुमाश्रित्य षष्ठवत्शुलच्छायो भवति तथाहि तद्दिनमष्टादशमुहूर्तं प्रमाण
 भवतीति मुहूर्त्तौषादशभागो दिनस्य भवति ततश्चच्छायागणितप्रक्रिययाद्विनाष्टादश लक्षणेन षड्गुण्यत इति ततोद्देशे षोडशोत्तरे भवतः
 २१६ तथैरर्द्धाकृतयो रष्टोत्तर शत भवति १०८ ततश्च शङ्खुप्रमाणे १२ पनीति षष्ठवतिरशुलानि लभ्यन्ते इति ॥ ८६ ॥ अथ सप्तनवतिस्थानकी

ससा प० ववहारिणं दंठे तस्यउद्दंशुलमाणेणं एवं धणू नालिया जुगे झुके मुसलेवि झुप्लितरउ झुइ
 मुजते तस्यउद्दंशुलच्छाए प० ॥ १६ ॥ मंदरस्सनं पद्भयस्स पञ्चल्यिमिह्लाउ चरमंताउ

तेजेणे गाउकोस चितवीये अथ्यवहारिक नान्हीपणि हीय मोटोपणि हीय ते व्यवहारिक दड ८६ अंगुल प्रमाणे कब्जो २४ अंगुल नीहापहीय चिहुंहाये १
 दड हीय एम करतां ८६ अंगुल क्हाया । एम ८६ अंगुलनीधनुप्रनालिका यूप भूसरो अच मंगुलएहसर्व ८६ । ८६ अंगुलनी हीय । निषधने माये सर्वाभ्य
 तर मांडले दिवस अठारह सुहर्तनी हीय ती सर्वाभ्यतर मंडले सूर्यउगे तिवारे पहिलो मुहूर्त ८६ अंगुल छाया प्रमाणे हीय १२ अंगुलनी त्णजभोकरीये
 तेहनी छाया ८६ अंगुल हीय तिवारे कर्क सक्तांतिनी पहिली मुहूर्त कन्हिये एतले ८६ अंगुल २ षडो दिवस कन्हिये तेकेम १८ मुहूर्त दिवसनाते १२ अ
 गुल त्ण त्रिगुण कीजे एतले १८ बार गुणा कीजे ती २१६ हीय तेहनी अर्ध १०८ एह आंकमाहे त्ण प्रमाणे अंगुल १२ काठी पूठी ८६ अंगुल उगरे ॥
 इति ८६ मो संपूर्ण ॥ ८६ ॥ हिंवे ८७ मो लिखेके । मेरु पर्वत १० सहस्रु पिह्लो तेहयकी पूर्वनी जगती ४५ सहस्रु योजम तेहयी ४२ सह

द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तरमिति ॥

दशवर्षसहस्रला तदायुष्कस्येति ॥

दशवर्षसहस्रला तदायुष्कस्येति ॥
 पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तरमिति ॥
 सप्तनवतिस्त्रिंशदानि गृहमधुषित स्त्रीचिचधिकानि प्रज्यां पालितवान् दशवर्षसहस्रला तदायुष्कस्येति ॥

मंदरेत्यादि भावार्थैर्गमैः पश्चिमांतात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तरमिति ॥

मंदरेत्यादि भावार्थैर्गमैः पश्चिमांतात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तरमिति ॥
 मंदरेत्यादि भावार्थैर्गमैः पश्चिमांतात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तरमिति ॥
 मंदरेत्यादि भावार्थैर्गमैः पश्चिमांतात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तरमिति ॥
 मंदरेत्यादि भावार्थैर्गमैः पश्चिमांतात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तरमिति ॥

मंदरेत्यादि भावार्थैर्गमैः पश्चिमांतात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तरमिति ॥

मंदरेत्यादि भावार्थैर्गमैः पश्चिमांतात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तरमिति ॥

तं तद्गतपञ्चयोजनशतौच्छ्रितकूटाष्टकस्य तद्ग्रहणेन ग्रहणात् तथा पण्डकवनंच मेरुशिखरव्यवस्थितम तो नवनवल्यामेरी रुक्मस्वस्य आद्ये सहस्रे अपकृष्टे यथोक्तमन्तर भवतीति गोलुभसूत्रभाष्यार्थः पूर्वव नवरं गोलुभविष्कम्भसहस्रे चिन्ते यथोक्तमन्तर भवतीति वेद्यदस्मणमिलादि यः केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाठः सत्यकपाठ श्याय दाहिणभरहृदस्मणं धणुपिठे अष्टाणउइं ज्ञोयणसयाइं किचूणाइं आयाभेण पश्यते इति यतीन्यत्रोक्तं नवचवेसहस्राइं छावठाइं सयाइं सत्तभवे सविससकलाचिगा दाहिणभरहृदधणुपठति वैताब्बधनुः षष्ठ लेवमुक्तं सग्यत्र दसचवेसहस्राइं सत्तेवसयाहवतितियाला धणुपठवेयदढे कलायपस्यर

हाणु अंतरे प० मंदरस्सणं पइयस्स पञ्चत्थिमिल्लान् चरमंताउ गोथुन्नस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एस्सणं अथाणउइजोयणसहस्राइं अथाहाणु अंतरे प० एवं चउदिसिंपि दाहिणन्नरहस्सणं चणुप्पिठे अथाणउइजोयण

लायें भूमिथकी ५०० योजन जचोखे तेसांहि ५०० योनना कूटजचखे तोभूमिथकी तेकूटना शिखर १ सहस्रयोजनजं चा तिहांलगी नदनवनकहीये मेरुपर्वत लाख योजनकह्यो तेसांहि १ हजार योजन भूमिमांहि १ सहस्रनी नदनवन एव २ सहस्रनीकस्या लाखमाहियी तेमाटे नदनवननी उपरिली घर मांत मेरुने साथे पण्डकवनखे तेहनी हेठिली चरमांत एह ६८ सहस्र योजन अवाधाये विचले आंतरीकह्यो । मेरुपर्वत थकी ४५ हजार योजन जगती हुईते थकी पूर्व समुद्रसांहि गोस्तुभ पर्वत ४२ हजारयोजन १ हजारयोजन तेपिहुलीखे । मेरुपर्वत १० हजार योजन जाडीखे तोमेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथी वेलवर नाग राजानी आवास गोस्तुभ पर्वत पूर्वसमुद्रसांहिखे । तेहनी पूर्वचरमात ६८ हजार योजन अवाधाये विचले आंतरीकह्यो । एमचिहुदिशि दक्षिण समुद्रसांहि दगभास पश्चिमसमुद्रसांहि थख उत्तरसमुद्रसांहि दगसांम एहचिहुनी आंतरीगोलुभनीपरेजाणवी दक्षिणाइं भरतलेवनी धनुषुष्ट ६८ ।

६८ ॥ अथ नवनवतिस्थानके किमपि लिख्यते । नन्दनवणेषादि अस्यभावाद्यः मेरुविक्षम्भी मूले दशसहस्राणि नन्दनवनस्थानेषु नवनवतिर्योजनशतानि चतुःपचाशच्चयीजनानि षट्तीयोजनैकादशभागा बाह्योगिरिविक्षम्भी नन्दनवनाभ्यन्तरक्षु मेरुविक्षम्भ एकीननवति शतानि चतुःपचाशदधिकानि षट्चैकादशभागा स्वया पचशतानि नन्दनवनविक्षम्भः तदेवमभ्यन्तरगिरिविक्षम्भी द्विगुणं नन्दनवनविक्षम्भश्चमीलितो यथोक्तमन्तर आयीभवति षट्मसूरिय

मंदरेणं पञ्चणवणउड्जोयणसहस्साइं उहं उच्चतेणं प० नंदणवणस्सणं पुरल्लिमिह्लाउ चरमंताउ पच्चल्लि
मिह्ले चरमंते एसणं नवनउड्जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० एवं दरिक्कणाउ चरमंताउ उत्तरिल्लेचरमंते
एसणंवणउड्जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० उत्तरे षट्मसूरियमंठले नवणउड्जोयणसहस्साइं

मेरुपर्वत ६६ सहस्र योजन ऊची ऊचपणे कथी । भूमियकी ५०० योजन मेरुने विषे ऊचा चढीये पहिली मेखला तिहां नदनवन पामीये तेह नंदनवन ५०० योजन पहिली के नदनवननो पूर्व चरमांत तेहयो पश्चिम चरमांत लगे ६६०० से योजन आवाधायि विचाले आंतरी कथी । मेरुनी विष्कभ सूले १०००० योजन नदनवन स्थाने बाह्य गिरि विष्कभ ६६०० योजन १ योजनना ११ हिया ६ भाग नदनवन मांहि मेरुनी विष्कभपणी ८६ से योजन ५४ योजने ११ हीया ६ भाग नदनवन ५०० योजन पहिलीते दुगणीलीजे अनेमेरुनी अभ्यतर विष्कभपणी लीजेतो ६६०० योजन आंतरी हुयो । एमज नदनवननो दक्षिण चरमातथकी नंदनवननो उत्तर चरमांतनी आंतरी ६६०० से योजन थयो । निपधने माथे सर्वाभ्यंतर मांडलीके तेहपूर्व दिशनी तेहीज कंकणने

मंडलेत्ति इहजख्बहीपप्रमाणस्याशीत्युत्तरशते विगुणिते अपहृते यीरगिः सप्रथममखलस्यायाअविक्षमः सचं नवनवतिसहस्राणि षट्च शतानि चत्वारिंशदधिकानि द्वितीयस्तु नवनवतितः सहस्राणि षट्शतानि पचचत्वारिंशच्च योजनानि योजनस्यच पचत्रिंशदेकषष्टिभागाः कथ मखलस्यमखलस्यचात्तर द्वेद्वियोजने सर्वविमानविक्षम षाष्टचत्वारिंशदेकषष्टिभागाः एतद्विगुणित पचयोजनानि पचत्रिंशदेकषष्टिभागाश्चिति जातमेतच्च पूर्वमखलविक्षमि चिष्टं जातमत्तुप्र

साइरेगाइं अ्यायामविक्षंनेणं प० दोञ्जे सूरियमंछले नवनउइजीयणसहस्साइं साहियाइं अ्यायामविक्षं

आकारे फिरतो पश्चिमनीनीलवंत ने माये ते सर्वाथंतर माडलो जम्बूहीपमाही १८० योजनछे पूर्वदिशिनी अने पश्चिमनी परिण एतलीजछे तो जंबूहीपन जीवा लांबपणे लाख योजनछे ते मांहि थी ३६० योजन मांडलो भूमिसमाकाढी लाख योजनमांहि थी पूठे पूर्वसर्वाथंतर मडल अने पश्चिम सर्वाथंतर मडलने ८८४० योजन आंतरो थयी । पहिली सर्वाथंतर सूर्यनी माडलो ८८ सहस्र योजन सातिरेक भांभेते ६४० योजन आयाम पश्चिमे लांबपणे दक्षिण उत्तरे विक्षमपिहुलपणे आंतरो जाणिवी लाख योजन मांहिथी ३६० योजन काढी पूठे ८८६४० योजन जगरे पहिले मांडले पूर्वनी बीजी मांडलो अने पश्चिमनी बीजी माडली ८८६४५ योजन १ योजनना ६१ या भाग ३५ लांबपणे पिहुलपणे आंतरो । तेकेम पहिला माडलाथी बीजी मांडली २ योजन अने मांडलानू पिहुलपणू १ योजनना ६१ या ४८ भाग पश्चिमनी परिण एतलीजविहुदिशमिली पहिला बीजामांडलानां आंतराना योजन मंडल पिहुलपणी मिली ५ योजन भाग ३५ एह सर्वाथंतर मांडलाना प्रथमना आंकमाहि घातिये एतले ८८६४० योजन मांही ५ योजन ६१ यापैचीस भाग घातिये तिवारे ८८६४५ १ योजन ६१ या ३५ भाग आंतरोबीजामांडलानो हुवे हिविसूर्यनी पूर्व पश्चिमनी बीजी मांडली ८८६५१ योजन ६१ । ८

तिचत्वारिंशत्क्षेत्रलिपययीष्टीभवति चैतद्राशित्रयमीलने वर्षशतमिति वैताब्बादिषूच्यत्वम् चतुर्थींशउद्देशः कांचनका उत्तरकुण्डेषु देवकुण्डेषु क्रमव्यवस्थितानां पंचानां महाऋदाना सुभयतो दशव्यवस्थिता स्त्रैच जंघुदीपे शतहयसख्यासमसेया इति ॥ १०० ॥ अथैकीचरस्थानवृक्षा सूत्रचनो परिलब्ध

उयसयं उहुं उच्चत्तेणं प० सहेविणं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपद्यया एगमेगंजोयणसयं उहुंउत्तेणं प०
 एगमेगं गाउयसयं उहेहेणं प० सहेविणं कंचणगपद्यया एगमेगं जोयणसयं उहुं उच्चत्तेणं प० एगमेग
 गाउयसयं उहेहेणं प० एगमेगं जोयणसयं मूले त्रिस्कंभेण प० ॥ १०० ॥ चंदप्पन्नेणं झुरहा

रत ऐरवतना २ एवं ३४ दीर्घवैताब्ब्य एह वेगुणा धात को खंड पुष्करार्पे मांहि ती सगला दीर्घ वैताब्ब्य पर्वत एकेक सी गाऊ ऊ चपणे कथा । एतले वैताब्ब्य पर्वत २५ योजन ऊंचा तेहनागाऊ १०० हुया अने ऊंचपणानी चौथी भाग भूमि मांहिहीय । सगलाही अढीद्वीप मांहिला सुसु बहु हिमवत वर्षधर पर्वत वर्ष कहतां क्षेत्रतेहनी मर्यादाना कारणहार ५ अने शिखरीपर्वत ५ एकेक १०० योजन ऊंचा जाणिवा । अने एकेक १०० गाऊ उद्विधपणे भूमि मांहि ऊडपणे कथा । उत्तर कुरु मांहि नीलवंतादिका ५ दहके एकेक द्रहने विहूपासे दस दस कांचन गिरिछे सर्वमिली १०० थया । देवकुरूमां हि निषधादिका ५ दहके एकेक द्रहने विहूपासे दस दस कांचनगिरिछे सर्वमिली १०० योजन देवकुरू उत्तरकुरू मिली २०० कांचनगिरि छे । जंघुदीप मांहि वेगुणा धातकी खड पुष्करार्धमांही तेसगलाई सी सी योजन ऊंचा कथा । एकेकसी गाऊ उद्विधे भूमि मांहि ऊंढा एकेकसी योजन मूले एतला पिह्लुला कथा । इति १०० मी समवाय थयी । ॥ १०० ॥ हिंवे १५० मी समवाय लिखिछे । चंद्रप्रभ त्राठमा भरिहंत १५० धनुष ऊंचा ऊं

पञ्चायच्छतादिबुद्ध्या तां कुर्वन्नाह चंदपहत्यादि सुगमश्च सर्वमाहादयाङ्गणिपिटकासूत्राश्रवरं ॥ १५० ॥ २०० ॥ प्रासाथवडिसयति श्रवतंसकाः शिखरकाः कास्य
 पूराणिवा श्रवतसकाः प्रधाना इत्यर्थः प्रासादाश्च ते श्रवतसकाः प्रासादानाम्वा मध्ये श्रवतसकाः प्रासादावतंसकाः ॥ २५० ॥ तथा पंचधणुसतियस्सणमित्यादि

दिवहं धणुसयं उहं उच्चतेणं होत्या श्यारणे कप्ये दिवहं विमाणावाससयं प० एवं श्युञ्जुणवि ॥ १५० ॥
 सुपासेणं श्यरहा दोधणुसयाइं उहं उच्चतेणं होत्या सध्वेविणं महाहिमवंतरुष्यीवासहरपह्या दो दो जोय
 णसयाइं उहं उच्चतेणं प० दोदोगाउयसयाइं उध्वेहेणं प० जंबूद्वीवेणं द्वीवे दीकंचणपह्यसया प० पउ
 मप्यत्तेणं श्यरहा श्यहाइजाइं धणुसयाइं उहं उच्चतेणं होत्या श्यसुरकुमाराणं देवाणं प्रासाथवडिसगा श्यहा
 इजाइं जोयणसयाइ उहं उच्चतेणं प० ॥ २५० ॥ सुमईणं श्यरहा तिसि धणुसयाइं उहं

चपर्ये हुया । इथारमा श्यारणदेव लोकेने विषे १५० विमाना वासा कथा । वारमिअच्युतकत्थे १५० विमान विहूमिली ३०० विमानछे । इति १५० नो
 थयो ॥ १५० ॥ हिवे २०० नो लिखिछे । सातमा सुपाश्वे अरिहत २०० धनुष जं चा जं च पर्ये थया । सगला महाहिमवत पाच रूपी वर्षध
 र अडाइ द्वीप माहिला वेबेसी योजन ज चा ज च पर्ये हुया । वेबेसे गाज उवेधपणे भूमिमाहि ज ड पर्ये कथा । जंबूद्वीपने विषे २०० कांचन पर्यत
 ते पूठे कथाछे ॥ इति २०० मी थयो ॥ २०० ॥ हिवे २५० मी लिखिछे । छडा पन्नप्रभ अरिहत २५० धनुष ज चाज च पर्ये हुया । असुरकु
 मार ते भवनपति देवतानां प्रासादावतंसक मीटाप्रासाद २५० योजन उ चाजं च पर्ये कथा ॥ इति २५० मी थयो ॥ २५० ॥ हिवे ३००

सत्तौ चतुःशतशतीः ॥ ४०० ॥ ४५० ॥ शीतादिनदीप्रलासत्तौ मेरुप्रलासत्तौ च पञ्चशतीश्चा इति तथा सन्धिविणवक्खारित्यादितत्र वर्षधरकूटानि शतद्वयमशीत्य

महावीरस्स चत्तारिसया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगमि वाए अपरराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया
होत्या ॥ ४०० ॥ अजितेण अरहा अरुपंचमाइं धणुसयाइ उहं उच्चत्तेणं होत्या सागरेणं
रायाचारंतचक्खयही अरुपंचमाइं धणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होत्या ॥ ४५० ॥ सध्वेविणं
वस्कारपट्टयासीअ्या सीअ्योअ्याउ महानइंउ मंदरेणं वापह्णुणं पच पंच जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं पंच
पंच गाउसयाइं उह्वेहेणं प० सध्वे विणं वासहरकूळा पंच पच जोयणसयाइं उह् उच्चत्तेणं मूले पंच पंच

अमण तपस्वी भगवत श्रीमहावीरने ४०० वादीनी सपदा हुई । ते वादी केहवा छे । देवताये करी सहित जे मनुष्य अने असुर भवनपलादिक लोक ते
हने विषे अपराजित छे केहथी जीत्या न जाय एहवी उल्लूठी वादीनी सपदा हुई । इति ४०० नो समवाय सपूर्ण ॥ ४०० ॥ हिवे ४५० नो
लिखि छे । अजितनाथ अरिहत अई पचम साढा चार से धनुष उंचा उच परे हुया । सगर बीजी चक्रवर्ती राजा चिहु दिशना अंतनी धणी ते ४५०
धनुष उचा उच परे हुया इति ४५० नो समवाय थयो ॥ ४५० ॥ हिवे ५०० नो लिखि छे । महा विदेह दीठ ३२ विजय मर्यादा कारी १६
वचस्कार पर्वत अने ४ गजदत एव २० वचस्कार निपथ नीलवतने पासि उचा ४०० योजन अने शीता शीतोदा महानदीने पासि मेरुने पासि पांच पांचसे यो
जन उंचा उच परे ते २० वचस्कार निपथ नीलवतने पासि ३ ४०० गाउ उडा भूमि मांहि अने मेरुने पासि ५०० सेगाउ उद्वेध परे उड परे कहा । वर्षधर

॥
 ॥
 ॥
 धिकं कथलहुहिमवन्सिहे एकारसअठ्ठनवयकूडाइ नीलाइसुतिसनवगं अठ्ठकारसजहासंखं एतेषा अश्चगुणत्वात् वचस्कारकूटानि लशौत्यधिककचतुः शतीसंख्या
 नि कथ विष्णुपहमालवंते नवनवसेसिसुत्तसत्तेव सोलसववखारिसु चउरीचउरीयकूडाइ एतेषा अचगुणत्वात् पंचगुणल जख्खीपादिमेरूपलचित्तेत्राणां पंच

जीयणसयाइं विस्कर्णेणं प० उसत्तेणं अरहा कोसलिणु पंचधणुसयाइं उहुं उच्चत्तेणं होत्या अरहेणं राया
 चाउरतचक्कवही पंचधणुसयाइं उहुं उच्चत्तेणं होत्या सोमणसगधमादणविज्जुअमालवंताणं वस्कारप
 ह्याणं मंदरपह्यत्तेण पंच २ जीयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उह्वेहेणं प० सहेविणं व
 स्कारपह्यकूठा हरिहरिस्सलहकूठवज्जा पंच पंच जीयणसयाइं उहुं उच्चत्तेण मूले पंच पंच जीयणसयाइं

र कविये हिमवतादिक ६ कुलागिरी तेह उपरि कूट किहा ईक ११ छे किहां ईका ८ छे ती सगला वर्षधर कूट २८० छे ते पाच पाच से योजन उंचा
 मूले पांच पांचसे योजन विष्कभपणे पिहल पणे क्हाहा । आदिनाथ अरिहत कोसल देसना उपना ५ सेधनुष उचा उंच पणे हुया । भरत राजा चातुरत
 चक्रवर्ती ५ से धनुष उचा उच पणे हुया । मेरु पर्वत यक्की निर्दिशि यक्की नीकल्या ४ गजदंत एहवा क्हाया सीसनस १ गंधमादन २ विद्युत्तम ३ मालवत
 ४ एह चार वचस्कार पर्वत मेरु पर्वतने पास पाच पांच से योजन उचा उच पणे पाच पांच से गाउ उह्वेध पणे भूमि माहि उंडपणे क्हाया । सगलाई
 वचस्कार पर्वतना कूट पणि हरिकूट हरिसहकूट वर्जीने एतले एह २ कूट । गजदंत संबधीकूट सहस्र योजन उंचा छे । ते माटे एह २ टालीने बीज
 कूट पांच से योजन उंचा उच पणे क्हाहा । मूलने विषे पांच पांच से योजन लांब पणे पिहल पणे क्हाहा । सगलाई नंदनवनना कूट पणि बलकूट वर्जीने

॥
॥
त्वा सर्वाश्रितानि पचयतीच्छितानि एवमाहुर्षीत्तरादिष्वपि वैताक्यकूटानितु सतीशषट्शयोजनीच्छयाणि वर्षकूटानितु ऋषभकूटादीन्ष्टयोजनीच्छितानीति
हरिकूट हरिसद्वकूट वर्जनविहृतयोः सहस्रीच्छयत्वा दाहच विजुम्भमहरिकूडो हरिस्सहोसात्नवत्कारो तहन्दणवणशूडो उच्चिद्वाजोयणसहस्रति ॥

हरिकूट हरिसद्वकूट ब्रह्मेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छित सत्कूट मन्त्रशतोच्छित इति सूत्रोक्तमन्तर श्यवतीति अभिचदेण्डुलवरीति
५०० ॥ बुद्धिहिमवत बुद्धेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छित सत्कूट मन्त्रशतोच्छित इति सूत्रोक्तमन्तर श्यवतीति अभिचदेण्डुलवरीति

५०० ॥ बुद्धिहिमवत बुद्धेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छित सत्कूट मन्त्रशतोच्छित इति सूत्रोक्तमन्तर श्यवतीति अभिचदेण्डुलवरीति

५०० ॥ बुद्धिहिमवत बुद्धेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छित सत्कूट मन्त्रशतोच्छित इति सूत्रोक्तमन्तर श्यवतीति अभिचदेण्डुलवरीति

५०० ॥ बुद्धिहिमवत बुद्धेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छित सत्कूट मन्त्रशतोच्छित इति सूत्रोक्तमन्तर श्यवतीति अभिचदेण्डुलवरीति

५०० ॥ बुद्धिहिमवत बुद्धेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छित सत्कूट मन्त्रशतोच्छित इति सूत्रोक्तमन्तर श्यवतीति अभिचदेण्डुलवरीति

५०० ॥ बुद्धिहिमवत बुद्धेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छित सत्कूट मन्त्रशतोच्छित इति सूत्रोक्तमन्तर श्यवतीति अभिचदेण्डुलवरीति

५०० ॥ बुद्धिहिमवत बुद्धेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छित सत्कूट मन्त्रशतोच्छित इति सूत्रोक्तमन्तर श्यवतीति अभिचदेण्डुलवरीति

५०० ॥ बुद्धिहिमवत बुद्धेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छित सत्कूट मन्त्रशतोच्छित इति सूत्रोक्तमन्तर श्यवतीति अभिचदेण्डुलवरीति

अभिचन्द्रः कुलकरो ऽस्यामवसर्पिण्यां सप्तानां कुलकराणां चतुर्थः तस्योच्छ्रयः षट्पदुःशतानि पंचागदधिकानि ॥ ६०० ॥ अमणस्य भगवतो महावीरस्य सप्तजिनशतानि केषुलिखितानीत्यर्थः तथा अमणस्य भगवतो महावीरस्य सप्तवैक्रियशतानि वैक्रियलब्धिसत्ताशुशतानीत्यर्थः अरिष्टिणादि देसुगाइति

अरहा छहिपुरिससणुहिं सद्धिं मुंठे अबिहा अणगारउ अणगारियं पवइए ॥ ६०० ॥
 बंअलंतणसु कप्पेसु विमाणासत्त सत्त जोयणसयाइं उहुं उअत्तेणं प० समणस्सणं अणवउ महावीरस्स
 सत्तजिणसया होल्या समणस्स अणवउ महावीरस्स सत्तवेउद्धियसया होल्या अरिष्टनेमीणं अरहा सत्त

अने लघुहिमवतवर्षधर पर्वतनो समीधरणीतल भूमिभाग ६ स्से योजन आवाधायें अिचाले आतरो कहो । एतले हिमवत पर्वत १ सी योजन अंचोके उपरि पांचसेनीकूटके सर्वमिली ६ स्से योजन थयां । वलीएमज छठा अिखरि पर्वत ने उपरि कूटके तेहनी उपरिलोभाग तेहथकी पृथ्वीतल ६ स्से योजन थयो । पार्खेनाथ अरिहतने ६ स्से वादीथया तेकेहवा । देवता सहित मनुथ तथा असुर भवनपत्यादिकके जिहां एहवी जिहुंभुवन लक्षण लोकतेहने विषे अपराजित जीत्यानजाय एहवा वादीनी उत्कृष्टी संपदा हुइ । एह अवसर्पिणी कालने विषे सात कुलकर मांहि चौथी कुलकर अभिचंद्रनामा ६ स्से धनुष अचा अंच पणे हुया । वारमा वासु पूज्य अरिहत ६ स्से पुरुष साथे मुडुधई गृहाअमथकी अनगर परणे पास्या ॥ इति ६ स्से सी समवाय थयो ॥ ६०० ॥ हिवे ७ से नी लिखेके । ब्रह्मलांतक पाचमे छेठे देवलोके विमान सातसे योजन अंचा अचपणे कहा । अमण तपस्वी भगवंत महा

वीरना सातसे जिन केषुली थया । अमण भगवत महावीरने ७ से वैक्रिय लब्धिसत्ताशु हुया । बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहत ३ से वर्ष कुमारपणे ७ से

चतुःपंचाशतादिनामूनानि तत्रमाणवाच्छद्यस्थकालस्येति महाहिमवंतल्यादी भावार्थीयं हिमवान् योजनशतद्वयोच्छ्रित सखटंच पंचशतोच्छ्रितमिति

वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणिता सिधे बुधे जावप्यहीणे महाहिमवंतकूरुस्स णं उवरीह्वाल
चरमंताले महाहिमवंतस्स वासहरपच्चयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प०
एवं रुप्यिकूरुस्सवि ॥ ७०० ॥ महासुक्षासहस्सारेसु दीसुकप्पेसु विमाणा अठजोयणस
याइं उट्ट उच्चतेणं प० इमीसेण रयणप्ययाए षुठवीए पढभेकळे अठसु जोयणसएसु वाणमतरओमेज्ज

वर्षं देयो ५४ दिनं ऊणा केवली पर्यायं चारित्रपालीने सपूर्णं १ हजार वर्षं आजखीपालीने सिद्धयया बुद्धतलना जाणयया सर्वदुःखयकी प्रचीणं यया ।
महाहिमवतवर्षधरं २ से योजनं ऊं चोच्छ्रिते ऊपरि ५ से योजनं महाहिमवत कूटच्छे सर्वमिली भूमिं लगे ७ से योजनं महाहिमवत कूटनी उपरिली चर
मांतं तेहयकी महाहिमवंतवर्षधरं पर्वतनी समीधरणी तल भूमिभाग ७ से योजनं आवाधार्यं त्रिचाले आंतरी कल्लो । एमज रूपी कूट ५ से योजनं ऊंची
रूपी पर्वत २ से योजनं ऊंची सर्वमिली ७ से योजनं यया ॥ इति ७ से नी ययो ॥ ७०० ॥ हिंवे ८ से नीलिखिछे । महा शुक्र सहस्रार सात
से आठमी देवलीकि विमान ८ से योजनं उंचा उंचं पणे कल्ल्या । एह रत्नप्रथा पृथिवीना त्रिणकांडच्छे ते मांहि पहिलो खरकांड तेहना १६ विभाग तेह
नी पहिलो रत्नकांड १ हजार योजनं पिडच्छे । ते मांहि १ से योजनं हेठे मूंकिए १ से योजनं उपरं मूंकिये विचाले ८ से योजनं ते मांहि कालं पिशा
चादिकं वानं व्यतरं कल्ल्या । ते केहवा छे भीम कहतां भूमिं संवंधी नगरं तिहां विहारं क्रीडा करे व्यतरं देवता ते माटे वानं व्यंतरं भीमियकं विहारं

सूचीकमन्तरभवतीति ॥ ७०० ॥

इमीसेणमित्यादि प्रथमंकाण्ड खरकाण्ड खरकाण्डस्य षोडशविभागस्य प्रथमविभागरूपं रत्नकाण्डं तत्र योजनसहस्रप्रमाणे अथउपरिच योजनशतहय त्रिसुखाच्येवष्टसु योजनशतेषु वनेषु भवा चाना स्त्रेच ते व्यन्तराच तेषां सम्बन्धिनः भूमिविकारत्वा ज्ञेयिका स्त्रेच ते विहरन्ति क्रीडन्ति तेष्विति विहाराद्य नगराणि वानव्यन्तरभूमियकविहारा इति अठसयति अष्टशतानि केषामित्याह अनुत्तरोववाइयाणं देवाणति देवे भूपत्यमानत्वा देवा द्रव्यदेवा इत्यर्थः तेषाङ्गति देवगति लक्षणा कल्याण येषान्ते गतिकल्याणा स्त्रेणमेवस्थिति स्त्रयस्त्रियत्सागरोपमलक्षणः कल्याण येषाति

विहारा प० समणस्स णं अगवले महावीरस्स अठसया अनुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइ कल्लाणाणं अगमेसिअदाणं उक्कोसिया अनुत्तरोववाइया संपया हीत्या इमीसेणं रयणप्यत्ताए पुठवीए

कह्या छे । अमण तपस्वी भगवंत महावीरने ढ से यती अनुत्तर विमाने उपपात ऊपजवी के जेहनी एहवा देवता तथागति देवगति लक्षण कल्याण के जेहनी स्थिति कल्याण के जेहनी । अगाभिये काले एक भवने आतरे भद्र मोच गमन लक्षण के जेहने उक्कट्टी एहवी अनुत्तरोपपातिक साधुनी सपदा इई । एणीये रत्नप्रभा पहिली छथिवी नो वणो समरमणीक भूमि भाग तेह यकी ढ सी योजन सूर्य चारचरे एतले समभूमिभाग यकी ७ से नेउ योजने तारा मडल के तेह उपरि दश योजन सूर्य सर्व मिली ढ सी योजन यया । अरिहंत अरिष्टनेसी बावीसमा तीर्थकर ने ढ सी वादीनी सपदा इई ते वादी केहवा के देवताये करी सहित मनुष्यवली असुर भवनपत्यादिक लोक एतले त्रिहु भुवने वादने त्रिषे अपराजित जीत्यान जाय एहवी

विचिन्तयति पंचसुदेवकुण्डेषु यमकवत्तत्सत्तावात्मचिन्तकृताः पंच विचिन्तकृता इति सञ्ज्ञेविणमितादि सर्वपिहता वैताका विद्यतिः शब्दापात्याद्यः
सञ्ज्ञेविणहरौत्यादि ह्रिक्रूटं स्त्रियुगभाभिधानेगजदन्ताकारवज्रसारपर्यते हरिसङ्कटानुमाल्यवद्वस्तारे तानिच पचसपि मन्दरेषुभावात् पञ्चपञ्चभवन्ति

अथाहाणु अंतरे प० एवंनीलवंतरस वि ॥ १०० ॥ सञ्ज्ञेविण गेदेजाविमाणे दस दस जोय
णसयाइ उह उच्चतेणं प० सञ्ज्ञेविणं जमगपल्लया दस दस जोयणसयाइ उहं उच्चतेणं प० दस दस गाउ
यसयाइ उहहेण प० मूले दस दस जोयणसयाइ अयाभविस्करेणं प० एवं चित्तविचित्तकूलावि जाणि
यद्या सञ्ज्ञेविणं वद्वेयहूपल्लया दस दस जोयणसयाइ उहं उच्चतेण प० दस दस गाउयसयाइ उहहेणं प०

योजन उंवा उ च पणे कल्ला । दय दय सै कोस उहेध पणे भूमि माहि दय दय सै योजन लगे आयास विष्णं पणे लांघपणे पिहुलपणे कल्ला । एमज ५
देवकुणे विधि निवध यकी उत्तरदिशि योतीदा महानदीने विहुपाते सर्वभिली दयविच विचिन्तकृट यमक पर्यतनी परं जाणिवा । सगलाई इत्त वैताल्य
नीस के तेमिम जवूदीप माहि हिमवत चैन माहि रम्यक चैन ऐरवण्णत चैन भिली नीस एव ४ इत्त वैताल्य थया । ८ धातकी खडमांहि ८ पुष्कराधिमा
हि सर्वभिली नीस गब्धापाती प्रमुख दय दय सै योजन उ चा उ च पणे कल्ला । दय दय सै कोस उहेधपणे भूमिमांदि उडपणे मूलने विधि हजार योज
न पिहुलपणे । सगलाई समा गुर्जेदिग मादि धानभरिवानी पाली तेहने सस्थानि सखित के । १ हजार योजन आयास विष्कंमपणे कल्ला । मिय पर्यत ने

सहस्रोच्छ्रितानि पक्खारकूडवज्जति शेषवज्जस्लारकूटेष्वेव मुच्चल नारत्थेतेषेवास्तीत्यर्थः एवंवलकूडाविति पंचसुमन्दरेषु पंचनन्दनवनानि तेषु प्रत्येकमैशान्या
न्दिशि बलकूटाभिधान कूटमस्ति ततः पचशतानि सहस्रोच्छ्रितानि च नदनकूडवज्जति शेषाणि नन्दनवनेषु प्रत्येकं पूर्वादिदिविद्विगव्यस्थितानि चत्वारि श

मूले दसेवजोयणसयाइं विस्कन्नेणं प० सद्यसमा पक्षयसंठाणसंठिया सद्येविणं हरिहरिस्सहकूडावकार
पक्षयकूडवजा दस दस जोयणसयाइं उहु उच्चत्तेणं प० मूले दसजोयणसयाइं विस्कन्नेणं एवं बलकूडावि
नंदणकूडवजा अरहाविअरिठनेमी दसवाससयाइं सद्याउयं पालइत्ता सिद्धे बुधेजावसद्यदुस्कप्यहीणे पा
सस्सणं अरहउ दससयाइं जिगाणं होत्या पासस्सणं अरहउ दस अत्तेवासीसयाइं कालगयाइं जावस

विहुपासे चार गजदंत के आकारे पर्वतछे तेनाहि विद्युप्रभ गजदंतने उपर हरिकूटछे । माखवत ने उपर हरिस्सहकूटछे । एहकूट पांचसै योजननाछे
मेरु पर्वत मिलौ ? हजार योजन उंचा उंच परे कहा । मूले मेरु ? हजार योजन पिहुल परे छे शेष याकता वचस्कार कूट वर्जो ने वचस्कार कूट
हजार योजन उंचा नथौ तेहथौ ते वर्जो ने कहा । एमज ५ मेरुने त्रिये ५ नदन वन छे । दिगि विदिशि ने विधे प्रत्येके बलकूट नामे करी कूट छे । ते
५ बलकूट हजार योजन ना उंचा छे नदन वन कूट वर्जो ने नदन वगने विधे पूर्वादिक दिगि विदिशि ४० कूट छे ते हजार योजन उंचा नथौ ए माटे
छोडीने कहा । अरिहत अरिठनेमी तीनसे वर्ष कुमार परे सात से दीबा एवं हजार वर्षानी सगली आयु पालीने सिद्ध थया तलना जाथ थया सर्वदुः
ख प्रक्षीण थया । पार्खनाथ अरिहंतने ? हजार केवलीनी संपदा थई । पार्खनाथ अरिहतना ? हजार शिथ कालगत थकी सीधा यावत् शब्दकरी स

त खानि नग्ननकूटानि वर्जयित्वा तानि साहस्रिकाणि न भवन्तीत्यर्थः अरहंतेत्यादि कुमारले त्रीणिवर्षयता न्नगारले ससैलिवं दशयतानि पउमइहपुंडरी
 यरहसि पञ्चददः श्रीदेवीनिवासो हिंसवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्ती पुण्डरीकद्रो लक्ष्मीदेवीनिवासः शिखरिवर्षधरोपरिवर्त्तीति ॥ १००० ॥ ११०० ॥ तथा म

वदुक्कप्पहीणाइ' पउमइहपुंऊरीयइहा दस दस जोगसयाइ' व्यायमेणं प० ॥ १००० ॥
 अणुत्तरोववाइयाणं देवाण विमाणा एक्कारसजोगसयाइ' उहं उच्चत्तेणं प० पासस्सणं अरहउ इक्कारस
 सयाइ' वेउच्चियाणं होत्या ॥ ११०० ॥ महापउममहापुंऊरीयइहाणं दो दो जोगसह

वदु ख प्रचीण यथा । लघुहिमवत पर्वत उपर पञ्चदह छे शिखरी पर्वत उपर पुंडरीक द्रह छे एह विहु द्रह श्री अने लक्ष्मी देवीना निवास भूत छे ते १
 हजार योजन लावपणे कहा इति १ हजार नी समवाय थयो ॥ १००० ॥ हिवे ११ से नी लिखे छे । अनुत्तरोपपतिक देवताना विमान
 इयारह से योजन उ चा उ च पणे कहा । पार्श्वनाथ अरिहंतने इयारह से वैक्रिय लब्धिवंत यथा इति इयारह से समवाय थयो ॥ ११०० ॥
 हिवे २ हजार नी लिखे छे । महाहिमवत उपर महापञ्चदह छे रूपी पर्वत उपर महा पुंडरीकद्रह छे ते ज्ञी बुदि देवीना निवास भूत छे ते वे हजार
 योजन लांवपणे कहा । इति वे हजार नी समवाय थयो ॥ २००० ॥ हिवे ३ हजार नी लिखे छे । रत्नप्रभा पृथिवीना वज्रकाडना उपरला
 चरमांत श्री लीहितव काडनी चिठिली चरमांत तेइ तीन हजार योजन नवाधायें विचलि आतरी कहा । इति तीन हजार नी समवाय थयो ॥

हापद्ममहापुष्परीकफ्रुदो महाहिमयदुक्खिवर्षधरयोरुपरिवर्त्तिनी क्लीबुद्धिव्योनिवासभूताविति ॥ २०७० ॥ इमीशियंरयणेत्यादि अयमिहभावार्थः रत्नप्र
 भाष्टयिष्या. प्रथमस्य षोडशविभागस्य खरकाखाभिधानकाखस्य वज्रकाण्ड नामरत्नकाण्ड द्वितीयं वेडूर्यकाण्डं तृतीयं लोहितचकाण्डं चतुर्थं तानिच प्रत्येक
 साहस्रिकाणीति त्रयाणा यथोक्तमन्तरभवतीति ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिद्धदो निषधनीशवर्षधरोपरिस्थितौ धृतिकीर्त्तिदेवोनिवासाविति
 ४००० ॥ धरणिताब्दित्यादि धरणीतले धरण्यासमेभूभागइत्यर्थः रुययनाभीतीति ऋहपएसोरयगो तिरियलोगसमज्जयारमि एसपहवोदिसाणं एसे

स्साइं ज्ञायामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पञ्जाए पुढवीए वयरकंठस्सउवरि
 ह्वाउं चरमंताउं लोहियककंठस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं तिन्निजोयणसहस्साइं ज्ञवाहाए ज्यंतरे प० ॥
 ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिद्धहा चत्तारि जोयणसहस्साइं ज्ञायामेणं प० ॥ ४००० ॥
 धरणितलेमंदरस्सणं पद्यथस्स वज्जामज्जेदसञ्जाए रुययनाभीउं चउदिसि पंच २ जोयणराहस्साइं ज्ञवाहाए

३००० ॥ हिवे ४ हजार नो लिखे के । तिगिच्छिद्धह निषधने उपर नीलवंतवे उपर वेसरीद्धह ए विहुं धृति देवी कीर्त्ति देवी ना निवास भू
 के ते ४ हजारयोजन लांघ पणे कल्ला इति ४ हजार नो समयाय थयो ॥ ४००० ॥ १ × १ × १ + १ × १ × १ ×
 हिवे ५ हजार नो लिखे । धरणीनेविधे मेरु पर्वतनी गहुमध्य देश भाग रुचक तेहीज गभिचक्र तुंवातो परे आठ प्रदेशी रुचक नामि कणा नामियकी
 चिहुदिशि विदिशिपांच पांच सहस्र योजन त्रयाधाये विचाले प्रातरो कल्लो । मेरु पर्वत दश हजार योजन जाडी के तेमटे मध्यभाग थको विहुदिशि

वभवेअणुदिसाणति ॥१॥ रुचकएव नाभि चक्रस्य तुवमिधेति रुचकनाभि स्रतथतस्रष्वपिदिह पंचसहस्राणि मेरु स्रस्य दशसहस्रविक्रमालादिति ॥ ५०००
००० ॥ इमीसेणमित्यादि रत्नकाण्डमशम पुलककाण्डसमभिमिति सप्तसहस्राणि ॥ ७००० ॥ हरिवासिवादि इहार्थे गाथाई' हरिवासिद्वग

मंदरपट्टए प० ॥ ५०० ॥ सहस्रसरे कप्ये ढविमाणावाससहस्रा प० ॥ ६००० ॥
इमीसेणं रयणप्यजाए पुढवीए रयणस्य कळस्य उवरिस्राउ चरमंताउ पुलगस्य कंऊस्य हेठिल्ले चरमंते
एसणं सत्तजोयणसहस्राइं झ्वाहाए झ्पंतरे प० ॥ ७००० ॥ हरिवासरय्ययाणं वासा झ्पुठ
जोयणसहस्राइं साइरेगाइं विल्यरेणं प० ॥ ८००० ॥ दाहिणहृजरहस्य णं जीवा पाईण

पांच पांच हजार योजन पासीये । इति पांच हजारनी थयी ॥ ५००० ॥ हिवे ६ हजार नी लिखे के । सहस्रार आठमे देव लोके ६ हजार वि
मान कक्षा इति ६ हजार नी समवाय थयी ॥ ६००० ॥ हिवे ७ हजार नी लिखेके । एथी ये रत्नपमा पृथिवी नी पहिली रत्नकांड तेहनी
उपरिल्ली चरमांत तेहथकी पुलककाण्ड सातमी तेहने हेठिल्ली चरमांत सातहजार योजन लगे आवाधाये मिचाले आंतरी कल्ली ॥ इति सात हजार नी
थयी ॥ ७००० ॥ हिवे आठ हजारनी लिखेके । एह मथिक हजार योजन के तेमटे युगलियाना हरिवर्ष अनी रथ्यक वासलेच ८ सहस्र
योजन सातिरेक भांभेरा एतले एकदूस योजन उगणिसहाइया एककला विखारपणी गिहुलपणे कक्षा ॥ इति आठ हजारनी थयी ॥ ८००० ॥

बीसा बुलसीयसयाकलायएक्कायन्ति ॥ ८००० ॥ दाहिणेलादि दक्षिणेभागी भरतस्थेति दक्षिणाभिमतं तस्य जीविवजीवा ऋज्वीसीमा प्रा
 चीन म्बर्वतः प्रतीचीन म्बश्चित आयता दीर्घा प्राचीनप्रतीचीनायता दुहश्रीत्ति उभयतः पूर्वापरपार्श्वयोरेत्यर्थः समुद्रं लवणसमुद्रं स्रष्टा शुभवतीनवसह
 म्ब्राखायामत इहीक्ता स्थानान्तरेतु तद्विशेषोऽय नवसहस्राणि सप्तयतान्यष्टचत्वारिंशदधिकानिष्ठादशच कला इति ॥ ८००० ॥ १०००० ॥

पठ्ठीणायया दुहड समुद्रं पुठा नवजोयणसहस्साइं अ्यायामेणं प० ॥ १००० ॥ मंदरेणं प
 ब्रए धरणितले दसजोयणसहस्साइं विरुक्त्रेणं प० ॥ १००० ॥ जंबूद्वीवेणं द्वीवे एणं जोय
 णसयसहस्सं अ्यायामविरुक्त्रेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेणं समुद्रे दोजोयणसयसहस्साइं

हिंवे नवहजार नो लिखेके । दक्षिणार्धे भरतनी जीवा सरल समा प्राचीन पूर्वधकी माडी प्रतीचीन पश्चिमे आयत लांबी पूर्व समुद्र अने पश्चिम समुद्र
 लीं समीक्षिते नवसहस्र योजन आयामपणे लांबपणेकही इति ८ हजारनीथयो ॥ ८००० ॥ हिंवे दश हजार नो लिखेके । मेरुपर्वत धरणीतले
 दश सहस्र योजन पिहुलपरें कही इति दश हजार नो थयो ॥ १०००० ॥ हिंवे लाख नो लिखेके । असख्यात द्वीप माहि मध्य जंबूद्वीप यतस
 हस एतले लाख योजन लांबपरें पिहुलपरें कही इति लाखनी थयो ॥ १००००० ॥ हिंवे बे लाखनी लिखेके । लवण समुद्र पहिली बे लाख
 योजन पिहुल परें चक्रवाल चक्राकारे जंबूद्वीपने बौटी रह्यो के ॥ इति बे लाख नो थयो ॥ २००००० ॥ हिंवे त्रिण लाख नो लिखे के ।

ग्रहणं हि विना नान्यद्भवग्रहणं षष्ठं श्रूयते भगवत इत्येतदेव षष्ठमवग्रहणतया व्याख्यातं यस्माच्च भवग्रहणादिदं षष्ठं तदप्येतस्मात्षष्ठमेवेति सुष्टयति तीर्थक
रभवग्रहणात्षष्ठे पीडित्त्वभवग्रहणे इति ॥ १००००००० ॥ उसभेत्वादि उसभसिरिस्सत्ति प्राकृतत्वेनश्रीऋषभ इति वाच्येत्वात्येननिदेशः कृतः
एकसागरीपमकोटाकीटी द्विचत्वारिंशता वर्षसहस्रैः किञ्चित्साधिकैरुनाप्यल्पत्वा द्विषषसा विधेयितीति ॥ + ॥ इहयएतन्नंतरं संख्याक्रमस
खन्धमात्रेण सम्बद्धाविधिषा वस्तुविशेषाउक्ता स्तएवविशिष्टतरसखन्ध सवधा द्वादश्यांनि प्ररुयन्तइति द्वादशाङ्गस्यैव स्वरूपमभिधित्सुराह ॥ दुवाल
संगेइत्यादि अथ चीत्तरीत्तरसख्याक्रमसवदार्थं प्ररूपणमन्तरमकारि साप्रतसख्यामात्रसंबन्धपदार्थं प्ररूपणायोपक्रम्यते दुवालसंगेइत्यादि तत्रश्रुतपरमपुरष

सहस्रसारे कथ्ये स्रष्ट विमाणे देवताए उववन्तं ॥ १००००००० ॥ उसन्नरस न्नगवन्त
महावीरस्स य एगासागरोवमकोलाकोली श्रुवाहाए श्रुंतरे प० ॥ दुवालसंगे गणिपिऊए

मास क्षमण करी चीथे भवे दसमे देव लोके देव हुया । तिहां थकी पांचमे भवे ब्राह्मण कुंड ग्रामे नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदाने वृषिऊप
ना ५ तिहां थकी ८३ से दिने खचीयकुंड ग्राम नगरे सिद्धार्थ राजाने घरे इन्द्रनी आज्ञायि हरिणे गमिषी देवे त्रिशला देवीनी कूखे श्रवतसा एह क्खी भव
जाणवी इति एक कीटी नी थयो ॥ १००००००० ॥ हिंवे सागरीपमनी लिखे छे । श्री आदिनाथ भगवंतने छेहला श्रीमहावीरने वैयालीस
सहस्र ऊणी एक सागरीपम कीडा कीडी आवाधायें भिचले यातरी कही । एकथकी मांडी कीडा कीडीनी संख्या कही ॥ ॥ हिंवे द्वादश्यांग

स्वांगान्ती वाङ्मयानि हादशाङ्गानि आचारादीनि यस्मिंस्तदादशांगं गुणानांगणोसास्तीतिगणी आचार्यस्तस्यपिटकं सवस्त्रभाजनं गणपिटकं अथ
 वा गणिस्रब्दः परिच्छेदेवचन स्थायीत्तम् आचारसिद्धिर्ग्रीहो जंनान्नीहीइसमगधश्रीड तम्हाआयारधरी भणइपढमंगणिहाण परिच्छेदस्थानमित्यर्थः ततश्च
 परिच्छेदसमूहो गणपिटकमत्रैवपदघटना यदेतन्नगणपिटकं ततद्वाशागप्रज्ञप्तम् तद्यथा आचारः सूत्रकृतइत्यादि सेकितमित्यादि अथ कितदाचारवस्तु यदा
 अथ कीयमाचारः आचरणमाचारः आचार्यत इति वा आचारः साध्वाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरिति भावार्थः एतत्प्रतिपादकोग्न्योथाचारएवीच्यते
 आचारिणिति अनेनाचारेण करणभूतेन अमथानामाचरोव्याख्यायत इति योगः अथवा चारेधिकरण भूते णमित्तिवाक्यालंकारे अमथानां तपःश्रीसमालि

प० तं० श्रुथारे सूयगठे ठाणे समवाए विवाहपन्नती णायधम्मकहाने उवासगदसाने अंतगठदसाने

श्रुणत्तरोववाइयदसाने परहावागरणाइं विवागसुए दिठ्ठिवाए सेकितं श्रुथारे श्रुथारेणं समणणं निगं

नी वर्धने करे छे । इयारह अग बारमी पूर्वं एवं श्रुत रूप परम पुरुष ने १२ अंगसरीखाअंग वली केहवाछे गणीकहीये आचार्य तेहने पेटी सरीखी
 दर्शन चारित्र तेहनी स्थान कळी । तेकहेछे । आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३ समवाय ४ विवाहपन्नती एतले भगवतोसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथा ६ उपस
 कदशा ७ अंतगडदशांग ८ अनुत्तरोपपातिक दशा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवादपूर्व १२ अथ सूते आचार वस्तु अथवा कोण ते आच
 र । आचरवी ते आचार । अथवा ज्ञाचरिये ते आचार ज्ञानादिक आसेवनविधि तेहनी प्रतिपादक अथ पणि आचार कहिये ते आचारांगने विषे
 अमण तपस्वीतेह निगैथ धाहाअथतर अथि रहित तेहना आचार तेजानादिक आचार गोचरतेभिचा ग्रहण ज्ञानादिक तेविनय वैनयक तेहनीफलकर्मच

गितानां निर्घन्याकां सवाह्याभ्यन्तरगुर्व्यरहितानां अमणा निर्घन्याएवभवन्तीति विशेषणं किमर्थमित्युच्यते शाक्यादिव्यवच्छेदार्थं भुक्तञ्च निगन्थसकृतावस
 गेरुयभ्राजीवपत्रह्रासमणत्तितत्राचारी ज्ञानाद्यनेकभेदभिन्नः गोचरोभिचागृह्यणविवलचणो विनयोज्ञानादिविनयः वैनयिक तत्फलं कार्यं चयादिस्थानं
 कायोत्तणीपवयानशयनभेदा चिरूपं गमनं विहारसूत्रादियु गतिचक्रमणमुपाय्यांतरे शरीरस्यभ्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरणं प्रमाण भक्तपानान्धवहारीपध्या
 देर्मानं नियोजन स्वाध्यायप्रत्युपचणादिव्यापारेषु परेषां नियोजन आषासयतस्य भाषासत्याऽसत्या सृषारूपाः समितयईर्यासमित्याद्याःपञ्च गुप्तयोमनीगुस्था
 दयस्त्रिप्तः तथाच शय्याचत्रसतिरुपधिच वस्त्रादिकोमक्त चाग्रनादिपानं चोष्णोदकादौतिहृत् स्वया उद्गमोत्यादनैषणा लक्षणानां दोषाणां विशुद्धिरभाव उद्ग
 मोत्यादनैषणा विशुद्धिस्ततः शय्यादोनासुहृमादि विशुद्गाशुद्धानां तथा विधकारणे ऽशुद्धानांचगृहणं शय्यादिगृहणं तथा व्रतानि मूलगुणा नियमाउत्तरगु

थाणं श्यायारगोयरविणयवेणइयठाणगमणचक्रमणपमाणजोगजुंजणत्रासासमितिगुतीसेज्जोवहिरत्तपाणउ

य स्थापना कायोत्तर्गं गमन विहार भूमिचालवो । चक्रमण उपाय्यांतरे उपाध्यायादिकने अर्थं भमिबो । प्रमाण भक्तपानोपध्यादिकनो मान । योग
 योजन प्रतिलेखनादिकनेविषे परने योजवो व्यापारिवो । भाषासंयत मित्य सृषाभाषाल्यागरूप समिति ईर्यासमित्यादिक ५ गुप्ति गोपिवो । शय्यावसतिउप
 धि वस्त्रादिक । भात अग्रनादिक पान उन्नादिक पाणी उद्गसदोष १६ उल्यादनदोष १६ एषणा गविश्रणा लक्षण दोपनी वियोधी अभाव । शुद्धभक्तपानादि
 कनी ग्रहिवो । तथा कारणे अशुद्धनी शय्यादिकनो ग्रहिवो । व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण । तपउपधान ते १२ बारे भेदे तप । एहसर्वं सुप्रयस्त्रुभलो
 जेह आचारांग ने विषे क्कहो जायक्के । ते आचार सन्नेपे करी पांच प्रकारे क्कहो । तेकहक्के । ज्ञानाचार श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक रूप आठप्रका

यास्तपउपधानं द्वादशविधंतपः तत आचारय गीचरीत्यादि यावद्भूतयथ शय्यादिगृहणं चत्रतानिच नियमासतपउपधानं चेतिसमाहारबंधं स्वस्वतत्सुप्रथ
 स्रचेति कर्मधारयः एतत्सर्वमाख्यायते भिधीयते एतेषु चाचारादिपदेषु यत्रक्वचिदन्यतरोपादाने अन्यतरगतार्थस्याभिधानं तत्सर्वतत्प्राधान्यापनार्थमेवैत्यवसेय
 मिति सेसमासइत्यादि स आचरीयमधिकृत्य गृह्यस्याचारइति संज्ञाप्रवर्तते समासतः सन्निपतः पञ्चविधः प्रकृत स्वयथा ज्ञानाचारइत्यादि तत्रज्ञानाचारः शु
 तत्रानविषयः कालाध्ययनविनयाध्ययनादिरूपी व्यवहारोऽष्टधा दर्शनाचारः सम्यग्ज्ञावताव्यवहारो निःशंकितादिरूपोऽष्टधा चारित्राचारश्चारित्रिणां समि
 त्यादि पालनात्मकोव्यवहारः तपः आचारी द्वादशविधतपोविशेषानुष्ठितिः वीर्याचारी ज्ञानादिप्रयोजनेषुवीर्यस्यागोपनमिति आधारति आचारगव्यस्य ण
 मिललङ्कारे परितासख्यया श्रायन्तीपलब्धेर्नानन्ताभवन्तीत्यर्थः काषाचना सूत्रार्थप्रदानलक्षणं श्रवसर्पिण्युत्कर्षिणीकालं वा प्रतीत्यपरीतेति सख्येयान्यनु

गमउप्यायणसुसोहिसुहासुष्ठुगहणवयणियमतवोवहाणसुप्पसथ्यमाहिज्जइसे समासउ पंचविही प०
 तं० णाणायारे दसणायारे चरित्तायारेतवायारे वीरियायारे ज्ञायारस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाउणुणुणुगदारा
 संखेज्जाउपफ़िवत्तीउ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाउनिज्जुत्तीउ सेणज्जुंगठयाणु पढमेज्जुंगेदी

रे १ दर्शनाचार निःशंकितादिरूप आठप्रकारे २ चारित्राचार आठप्रबचनमातारूप समिति गुप्ति लक्षण ३ तपआचार १२ भेदे तपनी करिवी ४ वीर्या
 चार ज्ञानादिक प्रयोजन ने विषे वीर्यनी अगोपिवी ५ आचारांगगंधना संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोग द्वार अनुयोगव्याख्यातेहनी
 द्वार उपक्रममादिक । संख्याता प्रतिपत्ति द्रव्यादिक पदार्थनी मतांतर तेप्रतिपत्ति । संख्यातावेदा छंद विधिष २ संख्याता श्लोक अनुष्ठुप आदिक । संख्याता

योगद्वाराणि उपक्रमदादीनि अध्ययनानामिव सख्येयत्वात् प्रश्नापकवचनगोचरत्वाच्च संखेज्जाश्रीपण्डितश्रीश्रीत्ति द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमा मतान्तराशीत्यर्थः
 प्रतिमाद्यभिग्रहविशेषा वा सखेज्जावेदन्ति षेष्टकाच्छब्दीविशेषा एकार्थाप्रतिवहवचनसकलिकेत्यन्ये संखेज्जासिलोगत्ति श्लोका अनुष्टुप्छन्दसि संख्यातानियु
 क्तयः नियुक्तानां सूत्रेभिर्धयतया व्यवस्थापितानामर्थानां युक्तिर्घटनविशिष्टा योजनानियुक्तियुक्तिरेतस्मिन्वाच्ये युक्तशब्दलोपाद्वियुक्तिरित्युच्यते एताद्यनिबे
 पनियुक्त्यायाः सख्येयाइति सेणमित्यादिसभाचारीणमित्यलङ्कारे अगार्धतया अङ्गलवणवसुलेन प्रथममंगं स्थापनामाधिक्यत्वरचनापेक्षयातुद्वादशमंगं प्रथम
 पूर्वन्तस्य सर्वप्रवचनात्पूर्वं क्रियमाणत्वादिति द्वीश्रुतस्त्वान्धावध्ययनसमुदायलक्षणी पञ्चविंशतिरध्ययनानि तद्यथा सत्यपरिखा १ लीग विजयो २ सीश्रीसण्जि
 सभात्तं ४ आवन्ति ५ धुयविमोहो ७ महापरिखो ८ वहाणसुय ९ इति प्रथमश्रुतस्कन्धः पिंडिसण १ सेज्जिरिया ३ भासेज्जायाय ४ वल्य ५ पाएसा ६ उ
 गहपडिमा ७ सत्त सत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्तो १६ इति द्वितीय श्रुतस्कन्धः एवमेतानिनिशीथवर्जानि पञ्चविंशतिरध्ययनानि तथा पञ्चाश्रीतिरुद्देश
 नकालाः कायमुच्यते अङ्गस्य श्रुतस्कन्धस्या ध्ययनस्योद्देशकस्य चैतेषां चतुर्णामर्थक एवेद्देशनकालः एवंशस्त्रपरिज्जादिषु पचविंशतावध्ययनेषु क्रमेण सप्त १

सुथस्कंधापणवीसंश्रुज्जयणा पंचासीदं उद्देशणकालापंचासी समुद्देशणकाला श्रुठारसपदसहस्साइं पदगणे

नियुक्ति सूत्रे निषे कहिवा परिथाया अर्थनो जोडिबोते युक्ति विशिष्ट घटनारो योजवी तेनियुक्ति । ते आचारांग अंगार्थपणे अंगलक्षण वस्तुपणे । पहिले
 अगे वेश्रुतस्बंधके पंचवीस अध्ययनके तेकेहा सत्यपरिखा १ लीग विजय २ सिश्रीसण्जि ३ संमत्त ४ आवन्ति ५ धुय ६ विमोहा ७ महापरिखो ८ वहाण
 सुच्यति ९ इति प्रथम स्बंध ॥ पिंडिसण १ सिधि २ रिया ३ भासज्जाया ४ वल्य ५ पाएसा ६ उगहपडिमा ७ सत्तसत्तिकिया १४ भावण १५ विमुत्ति १६ इति

गृह्यत एवं प्रायस्ति अस्मिन्भावतः सस्यगधीते सत्यवमालाभावति तदुक्तक्रियापरिणामाव्यतिरेकात् सएवभवतीत्यर्थः इदंचसूत्रंपुस्तकेषु नदृष्टं नंधांतुदृश्यते
 इतीहव्याख्यातमिति एवं क्रियासारमेवज्ञानमितिख्यापनार्थक्रियापरिणाममभिधायानुनाम्नानमधिष्ठत्याह एवंनायत्ति इदमधीत्य एवं ज्ञाताभवति
 यथेवेहोक्तमिति एवविनायत्ति विविधीविशिष्टोवा ज्ञाताविज्ञाताएवंविज्ञाताभवति तत्रांतरीयज्ञाताभवति तत्रांतरीयज्ञातभ्यः प्रधानतरइत्यर्थः एवमित्यादि
 निगमनवाकांएवमनेन प्रकारेणआचारगोचरविनयाव्यभिधानरूपेण चरणकरणप्रपणता आख्यायत इति चरण व्रतत्रयमणधर्मसंयमायानेकविधं कारणपिण्ड
 विशुद्धि समित्याद्यनेकविधं तयोः प्ररूपयता प्ररूपयैव आख्यायतेइत्यादि पूर्ववदिति सेत्तत्रायारिति तदिदमाचारवस्तु अथवा सोयमाचारीयः पूर्वदृष्टइति

१ ॥ सेकितसूयगडे सूवाधांसूचनात् सूत्र सूत्रेणकृत सूत्रकृतमिति सुष्टयते सयगडिण्येति सूत्रकृतेन सूत्रकृतेवाससमयाः सूच्यते इत्यादिकंठ्यं तथा

वंचरणकरणपरूवणया व्याघविज्जति परूविज्जति नदिसिज्जति उवढसिज्जति सेत्तंत्र्यायारी ॥ 9 ॥

सेकितंसूयगडे सूयगडेणं ससमयासूडज्जति परसमयासूडज्जति ससमयपरसमयासूडज्जति ज्जीवासूड

जाण हीय । एवविस्वतेत्ति विज्ञाताहीयन्नन्यथाशन शास्त्रनाजाणतेह्यकी पिण घणो जाणहीय । एम एणे प्रकारे आचार गोचर विनयादिकने कहिवा
 येकरी चरण यमण धर्म कारण पिण्डविशुद्धि तेहनी प्ररूपणाआख्यायते कहिचे प्ररूपिये निदशीयेडपदेशिये पूर्ववत् । एह आचारांगकक्षी ॥ १ ॥

अयथेत्सूत्रकृताग । सूत्रसूववायको सूत्रेकौधी तेसूत्रकृत जेणे सुयगडाग स्वसमयजिनमत सूचवियेकहिचे परसमयपरमतसूचवीयेकहिचे जीवपदार्थ सूचवी
 ये चेतनालक्षणजीव एहवी कहिचे । अजीवपदार्थ धर्मास्तिकायादिक जिहांसूचवीये जीव अजीव विहुपदार्थ जिहांकहिचे पंचास्तिकायमयलीकसूचविये

सूत्रकृतेन जीवाजीवपुण्यपापाश्रवसवरनिर्जराबंधमोक्षावसानाः पदार्थाः सूच्यते तथा समणार्थमित्यादि अत्र अमणानां मतिगुणविशेषानर्थं स्वसमयः स्थाप्य तद्वृत्तिवाक्यार्थं, तत्र अमणानां किंभूताना मचिरकालप्रव्रजिताना विप्रव्रजिताहि निर्मूलमतयोगवत्यहद्विशयान्त्रपरिचया बहुदुतसंपक्वचिति पुनः किंभूताना कुसमयमोहमद् मोहियाणति कुलितः समग्रः सिधांतोयेषाते कुसमयाः कुतोरिकास्तेषामोहः पदार्थेष्वथथाववीवः कुसमयमोहस्तस्माद्योमोहः शील मनोमूढता तेनमतिर्मोहिता मूढतांनोता येषातिकुसमयमोहमतिर्मोहिताः अथवा कुसमयाः कुसिद्धातास्तेषामोवः सधो मकारस्तुप्राकृतत्वात् तस्माद्योमो होमूढतातेनमतिर्मोहिता येषाते कुसमयौषमोहमतिर्मोहिताः अथवा कुसमयाना कुतोरिकाना मौषोमोषोवा शुभफलापेचया निष्कलोयीमोहस्तेनमति मोहिता येषाते कुसमयमौषमोहमतिर्मोहिताः कुसमयमोहमतिर्मोहितावा तेषांतथासदेहा वस्तुतल्लम्प्रतिथसयाः कुसमयमोह २ मतिर्मोहितानामि

जातिं अजीवासूइजति जीवाजीवासूइजतिं लोगेसूइजतिं अलोगेसूइजतिं लोगालोगेसूइजतिं सूत्र्य गठेण जीवाजीवे पुसपावासवसंवरनिजरणबंधमोक्षावसाणापयत्यासूइजतिं समणाणं अचिरकालपव् इयाणं कुसमयमोहमद्मोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाण पावकरमइलमद्गुणविसोहणत्थं

पचास्त्रिकायरहितश्लोक सर्वात्रये लोकालोक बोहंसववीये सूयगडांगसन्ने चेतनारहितअजीव २ सत्कर्मपुह्लतेपुन्य ३ अशुभकर्मपुह्लते पाप ४ कर्मनोसंचितो तेशाअत्र ५ कर्मनिरोध तेषवर ६ कर्मनो निर्जएवो वेगलोकरिवो तेनिर्जरा ७ नवीकर्म उपार्जवो तेवध ८ सकलकर्मयवी मूकाविबो ते मोच ९ मीजच्छे अवनानच्छेहडे एहवा नवपदार्थ सूचवीये । अमण यतीने मतिगुणविमोधिवाने अथ स्वसमय स्थापिये ते अमण केहवाच्छे । अचिरकाल

तिविशेषणसान्निध्यात् कुसमयेभ्यः सकाशात् येषान्ते सदेहजाताः तथासहजा त्स्वभावसम्पन्ना ननुसमयश्रवणसम्पन्ना बुद्धिपरिणामा लुप्तिस्वभावात् संश्र
 योजान्तो येषांति सहजबुद्धिपरिणामसश्रयिता. सदेहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणाम संश्रयिताश्च ये ते तथा तथा श्रमणानामिति प्रकृतस' किमतश्चाह पाप
 करो विपर्ययशसयात्मकत्वेन कुक्षितग्रहतिनिबधनत्वाद्दशुभकर्माहेतु रतएव च मलिनः स्वरूपाच्छादनाच्छादनिसौख्योमतिगुणोबुद्धिपर्यायस्तस्य विशोधना
 यनिर्झलत्वाधानाय पापकरमलिनमतिगुणविशोधनार्थं असायस्सक्रियावाद्दयसयस्सन्ति अशीत्यधिकस्य क्रियावाद्दिशतस्य ब्यूह कृत्वा स्वसमय, स्थायत
 इतियोगः एव शेषेऽपि पदेषु क्रियायोजनीयेति तत्र न कर्त्तारविना क्रियासम्भवतीति ता मात्मसमयवायिनीं वदन्ति ये तच्छिलाश्च ते क्रियात्रादिनः ते पुन
 रासाद्यस्त्रिवापतिपतिलक्षणा अमुनीपायेनाशीत्यधिकस्य शतस्य सख्याविज्ञेया. जीवाजीवाश्रवस्यस्वरनिर्ज्वरापुराणुखमीचाख्यानवपदार्यान् विरचय्य
 परिपाद्या जीवपदार्थस्याव. स्वपरभेदाबुपन्यसनीयी तयोर्धी गित्यानित्यभेदी तयोर्ग्रथः कालेस्वरालनियतिलभावेभेदाः पत्र न्यसनीयाः पुन रित्य वि
 कल्पाः कर्त्तव्या अस्त्रिजीवः स्वतीनित्यः कालत इत्येकी विवाल्पो विकल्पार्थेऽय विद्यते खल्लात्सास्त्ररूपेण नित्यश्च कालवादिनः उक्तैर्वाभिलापिन द्विती

असीञ्चरसकिरिञ्चावाद्दयसयस्स चउरशीए अकिरिथवाद्दणं सत्तन्हीए अस्साणियवाद्दण वत्तीसाए वेणइय

नौ थोडाकालनीके प्रवज्या जेहनी एतले नवदीचित्ते वली तेअमणकेहवाके कुक्षितके समय सिद्धांत जेहना तेकुसमय कुतीर्थीतिहनी मोह सत्य भावना
 ये निषि अयथार्थीव बोध तेहथको जपनी मोह मूढता तणेकरी मति मोहित छे जेहनी एहवीके । कुक्षितशास्त्र अवणथको सदेह जपनीके । तथा सहज
 समावनी बुद्धिमति तेहनीपरिणामतेहथकी सशयजपनीके जेहने एहवा नवदीचीत अमण साधुके तेहने एहवी कहे । पापनी कारणहार मइली जे म

यानि दृष्टान्तवचना श्युपलक्षणला हेतुवचनानि तदपेक्षया निःस्तरं सारताशून्यं परेषां मतमितिगम्यते सुष्टुपुनरपि प्रतिषेपणीयत्वेन दर्शयन्ती प्रकटयन्ती तथा विविधयासौ सत्वदार्पणायनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन निःस्तरानुगमनीयानेकजीवादितत्वानां विस्तरप्रतिपादनं विविधविस्तारागतमः तथा परमसंज्ञावी ल्यंतसत्यता वस्तूना मद्दम्पर्यमित्यर्थं स्वाविव गुणी ताभ्यां विशिष्टौ विविधविस्तारानुगमपरमसंज्ञावगुणविशिष्टौ मोक्षपहोयारगतिं मोक्षपथावतारको सम्यग्दर्शनादिषुपाणिनाम्प्रसंका विलयर्थः उदाररति उदारौ सकलक्षयार्थदोषरहितत्वेन निखिलतद्गुणसहितत्वेन च तथा उच्चानमेव तमोधकारमात्यन्ति कोधकार मथवा प्रकृष्टमत्रागमज्ञानतम तदेवाधकार अज्ञानतमोधकारस्वा तेन ये दुर्गा दुरधिगमा स्ते तथा तेषु तत्वसामोर्ष्वितिगम्यते दीवस्मूयन्ति प्रकाश

वाईणं तिरहतेसठाणं व्युणदिष्ठियसथाणं बूढकिञ्चा ससमणुठाविज्जांति णाणादिठंतवयणणिरसारंसुठुदरिसयं
ता विविहवित्यराणुगमपरमसंज्ञावगुणविसिंठा मोस्कपहोयारगाउदारा व्युसाणतमंधकारदुग्गेसुदीवशूच्या

एतस्मै नास्त्रिणामतो ८४ भेद जाणिया तेहना आत्मानि अजाणपणी ते श्रेय एहयो जेभदे ते अज्ञानवादी तेहनामत ६७ तेहनी । मनुथपणुपंखी सहनोविनय करिवीजे वदेते विमययादो तेहना ३२ भेद तेहनी । त्रि एशेनेतठु प्रणिण अन्वदृष्टि मियादृष्टिना अत सईकडां तेहनीब्यूह तिरस्सारकरोने । स्वसमयजिनस तने स्थापिये । नाना अनेकप्रकारेदृष्टांतवचन तेणेकरी पामतनेनिःसार असारकरोनेक्षणपे । सुष्ठुभलो आदर्वापणे दरिसयंति प्रगटना अनेकप्रकारसरूप दारूपणादिक अनेक अनुयोग द्वाराश्रित पणे । निस्तरानुगम जीवादितवनी निस्तर प्रतिपादयो तेविविध निस्तरानुगम । तथा परमसंज्ञाप अत्यतवसु नीमत्यपणे तेहोजहिगुण तेणेकरी विशिष्ट विविध विस्तरानुगम परम संज्ञाव गुणविशिष्ट मोक्षपथे अवतारक सम्यक्दर्शननेविषे प्राणीनेमपवर्तक सकल

कारिवा हीपोपमी सोपाणाबेवत्ति सोपानानीव उदतारोहणमार्गविशेषादिव सिद्धिसुगतिगृहीतमस्य सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगति रथवा सिद्धिश्च सु
 गतिश्च सुदेवत्वसुमानुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगती तल्लक्षण यद्गृहाणामुत्तम गृहीतम वरप्रासादश्च सास्य सिद्धिसुगतिगृहीतमस्या रोहण इतिगम्यते निक्खोभ
 निष्कपत्ति निक्खोभौ वादिना बोभयितुमशक्यत्वात् निःप्रकपौ स्वरूपतोपौषदुश्चित्रिचारलक्षणकम्पाम्भावात् कावित्याह सूत्रार्थो सूत्रवार्थश्च निर्युक्ति भाष्य

सोत्राणाचवसिद्धिसुगइगिज्जतमस्स णिसक्खीजनिय्यकंपा सुत्तत्या सूयगळस्सणं परिहावायणासंखेज्जा अणु
 उगदारा संखेज्जाउपठिवत्तीउं संखेज्जाउनिज्जुत्तीउं सेणअणुठयाए दोअं
 अणुणे दोसुयसकथा तेवीसअणुज्जयणा तेत्तीसउदुसणकाला तेत्तीससमुदुसणकाला ठत्तीसंपदसहस्साइं पयग्गेणं
 प० संखेज्जाअणुकरा अणुणतागमा अणुणतापज्जावा परिहातासा अणुणताथावरा सासयाककाणिवत्था णिकाइं

सूत्रार्थदीर्घरहितपणे उदारप्रधानके सूत्रार्थजेहनेविषेशज्ञान तेहोज तमअधकार तेणकरीदुग्गह दुरविगम दुःखसाध्य जसच्चमार्ग तेहनेविषे जेसूत्रार्थ दीवा
 भूत प्रकाशकारी के अज्ञानाधकारनी निषेधकारी ज्ञानरूप उद्योत प्रकाश करे दीवासमान के । सिद्धिलक्षण सुगति तल्लक्षणधर मंदिर उत्तम प्रधानके ते
 हने चादिवनि अर्थे सोपान पाउडोया रूपसूत्रार्थके । वादीपुरुषे निक्खोभ चालिवाशक्य निष्कप योडोईकोईएक पात्रोसकेनही एहवा सूत्रार्थ जिहा सू
 शगडाग सूत्रना परिहा संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमदिक जाणिवा । संख्याती प्रतिपत्ति वादीद्वय मतोतरते प्रति
 पत्ति संख्याताविडा क्खदविशेष संख्याता श्लोक अणुठुपक्खद संख्याता निर्युक्ति सूत्रनेविषे अर्थनी योजवो तेनिर्युक्ति विशिष्टघटना ते निर्युक्ति ते अगार्थपण

रार षड्जादयः सप्त गोभाणि च काश्यपादीनि एकीनपञ्चाशत् जीदसंचालयन्ति ज्योतिषः तारकरूपस्य संचालनानि तिहिंठाणेहिं तारारूढे चलेज्जा इत्यादिना सूत्रेण स्थायन्ते स्थानेतिप्रक्रमः तथा एकापिपत्र तज्जात्यस्य तदनिधेयमित्येकपिधवताव्यक्तं प्रथमेअध्ययनेस्थाप्यतद्प्रतियोगः एवं द्विविधवक्तव्यत्वं द्वितीयेथयने एतद्दतीयादियु यावद्दशविधवक्तव्यत्वं दशमे अध्ययने तथा जीवानां च प्ररूपणताख्यायतद्प्रतियोगः तथा लोगगुहृषणति लोकस्थायिनांच धर्मास्तितायादीनांरूपणता प्रज्ञापना श्रेय माचरसूत्रव्याख्यानादयसेयं नवर मेकविशति बहिगनवालाः कथं द्वितीयतृतीयचतुर्थव्ययनेषु चत्वारथत्वार उद्दिगकाः पचमे त्रये प्रयेते पचदश शेषासु षट् पणामध्ययनानां षट्उद्दिगनकालत्वादिति यावत्तरिपदसहस्राइति षष्टादशपदसहस्रमानादाचाराद्विगुण

यंदुविहजावदसविहवत्तद्वयंजीवाणपोगलाणयलोगठाइचणपरूवणयाञ्च्यधविज्जंतिठाणस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाञ्चणुंजगदारा संखेज्जाञ्चणुंजवत्तीञ्च संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाञ्चसंगहणीञ्च सेणञ्चुंगठ याए तइएञ्चणेपणसुयस्कंधे दसञ्चुज्जयगा एक्कवीसंतदुसणकाला वावत्तरिसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाञ्च

पर्वत सलिला नदी गंगादिक समुद्र लवणादिक सूर सूर्य भवनते असुरना विमान चद्रमादिकना आगर सुवर्णीत्वत्तिभूमौ नदी सामान्यनदी निधी ते नै सर्पादिकनिधान पुरिस जात उन्नत प्रनत भेदे पुरुष प्रकार स्वर ते षड्जादिक ७ गीत्र काश्यपादिक ४६ ज्योतिष तारारूप तेहना संचालन तिहिंठाणे हिं । तारा रूपे चले इत्यादिक एतला स्थानांगे थापिये । एक भ्रिनि कश्चिक्वो विविधनी जिहां लगे दसविध ठाणालगे कश्चिक्वो । जीवनी पुहलनी प्ररूप णाठाणांगे करी । लोकस्थापये धर्माशिक्षायनी गरूपणा ठाणांगे कही । यावना मूर्तार्थ प्रदानरूप कही अनुयोगहार उपक्रमादिक संख्याती प्रतिपत्ति

त्वात् सूत्रकृतस्य ततोऽपि द्विगुणत्वात् स्थानस्येति ॥ ३ ॥ सेकितमित्यादि अथ कोसौ समवायः सेत्रेणु प्राक्तत्वेन वकारलोपात् समाये इत्युक्त्वा
समवायनं समवायः सस्यकपरिच्छेदइत्यर्थः तद्विषयं गृह्योपि समवाय स्वधाघाह समवायेन समवायेवा स्वसमयाः सूत्र्यन्ते इत्यादिकं तया समवायेन
समवायेवा एगइयाएति एकद्वित्रिचतुरादीनां शतान्दानां कोटाकोट्यंतानां वाएगथ्याएति एकेचतेअर्थीशैलिकार्या रूपां अथमर्थः एकेषां केषाञ्चि न्न सर्वेषां

स्कराच्युणंतागमा च्युणंतापज्जवा परिहातसा च्युणंताथावरा सासयाकठा णिवद्या णिकाइया जिणपस्यत्ताजा
वाअ्याधविज्जति पस्यविज्जति परुविज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति सेणणाए एवविस्साए एवंचरणकरणपरु
वणयाअ्याधविज्जति सेत्तंठाणे ॥ ३ ॥ सेकितंसमवाएणं ससमयासूइज्जति परसमयासूइज्जं

वादीहयमतांतरप्रतिपत्ति । सख्याता वेडा छदविशेष । सख्याता श्लोक अनुष्टुपछद । सख्यातो सगृहणी । ते अंगार्थपणे नीजिगी एक श्रुतस्लंधना दस
अथयन एककोस उदेशन काल उदेशना अवसर । वहुत्तरि सहस्रपद पदने परिमाणे कथा संख्याता अचर तिमज पूर्वनीपरे परिता अनंतानही वस
वेइन्द्रियादिक अनतास्यावर वनसख्यादिक द्रव्यार्थनयेकरी सासताके । पर्यायार्थपणे कौधा सूत्रार्थपणे गंध्या । उदाहरणे करी प्रतिध्या । वीतरागे कथा
भाव पदार्थ कहिये छे । नामादिकभेदनी कहिवी लोकेकरी प्ररूपिये । सर्वदा निर्देशिये उपदेशिये । तैठायांग एहवोछे । एहभणीने जाण एम घयोजाण
होय । एम चरण साधुभवतरूप कारण पिडनिशुद्ध्यादिकनी सूया विज्जति ॥ ३ ॥ एतत्तु । समजकारि जाणियो
तेसमवाय समवायांगसूने स्वसमय जिनमत सूचवीयेछे । एम परसमय सूचवीयेछे स्वमतपरमत सूचवीयेछे समवायांगी करी । एकछे प्रथम जेहने एहवावे

निखिलानां स्तम्भमशगला दूर्यानां जीवादीनां मेगुत्तरिण्यं चिं एकावतरीयस्वांसा एकीचारा सैव एकीत्तरिका इह प्रावृतत्वात् ह्रस्व ल्परिवुद्धिश्चि परिबृद्धि
 शैति समनुगीयते समवायेनेति योगः तत्रच परिवर्तनेन संख्यायाः समसस्येयं चण्डस्य चान्येन सम्ख्यादेकीत्तरिका अनेकीत्तरिका च तन्नयतं यावदेकीत्त
 रिका परतो ऽनेकीत्तरिकेति तथाद्वादशाक्षस्य च गणपिटकास्य पञ्चव्यति पर्यवपरिमाणं प्रभिधेयादि तद्ब्रह्मसंख्यानं यथा परित्तातसा इत्यादि पर्यवशब्द
 स्यच पञ्चव्यति भिदयः प्राकृतत्वात् पर्येकः पर्येक इत्यादिप्रति पञ्चवा पञ्चवारस्य पञ्चवाः अदयमा म्त्वरिमाणं समणगाइल्लिति समनुगीयते प्रतिपाद्यते
 पूर्वोक्तमेतार्थं प्रपञ्चयन्नाह ठाणगेलादि ठाणगसगस्यति आणकप्रत्येकादाना यत्ताना संख्यास्थानानां तद्विभिनतात्तादिभेदात्ताना भित्थर्थः तथा द्वाद
 यधी विस्तरौ यस्याचारादिभेदेन तत्त्वादयविधिस्यार तस्य श्रुतज्ञानस्य जिभूतस्य जगज्जीवित्तस्य भगवतः श्रुतातिशययुक्तस्य समा

ति ससमथपरसमथासूइज्जति समवाएणं एकाइयाणं एगठाणं एगुत्तरियंपरिवुद्धीए दुवालसंगस्सयगणिपिठ

गस्स पल्लवगेसमणगाइज्जइ ठाणगसयस्सयबारसविहवित्थरस्ससुयणाणस्स जगजीवहियस्सन्नगवत्त समासे

णिण्यार प्रादि कीटिलगी एकप्रथं जीवादिक पदार्थानो इकेक आगलि २ परे पधरिवो ते सगवायांग कहिये । द्वादथाग कोहवी छे । गणी आचार्य तेह
 ने पिटकारत्तकरडीया सरीखी छे तेहनी पल्लव अत्रयव तेहनी परिमाण जिहा कहिये स्थानवा श्रत एक प्रादि सो छे छेइछे जेहने एहवी संख्या स्थानक
 तेहनी गारे प्रकारे विस्तरवो एहवी श्रुतज्ञानछे । ते श्रुतज्ञान केहवी छे । ते श्रुतज्ञान जगतना जीवने हितरूपछे । बली पूज्यछे । एहवा श्रुतज्ञाननी
 संखेपे समाचार स्थानक २ प्रति श्रंग प्रति अनेक प्रकारे कहिवा योग्य लक्षण व्यवहार कहिये छे । ते समवायांग ने विवि नाना विध जीव पञ्जीव

सेन सकेपेण समाचारः प्रतिस्थान प्रत्यङ्गञ्च विविधाभिधेया भिधायकत्वलक्षणी व्यवहारः आहिज्जइति आख्यायते अथसमाचाराभिधानामस्तरं तत्र यदुक्तं तदभिधातुमाह तथ्येत्यादि तथ्यति तत्रैव समवाये इतियोगः नानाविधः प्रकारो रेषान्ते नानाविधप्रकाराः तथा ह्येकोन्द्रियादिभेदेन पचप्रकारा जीवाः पुनरैकैकप्रकारः पर्याप्तापर्याप्तादिभेदेन नानाविधः जीवाजीवायति जीवाञ्जीवाच्च वर्णिता विस्तरेण महतावचनसन्दर्भेण अपरेपिच बहुविधा विशेषा जीवाजीवधर्मावर्णिता इतियोगः तान्वलेशतत्राह नरयेत्यादि नरयति निवासनिवासिनालभेदोपचारा द्वारका स्तत्रनारकतिर्यन्तुजसुरगणानां सखन्धिन आहाराद्य स्तत्र आहारञ्चोज आहारादि राभोगिज्ञानाभोगिज्ञास्वरूपोनैकधा उत्त्वासोऽनुसमयादिकालभेदेननैकधा लेखाकृष्णादिकाषोढा प्रावाससख्या यथा नारकावासानां चतुरश्रीर्तिलचाणीत्यादिको आयतप्रमाणनामासाग्भिर्वसंख्यातासख्यातयोजनायामता उपलब्धत्वा दस्य विष्कम्भनाहल्य परिधिमानाव्ययत्र द्रष्टव्यानि उपपातएक एकएवसमये नेतावताभितावतावा कालव्यवधानेनोत्पत्तिः च्यवनमेकसमये नेतावतामित्यतावा कालव्यवधानेन

पुं समायारे आहिज्जतितत्यगणाविहृप्पगारा जीवाजीवायवस्त्रियावित्थरेण अत्रेरेविच्च्य बज्जविहाविसेसा नरगतिरियमणुअसुरगणणं आहारुस्सासलेसा आवाससंखञ्ज्याययप्पमाणउववायचवणउगणहणेवहिवेय

पदार्थ वर्णव्या विस्तारिकरी । अनुरायणि घणप्रकारे विशेष जीवाजीव पदार्थ वर्णव्या । नरकगति तिर्यच मनुष्य देवता गण संबधीना आहार आभोगिक अनाभोगिक श्रीजलीमादिक भेदे' कारी अनेक प्रकार । तथा उच्छ्वासीच्छ्वास लेखा कृष्णादिक आवास संख्या नरकावासा ८४ लक्ष आयतप्रमाण आयाम विष्कम्भ परिधि प्रमाण । उपपात एकैसमे केतला एक नारुकादिक जीव ऊपजे । एके केतला मरे । चवे अवगाहणा श्रीरानीप्रमाण अविधि अंगुलाने अ

मरणं भ्रवगाहना शरीरप्रमाणमङ्गुलासंख्येयमागादि भ्रवधि रंगुलासंख्येयभागैवविषयादि वेदना शुभाशुभस्वभावा विधोर्नानिभेदा यथा सप्तविधा नार
 का इत्यादि उपयोग आभिनिबीधिकादि द्वादशविधः योगः पञ्चदशविध इन्द्रियाणि पञ्च द्रव्यादिभेदात् विंशतिर्वा श्रोत्रादिच्छिद्रायपचयाष्टौवा कषायाः
 क्रीधादयः आहारशीच्छासद्येयादिद्वन्द्व स्तः कषायशब्दा अथसामबहुवचनलोपीदृष्टव्यः तथा विविधाच जीवयोनिः सचित्तादिकं जीवानां तथा विष्कम्भी
 त्सेधपरिचयः प्रमाणं विधिविशेषाय मन्दरादीनां महीधराणांमिति तत्र विष्कम्भी विस्तारउत्सेधउच्चलं परिरयः परिधिः विधविशेषा इति योगः तथा
 बर्षाणांविधयो भेदा यथा मन्दरा जम्बूद्वीपैयधातकीखण्डौयपीष्कारादिकभेदा तिधा तद्दिशेषसु जम्बूद्वीपको लचीन्नः श्रेयासु पंचाशीतिसहस्रीच्छिता इ
 त्येवमन्येष्वपि भावनीयं तथा कुलकरतीर्थकरगणधराणा तथा समस्तभरताधिपानां चक्रिणांचैव तथा चक्रधरहलधराणां च विधिविशेषा इतियोगः तथा

णाविहाणउवउगजोगा इन्द्रियकसायविविहायजीवजोणी विरुंजुस्सेहपरिरयप्यमाणं विहिविसेसायमंदरा
 दीणं महीधराणं कुलगरतित्यगरगणहराणं समस्तभरहाहिवाणचक्ष्णीणंचैव चक्षुहरहलहराणय वासाणयनि

संख्येयभागैव विषयादि वेदना शुभाशुभ स्वभावनी विधान भेद उपयोग मतिज्ञानादिक १२ भेदे योग १५ भेदे इन्द्रिय ५ कषाय क्रीधादिक विविध च
 नेक प्रकार जीवायोनि जीवोत्पत्तिस्थानक विष्कम्भ पिङ्गल पणो । उत्सेध जंचपणो । परिधिप्रमाण विधि विशेष विरुंभ उत्सेध परिधि इत्यादिक भेदे
 मन्दरादिक पर्यतनी कुलगर विमलवाहनादिक तीर्थकर ऋषभादिक गणधर गौतमादिकनी सगलाई भरत चक्रधरतीनी चक्रधर यासुदेव हलधर बलदेव

वर्षाणाञ्च भरतादिचेत्राणां निर्गमाः पूर्वथः उत्तरैषामाधिक्यानि समायत्ति समवये चतुर्थेऽङ्गे वर्णिता इतिप्रक्रमः अथेतन्निगमयन्नाह एतेचीत्ताः पदार्था
 अथैवधनुतनुवातादयः पदार्था एवमादयः एवंप्रकाराः अत्रसमवाये विस्तरैणार्थाः समाश्रीयन्ते अविपरीतस्वरूपगुणभूषिताबुद्धांगीक्रियंतइत्यर्थः अथवा
 समस्यन्ते कुप्ररूपणस्थ, सध्यकप्ररूपणायां चिद्यन्ते शेषनिगदसिद्धमानिगमनादिति ॥ ४ ॥ सेकितवियाहेइत्यादि अथकीयं व्याख्या व्याख्या

गमायसमाए एणुअणयेएवमाइत्यावित्यरेणं अ्यासमाहिज्जति समवायरूपेणं परित्तावायणाजावसेणं अं
 गठयाए चउल्येअणे एगेअज्जयणे एगेसुयस्कंधे एगेउडेसणकाले एगेसमुडेसणकाले एगेचउयाले पदसहस्से
 पदग्गेणंप० संखेज्जाणिअ्यस्कराणि जावचरणकरणपरूवणया अ्याधविज्जति सेत्तंसमवाए ॥ ४ ॥

नी वर्ष वैचनो नैर्गमा पहिल्याथकी अगितानो अधिकारपणे समवायांग पणे । चीथे अंगी एह पूर्वोक्त पदार्थ वर्णय्या एह पूर्व कक्षा तेअनैरापणि पदार्थ
 धन तनु वातादिक समवायांगे विस्तारपणे पदार्थ आश्रीये । समवायांगनी वाचना सूत्रार्थ दानरूप । यावत् शब्दे वेढालगे जाणवो स्त्रीक सख्याता
 इत्यादिक आचारांगनी परे सर्व कहिवो तेअर्गार्थपणे चीथे अंगी एक अध्ययन एकश्रुतस्तध एक एक उद्देशनकाल एक एक समुद्देशनकाल एकला
 ख ४४ हज्जार पद पदपरिमाणे कक्षा । सख्यात अचर जाव यावत् शब्दे एमचरणसाधुव्रतरूप कारण पिडविशुद्धादिकनी प्ररूपणा कहियेके । तेसमवा
 यांग चीथी ॥ ४ ॥ अथ खं एह व्याख्या बखारिणिये अर्थ जेहने विषे तेव्याख्या भगवतीये सूत्रे खसमय जिनमत कहियेके । परमत कहियेके

भव्यजनानां भव्यपाणिना अजालीकी भव्यजनप्रजा भव्यजनपदीया तस्या स्रस्र वा हृदये शित्तरेभिनन्दिताना मितिबिग्रहः तथा तमीरज
 सी अज्ञानपातके विध्वंसयति नाशयति यत्तत्तमीरजीविध्वंस प्रतदज्ञानञ्च तमीरजीविध्वंसज्ञानं तेन सृष्टृष्टानि निर्णीतानि यानि तानि तथा अतएव
 तानि च तानि दोषभूतानि चेतति प्रतएव च तानि ईहामतिबुद्धिवर्धनानि चेतति तेषां तमीरजीविध्वंसज्ञानसृष्टृष्टीपभूते हामतिबुद्धिवर्धनाना न्तत्र ईहा वितर्को
 मतिरवायो निश्चयश्लथः बुधिरौत्पत्तिक्वादिचतुर्विधेति अथवा तमीरजीविध्वंसज्ञानामिति पृथगेवपद म्पाठान्तरेण सृष्टृष्टीपभूतानामिति च तथा कृत्तीस
 सहस्रमणूषयाणति प्रनूनकानि षट्त्रिंशत्सहस्राणि शेषान्ता न तथा इहमकरोऽव्यथापार्दनपातञ्च प्राकृतत्वादनवद्यइति वागरथायंति व्याकियन्ते प्रञ्ज
 नन्तरमुत्तरतया भिधीयन्ते निर्नायकेन यानि तानि व्याकारानि तेषां दर्शनाथकायानादुपनिबन्धनादित्यर्थः अथवा तेषां दर्शना उपदर्शका इत्यर्थः काइत्याह
 सुगत्यबहुविहृष्यारत्ति श्रुतपिपया अर्थाः श्रुतार्था अभिलाषार्थविशेषा इत्यर्थः श्रुतावा कश्चिंता जिनसकाशेिगरधरेण ये अर्था स्त्रे श्रुतार्थाः अथवा श्रुतमिति
 सूत्र अर्था निर्युक्त्वाद्य इति श्रुतार्था स्त्रे च ते बहुविधप्रकाराश्चेति विग्रहः श्रुतार्थानां वा बहुविधाः प्रकारा इति विग्रहः किमर्थं तेव्याख्यायत इत्याह त्रिष्या

बुद्धिवधमाणाण लत्तीससहस्रमणूषयाणं वागरणाणं दंसणात् सुयत्यबज्जविहृष्यगारा सीसहिद्यत्या गुण

नदित श्रुतमोवाक्छे । बली केहवा तम अज्ञानरूपरज अज्ञान पातक तेहनी विध्वंसक नाशक छे रूडीपरे गिण्ये कीवा एणे कारणेदीवारूप एणे कारणे
 ईहा नितर्क मतिने अत्राय निययार्थबुद्धि ते ओत्पत्तिक्वादि चिह्नु प्रकारे तेहने वधारेछे एहवा अतीस हजार जणगही सपूर्ण प्रञ्ज ने देखाडता य
 का सूत्रार्थपणे शिथने हितना अर्थ भणी गुणरूप अर्थ प्रात्यादिक लक्षण हाथ सरीखी प्रधानहाथ । भगवती सूत्रना गणित वाचना । संख्याता प्रनूयोग

॥
 यां हितमनर्थप्रतिघातार्थप्राप्तिरूप स्तदेवार्थः प्रार्थमानत्वा तस्य तस्मै इति किंभूतास्ते अतश्चाह गुरुहस्ता गुरणैवार्थं ग्राह्यादित्यत्रो हस्तद्वयहस्तः प्रधा
 नावयवो येषाते तथा विद्याहस्तस्त्वादितु निगमनातस्त्वसिद्ध नवरं अतमिहाध्ययनस्य सञ्ज्ञा चतुरशीतिः पदत्रयहस्ताणि पदत्रयेति समवायपद्यया विष्णु

हत्या विद्याहस्सनं परित्तावायणा सखेजा अणुनुगदारा सखेजानुपक्रिवतीनु सखेजावेढा सखेजा
 सिलोगा सखेजानु निजुत्तीनु सेणं अणुठयाणुपद्यमे अणुगे एणेसुयस्कंधे एणेसाइरेगे अणुज्यणसते दसउ
 देसगसहस्साइं देससमुद्देसगसहस्साइं लतीसबागणसहस्साइं चउरासीइपयसहस्साइ पयण्णेणं पयससा
 सखेजाइं अस्कराइ अणतागमा अणतापजात्रपरिहातसाअणंताथावरा सासयाकका णिवस्था णिकाइ
 या जिणपसत्ता मावा अ्याधविजांतिपसविजांति परूविजांति निदसिजाति उवदंसिजांति सेणंणाणु एवंवि

धार उपक्रमार्थिक । सख्यातो प्रतिपत्तो । सख्याताविडाक्षदभियेष । सख्याताश्लोक अनुष्ठयादिक । सख्यातो निर्युक्ति । तेह अर्गार्थपणे पांचमिअणे १
 चतुत्कथ १ अधिक १०० अध्ययन दसहजार उदिया दसहजार ससुद्देया ३६ हजार प्रअ ८४ हजार पद समवायागनी अपिअर्थे वेगुणाकीजे तो दोला
 ख ८८ हजार पदथाय । ते इहां नलेवा । संख्याता अजर । अनन्तागमा । अनन्ता पर्याय । त्रसवेइन्द्रियादिक । अनन्तास्त्रावर बनसती द्रव्याधि करी
 शाखताछे । पर्यायार्थ पणे कीधेछे । सूत्रार्थपणे गुथ्या निकार्चित ते हेतु उदाहरणे करी प्रतिस्था । जिन वीतरागे कक्षा जे पदार्थ ते कहियेछे । नामादि
 क भेदे करीप्ररूपियेछे । शुद्धभावि उपदेश करियेछे । ते भगवती सूत्रने विपे शाखता कीधा शाखतादिक पदनीव्याख्या आचारांगाधिकार कीधेछे जिहा

पताया इषानापयणां दन्वया राहियुगत्वे हेनते अष्टागोतिःसहस्राणिचभयत्तीवि ॥ ५ ॥ सेकित्तमित्यादि प्रथ का स्था ज्ञाताधर्मकथा ज्ञाता
 गृध्राचरणानि तल्पपाना धर्म तथा ज्ञाताधर्मकथा दीर्घल संज्ञात्वात् प्रथया प्रथमश्रुतस्त्वधि ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथा स्ता
 च ज्ञाता नप धर्म तथा ज्ञाताधर्मकथा स्वप्न प्रथमत्वत्वर्थं सूक्तारी दर्शयन्त नयाधर्मकपासुणमित्यादि ज्ञातानामुदाहरणभूतानां मेघजुमारदी
 नां नगरादीत्याचार्यते नगरादीनि हाधिगतिपदानि कल्पानि नयर मुद्यानं पणुष्पाफलच्छायोपगतवृक्षोपशोभितं निविधिवेषोत्तममानश बसुजनी यन
 भोजनार्थं यातीति पेष संतरायतनं यनसंज्ञी नैकजातीयैरुत्तमैर्द्वैरुपगोभितगिति प्राघधिज्जति इहयाथलारणा दन्यानि पचपदानि ऽश्यानि यावदयं सूता

शाए एव चरणकरण परूवणया ज्ञाघविज्जति सेसंविद्याहे ॥ ५ ॥ सेकितंणायाधम्मकहाउ
 णायाधम्मकहासुणं णायाणं गगराइं उज्जाणाइं चेइञ्छाइं वणसंछा राधाणो ज्जम्मापियरो समीसरणाइं
 धम्माथरिया धम्मकहाउ इहलीइञ्च परलोइञ्चइह्वीविसेसाजोगपरिञ्चाया पल्लज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोव

कते । परण यम प धर्मव्रत करण पिशुश्रितादिकनी प्ररूपणा ते भगवती सू ने विषे कश्चिये ते व्याख्यात्रंग एतले भगवती अंगपंचमी जाणिनी
 ॥ ५ ॥ सूते ज्ञाता धर्मकथाग । ज्ञाता उदाहरण तणधान जेकथा ते ज्ञाताधर्मकथा प्रथया पहिले श्रुतस्त्वधि ज्ञाता मेघजुमारदिक्कना
 नगर नाम । उमान पर पुण फलेकरो गोभित चैल्य ख्याररायतन । प्रनेक जाति ना ह्वे करी गोभित बनसुड । राजा । माता । पिता । एहनानाम
 समीसरण घणानो एका मौलिन । धर्माचार्यनाम । धर्मनी कथा । इहलीक मनुष्यलीक । परलीक देवगति तेहनी त्त्वधि धियेपनी भोग तेहनी त्या

वयवी यथा नायाधर्मोत्यादि तत्र ज्ञाताधर्मकथासु णमित्यलंकारे प्रव्रजितानां क्व विनयकरणजिनस्वामिशासनवरे कर्मीविनयकरजिनगाथसंबंधिनि श्रेयप्रव
 चनापिचया प्रधानेप्रवचने इत्यर्थः पाठांतरेण समयाण्यविशयकरणजिणसासणमि पवरे किंभूतानां संयमप्रतिज्ञा संयमाभ्युपगमः सेव दुरधिगम्यत्वात् कात
 रनरचीभक्त्या हंभीरत्वाच्च पातालभिवपातांलं तत्र धृतिमतिव्यवसाया दुर्लभा येषति तथा पाठांतरेण संयमप्रतिज्ञापालने ये धृतिमतिव्यवसाया स्तेषु दु
 र्वलाये ते तथा तेषां तत्र धृतिश्चित्तास्वास्थ्यं मतिर्विद्विव्यवसायो ऽनुष्ठानोत्साहदति तथा तपसि नियमोऽश्रवश्यंकरणं क्तपोनियचितं तपः सच तपउपधानंचाऽ

हाणाइं परियागा संलेहणाले तत्रपञ्चस्काणाइं पावोवगमणाइं देवलोगमणाइं सुकुलपञ्चाया पुणवोहि
 लानो अंतकिरियानुय अ्याधविज्जंति जावनायाधम्मकहासुणं पवइयाणं विणयकरणजिणस्वामिसासणवरे
 संजमपइस्सापालणधिइमइववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरत्तगगयणस्सहयणिसिंठाणं धो

य । प्रप्रज्यादीचा । सूत्रनी मेलवी । तपोपधान १२ भेदे तपनी करिवी । पर्याय दीक्षानी काल । सलेखणानी करिवी । भात पाणीनी पचखवी ।
 पाट्पपीपगमन केदीथकीवृचशाखा जिम हालिचाले नही तिम ते यती संशारी कस्सांपछे हलीचाले नही । देवलीकनी जाइवी । उत्तम कुले अ्रवतार ।
 वली वीधिलाभ धर्मनी प्राप्ति । अंतक्रिया ससारना अतनी करिवी । एह सर्व वसु ज्ञाताविषे कहियेछे । जिहां लगे ज्ञाताधर्म कथाने विषे प्रव्रजित यती
 नी विनयनी करिवी तिहांलगे । जिन स्वामि वीतराग देवना प्रधान शासन विषे संयमपालवाभाणी कीधी प्रतिज्ञानी पालवी । धृति चित्तनी स्वस्थपणी
 मति बुद्धि व्यवसाय तेह अनुष्ठान विषे उत्साह तेहने विषे दुर्बल कातर हुयाछे तैयुरुपाने तप तथा नियम अ्रवश्यकरणीय तपोपधान बारे भेदे तप तेहिज

नियंत्रितं तपएव श्रुतीपचारतपोवा तपोनियमतपउपधोनि तेएव एषस कातरजनचीभवालात् संग्रामी दुद्धरभरत्ति अमकारणला दुर्धरभरय दुर्वहलोत्तदि
 भार स्वाभ्यां भग्ना इति भग्नाः पराशुखीभूता स्वधा निसहाणन्ति निःसहा नितरामशक्तास्त्वएव निःसहका निष्ठयांग मूलांगा ये ते तपोनियमतपउ
 पधानरणदुर्धरभरभग्नानिः सहकानिस्वधाः पाठांतरेण निःसहकानिविष्टा स्वीषां मिहच प्राज्ञतत्वेन वकारलीपसविकारणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवरेय
 तथा धीरपरीषदैः पराजिता यासमर्थाः सन्तः प्रारब्धाश्च परीषदैरेव वधीकर्तुं कर्ताय भीक्षमार्गगमने ये ते धीरपरीपहपरजिता सहप्रारब्धरुधाः प्रतएव
 सिषालयमार्गात् ज्ञानाद्दे निर्गताः प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषा धीरपरीपहपरजितासहप्रारब्धरुधसिषालयमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण धीरपरी
 षहपरजितानां तथा सह युगपदेव परीषदैर्विग्रिष्टगुणैर्णिभारोहताः प्रबद्धरुधाः अतिरुधा सिषालयमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्रबद्धसिषालय मा
 र्गनिर्गताना तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपतः आशावशदीपेणमनोरथ पारतंत्र्यवैगुण्येन सूच्छिंता प्रभ्युपपन्ना येते तथा तेषां विषयसुखतुच्छ्याशवशदीपमू
 र्च्छिताना पाठांतरेण विषयसुखेया महच्छ्याःकास्यांविदवस्थायां या चापस्थातरे तुच्छ्याशा तयो वैश्यः पारतंत्र्यं तल्लक्षणैर्नदीषेण सूच्छिंता ये ते तथा तेषांविषय

रपरीसहपरजियाणं सहपारध्रुद्रुसिषालयमग्निगयाण विसयगुहुतुच्छ्यासावसदोसमुच्छ्रियाणं विरा

दुर्वह भार रण संग्राम तेषे करी भन उपराठा यथाछे त्रत्यर्थ त्रयत्नदे सयम मार्गे थात्ताछे बलो धोर रुद्र उपद्रव करी भागाछे एहवा असह असम
 र्थे प्रारब्धा परीषह वसिकरिवाने रुंध्याछे । वली सिषालयमार्गं ते मावमार्गं ज्ञान दर्शन चारित्र यज्ञो नोकलाछे । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दो
 षे करी वसयई तेमूर्च्छित थयाछे । विराध्याछे दर्शनज्ञानचारित्र । यतीना प्रनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार तेषेवारी युज्य

सुखमहेच्छालुच्छायावयदीषमूर्च्छिताना तथा विराधितानि चरित्रज्ञानदर्शनानि वैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुण-
 सारवर्जिता मूलजिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः ग्रन्थकाः सर्वथा अभावा ये ते तद्धेति पदत्रयस्य च कर्मधारयोऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान
 दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारग्रन्थकानां किमतत्राह सप्तारिं सुरुती अपारदुःखा अनन्तलेशा ये दुर्गतिषु नारकतिथेषु मानुषकुदेवेषु भवा अवश
 हयानि तेषां ये विविधाः परंपराः पारंपर्याणि तासांयिप्रपचा स्ते संसाराऽपायदुःखदुर्गतिभयविविधपरपरप्रपचा आख्यायंते इतिपूर्वैशयोगे साद्या धीरा
 णां च महासत्वाना किमूतानां जितंपरीषहकषायसैन्य वै स्ते तथा धृतेर्भनःस्वास्थ्यस्य धनिकाः स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा समये उल्लाही वीर्यं निश्चितीऽव
 श्यभावी येषांते समयसोत्साहनिश्चिताःततः पदत्रयस्य कर्मधारयोऽत स्तेषां जिगपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसयसोत्साहनिश्चितानां तथा राधितां ज्ञानदर्शन
 चारित्रयोगा वैस्ते तथा निःश्लो मिथ्यादर्शनादिनहितः शुद्धवातीचारविमुक्तोयः विद्यालयय मिसिमार्गं स्वात्माभिमुखा येते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधार

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविबिहप्यथारनिस्सारसुत्तयाणं संसारअपारदुस्सदुग्गइ अबविबिहपरंपरापवं
 धा धीराणयजियपरीसहकसायसेसधिइधणियसजमउच्छाहनिच्छियाणं अपाराहियनाणदंसणचरित्तजोगानि

छे । एहवा भाव ज्ञाताने विपे कन्नांके । संसारनेविषे अपार दुख दुर्गति ने विपे उपजयो तेहनी जे अनेन प्रकारनी परंपरा सतति तेहना विस्तारने वि
 पे जेधीर महासत्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे । तेहना प्रवन्ध ज्ञाताने विषे कहिदेके । वली धृति जे मननी स्वस्थपणी तेहीजके
 घन जेहने एतले धृतिना स्वामी । तथा समयनेविषे उल्लाह वीर्यं निश्चित के जेहना । जेणे ज्ञानदर्शन चरित्रनायोग आराध्यछे । जे निःश्ल मिथ्यात्व

शब्दस्य प्रकारार्थत्वा देवप्रकारार्थाः पदार्थाः वित्यरेण्यति निस्त्रेण चमथ्यात्काविल्लिजित् संक्षेपेण भाख्यायन्त इति क्रियायोगः नागाधम्मकायासुखनिव्या
 दि कव्यमानिगमना नवर मेगुणतीसमजाययति प्रथममनुतस्त्वान्ने एकोनविंशतिवित्तिवैच दशेति दशममकहाणवगा इत्यादी भावनेय मिहेकोनविंशतित्रा
 ताध्ययनानि दार्ष्टान्तिकार्थप्रापनलक्षणज्ञातप्रतिपादकाला सानि प्रथमश्रुतस्त्वान्ने द्वितोयेलहिसादिलक्षणस्य धर्म्यस्य कथा आस्थानकानौ लुत्ताअइति तासां
 च दशवर्गा वर्गइतिसमूह स्तवार्थार्थधिकारसमूहात्मकान्यध्ययनाग्येव दशवर्गाद्रष्टव्या स्तान्नज्ञातव्यादिमानि दशज्ञातानि ज्ञातान्येव नतिष्वाख्यायिकादिस

रुमोस्कं एणु अक्षेय एवमाइत्यावित्यरेणय पायाधम्मकहासुणं परिवत्तावायणा संखेज्जा अणुत्तगदाराराजावसं
 खेज्जालु सगहणीत्तु सेंण अणुत्तयाए ठत्तु अणुत्तयाए सुत्तया एणुत्तया एणुत्तया एणुत्तया ते समासत्तु दुविहा पखत्ता

अन्यभी निस्त्रार थो तथा सबेप थो ज्ञाताने विषे कत्ताके । ज्ञाताने विषे सख्यातो वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप । सख्याता अनुयोगद्वार उपक्रममादिक । या
 वत् सख्यातो सग्रहणी लगे जाणिवो स्य थोडो अर्थ घणी ते सग्रहणी । तेह संगार्थ पणे । एम वेठ्ठे अगे वे श्रुतस्त्वान्ने पहिले श्रुतस्त्वान्ने उगणीस प्रध्ययन ते
 १८ ज्ञाताध्ययन संक्षेपथी वे प्रकारे कत्ता । ते कहेके । तेईक प्रध्ययन जेवणुमारारिक चरित्ररूप । कईक जलितरूप समुद्रना अने सूवाना मीडके वा
 तकोधी । इत्यादिक । बीजे श्रुतस्त्वान्ने दश धर्मकथानावर्ण समूह तिहा एकेजीये धर्मकथाने अधिकारना समूहा मकप्रध्ययन ते माहि ज्ञातानेविषे पहिला
 दश वर्ग ज्ञाता उदाहरण रुपतेहने विषे शाख्यायिकादिकानो संभवनथी शेष ८ ज्ञाताने विषे एकेक ज्ञातामाहि पंतालीस २ अधिक प्रख्यायिकना सैकडा

भनः श्रेयानि नवज्ञातानि तेषु पुनरेकैकस्मिन् पञ्चपञ्चत्वारिंशदधिकानि आख्यायिकाशतानि तत्रार्थैकस्या मोख्यायिकायां पञ्चपञ्चीपाख्यायिकाशता
 नि तत्रार्थैकस्यामुपाख्यायिकाया पचपचाख्यायिकोपाख्यायिकाशतानि एवमेतानि सपिण्डितानि किसङ्घातं इग्वीसकोडिसय लक्खापस्थासमेयनीधव्वा
 २१५००००० एवठिएसमाणे अहिगयसुत्सपथारो ॥ १ ॥ तद्यथा दशधम्मकहाण्वग्मा तथ्यणएगमिगाएधम्मकहाए पचपचत्रक्खाइयासयाइ एगमिगाए
 अक्खाइयाएपचपचउक्खाइयासयाइ एगमिगाएउक्खाइयाएपचपचत्रक्खाइउक्खाइसयाइति एवमेतानि सपिण्डितानि किसङ्घात पणवीसकोडिसयं २५००
 ०००० एत्ययसमलक्खणाश्याजक्का नवनागयसवद्धा अक्खाइयमाइयातिण ॥ १ ॥ तेसाहिव्विज्जिपुड इमाउरासीउवगलाणतु पुणएतवज्जियाण पसाणमिण

तंजहा चरित्ताय कज्जियाय दसधम्मकहाणं वग्गा तत्यण एगमिगाए धम्मकहाए पंच पच अक्खाइयासयाइ
एगमिगाए अक्खाइयाए पच पंच उक्खाइयासयाइ एगमिगाए उक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयासयाइ
 काहेवा । तिहा एकैक आख्यायिकेनेविषे पाच पांच सो उपाख्यायिके छे । तिहा वली एकैक उपाख्यायिकेनेविषे पाचपाच आख्यायिके उपाख्यायिकाना
 सैतडाछे । तिहा आख्यायिके नाम कथा उपाख्यायिके ते उपकथा एह सर्व एकठी कारतां । इग्वीसकोडिसय लक्खापन्नासमेयनीधव्वा । २१५००००००
 एव ठिए समाणे अहिगयसुत्सपथारो ॥ १ ॥ तद्यथा । दश धम्मकहाण्वग्गा तथ्यणएगमिगाएधम्मकहाए पच पच अक्खाइयासयाइ एगमिगाएअक्खाइया
 ए पच पंच उक्खाइयासयाइ एगमिगाए उक्खाइयाए पच पंच अक्खाइउक्खाइयासयाइति । एसर्व एकठाकोधा तिवारे २५००००००० पचवीस कोट धर
 ते मांहीयो पाळ्खली आंक एकवीस किरोड पचास लाख पुनरुत्तापणामाटे नाहिर काडिये तो साठे ३ कोटि कथाहीय तेसाटे कह्खे । एव मेव सपूर्वा

विनिर्दिष्टं ॥ २ ॥ सोदितैवैस्मिन् सन्ति प्रसिद्धतथाएव कथानककोट्यो भवन्तीति प्रतएवाह एवमेवसपुष्पावरेणिति भणितप्रकारेण गुणगशीधनेकृते सनीत्युक्तं भवति अष्टाश्री अस्वाइयाजोडीओभवतीति मन्त्राश्रीति आख्यायिकाकथानकानि एताएवमेवत्संख्याभवतीतिकुत्वा आख्याता भगवतामहावीरिणेति तथा सरयातानि पदसयसहस्राणीति किल पञ्चलचाणि षट्सप्ततिश्चसहस्राणि पदाश्रीणि प्रथवा सूत्रालापकपदाश्रीणि संख्यातात्येवपदशतसहस्राणि भवन्तीत्यो सर्वत्र भावयितव्यमिति ॥ ६ ॥ सेकितमित्यादि अथ का स्था उपासकदशा उपासकाः श्रावका स्तत्रतक्रियाकालापप्रतिबद्धा दशा दशा

असयाइ एवामेवसपुष्पावरेणं अरुठानं अस्काइयकोठानं अवंतीति मस्काथाउ एगुणतीसं उद्देसणकाला एगुणतीसं समुद्देसणकाला संखेजाइं पयसहस्साइं पयगणेणं पस्सत्ता तंजहा संखेजाअस्करा जावचरणकर णपरूवणया व्याघविज्जति सेत्त णायाधम्मकहानं ॥ ६ ॥ सेकितंउवासगदसाउ उवासगदसासुणं

पर तेषे प्रकारे पहिलो गुणाकार कश्चि । पछे पाकला अकि आगलीआंक सोधिचि तिवारे साटे ३ कीटिकथानी थाय । तेभगवान महावीर स्वामीधि क ही । ज्ञाताने चिपि उगुणकोस उद्देशन काल उद्देशाना अवसर कहा । उगुणचीस समुद्देशनकाल । संख्याता पदना सत सहस्र ५ लाख ७६ हजार पद परिमाणे कथा । ते कहिछे । यलो सख्याता अचर यावत् शब्देकरी संख्याता वेढा सख्याता शीक ज्ञाताने विधि चरण अमणधर्म कारण पिडविशुक्तादि कनी प्ररूपणा कहिये ते ज्ञातार्थमन्त्रा रूढी भग ॥ ६ ॥ संतिउपासक दशाग । उपासक श्रावकनी क्रियाकालाप प्रतिबद्ध दश अध्ययनके

ध्यनोपलब्धिता उपासकदया स्तथाचाह उपासकदसासुण उपासकानां नगराणि उद्यानानि चैत्यानि वनखण्डा राजानः अस्मापितरो समवसरणानि
 धर्माचार्या धर्मकथा ऐहलौकिकपारलौकिका ऋद्धिविशेषा उपासकानाञ्च शीलव्रतविरमणगुणप्रत्याख्यानपौषधीपवासगतिपादनतास्तत्र शीलव्रताच्यणुत्र
 तानि विरमणानि रागादिविरतयः गुणा गुणव्रतानि प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषध मष्टस्यादिपर्वदिनं तत्रोपवसनमाहारशरीरसत्कारादि
 त्यागः पौषधीपवास'ततोद्धन्देसख्येतेषाम्प्रतिपादनताप्रतिपत्तय इतिविग्रहः श्रुतपरिग्रह स्तपउपधानानिचप्रतीतानि पडिसाओत्ति एकादशउपासकप्रतिमाः
 कायोस्तरावा उपसर्गदेवादिक्तोपद्रवाः सलेखना भक्तपानप्रत्याख्यानानि पादपोपगमनानि देवलोकागमनानि सुकुलोप्रत्यायाति पुनर्वीधिलाभोऽन्तक्रिया

उवासयाणं नगराई उज्जाणाई चेइञ्चाई वणखंठा रायाणो अस्मापियरो समोसरणाई धम्मायरिया धम्म
 कहाउ इहलोइयपरलोइयइहिविसेसा उवासयाणं सीलइयवेरमणगुणपञ्चस्काणपोसहोववासपठिवज्जि
 याउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाई पठिमाउ उवसग्गा संलेहणाउ ऋत्तपञ्चस्काणाई पावोवगमणाई देवलोग

ते उपासक दया कहिये । तेहने त्रिषे आवकना नगर नाम उद्याननाम चैलनाम वनखण्डनाम राजानाम माता पितानाम समोसरण धर्माचार्य नाम
 धर्मकथा इहलोक परलोक संबधी ऋद्धि विशेष । आवकना शील शुभाचार व्रत १२ अणुव्रत रागादिकनी विरति गुणव्रतप्र त्याख्यान ते नवका
 रसी प्रमुख पौषध अष्टस्यादि पर्वतिथिये उपवास करिवो ते पौषधीपवासनो प्रतिपादवी कहिवी । श्रुतनो सांभखिवी । तथा वारे भेदे तपनी करिवी ।
 प्रतिमा ११ आवकनी उपसर्ग देवताना कौषा । सलेखणा तपे करी आत्माने कषाय दुर्वल करिवी । भातपाणीनी पचखवी । संथारी । देवलोके जाइवी

शास्त्रायन्ते पूर्वोक्तमेव प्रतीविशेषतः ग्राह उवासगेत्यादि तत्र ऋत्विशेषा अनेककोटीसंख्यद्रव्यादिसम्पत्तिशेषाः तथा परिषदः परिवारविशेषा यथा माता
 पितृपुत्रादिका ज्यन्तरपरिपत् दासीदासमिनादिका ब्राह्मपरिषदिति विस्तरधर्म्यवशानि महावीरसन्निधौ ततो बोधिलाभो भिगमः सम्यक्तस्य विद्युत्प्र
 ता स्थिरत्व सम्यक्तशक्तिरेव मूलगुणोत्तरगुणा अणुततादयः प्रतिवारा स्तोत्रमेव यथबन्धादितः खण्डनानि स्थितिविशेषा शोपासकपर्यायस्य कालमानभेदाः
 यदुविशेषाः प्रतिमाः प्रभूतभेदाः सम्यग्दर्शनादिप्रतिमाः अभिगृह्यहणानि तेषामेवच पालनानि उपसर्गाधिसहनानि निरुपसर्गशोपसर्गाभावशैल्यर्थः तपं

गमणाइं सुकुलपद्मथा पुणोबोहिलात्रो झंतकिरियाउं झ्यावविजांति उवासगदसासुणं उवासयाणं रिद्धिविसे
 सा परिसावित्थरधम्मसवणाणि बोहिलात्र झन्निगमणे समञ्जत्तविसुद्धया थिरत्त मूलगुणउत्तरगुणइयारा
 ठिइंविसेसा बज्जविसेसा पठिमाजिग्गहणहणउवराण्णाहियासणिरुवसणा तवोय चित्ता सीलह्वयगुणवेर

अने बलीसुखे उपजन्तो । बली बोधनौ प्राप्ति । अतत्रिया करिबो । एहसर्वं उपासक दशमाहि कधिरेछे । उपासक दशाने विषे श्रावकनो ऋद्धिविशेष
 अनेक धन कोटि संख्या विशेष । परिषदा परिवारनो विस्वार । भगतत महावीरने पाणे धर्मनो सामंलिबो । धर्मनो प्राप्ति । धर्मनो आदरिवो । सम्यक्त
 नो निश्चयता निर्मलता । धर्मने विषे स्थिरपणो । मूलगुण उत्तरगुणना अतीचार यथ वंपादिक । स्थिति विशेष । श्रायकपणांना कालनो अर्थादा । सम्य
 गर्शन प्रतिमा अभियहनी बहु विशेष कहिये बहुय भेदनी ग्रहिवो पालवो उपसर्गनी सहिवो । तथा निरुपसर्ग उपसर्ग विनापणि चित्र विचित्र अने

सिच चित्राणि शीलव्रतादयो जन्तुरीकरूपा अपथिसाः पद्यात्कालभाषियः अकारस्वमङ्गलपरिहारार्थः सरणरूपे अस्ले भवा मारणान्तिकाः आलशरीर
स जीवस्यच सलेखनाः तपसा रोगादिजयेनच कशीकरणानि आत्मन, सलेखनाः ततः पदत्रयस्य कार्यधारय सासां अक्षीस्यति जीषणाः सेवनाः कारणा
नौत्वर्थः ताभिरपश्चिममारणान्तिकासलेखनाजोषणाभि रात्मान यथाच भावयित्वावहनिभक्तानि अगमनतया च निर्भोजनतया च्छेदयित्वा व्यवच्छेद्य उ
पपन्ना सृलेविगम्यते कोषु कल्पवरेषु यानि विमानोत्तमानि तेषु यथानुभवति सरवरविमानानि सरपुडरीकाणीव सरपुडरीकाणि यानि तेषु कानि सौख्या
न्वनुपमानि क्रमेण भुञ्जीतमानि ततः आयुष्कञ्चयेण च्युताः सन्ती यथा जिनसते बोधि लब्धा इतिविशेषः यथाच संयमीत्तम अधान सयम तमोरजश्रीष

सण पञ्चस्काणपोसहोववासा अणुपच्छिममारणतियाय संलेहणा ऊसणाहिं अणुप्याणं जहय ज्ञावइत्ता वल्लणि
जत्ताणि अणसणाए च्छेअइत्ता उववसा कण्वरविमाणुत्तमेसु जह अणुत्तवंति सुरवरविमाणवरपांठरीएसु
सोस्काइं अणोवमाइ कमेण नुत्तूण उत्तमाइं तउ अणुत्तमाइं जहजिणमयस्मि वोहिलच्छूणय सं

क प्रकारे शील शुभाचार व्रत अणुव्रतादिक विरति प्रत्याख्यान नवकारसी प्रमुख तथा पौषधीपवास छेहले काले मरणातिक सलेखना मरणरूप अ
तकाले हीय एहवी सलेखना आत्मानि कर्मथी हलुको करिवी । तेहनो जीषणी तेहनो देविवी तेषे आपणा आत्मानि भाविदे जिमघणे प्रकारि अनसने
कारी कर्मछेदीने उपनीछि प्रधान उत्तम देवलीक ने विषे सुअ अनुभवच्छे । देवता संबंधी प्रधान विमान प्रधान पुडरीक कमलनीपरे उत्तम तेहने विषे
कथान जाय एहवा अनुपम सुखप्रते क्रमे अनुक्रमे भोगवीने देवलीक थकी आयुचयथी चध्याथका जिम जिन सतने विषे बोधि श्रीजिनधर्मनो प्राप्ति

मयो वैद्योरपि लक्षणानि स्वरूपाणि तत्र स्वाध्यायस्य लक्षणं सज्जाएणापसत्यंज्ञाणमित्यादि ध्यानलक्षणं यथा अंतोमुहुत्तमित्तिचित्तावस्थाणमेगवत्युमित्यादि
 व्याख्यायन्त इति सर्वत्रयोगः तथा प्राप्तानाञ्च सयमोत्तम सर्वद्विरिति जितपरीषहाया अतर्विधकर्माचये घातिचयेसति यथा केवलस्य ज्ञानादे लीमः पर्या
 यः प्रव्रज्यायाः लक्षणी यायांच यावद्वर्षादिप्रमाणी यथा येनतपोविशेषाश्रयादिना प्रकारेण पाशितो मुनिभिः पादपीपगमनश्च पादपीपगमाभिधानमन
 यन प्रतिपत्नो यीमुनि र्यत्र शत्रुञ्जयपर्वतादौ यावत्किंच भक्तानि भोजनानि च्छेदयित्वा यनशनिनाहि प्रतिदिनं अन्तव्यश्चेदो भवति अन्तव्यतो मुनिवरो
 जातइतिशेषः तमोरज शोधविप्रसुक्तएवच सर्वेपि क्षेत्रकालादिविशिषिता मुनयो मोक्षसुखमशुत्तरञ्च प्राप्ता आख्यायन्त इति क्रियायोगः एते अन्वये चेत्यादि
 इगुताले चैव तहअग्रप्यमायजोगो सज्जायज्जाणेणयउत्तमाण दोरहंपि लखकणाइ पहाणयसंजमुत्तमं जियपरी
 सहाण चउच्चिहकम्मखयस्सि जहकेवलस्सलंत्तो परिथाले जत्तिलेयजहपालिने मुणीहिपावोवगलेय जहिंज एव
 त्तियाणिअत्ताणि ठेअइत्ता अत्तगळोमुणिवरो तमरयोधविमुक्खो मोखकमुहसणतरंचपत्ता एण अन्वयेय एव

१२ भेदे । क्रिया अगुआन । समितिगुप्ति । तिमज अप्रमादना योग । स्वाध्याय भिदुधात नू भणवी । ध्यान धर्म ध्यानादि मुहूर्तं लगे चित्तनू एण प्रपणोति
 स्वाध्यायध्यान । उत्तम एह विहुनालक्षण अत्तगड्दशा मांहि कश्चिंवे के । सयमप्रति जेह पास्या जेणे परीषह जीत्या घाति ४ कर्म ज्ञाना रणीय १ दश
 नावराणीय २ मोहनीय ३ अतराय ४ एहनीनाशकरे जिजम केवल ज्ञाननी लाभहोय प्राप्तिहोय । पर्याय ते दीचानोकाल जेणे मुनीखरे जेतला जेतला तम
 वर्ष प्रमाणे सयम पाल्यो होय । पादपीप गमन अनशनादिक जेह जेणे प्रकारे जेतलामात पाणी छेदीने अत्तवत्त ससारना अतकारक मुनिवर तम

प्राबत् नवरं दशभक्त्यागति प्रथमवर्गपिचयैव घटन्ते नखां तथैव व्याख्यातत्वात् यस्मिन्पणते सत्सवर्गति तप्यमवर्गोदयवर्गपिचया यतीऽत्र सव्यष्टय
 र्गानयामपि तथापठितत्वात् तदुदत्तित्वात् अष्टवर्गः समूहः सचान्तकृताना मध्यमानांवा सर्वाण्यैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततोभगितं अ
 उद्देशकालाश्रयादि इहच दशउद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः तथा सख्यातानि पदशतसहस्राणि पदार्थेणेति तानिच किल त्रयो
 विशति लैवाणि चत्वारिचसहस्राणीति ॥ ८ ॥

माइत्यवित्यरेणं परूवेईं च्युतगरुदसासुणं परितावाथणा संखेजाच्युणुजगवारा जावसंखेजाउसंगहणीउ
 सेणंश्चुगठयाएश्चुठमेश्चुगेणुगेसुयस्कंधे दसश्चुज्जकयणा सत्तवग्णा दसउद्देशसणकाला दससमुद्देशसणकाला सखे
 जाइं पयसहरस्राइपयग्णेण पस्यते सखेजाश्चुकरा जावएवंचरणकरणपरूवणया च्याघविजांति सेतं च्युतग

श्रधकार अज्ञानरूप रजथी संकाथी अगुत्तर प्रधान मीच सुखप्रते पाथी । एह पूरे कल्पाते तथा अगिरापणि पदार्थ इहां अतगडदशा माहि कहिये
 के । प्ररूपियेके । सख्याता वाचना । सख्याता अयुयोगदार । जिहांली सख्याती संगहणी होय तिहांली जाथिबी । अगार्थपणे आठमे अगी एक सुतस्त
 ध दय मध्ययन सात वर्ग तेप्रथम वर्गनी अपेचाये बीजा ० एतले ८ वर्ग समूह । दश उद्देशकाल दश समुद्देशन काल । सख्याता पदना सत सहस्र
 एतले २३ लाख ४ हजार पद परिमाणे कल्पा । सख्याता अक्षर इहां थीमांठी चरण साधुव्रत कारण पिड विशुद्ध्यादिक लीं पूर्वनी परे पाठ कहि
 वो । इत्यादिक पदार्थ जिहां कहिये ते अतकहया ८ मी चग ॥ ८ ॥

स्वते अणत्तरीववाई गथी उत्तर कहिये आगलि जम जेइने तेहना

तदरूपं प्रचलत्प्राप्तिकायतीपशोभितमहाब्जयुरः प्रवर्त्तिनं विविधातीयनादगनाभोगपूर्णं चैवमादिलक्षणाः प्रतिकल्पितगन्धसिन्धुरस्वाभ्याशीहंशं च
 तुरङ्गसैन्यपरिवारणं कृत्रचामरमहाध्वजादिमहाराजचिह्नप्रकाशनं चैवमादयश्च सम्मद्विशेषाः समवसरणगमनप्रवृत्तानां वैमानिककर्मोत्क्रांशाणां श्ववनपति
 व्यक्तराणां राजादिमनुजानां च अथवा अनुत्तरोपपातिकसाधूनां ऋद्धिविशेषां देवादिसम्बन्धिनं स्नाहशा आख्यायन्त इति क्रियायोगः तथा पर्षदां सञ्जय
 वैमानिकी सजद्वेष्येषुपक्षिश्चीवीरमित्यादिनी क्लृप्तरूपाणां आदुर्भावाच्च आगमनानि क्व जिणवरसमीवन्ति जिनसमीपे यथाच येन प्रकारेण पञ्चविधा
 भिगमादिना उपासते सेवन्ते राजादयो जिनवर तथाख्यायतइतियोगः यथाच परिकथयति धर्म लोकायुक्त इति जिनवरी उमरनरासुरगणानां युत्वा च
 तस्मिन् जिनवरस्य भाषितं अक्शेषाणि क्षीणप्रायाणि कर्माणि येषां तथा तेचते विषयविरक्ताश्चेति अक्शेषकर्माविषयविरक्ताः के नराः किं यथा अथ्यपय

णजोगजुत्ताणं जहयजगहियं न्रगवन्तं जारिसाइद्विसेसा देवासुरमाणुसाण परिसाणं पाउप्लाउय जिणस
 मीवं जहयउवासतिजिणवरं जहयपरिकहंतिधम्मलोगगुरू अमरनरसुरगणाणं सोजणयतस्सत्तासियं अत्र
 सेसकम्मविसयविरत्तानरा जहा अश्रुवन्ति धम्ममुरालं सजमं तवंवाविअज्जाविहप्पगारं जहवन्नणिवासा

क्ते जेम जगतने विद्धे जिन भायन हितकारी छे । जेहवा ऋद्धिना विशिष छे । देव वैमानिक अमुर ते भवन पत्यादिक तथा मनुष्य तेहनी परीष
 दा नी प्रादुर्भाव आविबी उपासयति पचविध अभिगम ने करी सेवा करवी । जिने समीपे सेवा करे । जिनवर लोक गुरु जिम देवता नर सुरगण
 नेधर्म कथा प्रते कहे । तेह जिनवरनी भाषित सांभलीने । जौण प्रायच्छे कर्म जेहना । वली विषयथी विरक्त एहवा नर मनुष्य जिम पांमि धर्म उदार

त्वा पश्चमुदार क्रिस्वरूप मतप्राप्त संयम रूपथापि किञ्चूतमित्याह बहुविधप्रकारं तथा यथा नन्दनि वर्षाणि अणुचरियति अनुचर्यथासेव्य सयम त्पये
 विभर्त्ते तत आराधितज्ञानदर्शनचारिचयोगा सुधा जिगयणमणुगवमहिय भासियति जिनवचन माचारादिअनुगतं समूहं नाईवितर्दमित्यर्थे, महित
 म्जितासपिक स्ना भागित वै रध्यापनादिना ते तथा पाठात्तरे जिनवचनमणुगव्यानुक्त्वेन मष्टुभापित वै स्त्री जिनवचनानुगतिसुभापिताः तथा जिनवरा
 णधियणमणुगेतस्ति इतिपठौद्वितीयार्थे तेन जिनवरान् हृदयेन मनसा अनुनीय प्राप्य ध्याल्वेतियावात् येच यत्र यावन्तिच भक्तानि छेदयित्वा लब्धाच स
 साधि मुत्तमं ध्यानयोगयुक्ता उपपन्ना मुनिवरोत्तमा यथा अनुत्तरेषु तथाख्यायत इतिप्रक्रमः तथा प्राप्नुवन्ति ययानुत्तर तल्यति अनुत्तरविमानेषु विषय
 सुखं तथास्वप्नायगते तत्तोयति अनुत्तरविमानेभ्यस्त्युताः क्रमेण करिथन्ति सयता यथाचारतः कियन्ते तथा ख्यायन्ते अनुत्तरोपपातिकदयास्त्रितिप्रकृतसे

णि अणुचरित्ता अाराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिगवयणमणुगयमहिय चासित्ता जिगवराण हिययेण
 मणुणेत्ता जेयजहि जत्तियाणि अत्ताणि वेअइत्ता लठूणयसमाहिअुत्तमज्जाणजोगजुत्ता उववन्ना मणिवरोत्त
 मा जहअणुत्तरेसुपावति जह अणुत्तरं तल्यविसयसोस्सक तत्तयचुअ्याक्रमेण काहितिसंजया जहायअ्यंतकिरियं
 प्रधान सयम तप षण्णे प्रकारि सर्व विरति रूप । जिम घणा वर्ष लगे अणुचरी सेयीने आराध्याछि ज्ञान दर्शन चारित्र योग जेणे जिनवचन आधा
 रागादिने अनुगतसंमिलित महित पूजित भाषित जेणे । जिन वरनें हृदये करी मनकरी अनुनीयध्याइने । जेह जिदां जेतला भात छेदीने समा
 वि पामीने उत्तम ध्यानयुक्त शक्ती ऊपना मुनिवर अनुत्तर विमानने विषे जिम प्रधान विषय सुखभोगीने चया अनुत्तर विमानशी अनुत्तमे करि

इति योगः पुनः किञ्चित्तानां अद्वयगुणोपसमनात्पण्यगार आवरिभसियांति अतिशयाथामर्षोऽध्यादयी गुणाश्च ज्ञानादय उपसमश्च स्वरभेदे एतेना
 नानुकारा येषान्ते तथा ते च आचार्याय तैर्भाषिता या स्था तथा तासा कथ आपिताना मित्याह विल्यरेणति विस्वरेण महावचनसन्दर्भेण तथास्त्रिरम
 हर्षिभिः पाठान्तरे वीरसूत्रैर्षिभिः विविहविस्वारभाषियाणंचत्ति धिविधविस्वरेण भाषितानाश्च चकारस्वृतीयप्रणायकभेदसमुच्चयार्थः पुनः कथयूताना अ
 ज्ञाना जगद्धियाण जगद्धिताना मारुषाधीपयोगिताए किंसम्बन्धिनीना मित्याह अहागति आदर्शशाङ्खुष्टश्च बाह्वच असिध्य जीमंच वस्त्र आदित्यश्चेति
 इह स्तो आदि येषां कुण्डलशब्दखटादीनां ते तथा तेषा सम्बन्धिनीना अग्निवियाभि रादर्शकादीना मविशनाए किञ्चित्ताना प्रश्नाना मतश्चाह विविधम
 ज्ञानप्रश्नवियाच गाचेव प्रश्नसत्युत्तरदायित्वः मनः प्रयुधियाय मनः प्रश्नितार्थोत्तरदायिन्य स्थासा देवतानि तदधिष्ठादेवता स्तेषां प्रयोगप्राधान्येन तद्वा
 याणं अद्गुंगुठवाञ्जसिमणिखोमञ्जुञ्जसियाणं विविहमहापसिणविज्ञामगपसिणविज्ञा देवयंपयोग

ज्ञानप्रश्नवियाच गाचेव प्रश्नसत्युत्तरदायित्वः मनः प्रयुधियाय मनः प्रश्नितार्थोत्तरदायिन्य स्थासा देवतानि तदधिष्ठादेवता स्तेषां प्रयोगप्राधान्येन एहवाजे
 याणं अद्गुंगुठवाञ्जसिमणिखोमञ्जुञ्जसियाणं विविहमहापसिणविज्ञामगपसिणविज्ञा देवयंपयोग
 प्रश्न कोहवाछे । अतिशय आमर्षोपध्यादिक १ । गुण ज्ञानादिक २ । तथा उपग्रम पीतानि परने उपग्रमाविवी ३ । एह नाना प्रकार्छे जेहने एहवाजे
 आचार्यं तेषे विस्वार करी कलाछे । वीर महर्षि मोटायतीये अनेक प्रकार जेविस्वार बचनसदर्भे करी भाषाछे । वली जगतने हित रूपछे । आरी
 सो अंगुठ बार खप्प मणिरत्न इत्यादिक वली वस्त्र आदित्यसूर्य वलीशख घटादिक एहने आगलि प्रश्न पूछे तिवारे अधिष्ठायक वियादेवी पूर्वीक
 पदार्थ अधिष्ठान करीने उत्तरदे । तेमाटे ते प्रयुधियाये करी भाषित छे । विविध प्रकारना महाप्रश्नविया पूछे यके तल्लाल उत्तर देते महाप्रश्नविया
 कहे । मनःप्राग्गविया मननो चितित प्रर्थ कहे एहवी विया तेहना अधिष्ठाता देवताना प्रयोगनी व्यापार प्रधानपणे विविधार्थनी प्रकायक । तथा

पारप्रधानतया गुण त्विविधार्थं सस्वादलक्षणं आकाशयन्ति लोके व्यञ्जयन्ति या सा विविधमहाप्रणविद्यासनः प्रशूविद्यादेवतप्रयोगप्राधाव्यगुणप्रकाशिका
 स्थायां पुनः किञ्चितानां प्रशूना ससूतेन तालिकेन विगुणेन उपलक्षणत्वा लौकिकप्रणविद्याप्रभावापेक्षया बहुगुणेन पाठान्तरे विविधगुणेन विद्याप्रभावेन
 मतिसयमतीतकालसमयेति अतिययेन यतीतः कालः समयः स तथा तत्र अतिव्यवहिते काले इत्यर्थः दसः शस खलुप्रधान तीर्थकारणा दर्शनात्तरया
 सृष्ट्या मुत्तमो यः स तथा भगवान्जिनस्य तीर्थकारीतस्य स्थितिकरणस्यापन आसीदतीतकाले सातिप्रयज्ञानादिगुणयुक्तः सकलप्रणायकशिरः शिखर
 कस्यः पुरुषविशेषः एवविधप्रशूना मव्ययानुपपत्ते रित्येवरूप तस्य कार्यानि हेतवो या सास्त्रया तासा पुनस्ताएव विभिन्नष्टि दुरभिगम दुरवबोध गभी
 रसूक्तार्थत्वेन दुरवगाहं च दुःखाध्यैय सूत्रमहुत्वाद्यत्तस्य सर्वेषां सर्वज्ञाना सन्मत्प्रिष्ट सर्वसर्वज्ञसम्मत अथवा सर्वज्ञ तत्सर्वज्ञसम्मतचेति सर्वसर्वज्ञसम्मत अथ

पाहाणगुण्यगसियाणं ससूयदुगुण्यप्यभावनरगणमह्विस्त्यकराणं अइसयमईयकालदमसमित्यकृतम
रसठिइकरणकाराणं दुरहिगमदुरवगाहस्य सबसहस्रसम्भस्यस्यस्य बुबुहजणवोहकरस्य पच्चकयपच्चयकरा
 सन्नुय तालिकपण्ये द्विगुण लौकिक प्रण विद्यानी अपेक्षयै वयोजे प्रभाव आहात्स्य तणे करी मनुय समूहनी बुद्धिने विस्तय करेछे चमत्कार उपजा
 वेके । अतियये करी अतीतकाल समय अत्यत व्यवहित काले दम गम तणे करी सहित तीर्थं करीसमनी स्थितिनो करण स्थापिवी तेहना कारणछे ।
 दुरभिगम दुःखे जाणिवे । गभीर सूक्तार्थं पणे दुरवगाहं दुःखे अहीसके । सर्वं सर्वज्ञने भाव्य । तथा प्रबुधजम मूर्खे जेगने प्रवीध ना कारण । प्रत्यक्ष प

॥

चनतत्वमित्यर्थः तस्य प्रबुधजनविबोधनकारस्य एकांतहितस्वैतिभावः पञ्चकथपञ्चयकाराणति प्रत्यचकनेन ज्ञानेन साक्षादित्यर्थो यः प्रत्ययः सर्वाविप्रयनिधा
नमतीन्द्रियाधीपदर्शनाव्यभिचारिचेद् जिनप्रवचन मिलिवंरूपा प्रतिपत्तिः अथवा प्रत्यनेषेवा नेनार्थाः प्रतीयन्त इति प्रत्यचमिवेद मिलिवं प्रतीतिः प्रत्यच
कप्रत्यय स्तगु करणशीलाः प्रत्यचकप्रत्ययकार्यः प्रत्यचताप्रत्ययकारिणां प्रत्यचताप्रत्ययकारिणां कासाभित्याह प्रभूनां प्रभू
विद्याना सुपनयणला दव्यासाश्च यासा मटीत्तरयताव्यादौप्रतिपादितानि विविधगुणा बहुविधप्रभावा स्तच ते महायार्था महात्वोभिधेयाः पदार्थाः एभा
शुभ सूचनादयो विविधगुणमहार्थाः किभूता जिनवरप्रणीताः किभित्याह आषविज्जतिन्ति आख्यायन्ते शेषमूर्ध्वत् नवर यद्यपीहाध्ययनानां दशलाह्यवी
देग्नकाला भवन्ति तथापि वचनान्तरापञ्चया पञ्चत्वारिंशदिति सभाव्यते इति पणयालीस भित्याद्य विक्रद मिति संखेज्जाणियसयसहस्राणि पयमेणति

णं परहाणविबिहगुणमहत्याजिणवरप्यणीया अ्याषविज्जति परहावागरणेषुणं परित्तावायणा संखेज्जाअ्युण
उगदारा जावसंखेज्जानु संगहणीनु सेणअ्यंगठयाएदसमेअ्यंगे एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देसणकाला पणयाली
संरामुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहरसाणि पयग्गेणं प० संखेज्जाअ्युकरा अ्युणतागमा जावचरणकरण

ये प्रतीतना कारणहार के एतले प्रत्यन्तपणे मानिवा शीग्य के । एहवा प्रणना अनेक गुण अनेक प्रभाव मोटा पदार्थ शुभाशुभना सूचक जिनवरपणी
त भाषित एहवा भाव पदार्थ प्रभू व्याकरणने विषे कहियेके । प्रभू व्याकरणने विषे संख्याती वाचना । संख्याता अनुयोग द्वारधी यावत् संख्याती संगह
णी लगे पाठ कहिवो । तेषे मंगार्थपणे दशमे प्रगे एक श्रुतस्त्वथ तेने विषे ४५ उद्देशनकाल ४५ समुद्देशनकाल संख्यातापदना अत सहस्र एतले ६२

तानि च भिल दिनयति लेदाणि लोडशक सहस्राणोति ॥ १० ॥

विपाकयुतं विवागसुणमित्यादि क्लृप्तं नगर फलविपाकेति फलरूपीविपाकः फलविपाकः तथानगरगमनाइति भगवती गौतमस्य भिद्यार्थे नगरप्रविश
परूवणया आघविज्जति सेतंपरहावागरणाइं ॥ १० ॥

॥ सेकितं विवागसुए विवागसुएणं सुक्का
तत्यणं दसदुहविवागाणि दससुहविवागाणि सेसमासउ दुविहे पसत्ते तंजहा दुहविवागे सुहविवागेचेव
जाणाइं चेइयाइं वणखंठा राथाणो अग्ग्मापियरो समीसरणाइं धम्माथरिया धम्मकहाउ पगरगमणाइं

लास १६ हजार पद पदने परिमाणे कक्षा । संख्याता अक्षर । पन्ता गमा । पन्ता पर्याय यावत् चरण अमणव्रत पिल्लिबिशुद्धादिक बगे
जाणिवो । इत्यादिक पदार्थ जेहने विषे कहिये ते प्रशुथाकरण दशमीश्रग ॥ १० ॥ प्रथस्यतेविपाक युत । विपाकजे शमाशुभ कर्म

ना परिणाम तेहगी प्रतिपादक कथक जे युत ते विपाक युत । विपाक युतने विषे शुभ पशुभ कर्मेना फलविपाक फलरूपविपाक परिपाक कहि
येत्ते । ते विपाक युत संक्षेपे अकारनी कली । तेकहेत्ते । दुख विपाक पने सुख विपाक । ते विहुंमांहि मृगाणुत्तादिकना दश दुख विपाक पने सुवा
हु अमारादिकना दश सुख विपाक । अथ विशति दुःखविपाक । दुःख विपाक ने विषे पापीजोत मृगाणुत्तादिकना नगर । उद्यान । चैल । अनसुंढ ।
राजा माता । पिता । समीसरण । धर्माचार्य । धर्मकथा । नगर गमन । भगवंत गौतम भिद्यार्थे नगरमांहि प्रविश करे । संसारनी प्रबंध विस्तार । दुः

॥
॥
नानैति एतदेवपूर्वोक्तं प्रपञ्चयन्नाह दुहविवागस्यमित्यादि तत्र प्राणातिपातालीकवचनचौर्यकरणपरदारमेयुनैः सह संसंगयाएतियो संसङ्गता सपरिग्रह

ता तथा सचितानां कर्मणां सचितानां सचितानां कर्मणा पापवानां पापानुभागा अशुभरसा ये
फलविपाका विपाकीदया स्ते तथा आख्यायन्त इतियोगः केषामित्याह निरयगतौ तिर्यग्योनीचये बहुविधच्यसनशतपरस्परभिः प्रबद्धाः ते तथा तेषा जी

संसारपबंधे दुहपरंपरात्तय अथाविजाति सेतंदुहविवागाणि सेकितसुहविवागाणि सुहविवागिसुणं सुहविवा
गाणं णगराई उज्जाणाई चेइयाई वणखंठा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाई धम्मायरिया धम्मकहाले इह
ल्योय परलोय इहिविसेसा जोगपरिच्चाया पद्यज्जाले सुथपरिग्गहा तवोवहाणाई पारयागा पळिमाने सले
हणात्ते नत्तपञ्चक्काणाई पावोवगमणाई देवलोगगमणाई सुकलपच्चाया पुणवोहिलाहो अंतकिरियात्ते अ्या

धविजांति दुहविवागिसुणं पाणाइवायअलियवयणयो रिक्ककरणपरदारमेज्जणससगथाए महतिवृक्कासायइ
खनी अणी कहिये के ते दुःख विपाक । अथ सू ते सुखविपाक । सुख विपाकने विषे सुख विपाकिया सुवाहु बुमारादिवाना । नगर । उद्यान । चैत्य ।
बनखंड । राजा । माता । पिता । समोसरण । धर्मचार्य । धर्मवथा । इहलोक परलोक सबधी ऋषि विशेष । भोगनी परियाग । दीचा । श्रुतनी भ
णवी । तपोपधान करिवी । पर्याय । प्रतिमा । सलेखना । भात पाणीनी पञ्चत्थाण । पादपीपगमन । देवलोके उपजिवी । तिहा थकी चवी
ने सुकुनेउपजिवी । बली जिन धर्मनी प्राप्ति । अताःतिया । एह जिहां कन्थिये ते सुख विपाक । दुःख विपाकने विषे । हिसानी करिवी । प्रलीक बच

शाना मितिगम्यते तथा मणुयत्तिति मरुजले यागतानां यथा पापकर्मशेषेण पापका भवन्ति फलविपाका अशुभाविपाकीदया स्ते तथा ते आख्यायन्ते
 इतिप्रकृत तथाहि बधो यथ्यादिताडनं दृषणविनाशो वर्धितककरण तथा नासयोस कार्ययोस श्रीष्टस्यचाप्रुलानां अङ्गुष्ठानांच कारयोस चरणयोस नखा
 नांच यच्छेदनं तत्तथा जिह्वाच्छेदनं अंजणत्ति अस्त्रन तसायः शलाकया नेत्रयोः सचण वा देहस्य चारुतेलादिना कडगिदाहणंति कडानां बिदलवशादि
 भयाना मग्निः कटाग्नि स्तेन दाहनं कटाग्निदाहनं कटेन परिरोष्टितस्य बोधनमित्यर्थः तथा गजचलनमलनम्फालनं म्बिदारणं उल्लम्बनं वृक्षशाखादमुद्गंध

दिव्यप्यमायपावप्पुनय असुहज्जवसाणसंचियाणं कम्भाणं पावगाणं पावञ्चुण्णागफलविवागाणि णरगति
 रिक्खजोणियविहविसणपरपरावद्दाणं मणुयत्तेवि अ्यागयाणजहापावकम्मसेसेणपावगा होंतिफलविवा
 गाणरगतिरिक्खजोणियविहवसणविणासकब्बुठुण्ठ करचरणनहत्थेयण जिप्पुत्थेअुण अंजणककग्गिदाह

न सुखथी बूडो बीलवी । चोरीनी करिवी । परस्सो मैथुन संगमनी करिवी । परिग्रहनी धारण करिवी । महातीव्रकषाय । इद्रिय प्रमाद । तथा । पाप
 प्रयोग । पापश्चापार । एह थकी जपनी अशुभ अश्ववसाय तीणे करी मेया पापरूप कर्म तेहना पापरूप अशुभाग अशुभरस जेफलविपाका फलनी उदय ।
 दःख विपाका ने विषे कहिये । नरक तोर्यच योनिने विषे अनेक प्रकार कटनी अणी तीणे करी बधाणा जेजीव तेहनी । तथा मनुष्यपणे परिण पाव्या
 थका जिस पापकर्म शेषेकरी पापीहोथ । फलनाविपाका अशुभ विपाकनी उदय । तथा नरकतीर्यचयोनिने विषे अनेक प्रकारना कष्ट थिनाथ कान
 ओठ अगूठा हाथ पग नख एहना छेदन । तथा जिह्वा जीभ छेदन । तथा अंजन लोहनी शलाका नेने विषे घालवी । तथा कट वांसनी बेफाड तेह

दत्तेच परितोष इति सा त्रिकालमति स्वयाच यानि विमुद्धानि तानि यथा तानिवतानि भक्तपानानि चेति अनुक्तं पाशयप्रयोगनिकालमतिविशुद्धभक्तपा-
नानि प्रदाये तियोगः केनप्रदायेत्याह प्रयतमनसा आदरपूर्वचेतसा हितोऽनर्थपरिहाररूपत्वात् सुखहेतुत्वात् सुखः शुभोवा नीसिसत्ति निःश्रेयसः कल्याण
कारत्वात् तत्रैः प्रकष्टः परिणामीऽध्ववसान यस्या सा तथा सा निधिता असशया मतिर्बुद्धिर्गपाते हतसुखनिःश्रेयसतौत्रपरिणामनिश्चितमतयः किं पय
च्छिज्जणति प्रदाय किमूतानि भक्तपानानि प्रयोगेषुशुद्धानि दामकरागव्यापारपेक्षया सकलाशंसादि दोषरहितानि ग्राहकगृहणव्यापारपेक्षया चीडभा
दिदोषवर्जितानि ततः किं यथाच येनच प्रकारेण पारंपरेण ओचसाधकलक्षणेन निवर्तयन्ति भव्याः जीवा इति गम्यते तुशब्दो भाषामात्रार्थं बोधिलाभं

विसुष्टन्नत्तपाणाइं पययमणसाहियसुहनीसेसतित्वपरिणामनिच्छियमइपयत्यिज्जणं पयोगसुष्टाइं जहनिद्यते
तिव्यो वोहिलांजहयपरित्तीकरेति नरनरयतिरियसुरगमणविपुलपरियह व्यरतित्रयविसायसोगमिच्छत

तेहनी व्यापार तेषैकरी त्रिहुकालने विषे भिषुदुध भात पाणी देवानी बुदधि करे । देईने आदर पूर्ववचित्ते करी तेहना अनर्थ टाले तिमटे । तथा सु-
खनी हेतु नियेयस कल्याणवत एहवी तीत्र प्रकष्ट परिणाम अश्वत्साय के जेहनी एहवा निश्चय मति यशय रहित बुदधि के जेहनी तेह देईने तेह
भातपाणी केहवा के प्रयोग शुदुध के प्रयोगने विषे दायक दाग व्यापारनी अपेक्षायि शुदुध के सशयादिक दूषण रहितके । जिम जेणे प्रकारे परंपरा ये
सोम साधक लक्षणे निवर्तवि निपजावि बोधिलाभ भव्यजीव जिम पर्त्ताकरे ससार सागर शीढोकरे । तसंसार सागर केहवोखे । मनुथ नरकार्तियच
देवता एह चिहंनो गतिने विषे जीवनी एहवी नजाइवी भूमिबी विपुल विस्तीर्ण परिवर्तमत्सादिकानी अनेक प्रकारे संचरण जिहा । अरति भय वि

यथाच परित्तिर्भुवति ऋष्यतानयन्ति संसारसागर मितियोगः किंभूत नरनिरयतियंकासुरगतिषु यज्जीयानां गमन अरिभ्रमण सएव विपुलो विसौणः प
 रिवर्त्ती मत्यादीना परिवर्त्तन मनेकधा सचरण यत्र स तथा तथा अरतिभयविषादशोकभियालान्येव शैलाः पर्वताः तैः सकटः सकीर्णो यः स तथा ।
 ततः कर्मधारयो ऽत स्त इहच विषादो देयमात्र शोक स्वाक्रन्दनादिचिह्न इति तथा अज्ञानमेवतमोधिकारं महान्यकारं यत्र स तथा त्रतं स्त चिच्छिन्न
 सुदुत्तारति चिच्छिन्न कर्दम' संसारपथेषु विषयधनखजनादिप्रतिबन्ध स्ते न सुदुस्तरौ सुखोत्तार्योयः स तथातं तथा जरामरणयोनय एव सलुभितं महा
 मत्स्यमकरायनेकजलजुजातिसमदेन प्रविलोडित चक्रवालं जलपरिमांडिल्य यत्र स तथा त तथा प्रोडश कषाया एव स्वापदानि मकरगृहादीनि प्रका
 ष्ट चण्डानि अत्यर्थैरैशाणि यत्र स तथा त अनादिक मनवदेय मनग्त संसारसागरमिम प्रत्यक्षमित्यर्थः तथा यथाच सागरोपमादिना प्रकारेण विव

सेलसंकु अन्नाणतमंधकारचिच्छिन्नसुदुत्तारं जरमरणजोणिसंखुनियचक्रवालं सोलसकसायसावयपयंरुचकं
अणाइञ्च अणवदगं संसारसागरमिगण जहयणिवंधति अ्याउगंसुरगणेषु जहयञ्चणुभवति सुरगणविमाण
 षाद शोक भियालतल्लक्षण शैलपर्वते करौ सकीर्ण साकडांछे । बली केहवीछे । अग्नाग तेहीज तम अंधकार छे जिहां । विषय धन खजनादिक प्रति
 बध लक्षण चिच्छिन्नकर्दमतेणैकरी सुदुरुत्तार अत्यर्थ उत्तारछे दीहिलोजेहनी । जरामरण योनि तेहिज सलुभित महामत्स्यं न जाइवे आइये करी नि
 शेषी चक्रवाल जालनी मांडली जिहां । तथा सोले कषाय अनंतानुबंधादिक भेदे क्रोध मान माया लोभ तल्लक्षण स्वापद मकरादिक प्रकांड अत्यर्थ
 रौद्रेके जिहां । बली केहवी छे । अनादिके । तथा अनत छे । अतनथी एहवी संसार सागर इण कहवां एहवी संसार समुद्र तरे जेह जिम सागरी

धृत्यायुः सुरगणेषु साधुदानप्रत्ययमितिभावः यथा चानुभवन्ति सुरगणविमानसौख्यानि अनुपमानि ततश्च कालान्तरेण च्युताना मिद्विवृति तिर्यग्भोके नर
 लोक सागताना मायुर्वपुर्वणैरुपजातिकुलजन्मारोग्यवृद्धिमेधा विशेषा आख्यायन्त इतियोगः तत्रायुषो विशेष इतरजीवायुषः सकाशात् शुभत्वं दीर्घत्व च
 एव वयुः शरीर त्तस्य स्थिरसहननता वर्णस्योदारगौरल रूपस्यातिमुन्दरता जाते रुत्तमल कुलस्थायिव जन्मनो विशिष्टत्रैकालनिरावाधत्व आरोग्यस्य प्रक
 र्त्वं बुद्धि रीत्यक्तिकादिका तस्याः प्रकृष्टता मेधा पूर्वच्युतग्रहणशक्ति स्तस्या विशेषः प्रकृष्टतैवेति तथा मित्रजनः सुहृत्सोक स्वजन. पिढपिढव्यादिः धनधा
 न्यरूपो यो विभवी लक्ष्मी' स धनधान्यविभव स्तथा सन्दिः पुरात्' पुरकीशकीष्टागारवलवाहनरूपा याः सम्पद्यो यानि साराणि प्रधानानि वस्तूनि तेषां

सोखाणि च्युणोवमाणि ततोयकालतरच्युत्थाणं इहेवनरलोगमागयाण च्याउवपुपुस्रहवजातिकुलजन्मश्यारो

गगबुद्धिमेहाविसैसामित्तजणसथणधख्खविन्नवसमिद्धिसारसमुदयविसैसा वजाविहकामजोगुण्णवाणसोखा
 पमादिक जेणे प्रकारे वाधे आउखी सुराण ने विपे जिम अनुभवे भागवे देवताना समूह विमानना सुखप्रते ते सुख केहवाछे अनोपम कह्या न
 जाय ते देवलोका यको कालांतरे चव्या चवीने इहां मनुखलीक मांदि आब्या तेहनो पूरी आउखी उत्तम वपुशरीर वर्णभलो रूप ते यच्चंद्रिय पूरा जा
 तिकुलजन्म जिहां जाति ते भलो माटपच कुल ते भलो पिढपच तिहां जन्म आरोयते निरोगपणी बुद्धि ते औत्पत्तिकादय मेधा विशेष ते पडिताई
 मित्रजन सुष्टुलोक स्वजनपिढ पिढव्यादिक धनते लक्ष्मी सुवर्णादि धान्यते २४ यन्नादिलेखण कह्या मिभव सपदा घणौ सन्दि ते पुरात्'पुर कीठार बल
 वाहनरूप, समृद्धि समदा सार प्रवान बसु तेहनो समुदाय समूह एहना विशेष प्रकृष्टपणी तथा घणे प्रकारे कह्या । कामभोग तेहथी ऊपना सुख

य' समुदयः समूहः स तथा इत्येतेषां द्वंद्वं सूतः एषा ये विशेषा प्रकारा स्ते तथा तथा बहुविधकामभोगीह्वानां सीस्थाना म्विशेषा इतीहापि सखन्वनी य शुभविपाक उत्तमी वेधा न्ते शुभविपाकीत्तमा स्तेषु जीविष्वितिगम्य इहचैय षड्यर्थं सप्तमी तेन शुभविपाकाध्ययनवाच्यानां साधूना मायुष्कादिविशेषाः शुभविपाकाध्ययनेष्वाल्यायन्ते इतिप्रकृतं अथ प्रत्येकं श्रुतस्त्रायथी रभिधये मुख्यपापनिपाकरूपे प्रतिपाद्यतयोरेव योगप्रद्येन ते आह अणुवरयेत्यादि अनुपरा ता अविच्छिन्ना ये परम्परानुवडा के विपाका इतियोगः केषा मशुभानांशुभानांचैव कर्मणा अथमद्वितीयश्रुतस्त्रायथीः क्रमणैवच भाषिताः उक्ता बहुविधा विपाकाः विपाकश्रुते एकादशार्हे भगवता जिनवरेण सस्वेगकारणार्थाः सस्वेगहेतवीभावाः अर्थोपचैवमादिका आख्यायन्त इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणा मा दोत्तरक्रियया योगः एवञ्च बहुविधा विस्तरेणार्थं प्ररूपणता आख्यायत इति शेषं कण्ठ नवरं सख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रैणिति तत्र किल ए

णसुहविवागीत्तमैसु अणुवरयपरंपराणुवशा असुभानाणचेवकम्माणत्तासिञ्चावज्जिविवागा विवागसुयमि
 न्नगवयाजिणवरेण संवेगकारणत्या अन्वोवियणुवमाइयावज्जिविहाबिल्यरेण अस्यपरुवणया आघविज्जति

ना विशेष ते मुखविपाक उत्तमने विषे कहिये । निरतर परंपराये वणभवलगे बांध्या । अशुभ तथा शुभ कर्मना पहिले तथा बीजे भापाश्रुतस्त्राधि क्रमे कथा घणे प्रकारे, विपाक ते कर्मफलोदय तेह विपाकश्रुत इत्यारमे अङ्गे भगवंत जिनवरे संवेगकारणनाअर्थं संवेगनाहेतुनभाव अनैरापणि एवमा दिक एणं अगे घणे प्रकारे विस्तारे अर्थनी प्ररूपणा आख्यायते काङ्घिये । विपाक श्रुतना, परिता गणतीये वाचना सूत्रार्थनी देवी संख्याता अनुयोग

कापदेकीटी षट्श्रीतिथ सन्नाणि षात्रियञ्च सहस्राणीति ॥ ११ ॥

सौक्यंतिदिष्टिवाएति दृष्टयो दर्यनानि षट्श्रीना स्नादेदृष्टिवा
दः दृष्टोना वा पातो यन्नासौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्त इत्यर्थः तथावाह दिष्टिवाएणमित्यादि दृष्टिवादेन दृष्टिपातेन वा सर्वथात्ररूपणा
स्यायते सेसमासश्चोपचिहेलादि सर्वमिदं प्रायो व्यवच्छिन्न तथापि यथादृष्ट किमपिलिख्यते तत्र सूत्रादिग्रहणयोग्यता सम्पादनसमर्थानि परिकर्माणि

विवागसुञ्जस्सणं परिन्नावायणा संखेज्जाञ्जुणुगदारा जावसंखेज्जाउं सगहणीउं सेणं झुंगठयाए एक्कारसमे
ञ्जगे वीसंञ्ज्जक्यणा वीसउंद्देसणकाला वीसंसमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयगणं प० सखे
ज्जाणिञ्ज्जकराणि झुणंतागमा झणंतापज्जावा जावएवंचरणकरणपरूवणया झाधविज्जांति सेत्तंविवागसुए
॥ ११ ॥ सेकितंदिष्टिवाए दिष्टिवाएणं सञ्जावपरूवणया झाधविज्जातिसेसमासउं पंचविहे प० तं०

हार जाव सख्यात सग्रहणी तेह अगार्थपणी इग्यरसे अगे बीस अश्वयन बली २० उद्देशनकाला २० समुद्देशनकाला संख्याता पदना लाख एतले १ कोटि
८४ लाख ३२ हजार पदने परिसारणे काद्या । सख्याता अचर । अनन्तागमा । अनन्तापर्याय । जाव चरण ते साधुनां महाव्रत करण ते पिड विशुद्ध
दिक्कनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये । तेह विपाकश्रुत इग्यरसे अग ॥ ११ ॥ अथ स्यंति दृष्टिवाद दृष्टिते दर्यन तेहनी वदवी कहिबीछे नि
हा ते दृष्टिवाद सर्वभाव सकल नयादिक भाव तेहनी प्ररूपणा पूर्णने विषे कहिये तेह पूर्णं सत्तेप थकी पाच प्रकारे कब्बा ते कहे छे । परिकर्मे १ सूत्र

गणितपरिकर्मवत् तच्च परिकर्मच्युत सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्ममूलभेदतः सप्तविधं उत्तरभेदतश्च व्ययीतिविधश्चातृकापदादि एतच्च सर्वं समलोचरमे
 दं सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्न एतेषाञ्च परिकर्मणा षट् आदिमानि परिकर्माणि सप्तमयिकान्वेष गोशालकप्रवर्त्तिताजीविकापाखण्डकसिद्धान्तमतेन पुनः

परिकर्मं सुताइं पुत्रगयं च्युणुतगो चूलिया सेकितंपरिकर्मने परिकर्मनेसप्तविहे प० तं० सिद्धसेणियापरिकर्मने
 मणुस्ससेणियापरिकर्मने पुठसेणियापरिकर्मने लुगाहणसेणियापरिकर्मने उवसंपज्जसेणियापरिकर्मने विप्पजह
 सेणियापरिकर्मने चुञ्जाचुञ्जेणियापरिकर्मने सेकितंसिद्धसेणियापरिकर्मने सिद्धसेणियापरिकर्मने चोद्दसविहे
 प० तं० माउयापयाणि एगठियपयाणि पादोष्ठपयाणि च्यागासपयाणि केउञ्जयं रासिबद्धं एगगुणं दुणुणं
 तिगुणं केउञ्जु पळिग्गहे संसारपळिग्गहे नंदावत्तं सिद्धावत्तं सिद्धसेणियापरिकर्मने सेकितंमणुस्ससेणिया

पर्वगत ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ अथ स्थंते परिकर्म । परिकर्म पूर्व साते भेदे कक्षी । तेकह्छे । परिकर्म शब्दे गणती गणना विशेष सिद्ध अशीनी परि
 कर्म गणना १ मनुष्य अशीनी गणना २ षुष्ट अशीगणना ३ ओगाहणाश्रीगणना ४ उपसपादन अशी गणना ५ विप्पजहअशी गणना ६ चुता चुत अशी
 गणना ७ एहना अर्थं गुरुभाग यको जाणिवा । सिद्ध अशी परि कर्मना वली १४ भेद कक्षा । ते कहेछे । त्यासी भेदे माळका पद १ एक स्थितिपद २ पाद
 अर्थपद ३ आगास पद ४ केतुभूत ५ राशिवच्च ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नदावत्त १३ सिद्धावत्त १४
 एह सिद्ध श्रेणिका परिकर्म । अथ स्थंते मनुष्य अशी परिकर्म । मनुष्य अशी परिकर्म १४ भेदे कक्षी । ते कहेछे । माळकापद १ एक स्थितिपद २ पाद अ

जीविकसूत्रपरिपाद्येति अयमर्थः इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नं छेदेनेच्छति सोऽच्छिन्नच्छेदनयो यथा धर्मो मगलमुकठमित्यादि श्लोकएवार्थतो द्वितीयादित्योक्तं म
पेक्षमापो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योन्यसापेक्षा इत्यर्थ एतानि हाविषति राजो विष्कगोमालकप्रवर्त्तितपाखण्डसूत्रपरिपाद्या अक्षररचनाविभागस्त्रिता
न्ययर्थतोऽन्योन्यसापेक्षमाणानि भवन्ति इच्छेइत्याह इत्यादि सूत्रं तत्र 'तिकनइयाइ'ति नयविक्रमिप्रायतश्चिन्तन्तइत्यर्थं स्त्रैरशिकाद्याजौविका एवोच्यन्ते
इति यथा इच्छेइत्यार' इत्यादि सूत्रं ततः चउक्कनइयाइ'ति नयचतुष्काभिप्रायतश्चिन्तयत इति भावनाएवमेवेत्यादि सूत्र एवञ्चतस्रो हाविषतयोऽद्याशीतिसूत्रा

श्याजीवियसुत्तपरिवाहीए इच्छेइयाइं बावीससुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाहीए इच्छेइयाइं बावी
संसुत्ताइं चउक्काणयससमयसुत्तपरिवाहीए एवांभेवशपुद्वावरेणं श्यठासीयं सुत्ताइं जवंतीति मस्कायाइं ।

सूत्रार्थं यको प्रत्येक छेदयको द्वेयो बीजा श्लोकनो अपेक्षा नकरे ससमय जिनमतना सूत्रनो परिपाटीये अनुक्रमे पामीये एह ऋजु अपादिक २२ सू
त्र नद्यौ द्वेया छेदेकरो नय जिहां ते अछिन्न छेदनिक जिन धर्मोमगल मुक्तिइ इत्यादि श्लोक बीजा श्लोकनी अपेक्षा करे । एह बावीस
सूत्र श्याजीविक गोमालमतनी परिपाटीये पामीये । इच्छेइयाइं एह २२ सूत्र त्रिण नय संश्लेत जीव जजीव नोजीव एह त्रिणनय जिहां ते त्रिकनयिक चिरा
शिक पाखडोना सूत्रनी परिपाटीये पामीये । ऋजुअग, प्रमुख २२ सूत्र चतुष्क नयिक संगृह १ व्यवहार २ ऋजु ३ शब्द ४ एह चार नय संश्लेत तेह स्वस
मय जिनमतनी सूत्र परिपाटीये पामिये । एम आगनी पाखली मित्ती २२ चोका प्रख्यानी सूत्र होय ते भगवते कइया । एह पूर्वनी बीजी-शेह सूत्र कानी

णि भयन्ति सेतंसुताइति निगमनवाका सेकितपुब्बगइत्यादि अथ किन्तत्पूर्वगतमुच्यते यस्मा तीर्थकरः तीर्थप्रवर्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वञ्च पूर्वपूर्वगतसूत्रार्थं भाषते तस्मात्पूर्वाणीति भणितानि गणधराः पुनःशुतरचना निदधाना आचारादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्तिच मताग्तरेणतु पूर्वगतसूत्रार्थः पूर्वमहता भाषितो गणधरेरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्वरचित पसाद/चारादि नत्वं यदाचारनिर्युक्त्वा मभिहितं सर्वसिंश्रायारोपठमी इत्यादि तस्मात्सुच्यते तत्रस्थापनामाश्रित्य तद्योक्त मिहलक्षररचनां प्रतीत्य भणित पूर्व पूर्णाणि कृतानीति तत्र पूर्वगत चतुर्दशविध प्रज्ञसं तद्यथा उपायेत्यादि तत्रोक्त्यदपूर्वमथमंतत्रच सर्वद्रव्याणा स्मर्यवाणा चोल्यादभावमङ्गीकृत्य प्रज्ञापना कृता तस्यच पदपरिमाण अेकाकोटी प्राग्गणीयं द्वितीयं तत्रापि सर्वेषां द्रव्याणा पर्यवाणा जीवविशेषाणां पात्रं परिमाणं वक्ष्यते इत्यगृणीयं तस्य पदपरिमाण पञ्चवतिपदशतसहस्राणि वीरियति वीर्यप्रवाद तृतीयं तत्राप्यजीवानांजीवानांच सकामतराणा वीर्यं प्रोच्यते इति वीर्यप्रवादं तस्यापि सप्ततिः पदशतसहस्राणि परिमाण अस्तिनास्तिप्रवादं चतुर्थं यत्लोकं यथास्ति यथावा ना

सेतंसुताइं । सेकितं पुब्बगय । पुब्बगयं चउइसविहे पन्नत्ते । तंजहा उध्याय पुब्बं अुग्गणीयं वीरियं अु
 क्कहो । अथ स्थंते पूर्वनी बीजो भेद पूर्वगत । ते चौदह भेदे क्कहो तेकहेच्छे उत्याद पूर्व १ तीर्थं कर तीर्थे प्रवर्तना काले गणधरने पूर्व पहिली सूत्रार्थं भाष्यो तेमाटे पूर्व क्कहो । सर्व द्रव्य पर्यायनी उत्यादक भाव अगौकार करीने जेकहो तेउत्याद पूर्व इग्यारह कोडि पद परिमाणे १ बीजो अगृणीय तेमाहि सर्वद्रव्य पर्याय जीवनी षण्ण परिमाण पांमिये तेहनी पद परिमाण ६६ लाख पद २ । बीजो वीर्यप्रवाद तिहां जीवजीवना वीर्यकह्या । पदसंख्या ७० लाख पद ३ । चीथो अस्तिनास्तिप्रवाद जिहां साहादाभिमाय अस्ति नास्ति कहिथे ते अस्तिनास्तिप्रवाद पद संख्या ६० लाख पद ४ । पांचमी ज्ञानप्रवाद

स्ति गथवा स्वाहादाभिप्रायतः तदेवास्ति तदेवनास्तीत्यर्थं प्रवदतीति पश्चिनास्तिवाद् आणितं तदपि पदपरिमाणतः षष्टिपदग्रतसहस्राणि ज्ञानमगवाद्
 मासम तथातिज्ञानादि पश्चात्स भेदग्ररूपगयसात् तत् ज्ञानमगवाद् तदक्षिप्यदपरिमाण मेकाकोटीएकपदेनिति सत्यागवाद् षष्ठं सत्यंसयमः सत्यवचनम्सा
 तया समेदं सप्ततिपक्षस्य वक्ष्यति तत्सत्यागवाद् तस्य पदपरिमाणं एकापदकोटीपट्चपदानीति प्राक्तमगवाद् सप्तमं प्रायति पाया सोनिकाधा यन्त्र
 नयदर्थने वक्ष्यति तदात्मगवाद् तस्य पदपरिमाणं षट्चिंशतिपदकोट्याः कर्मगवाद्मष्टमं ज्ञानगवरणादिकं मष्टविधं कर्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभि
 भेदे रत्नैशोत्तरीत्तरभेदे वैगवक्ष्यति तत्साम्यगवाद् तत्परिमाण मेकापदकोटीप्रश्रीतियसहस्राणीति प्रत्याख्यानं नवमं तनसर्वप्रत्याख्यानस्वरूप म्वर्णित
 इति प्रत्याख्यानगवाद् तत्परिमाण चतुरस्रीतिः पदग्रतसहस्राणीति विद्यागुग्रावाद दशमं तानेके विद्यातिगया वर्णिता स्वत्परिमाण मेकापदको
 टी दशपदग्रतसहस्राणीति प्रवक्ष्य मेकादश बंधनास निष्पन्नं नवमं मयंभंगं सफलमित्यर्थः तन्दि सर्वज्ञानतपः संयमयोगाः श्रमफलैः सफला व
 त्यिणत्प्यिष्यवायं नाणप्यवायं सस्रप्यवायं श्यायप्यवायं कम्प्यवायं पञ्चखणप्यवायं विज्ञाणप्यवायं श्रुवांश्रु
 तिहासत्वादि ५ । ज्ञान सविस्तर पणे कक्षा पद संख्या एतूण एक कोडीपद ५ । छडी सत्यागवाद् तिहां सत्यसंयम तथा सत्य वचन समेदे कक्षी ते सत्य
 प्रवाद पद संख्या एकाकोडी छ पद ६ । इति षट् पू । सातमी प्राक्तमगवाद् तिहा प्रतिक भेदे आत्मा वर्ण्यो ते प्राक्तमगवाद् पदसंख्या २६ कोडी पद ७
 आठमी कर्मगवाद् तिहां आठकर्म प्रकृतिनीप्ररूपगांक्षी पद संख्या १ कोडी ८० हजार पद ८ । नौमी प्रत्याख्यान प्रवाद तिहाप्रत्याख्यानस्वरूप वर्ण्यो
 पदसंख्या ८४ लाखपद ९ । दशमी विद्यानुगवाद् तिहां प्रगेक प्रकारनी प्रतिशायिनी विद्या वर्ण्यो छे पद संख्या १ कोडी १५ हजार पद १० । इत्यारद

र्थन्ते अप्रशस्ताश्च प्रसादादिकाः सर्वे अशुभफला वर्धन्ते अतोऽबध्य तस्यच परिमाणं षट्त्रिंशत्पदकोटयः प्राणायुर्द्वादश तन्नाथायुः प्राणविधानं सर्वे स
 भेद मध्येच प्राणवर्णिता स्वात्परिमाण मेकापदकोटीषट्पञ्चाशत्पदसहस्राणीति क्रियाविशाल त्रयोदशं तत्र कायिकादयः क्रिया विशालत्ति सभेदाः
 सयमक्रियाच्छन्दक्रियाविधानानिच वर्धन्ते इति क्रियाविशालं तत्त्वदपरिमाण नवपदकोटयः लोकविन्दुसारं चतुर्दशम तच्चास्मिन्लोकं श्रुतलोकैवा विन्दुरि
 वाचरस्य सर्वोत्तममिति सर्वाचरसन्निपातप्रतिष्ठितत्वेनच लोकविन्दुसारं अर्णितं तत्रमात्रं मद्भ्रत्रयोदशपदकोट्यइति उपायपुण्यस्त्रैत्यादिकण्य नवरं वस्तुनिच
 तार्थाधिकारप्रतिवहो गन्धविशेषो ध्यानवदिति तथा चूडाइवचूडा इहृष्टिवादे परिकर्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तानुक्तार्थं संग्रहपरा गृह्यइति सेतं

**पाण्डु किरियाविसालं लोगविन्दुसारं १४ उपायपुष्टस्सणं दसवत्थु चत्तारिचूलियावत्सू प० अ्युर्गणिय
 स्सणंपुष्टस्स चोदसवत्सू वारसचूलियावत्सू प० । वीरियपुष्टस्सणंपुष्टस्स अष्टवत्सू अष्टचूलियावत्सू प० ।**

मो अबंध्य तिहां तप सयमना फल बध्यनथौ अफलनथौ एहवो वर्ण्यो पद सख्या २६ कोडी पद ११ । वारमो प्राणायु तिहां आउखानो भेद सर्व जीवो
 कक्षी पद संख्या १ कोडी ५६ लाख पद १२ । तेरमो क्रियाविशाल तिहां कायिकादिक क्रिया सत्तर भेदे वर्णवी पद संख्या ८ कोडी पद १३ । चौदसो
 लोक विन्दुसार लोकने विषे विन्दुसरीखो विन्दु सधलामाही उत्तम तेहनी पद संख्या साढी बारह कोडीपद १४ । एतले पूर्वनी बीजी भेद वर्णो कक्षी ।
 प्रथम उत्याद पूर्वना दश वस्तु अध्ययन चार चूलिका वस्तु चूडा चीटली ते सरीखा तेहना वस्तु कक्षा । अग्रणी बीजा पूर्वना चौदे वस्तु बार चूलिका वस्तु
 कक्षा । वीर्य प्रवाद पूर्वना आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कक्षा । अस्तिनासि प्रवाद चौथा पूर्वना अठारह वस्तु १० चूलिका वस्तु कक्षा ४ । ज्ञान प्रवाद

मापस्य भिन्नश्रितत्वा द्विद्वितीयं सूत्रशिक्षितं मानिगमना अवरं संखेज्जायल्लुत्तरे वेगते संखेज्जायल्लुत्तरे षट्स्त्रिंशत् ॥ १२ ॥

यस्सणं परिस्तावायणा संखेज्जाञ्चणुणुगदारा संखेज्जानुपफिवतीनु संखेज्जानुनिज्जुत्तीनु संखेज्जावेढा संखे
ज्जासिलोणा संखेज्जानुसंगहणीनु सेणञ्चणुगठयाएवारसमेञ्चणे एणेसुयखंधे चउदुसपुद्दाइं संखेज्जावत्थू संखे
ज्जाचूलवत्थू संखेज्जापाज्जाळा संखेज्जापाज्जाऊपाज्जाळा संखेज्जानुपाज्जाऊपाज्जाऊ संखेज्जानु पाज्जाऊपाज्जाऊपाज्जाऊ
संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयगणे पन्नत्ता संखेज्जाञ्चक्ररा च्चणंतागमा च्चणंतापज्जावा परिस्तातसा
च्चणताथावरा सासयाकळाणिवट्ठाणिकाइया जिणपसुत्ताजावा च्चाघविज्जाति पसुविज्जाति परूविज्जाति

पूर्व तेहनो चूलिका छे ते पूठे कही छे । शेष थाकता दय्य पूर्व चूलिका रहित छे ते चूलिका पूर्वनी पाचमी भेद दृष्टिवाद पूर्व तेहना परिचा गणती
याचना छे । संख्याता अनुयोग धार उपत्तमादिक। संख्याती प्रज्ञप्ति । संख्याता वेढा। संख्याती संगृहणी । संख्याती नियुक्ति सूत्रने विषे
पर्यनी योजवी । तेह अर्थार्थ परे अङ्ग परे वारसे अंगे एक सुतस्खधने विषे १४ पूर्व। संख्याती २२५ वसु। संख्याता नाकावसु ३४ । संख्याता प्राशुतक अर्थ
कार विशेष । संख्याता प्राशुतप्राशुत अधिकार विशेष । संख्याती प्राशुतिका । संख्याता पदनां अतसहस्र लाख पदने प
रिमाणे लिख्वा छे ते पूठे । संख्याता अचर वर्ण । अनंतागमा अर्थना परिच्छेद । अनंता पर्याय अचर पदना भेद । परिस्ता अनंतनही एतन्ना ३ सर्वश्रद्धि
यादिक । अनता स्थावर बनसति प्रमुख पांच थावर । एह पूर्व मांदि भाव पदार्थ शास्त्रता द्रव्यार्थ परे विच्छेद रहित छे यली पर्याय परे समे २ प्रति

सास्रत ढादशाङ्गविराधनानिष्पन्नत्रैकालिकफलमुपदर्शयन्नाह इक्ष्वयिमित्यादि इत्येत ढादशाङ्गं गणिपिठक मतीवकाले अनन्ताजीवा आस्रया विराध्य चतुरन्त
 सससरकात्वारं अणुपरियद्विसुत्तिअनुपरिवृत्तवन्तः इदहि ढादशाङ्ग सूत्रार्थीभयभेदेन त्रिविध ततश्च आस्रया सूत्रास्रया अभिनिवेशतो न्यथापाठादिलक्षण्या अ
 तीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्त सससरकात्वारं नारकतियड्न्नरामरवित्रिविधवृत्तजालदुस्तर अवाटवीगहन मित्यर्थः अनुपरावृत्तवंतो जमालिवत् अर्थस्रया
 पुन रभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षण्या गोष्टामाहिलवत् उभयास्रया पुनः पञ्चविधाचारपरिज्ञानकारणोद्यतगुर्वदिशादे रन्यथाकरणलक्षण्या गुरुप्रत्यनी
 कइव द्रव्यलिङ्ग वार्थनिकप्रमथवत् सूत्रार्थीभयै विराध्येत्यर्थः अथवाद्रव्यज्ञेनकालभावापेक्षयाऽऽज्योक्तानुष्ठान मेवाज्ञाततया तदकारणेनेत्यर्थः इक्ष्वयिमित्यादि गता
 निदंसिजाति उवदंसिजाति एवंगणए एव विखाए एवं चरणकरणपरूवणया अ्याधविजाति सेतंदिठिवाए ॥

सेतदुबालसंगेगणिपिठगे ॥ १२ ॥ इक्ष्वेइय दुबालसंगेगणिपिठगं अतीतकाले अणुंताजीवाअ्याणाए विरा
 अन्यथा परे कडा कीधा छे निबन्हा सूत्र थकी गूंथा छे । हेतुदाहरणे करी प्रतिपाद्या के जिनने प्रज्ञाथा जणाथा भाव पदार्थ कहीजे । नाम भेद जणावे
 करी । निदंशीये देखाडिये विशेष परे युक्ति देखाडी सामान्य परे एम पूर्व भणी ते ज्ञाता जाखा । एम विशेष परे जाखा । चरण ते पांच महावत रूप
 कारण ते पिखुविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा । जिहां कहिये ते दृष्टिवाद वारमी अग जाणिवी ॥ १२ ॥ एह वारे अग केहवाछे । गणी कह
 तां आचार्य तेहने पेटी रत्नकरंड समानछे । इत्यादि ढादशाग एहने आचार्यने पेटी समान एहने अतीत गयेकाले अनन्ताजीव आस्राने विराधी खडी
 ने चार अत छेहडाछे नरकादिक लक्षण एहवी सससर कांतार गहन अटवी तेह प्रति अनुपरिवृत्तवत भसता हुआ एह ढादशांग गणि पिठगप्रति व

धर्मैव नवरं परित्ताजीवाइति संख्येयाजीवा वर्तमानविशिष्टविराधकमनुष्यजीवानां संख्येयत्वात् अणुपरियद्यति अणुपरावर्तन्ते भ्रमन्तीत्यर्थः इच्चैयमित्यादि इदमपिभार्यै मेव नवरं मणुपरियद्विस्सति अणुपरावर्त्तन्ते पर्यटिथ्यतीत्यर्थः इच्चैयमित्यादि कण्य नवरं विद्ववयंसुति व्यतिव्रजितवन्तः चतुर्गतिकससारीत्तहनेन मुक्तिमवाप्ता इत्यर्थः एव प्रत्युत्पन्नेपि नवरं मय भ्विशेषः वीइवयति अतिव्रजन्ति व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः अनगते खेवं नवरं वीवइस्सति ति व्यतिव्रजिथन्ति व्यतिक्रमिथ्यतीत्यर्थः यदिदं मनिष्टेतरभेदिन्न फल अपिपादित मेतत्सदावस्थायिले सति द्वादशाङ्गस्यो पजायत इत्याह दुवालसगे इ

हिता चाउरंतसंसारकंतरं अणुपरियद्विसु इच्चैइयं दुवालसंगंगणिपिठगं पठुष्यसेकाले परित्ताजीवा अणाणुविराहिता चाउरतसंसारकंतरं अणुपरियद्विति इच्चैइयं दुवालसंगंगणिपिठगं अणागएकाले अणताजीवा अणाणु विराहिता चाउरतसंसारकंतरं अणुपरियद्विसु इच्चैइयं दुवालसंगंगणिपिठगं अणुपरियद्विसु एवंपठुष्यसेवि अणागएवि दुवालसंगं अणताजीवा अणाणु अाराहिता चाउरंतसंसारकंतरं विद्ववइसु अणुपरियद्विसु एवंपठुष्यसेवि अणागएवि दुवालसंगं

तमानकाले परित्तासख्याता जीव मनुष्य आश्राने विराधीने चातुरत संसार कांतर प्रति अणुपरावर्त्तं भ्रमे छे । एह द्वादशांग गणिपिठगने । अनगत भविथकाले अनंताजीव आश्राने विराधीने चातुरत संसार कांतरप्रते भ्रमस्ये । एहवा द्वादशांग गणिपिठगप्रते अतीतकाले अनताजीव आश्राने अराधीने चातुरत संसार कांतरप्रते पार पांमताहुआ । एम वर्तमानकाले पार पांमे छे । एम भविथकाले पार पांमस्ये । एह द्वादशांग गणिपिठक । नही क दाधिक् किवारे वर्तमानकाले नश्री एमनही । नही किवारे अतोतकाले नासीक् नहुती एमनही । तथा भविथकाले तिवारे नही क्षीय एम नही छिहडो

त्यादि द्वादशाङ्गान्नित्यलङ्कारे गणिपिटकं नकदाचिन्नासी दनादित्वा नकदाचिन्नभवति सदेवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किंतिहिं शु
विचेत्यादि अभूच्च भवतिच भविष्यतिच ततश्चेदन्निकालभावित्वाच्चलत्वाच्च ध्रुवं मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव नियतं स्पष्टास्तिकायेषु लोकवचनवत् नियतत्वादेव
शास्वत समयवलिकादिषु कालवचनवत् शास्वतत्वादेव वाचनादिप्रदानेय चयं गङ्गासिन्धुप्रवाहेषु पद्मद्रवत् अचयत्वादिवा व्ययं मानुषोत्तराद्बहिः समु
द्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्नमाणे ऽवस्थितं जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रतं दृष्टान्त मन्त्रार्थे आह सेजहानामएदत्यादि तद्वया
नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास त्रित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदसिद्धेविति एत्यणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्गे

गणिपिटकं गकयाङ्गस्य गकयाङ्गणासी गकयाङ्गणन्नविस्सइ न्रुवंच न्रवति न्रविस्सतिय ध्रुवेणितए
सासए अरुए अरुए अरुए णिञ्जे सेजहाणामए पंच अत्यिकाया गकयाङ् गज्यासि गकयाङ् गल्या
नही तेमाटे हुती तोसू । एह द्वादशांग पूर्वहुंता हिवडाछे आगलि होस्ये एतले त्रिहुंकाले पामिये एह द्वादशांग ध्रुव निखलछे वली नियतछे । सदाभावी
पचास्तिकायनीपरे चयनही व्ययनही विनाशनही चार समुद्रवत् शाखतछे समयदिकालनीपरे वली अत्रय पद्मद्रहने विषे गंगासिधुना प्रवाहनीपरे पंचा
स्तिकायनीपरे वली अवस्थित जम्बूद्वीपनीपरे वली नित्य आकाशनीपरे सांप्रत दृष्टांत देखाडीयेछे । तेथानाम जिम पंचास्तिकाय धर्मास्तिकायादि किवा
रे अतीतकाले नही न हती एम वर्तमान काले किवारे नथी एमनही । तथा भविष्यकाले किवारे नही हुस्ये एमनही । एह पंचास्तिकाय हुती अतीत
काले आगलिकाले होस्ये । वर्तमानकालेछे । ध्रुव नियत शाखत नित्य । एह पदार्थं वखाणाछे । एषे दृष्टांते द्वादशांग गणिपिटक किवारे अतीतकाले न

गणिपिटके अनन्ताभावा आख्यायन्त इतियोगः तन्नभवन्तीतिभावा जीवादयः पदार्थाः एतेच जीवपुद्गलानामनन्तत्वा दनन्ता इति तथा अनन्ता अभावाः सर्वभावानमेव पररूपेणासत्वा त्तएवान्ता अभावा इति स्वपरसत्ताभावाभावोभयाधीनत्वाद्बसुतलस्य तथाहि जीवो जीवालनाभावो ऽजीवालनाचाभावो ऽन्यथा ऽजीवलप्रसङ्गादिति अग्येतु धर्मापेक्षया अनन्ताभावाः अनन्ताऽभावाः प्रतिवस्त्वस्तिवनास्तिवाभ्या अतिबद्धा इति आचञ्चन्ते तथा ऽनन्ताहेतवः तत्र हि

णकयाइ ण न्निवस्संति न्निवं न्निवस्संतिय धुवा णितिया सासया अस्सकया अस्सया अस्सया अस्सया
या णिन्ना एवामेव दुवालसंगे गणिपिठगे णकयाइ ण अयासि णकयाइणन्निवस्सइ न्निवं
च न्निवस्संतिय धुवे जावअस्सइणु णिन्ने एत्थं दुवालसंगे गणिपिठगे अणन्ताभावा अणन्ताअन्ना
वा अणन्ताहेज्ज अणन्ताअहेज्ज अणन्ताकारणा अणन्ताअकारणा अणन्ताअजीवा अणन्ताअन्ना

इतो एम नही । बर्तमानकाले किवारे नथी एमनही । भविष्यकाले किवारे नहीय एमनही । इतो छे हीस्से एतले त्रिकालभाव । ध्रुवादिक पद सधला क
हिया जिहां लगे अवस्थित तथा नित्य पद आवे तिहालगे कहिवी । एणे द्वादशाग गणिपिटकने विषे अनन्ताभाव जीव पुद्गलादिक भावपदार्थ अणन्ता
छे । अनन्ता अभाव पीतानी अपेक्षायि आपणपी परने विषे नही एह अभाव तेही अनन्ता । हेतु ते जाणवा रूप वसु धर्मविशिष्ट अर्थने पामे ते हेतु व
सु पणे अनन्तछे । तद्विशिष्ट अर्थपणि अनन्तछे । हेतुनालक्षणथी विपरीत अहेतु तेही अनन्त छे । मृत्पिडादिक जिम घटना कारण तेही अनन्त छे । जिम
मृत्पिडादिक घटना कारण तेपटना अकारण छे तेही अनन्तछे । जीव अनन्तछे । अजीव स्थाणुकादिक पुद्गल तेही अनन्तछे । भव्य जीव अनन्तछे । अभाव्य

नोति गमयति जिज्ञासितधर्माविशिष्टानर्थानितिहेतु स्नेचानन्ता वसुनी नन्तधर्मात्मकत्वात् तत्रातिवहधर्माविशिष्टवसुगमकत्वाच्च हेतोः सूत्रस्य वानन्तगमपर्या
 याल्कत्वात् यथोक्तहेतुप्रतिपक्षतो ऽनन्ता अहेतवस्तथाअनन्तानि कारणानि सृष्टिखलत्वादीनि घटपटादिनिवर्तकानि तथा अनन्तान्यकारणानि सर्वकार
 णानामेव कार्यान्तराकारणत्वा न्नहिस्तृप्तिखलः पटनिवर्तयतीति तथा अनन्ताजीवाः प्राणिन एवमजीवा द्वाणुकादयः भवसिद्धिका भव्याः सिद्धा निष्ठिता
 र्था इतरे सप्सारिण आधविज्जती त्यादि पूर्ववदिति द्वादशाङ्गस्य स्वरूपमनन्तरमभिहित मय तदभिधेयस्य राशिद्वयान्तर्भावतः स्वरूपमभिधित्सुराह दुवेरा
 सौत्यादि इहच प्रज्ञापनायाः प्रथमपदं प्रज्ञापनाख्य सर्वं न्तदन्तर मध्येतव्यं किमवसानमित्याह जावसेकितमित्यादि केवल मस्य प्रज्ञापना सूत्रस्य चाय
 म्विशेषः इहदुवेरासीपणत्ता इत्यभिलाप सूत्रतु दुविहापणवणपणत्ता जीवपणवण अजीवपणवणायत्ति अनिर्दिष्टस्यच सूत्रतः सर्वस्य प्रज्ञापनापदस्य ले

सिद्धिया अणन्ताञ्चभवसिद्धिया अणन्तासिद्धा अणन्ताञ्चसिद्धा अणन्ताञ्चसिद्धा अणन्ताञ्चसिद्धा अणन्ताञ्चसिद्धा अणन्ताञ्चसिद्धा अणन्ताञ्चसिद्धा
 दसिज्जाति निदसिज्जाति उवदसिज्जाति एवदुवालसंगणपिच्छं इति दुवेरासी पन्नता तंजहा तंजहा जीवरासी
 अजीवरासीय अजीवरासी दुविहा पन्नता तंजहा रूवीञ्चजीवरासी अरूवीञ्चजीवरासीय सेकितंञ्चरूवी

जीव अनन्त छे । सिद्ध अनन्त छे । एहसर्वभाव पूर्वने विधि कहिये । जणवीये देखाडिये विशेषणी देखाडीये । उपदेश करिये । द्वादशांग स्वरूप कहने
 हिने तेहीजमां वेरासी कहीछे तेकहेछे । जीव राशि अजीवराशि । अजीवराशि वेप्रकारे छे तेकहेछे । रूपी अजीव राशि । अरूपी अजीवराशि । स्यंते
 अरूपी अजीवराशि अरूपो अजीवराशी दशप्रकारे तेकहे छे । धर्मास्त्रिकाय स्तंभ १ देश २ प्रदेश ३ । अधर्मास्त्रिकाय स्तंभ १ देश २ प्रदेश ३ आक्राया

गर्मं नवरं दंडश्रीत्ति नैरइया १ असुराई १० १० पुढवाइ ५ बेइदियादश्री ३ मणुया १ वंतर १ जोइसवेमाणियाय १ अहदंडश्रीएवं ॥ अथानतरप्रप्रप्ता
नां नारकादीना स्मर्याप्तापर्याप्तभेदानां स्थाननिरूपणायाह इमीसिणमित्यादि अवगाहना सूत्रादर्वाकसर्वं कव्य नवर तेषुनिरया इत्याद्यत्रच जीवाभिग

वीए केवइयंखेतंलगहेत्ता केवइयाणिरयावासा पस्यत्ता गोयमा इमीसिण रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्त
रजीयणसयसहस्रवाहल्लाए उवारि एणंजोयणसहस्रसुलगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसहस्रसंवज्जेत्ता मज्जे अठसत्त
रिजीयणसयसहस्रे एत्थणं रयणप्पन्नाए पुढवीए णेरइयाणंतीसं णिरयावाससयसहस्रा अवतीतिमस्काया

आणपाण ४ भाषा ५ मन ६ एह छ पर्याप्ती पूरौकरी ते पर्याप्ता । छ माहि ५ पर्याप्ति ४ पर्याप्ति करीने मरे ते अपर्याप्ता १ एम २४ दडकना जीव पर्याप्ता
अपर्याप्ता भण्णिवा जिहालगे वैमानिकनी २४ मी दडक आवे तेहदडकनीगाथा नैरइया १ असुराइ १० पुढवाइ ५ बेइदिया ४ मणुया १ वतर १ जोइस
वेसाणियाय १ अहदंडश्री एव एह ठाणंगे बीजे ठाणे जिम जीवनां भेद वेवे कल्लाछे पणि इहा सर्वं कहिवी । हिवे २४ दडक मांहि पहिली नारकीनेछि ।
तेह नारकीने रहिमाना ठाम भगवंत आगलि गीतम खामी पूछेछे एणीयं हेभदंत हेपूज्य रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतली चेत्त श्रीगाहीने एतले अवगाहीने
वली केतला नरकावासाकल्ला । हे गीतम एणी ये रत्नप्रभा पहिलीपृथिवीने विषे ८० हजार योजन उत्तरे आगलीछि जेहने एहवी १ लाख योजन वाहुल्य
पणे जाडपणे पृथिवी पिडछे तेमाहि उपरि एक सहस्र योजन अवगाहीने मूकीने हेठे एक हजार योजन वर्जीने पछे विचे १ लाख अठतर हजार यो
जन पृथिवी पिड राखीये । इहा रत्नप्रभा पृथिवीयें तेरेपाथडछि तेमाहि नारकीना ३० लाख नरकावासाकल्लाछे । तेनरकावासा मांहि वाटला बाहिर

मचूर्यनुसारेण लिख्यते किल द्विविधा नरका भवन्ति आवलिकाप्रविष्टाः आवलिकाबाह्याश्च तत्रावलिकाप्रविष्टा अष्टासु दिक्षु भवन्ति ते च वृत्तत्यस्रचतुर
 स्रक्रमेण प्रत्यवगन्तव्याः एतेषाञ्च मध्ये इन्द्रकाः सीमन्तकादयो भवन्ति आवलिकाबाह्यास्तु पुष्पावकीर्णा दिग्दिदिशामन्तरालेषु भवन्ति नानासंस्थानसंस्थि
 ता इति निरयसंस्थानव्यवस्था तत्र च बाहुल्यमङ्गीकृत्येदं मभिधीयते अंतोवष्ट्यादि उक्तं च सूत्रकृतिकृता नरकाः सीमन्तकादिकाः बाहुल्यमङ्गीकृत्यांतर्मध्ये
 इत्ता बहिरापि चतुरथा अथ चतुरप्रसंस्थानसंस्थिता एतच्च संस्थानं पुष्पावकीर्णकानाश्रित्योक्तं तेषामेव प्रचुरत्वात् आवलिकाप्रविष्टास्तु वृत्तत्यस्रचतुरस्रसं
 स्थानाभवन्तीति तत्रांतर्हता मध्ये शुभिरमाश्रित्य वह्निश्चतुरसाः कुक्षपरिधिमाश्रित्य यावत्कारणदिदं दृश्यं यदुत अथः चतुरप्रसंस्थानसंस्थिता भूतलमाश्रित्य
 चतुराकारास्तद्भूतलस्य सवारिसत्वपादच्छेदकत्वात् अन्यत्वाद् स्तेषामधस्तांशः चतुरप्रइवाग्रेऽप्युप्रतलोविस्तीर्णश्चेति चतुरप्रसंस्थानता तथा निव्वधयारतमसा
 ववगयगहचदचूरनक्षताजोऽसपहामियवसापयूरुहिरमसचिक्विल्लित्ताणुलेवणतला असुइवीसापरमदुभिगंधाकाज्जअगणिवसागाकक्वडफासादुरभियास
 इति तत्र नित्य सर्वदा अन्धकार अन्धताकारकं स्वहलवलाहकपटलाच्छादितगगनमंडलामावास्यार्द्धरात्रांधकारव तमस्रमिथ्य येषु ते नित्यान्वकारतमसः

तेणंणिरयावासा अंतोवह्ना वाहचउरंसा जावअसुनाणिरया असुनाणिरएसुवेयणाउ एवंसहवित्राणिय

चउखूणा नरकावासा विप्रकारना छे । एक आवलिका प्रविष्ट बीजा आवलिकाबाह्य तेमाहि आवलिका प्रविष्ट ते अठ दिशिने विषे छे ते वृत्त ग्यस्र चतुर
 स्र क्रमे जाणिवा । एहमाहि इन्द्रक ते वाटला सीमतादिक अने आवलिकाबाह्य ते पुष्पावकीर्ण दिशि विदिशिने अंतराले नाना संस्थान संस्थित छे ।
 जिहांलगी महा अशुभछे नारकी वेदना भोगवे छे । एमज साते नरक पृथिवी भणवी कहि वी जे बाहुल्य पणू नरकावासा परिमाण पृथिवीये जोइये तेगाथा

प्रथवा नित्यनाम्बकारेण सार्वकालिकनेत्यर्थः तमसस्तमिशा नित्याग्धकारतमसः जालम्बिघान्धकाराऽमावास्यानिशीथतुल्याइत्यर्थः कथमित्यत आह व्यप
 गता अविद्यमाना ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणा ज्योतिषां ज्योतिष्कालक्षणे विमानविशेषाणां ज्योतिषो वा दीपाद्यग्नेः प्रभा प्रकाशो येषु ते तथा पृहति पथ
 शब्दो वाय व्याख्येयः तथा मेदो वसा पूयक्तधिरमांसांनि शरीरावयवा स्तेषां यच्चिक्विसं कर्दम स्तेन लिप्त मुपदिग्ध मनुलोपनेन सकृत्क्षिप्तस्य पुनः पुनर्लोपनेन
 तल भूमिका येषां न्ते मेदोवसापूयक्तधिरमांसचिक्विसलिप्तानुलोपनतला यद्यपिच तत्रमेदः प्रथतीन्यौदारिकपचैद्वियशरीरावयवरूपाणि नसन्ति वैक्रियश
 रीरत्वान्नाकाणां तथापि वदाकारा स्तन्नप्रीच्यन्त इति अशुचयो मिश्राः आसगन्धयः पूतिगंधयइत्यर्थः अतएव परमदुरभिगधाकाजअगणिवसा
 भक्ति कृष्णामिर्लीहादीनां ध्यायमानानां तद्वर्णवदाभा येषान्ते कृष्णाग्निवर्णाभाः तथा कर्कशः सश्रीं येषांति कर्कशसर्षा अतएव दुःखेन कृच्छ्रेणाधिसीढं प्रक्यते
 वेदना येषु ते दुरधिसन्नाः अतएवाशुभानरका अशुभानरकेषु वेदना इति एवंसत्तविभाणियव्वत्तिप्रथमा ममुच्चता सप्तइत्युक्तंजजासुजुज्जइतियच्च यस्यांभृथि
 यथा वाहस्यस्य नरकाणांच परिमाण युज्यते स्थानान्तरीक्तानुसरिण तच्च तस्यां वाच्य तच्चेदं असीतंगाहा तीसायगाहा अशीतिसहस्राधिकयोजनलक्ष रत्नप्र

द्वाड जंजासुजुज्जइ असीयंबतीसं अष्टावीसंतहववीसंच अष्टारससोलसगं अटुत्तरमेववाज्जलं ॥१॥ तीसा

माहि कहेके । पहिलीये १ लाख ८० हजार योजन पृथिवी पिड । बीजीये १ लाख ३२ हजार योजन पृथिवीपिड । त्रीजीये १ लाख २८ हजार योज
 न पृथिवीपिड । चौथीये १ लाख २० हजार योजन पृथिवीपिड । पांचमीये १ लाख १८ हजार योजन पृथिवीपिड । षष्ठीये १ लाख १६ हजार योजन
 पृथिवीपिड । सातमीये १ लाख ८ हजार योजन पृथिवीपिड । पहिलीये ३० लाख नरकावासा । बीजीये २५ लाख बीजीये १५ लाख । चौथीये १०

भायावाह्यमेव शेषासुभाबनीयं तथा विश्वज्ञाणिप्रथमायां नरकायासाना मिलेवं शेषास्त्रपिनियमिति आयासपरिमाणं चासुरादीना मपि दशानां सौ धर्मादीनां च कल्पेतराणां सूत्रे वर्ण्यतीति तत्रिवासपरिमाणसंग्रहः चउसहीइत्यादि गाथाः पंच एवचेहसत्राभिलाषोद्वयः सकरप्पभाएण्युठवीएकेवइयंग्रीगा

यपस्ववीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं तिस्रेगंपंचूणं पंचेवञ्चणुत्तरानरगा ॥ २ ॥ चउसठीञ्चसुराणं चउ
रासीइंचहेइनागाणं बावत्तरिसुवन्नाणं बाउकुमाराणठसउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंद
थणियमग्गीणं त्तरहंपिजुवलयाणं बावत्तरिमोयसयसहस्सा ॥ ४ ॥ वत्तीसाठावीसा वारसञ्चरुचउरोसयस

लाख । पांचमीये ३ लाख । छठीये ५ कणाएक लाख । सातमीये ५ नरकावासा जाणिया ॥ २ ॥ चउसठीइना भवन ३४ लाख वलीइरगा ३० लाख बिहुंमि
ली ६४ लाख असुरकुमारना भवन । तथा धरणेइना ४४ लाख भूतानेइना ४० लाख बिहुंमिली ८४ लाख भवन नागकुमारना । तथा वेणुदेवना ३८
लाख वेणुदालीनां ३४ लाख बिहुंमिली ७२ लाख भवन सुपर्णे कुमारना । तथा बेलंबना भवन ५० लाख प्रमंजना ४६ लाख बिहुंमिली ८६ लाख
वायुकुमार ना भवन । तथा पूर्णना ४० लाख विशिष्ठना ३६ लाख बिहुंमिली द्वीपकुमारना ७६ लाख । एक युगल । अभितगति नां ४० लाख अमित
वाहनना ३६ बिहुंमिली ७६ लाख । दिसाकुमारना । बीजीयुगल । तथा जलकांतना ४० लाख जलप्रभना ३६ लाख उदधिकुमारना । त्रीजुं युगल । हरि
कांतना ४० लाख हरिसहना ३६ लाख बिहुंमिली ७६ लाख विद्युत कुमारना । चौथी युगल । घोषना ४० लाख महाघोषना ३६ लाख बिहुंमि मिली
स्नितिकुमारना ७६ लाख । पांचमी युगल । अग्निशिखनां ४० लाख अग्निमाणवनां ३६ लाख बिहुंमिली अग्निकुमारनां ७६ लाख भवन । एह छठी युग

हित्ता केवइयानिरया पसुत्ता गीयमा सकरप्पभाएणं पुढवीए बत्तौसुत्तरजीयणसयसहस्र वाहलाए उवरिएणलोयणसहस्रसं वज्जित्तामज्जेतीसुत्तरे जीयणस
यसहस्सेएत्थणं सकरप्पभाए पुढवीएनेरइयाणंपणवीसिनिरयावाससयसहस्रसामवतीति मक्खाया तेणनिरएइत्यादि एवंगाथानुसारेणा न्येपि पञ्चालापकावाथा
इत्येतदेवाह दीञ्चाएत्यादि वेयणात्री इत्येतदन्तसुगम नवरं गाहाहितगाथाभिः करणभूताभिर्गाथानुसारेणै लथ्याः भणितव्या वाथा नरकावासाइति प्र

हस्सा पसाचत्तालीसा ठच्चसहस्सासहस्सारे ॥ ५ ॥ ज्याणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणञ्जुएतन्नि । सत्तवि
माणसयाइं चउसुविणुएसुकप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्जिमए सयमेगउवरिमए पंचेवञ्जुणु
त्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोञ्चाएणं पुढवीए तञ्चाएणं पुढवीए चउस्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए ठठीए पुढ

ल एणी विधिये एह पूर्वोक्त छ युगलना कोत्तर लाख भवन कक्षा । हिवे १२ देवलोक ६ त्रैविक ५ अनुत्तर विमान मांहे सर्वविमान नी संख्या कहैछि ।
सौधर्म देवलोक ३२ लाख विमान । ईशाने २८ लाख । सनलुमारै १२ लाख । मांहेद्रे दलाख । ब्रह्मदेवलोक ४ लाख । एतलालगी लाख जाणिवा । लांत
के ५० हजार विमान । शुक्र ४० हजार । सहस्सर ६ हजार विमान । सहस्सरलगे सहस्र कहिये । आनत प्राणत नीमे दशमे देवलोक ४ से विमान ।
आरण अचुतमिली ३०० । नीमा दशमा इयारमा बारमा एह चिहुदेवलोकमिली ७०० विमान । एकसीइयारहविमान नवयैविकमांहे हेठिलानिकने
विषे । मध्यमत्रिकमांहे १०७ विमान । उपरिलानिकगवैक एकसी । अनुत्तरविमानि पांच विमान । सर्वमिली ८४ लाख ८७ हजार उपरि २३ । बीजी
शर्करप्रभा पृथिवीये बीजी बालुकाप्रभा पृथिवीये चौथी पंकाप्रभा पृथिवीये पांचमी धूमप्रभा पृथिवीये छठी तमप्रभा पृथिवीये सातमी तमतमा पृथिवीये

क्रम स्या वद्वैतसायति मथमीहक्तः शेषास्त्यस्ता इति अथा सुराद्यावासविषयमभिलाषं दर्शयति केवइत्यादि सुगमं नवरं तानि भवनानि वहि ह्वत्तानि

वीए सप्तमीए पुढवीए गाहाहिंआणियव्वा सत्तमाए पुढवीए पुच्छा गोयमा सत्तमाए पुढवीए अणुतरजो
यणसयसहस्साइं वाहल्लाएउवारि अणुतेवन्नं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता हेठाविअणुतेवन्नं जोयणसहस्सा
इं वज्जित्ता मज्जेतिसुजोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचअणुत्तरा महइमहालया महा
निरया पस्सत्ता तंजहा काले महाकाले रोसुए महारोरुए अणुप्पइठाणेनामं पंचमे तेणंनिरया वहाय तंसा

एह सात नरकपृथिवीना नरकावासानी सख्या पिच्छाडी गाथामाहि कहीके तिम कहिबी । सातमी नरकपृथिवीनी सरूप पूछेके भगवंतआगलि । भग
वत कहेके । हेगौतम सातमी पृथिवीने विषे एकलाख अठुत्तर हजार योजन जाडपणी तेमाहि उपरि अर्धवेपनहजार योजन एतले साढा वावन सहस्र
योजन अवगाहीने ऊपर मूकौने वली हेठे पणि साढावेपन हजार योजन वर्जी ने मध्ये विचाले त्रिण हजार योजनने विषे एक पायडी इहाँ सातमी
तमतमा पृथिवीये नारकीना पांच अरुत्तर कहतां ते उत्तरे आगले एहवा वीजा नरकावासा नथी तेमाटे अनुत्तर घणज घणा मोटा महा नरका
वासा कह्ना तेकहे के । पूर्वदिसे काल १ दक्षिणी महाकाल २ पश्चिमे एचक ३ उत्तरे महारुचक ४ पांचमी विचे अग्रतिष्ठान ५ तेह नरकावासा वाटला
अयस त्रिखूणिया एतले पांच नरकावासामांही अणुपइठाण ते वाटली अने चिहदिग्गिना कालादिकना ४ त्रिखूणिया वलीकेहवाके अहेत्ति हेठे छुरप्र एतले
छुरपलाने सस्थाने सस्थितके । यावत् शब्दे चन्द्र सूर्य रहित कईमभूत अशुभ घणो भंडी नरक के । तथा अशुभ घणो भंडी के नरकने विषे वेदना । बली

ति षष्ठपलारिशङ्गेदभिन्नविचित्रकन्दो गोपुत्ररचितानि अन्वेभणन्ति अडयालशब्दः किलप्रगंसावाचकः तथा अडयालकयवणमालति अष्टपलारिशङ्गेदभि
 याः प्रशंसाहर्षकृता वनमाला वनस्यतिपक्षवस्रजो येषु तानि तथालाइयति यद्गुमेच्छगणादिनोपलेपन उल्लोइयति कुण्डमालानां सेटिकादिभिः सन्धृीकरणं
 ततस्ताभ्यामिव महितानि पूजितानि लाउल्लोइयमहितानि तथा गोशीर्षं चन्दनविशेषः सरसञ्च रसोपेत यद्रक्तचन्दनं चन्दनविशेषः ताभ्यां दर्दराभ्यां घना
 भ्यां दत्ताः पञ्चाङ्गुलय स्त्रला हस्तकाः कुण्डेषु येषु अथवा गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनस्य सल्का दर्दरेण चपेटाभिघतिन दर्दरेषु वा सोपानवीथीषु दत्ताः प
 ष्चाङ्गुलयस्त्रला येषु तानि गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनदर्दरदत्तपचाङ्गुलितलानि तथा कालागुरुः कृष्णागुरु गन्धद्रव्यविशेषः प्रवरः प्रधानः कुंदुरुक शीडा तुरुष्कः
 सिरहक गन्धद्रव्यमेव एतानि च तानि उज्ज्वलानि चैतिविगृहः तेषां योधूमो मधमधैतत्ति अनुकरणशब्देयं मधमघायमानो वहलगधद्रव्यैर्घः
 तेनोद्वाराणि उल्लटानि तानि तथा तानि च तान्यभिरामाणि रमणीयानीतिसमासः तथा सुगन्धयः सुरभयो ये वरगन्धाः प्रधानवासा स्त्रेषां गन्ध आमीदी
 येष्वस्ति तानि सुगन्धिवरगधिकानि तथा गधवर्त्ति गन्धद्रव्याणा गधयुक्तियास्त्रोपदेशेन निवर्त्तित गुटिका तद्भूतानि तल्लयानीति गंधवर्त्तिभूतानि प्रव

लितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्षतुर्क्षरुज्जंतधूमधमधैतगधुद्रुयानिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टेन्नूया

भाग खडैयै करी धोळ्यो तेणेकरो महित पूजितछे जेह । गोशीर्षचदनविशेष रक्ताचदन तेविहु दर्दर निभिडपणे दीघाछे पचागुलितला हाथा भीतिनि विषे
 हाथा दीघा छे । कृष्णागरु प्रवर प्रधान चौड तुरुकसिस्हारस एह पूर्वोक्त उज्ज्वल दाभता तेहनी जे धूप मधमघायमान बहुल गंध तेणे करी
 उल्लट अने अभिराम रमणीय एहवा जाणिवा । तथा सुगधति सुगंध सुरभि वर प्रधान गध तेणेकरी गधित छे गंधवत छे तथा गधनी वाती तेह समान

रगधगुणानीत्यर्थः तथा अर्क्षानिश्चाकाशस्फटिकवत् स्पष्टं स्रष्ट्वानि सूक्ष्मसूक्ष्मदलनिष्पन्नत्वात् नक्षत्रदलनिष्पन्नपटवत् लणहति मरुणानीत्यर्थः घुटितपटव
 त् घटति घृष्टानीवघृष्टानि खरशाण्यापाषाणप्रतिमावत् मृष्टति घृष्टानीवघृष्टानि सुकुमारशाण्यापाषाणप्रतिमेव शोधितानिवा प्रमार्जनिकायेव अतएव
 नीरयति नीरजांसि रजोरहितत्वात् निम्बलति निम्बलानि कठिनमलाभावात् वितिमिराणि निरन्धकारत्वात् विशुद्धति विशुद्धानि निक्लङ्गत्वा न्नचन्द्रव
 त् सकलंजानीत्यर्थं तथा स्पष्टति सप्रभाणि सप्रभावाणि अथवा स्वेनात्मना प्रभान्ति शोभन्ते प्रकाशते चेति स्वप्रभाणि यतः समरीयति समरीचीनि स
 किरणानि अतएव सउज्जोयति सहस्रोतिन वस्त्रन्तरप्रकाशनेन वर्त्ततइति सोद्योतानि पासाइयति प्रासादीयानि मनःप्रसक्तिकाराणि दरिसृष्टिज्जति
 दर्शनीयानि तानिहि पश्य' वसुधा नयमङ्गच्छतीतिभावः अभिरुवति अभिरूपाणि कामनीयानि पडिरुवति प्रतिरूपाणि द्रष्टारप्रति रमणीयानि नैकस्य
 कस्यचिदेवेत्यर्थः एवमित्यादि यथा सुकुमारावाससूत्रे तत्परिमाणमभिहित मेवामेवमिति यथायद्भवनादिपरिमाण यस्य नागकुमारादिनिकायस्य क्रमते

वृच्छा सरहा लरहा घठा मठा नीरया णिमल्ला वितिमिरा विसुद्धा सप्यज्ञा समरीया सउज्जोञ्जा पाशा

के अच्छत्राकाशनीपरै स्फटिकनीपरै । अक्ष्य सूक्ष्म पुद्गले करी नीपनी के । लणहति सुकुमाल कोधा के घूंवा वस्त्रनी परे । घटति खरशाणैकरौ पाषा
 णप्रतिमानीपरै वस्यछे । मृष्टति घणैसुकुमालशाणैकरौ पाषाणप्रतिमानौ परे मठाराछे एणे कारणे नीरज रजरहित निर्मल मलरहितके । वितिमिरा
 अंधकार रहित छे । निम्बलंजके । प्रमाकाति तेषे सहितके । श्रीयोभा तेषेकरौ सहितके । उद्योत प्रकाश सहितके । मनने प्रसाद करे तेमाटे देखवायो
 यके । कामनीयके देखणहारप्रते रमणीकके । एमज जेहनी जे जे मान प्रमाण मनोहरपणी असुरकुमार सूत्रेण विषे कह्योके । जे जे भाव गाथायें भखी ते

घटते तत्तस्य वाच्यमिति किंविधं तत्परिमाणमतत्राह जंजंगाहाहि भणियं यद्यत्रगाथाभिः चउसद्विस्राराणमित्यादिकाभि रभिद्भिन् किम्परिमाणमेव तथावाच्यतहेत्याह तहचैववण्श्रीति यथाअसुरकुमारभवनानां वर्णकडक्त स्थाया सर्वेषामसौवाच्यइति तथाहि केवइयाणभंते नागकुमारारावासापस्थता गीय मा इमीसिणरयणप्यभाए पुढवीए असीउत्तरजीयणसयसहस्रपमाणएडपिं एगजीयणसहस्रओगाहेत्ताहेष्ठोचैगजीयणसहस्रं वज्जेत्ता मञ्जेअठ्ठहत्तरे जीय

इया दरिसणिजा अञ्जिरुवा पञ्जिरुवा एवजंजस्सकमातीतं तस्स जं जं गाहाहिं ञणियं तहचैववसुत्त
केवइयाणं भंते पुढविकाइयावासा प० गीयमा अ्सुखेजा पुढविकाइयावासा प० एवजाव मणस्सत्ति के
वइयाणं भंते वाणमंतरावासा प० गीयमा इमीसिणं रयणप्यजाए पुढवीए रयणामयस्स कंठस्स जीयण
सहस्स वाहल्लस्स उवरिण्णंजीयणसयं अ्योगाहेत्ता हेठाचैगंजीयणसयवज्जेत्ता मञ्जे अठ्ठसुजीयणसएसु एत्थ

तिमज वर्णनकरिवो । नागकुमारादिनो पणि तिमज वर्णनकरिवो । वली गौतम पूछ्छे हेपूज्य केतला पृथिवीकायिकावासा कद्धा पृथिवी रहिवानाठाम
भगवत कह्छे हेगौतम । असख्याता पृथिवीकायिकावासा छे । एमज पाणी अग्नि वायु रहिवाना ठाम असख्याताछे । एमज वेइन्द्रिय तेरिन्द्रिय चीरि
न्द्रिय तिर्यचपचेन्द्रिय असख्याता कहिवा मनुथना ठाम असख्याता कहिवा एतले गर्भज मनुथसख्याता कहिवा । अने समूर्च्छिम मनुथ असख्याता क
हिवा । वली पूछ्छे केतला हेपूज्य वानमतरावासा व्यंतरनारहिवानाठाम । भगवत कह्छे । हेगौतम एणीयें रत्नप्रमाष्टथिवीचे त्रिणकाडछे तेमांहि पहि
ली १६ सहस्र योजन कांड तेमांहि पहिहली १ सहस्र योजन रत्नकाडछे तेह रत्न कांडनी योजन सहस्रनी वाइस्यपणी तेहने विषे उपर एकसीयीजन

यसहस्रे एत्थं रथण्यभाएसुलसीइनागकुमारावाससयसहस्रा पञ्चत्ता तेणभवणाइत्यादीनि केवइयागंभते पुढवीत्यादि गतार्थे नवरं मनुष्याणां गर्भव्यु
त्क्रान्तिकानां असंख्यातानामभावात् संख्याताएवावासाः संसृष्टिमानांत्वसंख्येयत्वेन प्रतियरोरमावास भावादसंख्याता इति भावनीयमिति केवइयाण

णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसखेज्जा शोमेज्जा नगरावासासयसहस्रा प० तेणंशोमेज्जानगरा वाहिंअहा
अंतोचउरंसाएवंजहाअवणवासीणं तहेवणेयहा णवर पढागमालाउला सुरम्मापासाइया दरिसणिज्जा अन्नि
रूवा पफिरूवा । केवइयाणंअंते जोइसियाणं विमाणावासा प० । गीयमा इमीसेणं रथण्यन्नाए पुढवी
ए वज्जसमरमणिज्जानुं भूमिजागानुं सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उहुं उप्पइत्ता एत्थणं दसुत्तरजोयणसय वा
हस्रे तिरिय जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं अस्सखेज्जा जोइसियविमाणावासा प० तेणं जोइसियविमाणा

वर्जां ने पछे वली हेठे पिण एकसो योजन मूकीने मध्ये विचे आठसे योजन जगसा इहा वाण्यत्तर देवना तिरिखा लोक माहि असख्यात भूमि
सवधी नगरना आवासना लाख कह्या । ते भौमिय नगरवासा वाहिर बाटला माहि चउरंसा चौखुणा । एमव जिम भवनपतिना घर वर्णव्या तिमइहा
पणि नवर एतलोविशेष तेकिसो पताका विजय वैजयती तेहनी माला तेणेकरी आकुल व्याप्त छे । वली सुरम्भ रमणौकछे । देखबायोचछे । वली
गौतम पूछेछे । केतलाएक हेपूव्य जोतिषीना विमानावासा कह्या । हेगौतम एणोयि रत्नप्रभा यहिली शुधिवीनी वर्णज सम रमणौक भूमिभाग तेहयकी
सातवेनेजयोजन लगे ऊंचो डव्यतीने जइने इहा १० योजनता वाइत्यपणां मांइ एतला आकाश प्रदेशना ऊंचपणामाहि जोतिषीनी विषयव्यायीछे

भतेजोइसियाणंनिमाणवासाइत्यादि अशुभगयसुसियपहसियति अशुभता सञ्जाता उत्तता प्रवलतया सर्वासु दिशु प्रसृता या प्रभा दीप्ति सया सिताः शुक्ला इत्यशुभतोत्सृप्तप्रभासिताः तथा विविधा अनैकप्रकारा मणय शङ्करान्तादयो रत्नानि कंकतनादीनि तेषाम्भक्तयो विच्छिन्नविशेषा स्ताभि द्विचाश्चि त्रवन्तः आश्चर्यवन्तोवेति विविधमणिरत्नभक्तिचिन्ताः तथा वातोद्भूता वातकम्भिता विजयी श्चुदयस्त्रुलं सूचिता वैजयन्तीत्यभिधाना याः पताका अथवा वि जयाइति वैजयन्तीनाम्पार्श्वकणिकाउचन्ते तल्लधानायावैजयत्य स्ताश्च तद्द्विजिताः पताकाश्च कृत्रातिच्छन्नाणिच उपर्युपरिस्थितातपत्राणि तैः कलिता युक्ता वातोद्भूतविजयवैजयन्तीपताकाकृत्रातिच्छन्नकलिता इति तुगा उच्चैस्त्रुगुणयुक्ता अतएव गगनतलमणुलिहंतसिहरति गगनतल मन्वरमनुलिखदभिलंघयच्छि

वासा अशुभगयमुरियपहसिया विविहमणिरयणन्नत्तिचिन्ता वाउशुयविजयवेजयंतीपद्मगत्ताइठत्तकलि

सगला हेठे तारा सगला उपरि शनैश्चर भूमिथकी ७०० नैजयोजन तापासंडलछे तेहथी १० योजने सूर्य ते ऊपरि ८० योजने चंद्रमा ते ऊपरि ४ योजन नचत्र ते ऊपरि ४ योजन बुध ते ऊपरि ३ योजन शुक्र ते ऊपरि ३ योजन इहस्यति ते ऊपरि ३ योजन मंगल ते ऊपरि ३ योजन शनैश्चर छे । तारा मडलयकी शनैश्चर १०० योजन माहि सर्व जीतिषीछे । ज्योतिषीना देवता असख्याता ज्योतिषीना विमानावासाकह्या । तेह जीतिषीना विमानावासा केहवाछे । अशुभत कहतां जपना चिह्दिदिप्रसरी पहत्ति एहवी प्रभा दीप्ति तेषिकरी शुक्ल जजला जेहनी एहवा । अनैक प्रकारनी मणि चंद्रकातादि क रत्ने कंकतनादिक तेहनी भक्ति भाति तेषिकरी चिन्ता विचवत छे । वली केहवा आश्चर्यवत छे । वायरे कपावी विजय वैजयती पताका ने उपरि छत्र तेषे करीने कलितछे । एतावता व्याप्तछे । अति ऊंचाछे गगनतल आकाश तेहने उलघताछे शिखर जेहना । घरनी भीतिने विशेष जा

खरं येषाम्ने गमनतसाऽनुलिखच्छिखराः तथा जालान्तरेषु जालकमध्यभागेषु रत्नानियमान्ते जालान्तररत्नाः इह प्रथमावहुवचनलोपी द्रष्टव्यः जालकानि च भवनभित्तिषु लोकेप्रतीताग्येव तदन्तरेषुच शोभार्थं रत्नानि सगवन्त्वेवेति तथा पञ्जरी शोभिताइव पञ्जरवह्निकृताइव यथा किलकिञ्चिद्वहणुपञ्जरा हंशादिमयप्रच्छादनविशेषाद्वह्निकृतमलतमधिनष्टच्छायत्वा रक्षोभन्ति एवन्त्वेपैतिभावः तथा मणिकनकाना सखन्धिनौ सूपिकाशिखर येषां तेमणिकनकसूपिकाका स्वाथा विकसितानियानि शतपत्रपुण्डरीकाणि द्वारादौ प्रतिकृतिन्नेन तिलकाच्च भित्त्यादिषु पुण्ड्राणि रत्नमयाश्चै अर्द्धचन्द्राद्वारायादिषु तैश्चित्रयिते विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकालार्धचन्द्रचित्रा स्वाथा अन्तर्वह्निश्च मरुणाइत्यर्थः तथा तपनीय सुवर्णविशेष स्वमथ्या बालुकायाः शिकतायाः प्रसूतः प्रतरीयेषु तैतपनीययाषु तामसूटाः पाठात्तरे तु सरहशब्दस्य बालुकाभिषेणत्वात् शब्दतपनीयबालुकाप्रसूटा इतिव्याख्येयं तथा सुखस्पर्शाः शुभस्पर्शा

या तुंगा गगणतलमणुलिहलसिहरा जालंतरयणपंजरस्मिलियह्नुमणिकणगत्युग्नियागा वियसियसयवत्त पुं

ऋरीयतिलयरणष्टचदचिन्ता ज्यतोवाहिंचसर्हा तवणिजवातुञ्चापत्यका सुहफासा सस्सरीया पासाईया लियां तेहना आंतराने विषे शोभाने अर्थे रत्नककैतगाडिके छे । पाजरायकी उक्तेति वाहिर कौधा जेहवा तेजपुजहुए तेहवा मणिरत्न सुवर्ण तेहनी यभिका शिखर छे जेहना । बली केहवाछे निकसित जे शतपत्र कमल पुडरीक छे द्वार देयने विषे । तथा भीतिने विषे तिलक छे । तथा रत्नमय अर्द्धचंद्र द्वारविभागे छे तेलकरी चिन्तित छे । अतो घरमाहि तथा वाहिर शब्दा सुकुमाल छे । तपनीय सुवर्ण विशेष तेहनी बालुका तेह पाथरीछे जेहने विषे । बली केहवाछे । सुखस्पर्श सुकुमाल फरसछे । शोभायमानछे । रूप मनुष्य युग्मादिकना जिहा । बली केहवाछे । चित्तने प्रसन्नकरे बली देखिवा योग्यछे ।

सत्सङ्गमयत्वात् घृष्टानीवघृष्टानि खरशाण्या पाषाणप्रतिमिव घृष्टानीवसृष्टानि सुकुमारशाण्या पाषाणप्रतिमिविति निःपक्वानि कलंकविकलत्वात्
 कर्मविशेषरहितत्वाद्वा । निष्कंकटा निःकंचुका निरावरणा निरपघातित्यर्थः । छाया दीप्ति येषां तानि निष्कंकटछायानि सप्रभाणि प्रभावंति
 समरीचीनि सकिरणानीत्यर्थः सोचीतानि वस्त्रतरप्रकाशनकारीणीत्यर्थः पासाइएत्यादिप्रावत् सोहम्णेणभते कपेऽवेवइयाविमाणावासापसत्ता गो
 यमा बत्तीस विमाणावाससयसहस्रा पसत्ता एवमीशानादिष्वपि द्रष्टव्यं एतदेवाह एवईसाणाइरुत्ति एव गाहाहि भाणियब्बति वत्तीसअठ्ठीसा इत्यादि
 काभिः पूर्वीक्तगाथाभि स्तदनुसरणीत्यर्थः प्रतिकल्प भिन्नपरिमाणविमानावासा भणितव्या स्वरुणकचवाचो जावतेणविमाणेत्यादि यावत्पडिहूवान

या सप्यत्रा सस्सिरीया उज्जोया पासईया दरिसणिज्जा अञ्जिहूवा पडिहूवा । सोहम्णेणंभतेकप्ये केवइया
 विमाणावासा प० । गोयमा वत्तीसविमाणावाससयसहस्सा प० । एवईसाणाइसुअठ्ठीाविस वारस अउठ
 चत्तारि एयाइं सयराहस्साइं पखारा चत्तालीस ठसहस्साइ चत्तारिसयाइ तिसिसयाइं गाहाहिंन्नाणि

मार शणैकरी पाषाण प्रतिमानी परे घस्याछे । कलंक रहित छे । बली आवरण रहित जेहनी छाया दीप्तिछे । प्रभा सहितछे शोभायमानछे । उ
 द्योत सहितछे । बली समीप रही बलुने प्रकाशे वित्तने प्रसन्न करे एहवाछे । बली गीतमपूछेहें । हेभदत्त सौधर्म पहिले देवलोके केतला विमानवास
 विमानलक्षण घर कब्धा । हेगीतम । बत्तीसलाख विमानावासा कब्धा । एम ईशाने अठ्ठीवीस लाख । सनत्कुमारि १२ लाख माहेद्रे ८ लाख । प्रह्ले ४ ला
 ख । लांतके ५० हजार । शुक्ले ४० हजार । सहस्रारि ६ हजार । अनत प्रातत मिली ४०० । आरण अच्युत मिली ३०० विमान । एह सैकडां जिम प

वर मभिलापभेदीयं यथा ईसाण्येभ्यो कथे केवइयाविमाणावासापथत्ता गीयमा ऋग्वीसें विमाणावास सयसहस्रा पथत्ता तेषंविमाणा जावपडिह्या
 एवं सर्वं पूर्वोक्तगायानुसारेण प्रश्नापना द्वितीयपदानुसारेण च वाच्यमिति प्रगतरं नारकादिजीवाना स्थानान्युक्ता न्यथ तेषामेव स्थिति सुपदर्शयितु माह
 नेरइयाण्यभतेइत्यादि सुगम नवरं स्थिति नारकादिपर्यायिण जीवानामवस्थानकालः अपञ्जतयायति नारकाः किल लब्धतः पर्यायका एव भवति
 करणतस्तू पपातकाले अन्तर्मुहूर्ते यावदपर्यायता भवन्ति ततः पर्यायका स्तएथा सपर्यायतवालेन स्थिति जैव्यती व्युत्कर्षतोपिचां तर्मुहूर्तमेव पर्यायतका
 ना स्मुरीधिक्येव जघन्योत्पृष्टा चान्तर्मुहूर्तेनाभवतीति अथ ज्ञेहपर्यायतकापर्यायतकविभागः नारयदेवातिरिक्तण्य गन्धयाजिअसखेज्जवासाज्ज एतेउअपञ्ज
 ता उववाए चेवबीधव्वा । सिसायतिरिमणुया लडिपणोववायकालेय । दुहप्रोविधभइयव्वा पञ्जसियरेयजिणवयण्णति । उक्ता सामान्यतो नारकास्थिति विशेष
 त स्वामभिधातु भिदमाह इमीसेणमित्वादि स्थितिकरणञ्च सर्वअज्ञापनाप्रसिद्धं भित्यतिदिश्याह एवमिति यथाप्रश्नापनायां सामान्यपर्यायतकापर्यायतक
 लक्षणेन गमनयेण नारकाणां नारकाविशेषाणां तिथिगादिकानाञ्च स्थितिरुक्ता एवमिहापिवाचा कियदूरं यावदित्याह जावविजयेत्यादि अगुत्तरसुराणा
 मीधिकपर्यायतापर्यायतकलक्षणं गमनय यावदित्यर्थः इहचैव मतिदिष्टस्त्राख्यर्थतो वाचानि रत्नप्रभानारकाणा अदन्तकियतीतिस्थिति गौतम जघन्येन दश्य

यत् । नेरइयाणं अंते केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता । गीयमा जहन्वेणं दसवाससहससाइं उक्कीसेणतेत्तीसं

हिले गाथामांदि कहि आयाछे तिम कहिबी । हिवे २४ दडकने पिषे जेजोव तेहना आजखानी स्वरूप पूछेछे । हेपूज्य नारकीनी केतला काल लगी
 स्थिति आउखी कक्षी । हे गौतम सर्वथापि थोडीतो १० हजार वर्षगो स्थिति कह्यो । पहिली नरकनी अपिचाये उरकट्टीस्थिति तेत्तीस सागरीपमलगी क

वर्षसप्तसाणि उल्लर्धतः सागरोपमं १ अपर्याप्तवारद्वामासापृथिवीनारवाणा आदन्त क्रियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञा गीतमी भयथापि पत्तमुद्भूतमेव म्पर्याप्तका
नां सामान्योत्सवांतमुद्भूतनाथाचैवंगेपपृथिवीनारकाणां प्रलोकांदयाना मसुरादीनां पृथिवीकायिकानां तिरसा प्रभजेतरभेदानां मनुथाणां व्यन्तराणा म
ष्टविधानां ज्योतिष्णाणा म्साप्रकाराणां सौधर्मादीनां वैमानिकाना ष गमत्रय म्वाच्यं इहच विजयादिषु जघन्यतो षान्निष्सागरीपमान्युतानि गन्धर्

सागरीवमाइं ठिई प० । अ्यपजत्तगाणं नेरइयाणं अंतते केवइयंकालं ठिई प० । जहन्वेणं अंततोमुज्जतं उक्खो
सेणवि अंततोमुज्जतं । पजत्तगाणं जहन्वेणं दसवाससहस्राइं अंततोमुज्जत्तूणाइं । उक्खोसेणं तेंत्तीसंसागरो
वमाइं अंततोमुज्जत्तूणाइं इमीसेणं रथणप्यन्नाए पुढवीए एवजावविजयवेजयंतजयंतअ्यपराजियाणं देवाणं

ही । पणि ३२ सातमीनी अपेचाथी । बली पूछे । हेपूज्य अपर्याप्तावस्थायें कोतला काल लगी स्थिति कही । हेगीतम जघन्यपणे अंतमुद्भूतं उत्कृष्टपणे
पणि अंतमुद्भूतं । पछे पर्याप्ता होय । पर्याप्ता नारकीनी हेपूज्य कोतला काललगी स्थिति हेगीतम पर्याप्तानी जघन्यपणे १० हजार वर्षनी पहिली नर
कानी अपेचायें अंतमुद्भूतं जंणी । उत्कृष्टी सातमीये अंतमुद्भूतंजंणी तेतीस सागरीपमनी । अंतमुद्भूतं अपर्याप्तावस्थानी जंणी जाणिवी । हे पूज्य ए गौर
रत्नप्रभा पृथिवीयें जघन्य आजखी कोतली हेगीतम जघन्यतो १० हजार वर्षनी उत्कृष्टी १ सागरोपम । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री मनुथ तिर्यंच भयन
पती व्यंतर ज्योतिषी १२ देवलोक ८ शैवियम लगी जघन्य उत्कृष्टी आजखी गंधांतरशक्ती कदिवी । अनुत्तर विमान पूछे । हे भगवंत विजय वेजयंत ज
यंत अपराजित विमानि कोतली देवतानी स्थिति कही । गीतम जघन्यपणे ३२ सागरोपम उत्कृष्टपणे ३३ सागरोपमनी कही । ५ सिसवीर्यं सिष्ठ विमाने

स्याद्विष्वपि तथैवदृश्यते प्रज्ञापनायां त्वे कश्चिदुक्तेति मतान्तरमिदं पर्याप्तकार्याप्तकामद्वय मिह समूहमेवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमैर्वर्चयति अ
 नन्तर नारकादिजीवानां स्थितिरुक्ते दानीतच्छरीराणा मवगाहनाप्रतिपादनायाह कइयाणभतेइत्यादि कण्य नवर मेकैद्वितीयोदारिकशरीरमित्यादौ याव
 लरणा हित्रिचतुःपञ्चद्वितीयोदारिकशरीराणि पृथिव्यावैकोद्रियजलचरादिपञ्चद्विभेदेन प्राक्प्रदर्थितजीवराशिक्रमेण वाचानि किग्रहूरमित्यादि गल्भवकृतिइ
 केवइयंकालं ठिई प० । गोयमा जहन्त्वेण वतीसं सागरोवमाइं उक्त्तोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं सवृठे अ
 जहस्रमणुक्त्तोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । कृतिणं अतेसरीरा प० । गोयसा । पंचसरीरा प०

तं० । उरालिणु वेउद्विणु अ्याहारणु तेणु कम्मणु उरालियसरीरेण अतेकइविहे प० । गोयसा पंचविहे प०
 तं० । एणंदियउरालियसरीरे जावगअवक्त्तितियमणुस्सपच्चिदियउरालियसरीरेय । उरालियसरीरस्सणं अते

जवन्थ नथी उक्कष्ट ३३ सागरीपमनी कही । हिवे स्थितिछे ते शरीराधोण्छे । तेमाटे शरीर नूं सरूप पूछ्छे । हेपूज्य शरीर केतलाकह्या । गौतम ५ श
 रीर कह्या । ते कहेछे । औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तजस ४ कामण ५ हेपूज्य औदारिक शरीर केतले प्रकारे कह्यो । गौतम ५ प्रकारे । एकद्वी
 औदारिक शरीर १ एम वेइद्वी औदारिक शरीर २ तेइद्वी औदारिक ३ चोरिद्वी औदारिक शरीर ४ पंचद्वी समूर्च्छिम तियैव औदारिक शरीर गर्भज
 पंचद्विय तियैव औदारिक शरीर समूर्च्छिम मनुथ पंचद्विय औदारिक शरीर गर्भव्युत्क्रांत मनुथ पंचद्विय औदारिकशरीर ५ एह सर्वनी औदारिक शरीर
 जाणिनो । औदारिकशरीरनी केवही मोटी अवगाहनां कही हेगौतम जघन्यपणे अंगुलने असंख्यात मे भाग पृथिवीनी अपेजाये । उक्कष्टसात्तिक भा

लादि श्रीरालियसरीरश्रीलादि तन्वीदार माधानं तीर्थकारादिशरीराणि प्रतीत्य प्रथमोरालनिग्राहं समधिक्योजनसहस्रसमागलात् वनसख्यादि प्रतीत्य
 प्रथमा उरालसखग्रदेशीपधियालात् उभलात् भाणवदिति प्रथमा मांसास्थिसाशुबुधं यत्शरीर नालमयपरिभागया उरालमिति तत्र तच्छरीरशक्ति प्राकृत
 लादीरालियशरीरं तस्याऽवगाहन्ते यस्याऽवगाहना पाचारभूतगणिनं शरीराणा मवगाहना शरीरावगाहना यथ दीदारियाशरीरस जीवस्य श्रीदारिक
 शरीररूपवगाहना सा भद्रता वीमहालिया निग्राहती प्राप्ता ता जघन्येनाहृतासंख्यभागंगायत् पृथिव्यायपेचया उलापेण सातिरेकं योजनसहस्रमिति
 बादरपनसालपेचयोत् एवंजायमणुस्सिति दृश्येयं यावत्करणा दयगाहनासंस्थानाभिधानाद्वापनेकाविश्रिततमपदाभिहितयन्वो ऽर्थतो यमनुसरणीयः तथा
 हि एकोद्वितीयोदारिकस्य पृच्छानिर्यचनस्य तदेव तथा पृथिव्यादीनां चतुर्णां आदरसूत्रमपर्याप्तापर्याप्तानां जघन्यत् उरालसख्यभागो वनस्पतीनां
 बादरपर्याप्ताना मुल्पर्यतः साधिका योजनसहस्र शेषाणा लक्षुलासंख्येयगागएव तिचिचतुरिद्विधाया अर्याप्ताना सुत्वापतसाद्यक्रमेण द्वादशयोजनानित्री
 णिगव्यतानि चलाचिचिति पदेद्विद्विशिरयां जगचराणां पर्याप्तानां गर्भजनानां चोक्तयती योजनसहस्रं एव खलवरायां चतुषपदानां संमूर्च्छन
 जाना मर्याप्तानां गज्यतपृथक् गर्भबृहन्नाम्निकानां तेषां पट्गज्यतानि उःपरिसर्पाणां गर्भव्युत्कामिनिकानां योजनसहस्र एवामेव संमूर्च्छनजानां योजन

केमहालिया शरीरोगाहणा पन्वहा । गोयमा जहन्नेणं चंगुलञ्चसखेज्जतिजागं उक्त्वोशेणं साद्वरेणं जीय

भेरी योजन सहस्र बादर वनशतीनी षपेधायें । जिम प्रवगाहना तिम ५ संस्थान पिण कश्चिधो । सर्व श्रीदारिका वेदश्री तेदश्री चोरिन्ध्री गचन्ध्री ति
 र्यचनो मान तिमज निरवधेस समग्रपणे तरतमयीगे कश्चिबो जिह्वं लगे मगुथ श्रीदारिक शरीर नो भान उल्लुष्टो २ गाऊ युगलियानी षपेताये । द्विवे

पृथक् भुजपरिसर्प्याणां गर्भजानां गन्धतपृथक्कसं संसृष्टं नजानां धनुः पृथक्कं खचराणां गर्भजानां संसृष्टं नजानां घधनुः पृथक्कमेव तथा मनुष्याणां गर्भयुत्क्रान्ति-
 कानां गन्धतपृथक् संसृष्टं नजानां मण्डूलासस्वेयभागः एष एव सर्वत्र जघन्यपदे अर्थात्पदेति तथा कइविहेणमित्यादि सष्टं नवरं विविधा विशिष्टावा-
 क्रियाविक्रियातस्यां भव स्वैक्रियं स्विविधं विशिष्टं स्वाङ्गुर्वन्ति तदिति वैज्ञानिकं मितिवा तत्रै केन्द्रियवैक्रियशरीरं स्वायुक्तायस्य पञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीर-
 रीरए गोयसा वाउकाइयएगिदियसरीरए नीप्रवाउकाइय जइएगिदियवेउव्वियसरीरए किमाउकाइयएगिदियवेउव्वियसरीरए अवाउकाइयएगिदियवेउव्वियस-
 किम्पयांत्कस्या पर्याप्तकस्यवा पर्याप्तकस्य यदि पंचेन्द्रियस्य किनारवास्य पंचेन्द्रियतिरस्त्रीमनुजस्यदेवस्यवा गौवम सर्वभातनगरकस्य सप्तविधस्य पर्याप्तक-
 स्ये तरस्यच यदितिरस्रः किं सम्सृष्टिमस्य इतरस्यवा इतरस्य तस्यापिसंख्यातवर्षायुषएवपर्याप्तस्य तस्यापिच जलचरादिभेदेन त्रिविधस्यापि तथा मनुष्यस्य

णसहस्रं एवंजहा उगाहणसंठाणे उरालियप्रमाणं तहानिरवसेसं एवंजावमणुस्सेति । उक्त्तोसेणंतिस्त्रिगाड
 याइ । कइविहेणं ज्ञते वेउव्वियसरीरे प० । गोयसादुविहे प० । एगिंदियवेउव्वियसरीरेय पचिदियवेउ

वैक्रिय शरीरनी मान पूछे छे । हे पूज्य केतले प्रकारे वैक्रिय शरीर कह्यो । हे गौतम वे प्रकारे कह्यो । एकेंद्री वैक्रिय शरीर तेहवायुनी अपेचाये । बीजी
 पंचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर तेह पंचेन्द्रिय गर्भज तिर्यक् मनुष्यने लब्धि विशिषे हीय । भवधारणीय वैक्रिय शरीर नारकी भवनपती बंतर ज्योतिषी सौधर्म ईशा

भाभूमिगगभभवक्तियमपुसाहारगसरारे अणिट्टिपत्तपमत्तसंजयत्तथादिठिपत्तपायसंखिज्जावासाउयकाभूमिगगभभवक्तियमपुसाहारगसरारे गोयमा गझ्वक्का
 स्सञ्चाहारगसरारे किंगझ्वक्कातियमणस्सञ्चाहारगसरारे समुच्छिमणस्सञ्चाहारगसरारे किंकम्मभूमिगा अकम्मभू
 तियमणस्सञ्चाहारगसरारे नोसभुच्छिमणस्सञ्चाहारगसरारे जइगझ्वक्कातिया किंकम्मभूमिगा अकम्मभू
 मिगा गोयमा कम्मभूमिगा नोअकम्मभूमिगा । जइकम्मभूमिग किंसखेज्जावासाउय अस्सखेज्जावासाउय । गो
 यमा नोअस्सखेज्जावासाउय । जइस्सखेज्जावासाउय किंपजत्तया गोयमा पज्जत्तया नोअपज्जत्त
 या । जइपज्जत्तया किंसम्मदिठी सिच्छदिठी सम्मसिच्छदिठी । गोयमा सम्मदिठी नोसिच्छदिठी नोस
 अमनुत्थने आहारक नहोय । जोमनुत्थने होय तो गर्भ व्यक्तात्तनेहोय वा समुच्छिमने होय । हेगौतम गर्भजने होय समुच्छिम ने नहोय । हेपूज्य गर्भजने
 होय तो १५ कर्मभूमिगतने होय किवा ३० अकर्म भूमिगतने होय । हे गौतम कर्मभूमिगत मनुत्थने होय अकर्मभूमिगत मनुत्थने न होय । हे पूज्य क
 र्मभूमिगत मनुत्थने होय तो सख्यात् वर्षायुक्कने होय किवा असख्यात् वर्षायुक्कने होय । हे गौतम सख्यात् वर्षायुक्कने होय परि असख्यात् वर्षायुक्कने न
 थो । हे भदत्त सख्यात् वर्षायुक्क ने होय तो पर्यात्ता ने होय किवा अपर्यात्तने होय । हे गौतम पर्यात्तने होय परि अपर्यात्तने न होय । हे भदत्त पर्यात्ता
 ने होय तो सम्यग्दृष्टीने होय किवा मिथ्यादृष्टीने । हे गौतम सम्यग्दृष्टीने होय पर मिथ्यादृष्टीने नही । सम्यग्मिथ्यादृष्टीने परि नहोय । हे भदत्त स
 म्यग्दृष्टी ने होय तो साधु यतीने होय किवा असंयत अविस्तीरणीक सयतासंयत आयकने होय । हेगौतम सयतीने होय । परि असंयतीने नहोय । संय

तीयस्थनिषेधः प्रथमस्यचा मुद्रा वाचा एतदेवाह वयणाविभाणियव्यत्ति सूचितवचनान्यप्युक्त्यायेनसर्वाणिभणनीयानि विभागेनपूर्णांन्युच्चारणीयानीत्यर्थः
 आहारगतिआहारशरीरस्केमहालियासरीरोगाहणापसृतागोयमाइत्येतत्सूचितंजहणेण्देसूणारयणीति कथमुच्यते तथाविधप्रयत्नविशेषत सूया रभज
 द्रव्यविशेषतश्च प्रारम्भकाले प्युक्तप्रमाणभावात् नहीहीदारिकादरिवां गुलासख्येयभागमात्रता प्रारम्भकाले इतिभावः तेयासरीरणभतेइत्यादि एवं यावत्कार

मामिच्छदिठी । जइसमदिठी किंसंजया अ्यसंजया संजयासंजया गोयमा संजया नोअ्यसंजया नोसंजया
संजया । जइसंजया किंपमत्तसंजया अ्यपमत्तसंजया । गोयमा पमत्तसंजया नोअ्यपमत्तसंजया । जइपम
त्तसंजया किंइहिपत्ता अ्यणिहिपत्ता गोयमा इहिपत्ता नोअ्यणिहिपत्ता । वयणाविनाणियद्वा आहारयस
रीरे समचउरंसंस्थाणसंठिगु । आहारय शरीरे जहन्वेणं देसूणारयणी उक्कोसेण पॉठ्ठपुखारयणी । तेअ्य

ता संयतने पणि न होय । हेपूव्य संयतीनेहीय ती प्रमत्तसयती ई हागुण्ठाणवालाने हीय किवा अप्रमत्त सयतीने होय । हे गौतम ई हागुण्ठाणवासी
 प्रमत्त संयत लब्धि प्रयुंजे तेमाटे प्रमत्तनेहीय । पणि अप्रमत्तलब्धि फोरवे नयी तेमाटे अप्रमत्त ने न होय । जो अप्रमत्तने हीय ती ऋद्धिप्राप्तने हीय
 किन्वा अठ्ठिंप्राप्तने हीय । हे गौतम शरीर कारवानी लब्धिरूपऋद्धि पाईहोय ते ऋद्धिप्राप्तने हीय । अर्नर्द्धिप्राप्तने न हीय । ज्ञान्याये कहा वचन सग
 ला भणिया । आहारकशरीर समचउरंस संस्थान संस्थित होय । आहारक शरीर जघन्य शीडी सर्वकाले देसूणा काईकजंणा हाथ अने संपूर्ण हीयती
 ? हाथहीय । हिवे चौथा तेजस शरीरनो स्वरूप पूछे छे । तेजस शरीर हे भदत कोतले प्रकारे कहाी ॥ हे गौतम तेजस शरीर ५ भेदे कहाी । एकद्वियतेज

णा यज्ञापनासत्कैकविंशतितमपदोक्ता तेजसशरीरवक्तव्यता इहवाच्या साचेय भर्षतः एगिदियतयगशरीरेणभतेकतिविहे गोयमा पंचविहपसूते तजहा
 पुढवीजाववणसइकाइएगिदियतयगशरीरे एव जीवराशिप्ररूपणऽनुसारेण सूत्र भावनीयं यावत् सव्वहसिद्धगअणुत्तरीववाइयकाथातीतवेमाणियदेवप
 चेंदियतेयगशरीरे तेयगशरीरेणभते किसठिए नाणसठिए यस्य पृथिव्यादिजीवस्य यदौदारिकादिशरीरसस्थान तदेव तेजसस्य कार्मणस्यच. तथा जीवस्य
 मारणात्किवासमुद्घातगतस्य कियती तेजसी शरीरावगाहना शरीरमात्रा विष्कम्भनाहल्याथा मायाभतसु जयन्तेना द्रुलसाऽऽसंख्यभाग उक्तापत ऊर्ध्वमधश्च

सरीरेणं ऋते कतिविहे पन्नते । गोयमा पंचविहपन्नते । एगिदिय तेयसरीरे वित्चउपंचण्वंजाव गेवेजा

स्सणं ऋते देवस्समारणंतियसमुघ्घाणं समोहयस्ससमाणस्स केमहालियासरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा

स १ वेइन्द्रीतेजस २ तेरिद्री तेजस ३ चौरिद्री तेजस ४ पंचेद्रीतेजस ५ । तेजस शरीरनी संठाण अनेक प्रकारनी । गौतम पहिले स्सध बचने पूच्छे । मरण
 तिक समुद्घात प्राप्तजीवना तेजसशरीरनी अवाहनां केतली । भगवत कहे छे । विष्कम्भपणे बाहल्यपणे तेजस शरीरावगाहना शरीर प्रमाणे । जघन्य
 अगुलनी असंख्यभाग । उत्कृष्ट जंचो नीचो हेठिला लोकातलगे । कार्मणशरीरनी पणिएमज अवागहना एह एकद्रीय आश्रित जाणिवी । उत्पत्तिसमये
 वेरिद्रिय तेरिद्रिय चौरिद्रियना तेजस शरीरनी अवागहना उक्कृष्टलांबपणे तिर्यक्लोकिके लोकांतलगे । एम २३ दडकना तेजसशरीरनी अवागहना टीका
 योजाणवी जिहां लगे त्रैवेयकनादेवता मारणांतिकसमुद्घाते समीहितहोय एतले मरणसमुद्घात करतीहोय तिवारे देवतानी केवडीमोटी तेजस शरीरोगा
 हना कहिवी । हे गौतम शरीरप्रमाणे जाणवी । विष्कम्भपणे पिहुलपणे बाहल्यपणे जाडपणे श्रीदारिकशरीर प्रमाणे तेजस शरीरनी अवागहना । आश्रामे

लोकात्वा लोकात्वाय देकोद्भ्रियस्य तत सूचीत्यति मङ्गीकृत्येतिभावः एवं सर्वेषामिवैकोद्भ्रियाणां द्वीन्द्रियाणान्तु आयामत उल्कषेण तिर्यग्लोका लोकांतयावगाय
 स्तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियादितिरथाभावात् नारकस्य जघन्यतो योजनसहस्रं कथं नारका त्यातालकलयस्य सहस्रमानं कुञ्जभिक्षा तत्र मत्स्यतयो त्यद्यमानस्य
 उल्कषेणतु अश्वः सप्तमीयावत् सप्तमपृथ्वीनारकं समुद्रादिमत्स्येषू त्यद्यसान् अतीत्य तिर्यक्स्वयम्भूरमगयावत् ऊर्ध्वं स्पण्डकवनगुस्कारिणीयावत् यतस्तयो
 त्यादात् उत्कर्षतस्तु अधस्तृतीयपृथ्वीयावत् तिर्यक्स्वयम्भूरमणवेदिकान्तं ऊर्ध्वमीषकामारां यावत् यत एतेषुच पर्याप्तवादेरश्वेव पृथिव्यादिषू त्यद्यन्ते अतो
 नपरतोपीति सनत्कुमारादिसहस्रारान्तदेवानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः कथं परण्डकवनादिपुष्करिणीमज्जनार्थं भवति स्मृतस्य तत्रैव मत्स्यतयो त्यद्य
 मानत्वात् पूर्वसम्बन्धिनोस्वा मनुष्योपभुक्तस्त्रिय स्परिष्वज्य स्मृतस्यतद्भ्रं समुत्पादादिति उत्कर्षतस्तु अधीयावत् अहापातालकलसानां द्वितीयं स्त्रिभागं सूत्र
 हि जलसङ्गावात्परिष्वयमानत्वात् तिर्यक्स्वयम्भूरमणसमुद्रयावत् ऊर्ध्वमच्युतयावत् तत्रहि सङ्गतिकदेविनिअयागतस्य सुखेहीत्यद्यमानत्वादिति आनता
 दौना मच्युतानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः कथं मिहागतस्य मरणकालविपर्यस्मते मनुष्योपभुक्तस्त्रिय मयभिष्वज्य मृतस्य तत्रैवीत्यत्तरिति उत्कर्षत

सरीरप्यमाणमेती विक्रमवाहलेणं श्यायमेणं जहन्नेणं जावविजाहरसेठीउ उक्कोसिणं झ्हीलोइयगामा

लांबपणे जघन्य हेठे विद्याधर श्रेणी लगे गैवयक देवताना तैजसनी अवागाहना एतलेमरतीविला तिहांलगे तैजस कामर्णशरीरना प्रदेश विसारि उत्कष्टी

तो विद्याधरश्रेणीयावत् उत्कर्षती ऽधीयाव दधीलीकश्रामान् तिर्यग्नुश्वेत्रं उर्ध्वं तद्विमानान्येवेति एवं कार्माणस्या ध्यवगाहना दृश्या समानत्वा देवतयो रिति उक्तार्थमेव सूत्रायमाह । गेवज्जगत्स्यमित्यादि श्रनन्तरं शरीरिणा मवगाहना धर्मउक्तौ ऽधुना त्वधर्षमप्रतिपादनायाह ॥ भेदेइत्यादि द्वारगाथा तत्र भेदी वर्धवत्त्वयो यथाद्विविधो वधि भवप्रत्ययः चायोपशमिकथ तत्र भवप्रत्ययो देवनारकाणां चायोपशमिको मनुथतिरस्त्रामिति तथा विषयी गोचरो ऽवधे र्वाच्यः सच चतुर्धा द्रव्यतः चैत्रतः कालतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जघन्येन तेजोभाषयो रग्रहणप्रयोग्यानि द्रव्याणि जानाति उत्कर्षत सु सर्वं मेकारेण

उ उहं जावसयाइं विमाणाइं तिरियंजावमणुस्सखेत्तं । एवंजावञ्चणुत्तरोववाइया । एवं कम्मयसरीरंपिन्ना णियह्छं । भेदेविसयसंठाणे च्छण्णितरेखाहिरयेदेसोही । उहिस्सबुद्धिहाणी पफ्ठिवाइंचेवञ्चणुपफ्ठिवाइं ॥ १ ॥ कति

हेठे जिहालंगे आधीग्राम पधिम महाविदिह चेतना तिहालंगे । ज'ची जिहालंगे पीतानुविमान । तिरछी मनुथ चैत्र लंगे श्रेवियकदेवनां तैजस शरीरनी प्रवगाहना । एसजश्रेवियकनीपरे श्रनुत्तर विमानवासो देवना तैजस शरीरोगाहना जाणवी । तैजस शरीरनी परं कार्मण शरीरनी श्रवगाहना जाणवी संठाण पणि तिमज जाणिवी । हिवे श्रवधिज्ञानना भेद कहेछि । प्रथम श्रवधिज्ञानना बेभेद एक भवप्रत्यय १ बीजो चायीपसमिक । तेमांहि भवप्रत्यय श्रवधिज्ञान देवता नारकीनि होय । चायीपसमिक मनुथ तिर्यचने होय । तथा श्रवधिज्ञान गोचर विषय ते चारप्रकारे । द्रव्यतः १ चैत्रतः २ कालतः ३ भावतः ४ तेमांहि द्रव्यथकौ जघन्यपणे तैजस श्रने भाषाने अगृहणयोग्यद्रव्यजाणे । उत्कृष्ट सर्वं एकादिश्रनंताणुकांत रूपीद्वयनि जाणे । तथा चैत्रथी जघ न्य अगुलनी असंख्यभाग जाणे । उत्कृष्ट असंख्याता श्रलीकनि विषे लीकमात्र खंड जाणे । कालतः जघथ्य श्रावलिकानो असंख्यातमीभाग श्रतीत श्रनाग

कायमन्त्राणुकागत रूपिद्रव्यजातं जानाति येन जघन्यती ऽपुत्रासंख्येयभागं जानाति उत्कर्षती ऽसंख्येयान्वलोके लोकमात्राणि खण्डानि जानाति काल
 अघन्यत आवलिकाया असंख्येयभाग मतीतमनागतस्र जानाति उत्कर्षतः सख्यातीता उत्सर्पिष्यवसर्पिणीर्जानाति भावती जघन्यतः प्रतिद्रव्य अतुरोवर्णदीन्
 उत्कर्षतः प्रतिद्रव्य मसख्येयान् सर्वद्रव्यापेवया त्वनन्तानिति तथा सस्थान मवधेर्वीच्य यथा नारकाणां तमाकारो वधिः पत्न्याकारो भवनपतीना म्पटहाका
 रो व्यत्तराणा भक्त्यार्थाकृति ज्योतिष्काणां मृदङ्गाकारः कन्योपपन्नानां पुष्यावलीरचितगिखरचर्गेयाकारो त्रैवेयकानां कन्याचौलकसस्थानो ऽशुत्तरसुराणां
 लोकनायाकृति रित्यर्थः तिर्यगनुधानानु नानासंस्थानइति तथा अम्भतरति के प्रवधिप्रकाशितज्ञेयस्या भ्यन्तरे वत्तगते इतिवाच्यन्तत्र नेरश्यदेवतिल्यंकरा
 यश्रीहिस्सवाहिराहुरीत्यादि तथा वाहिर्येवति के वधिज्ञेयस्य वाह्या भवतीति वाच्यम् तत्रनेरश्यदेवत्ति श्रेयाजीवा वाह्यापधयो ऽध्यन्तरायधयच भवन्ति
 तजाणै। उल्कण्ट असख्याती उत्सर्पिणी असर्पिणी जाणै। भावयकी जघन्यतः द्रव्य प्रत्यप्रति वर्णगंधरसस्पर्श एहचारप्रते जाणे। उल्कण्टतः द्रव्यद्रव्यप्रति
 संख्याता सर्वद्रव्यनी अपेजायै अनता वर्णादिकना भेदजाणे। जोजेनीले प्रवधिनी सठाण कर्तहे। नारकीनी प्रवधि जापाने आकारे। एतले नाने आ
 कारे। भवन पतिनी पत्न्यने आकारे। व्यतरनी पडहने आकारे। ज्योतिपीनीं आलरने आकारे। वारदेवलीकना देवतानी मादलने आकारे। त्रैवेयक
 देवतानी फूलचरीने आकारे। अनुत्तर देवतानी लोकनालीने आकारे। एतले कन्यानी चोलीने आकारे। तिर्यच मनुष्यनी प्रवधि नाना संस्थान।
 हिवे कोण प्रवधि प्रकाशित जेवने अभ्यतर वत्तहे। तिहां नेरश्यदेवतिल्य करायप्रोहिस्सवाहिराहुति। इत्यादि। तथा वाहिरत्ति कोण प्रवधि प्रका
 शित जेवने वाहिर होय। श्रेय धाकता जीन वाद्य अने अभ्यतरपणि होय। देगोहित्ति प्रवधि प्रकाशिया योग्यवस्तुना देयनेप्रकाशे तदेयावधि तेकोद्रक

नवरं सातासातयोः सुखदुःखयोः द्वायं विशेषः सातासृते क्रमेणोदयप्राप्तवेदनौयकर्मपुद्गलानुभवलक्षणे सुखदुःखतुपर्ये उदीर्यमाणवेदनीयकर्मानुभवलक्षणे तथा अम्बुवगसुवक्त्रमियति द्विधावेदना आभ्युपगमिकी औपक्रामिकीचेति तत्राद्यामभ्युपगमती वेदयन्ति जीवा यथा साधवः शिरोलीचनब्रह्मचर्यादि कां द्वितीयात् स्वयमुदीर्यन्ती दीरणाकरणेन चोदय सुपनीतस्य वेदनीयस्यानुभवतः तत्र पञ्चेन्द्रियतियम्नुष्या द्विविधामपि शेषस्त्वौपक्रामिकी मेववेदयन्तीति तथाशीयाएचव अणियाएति द्विविधा वेदना तत्र निदयात्राभोगत सत्र सन्निन उभयती ऽसन्निनस्व निदयेति एतद्वारवि वरणाथ नेरइयाणमित्यादि इहावसरे प्रज्ञापनायाः पञ्चत्रियत्तम स्वेदनाख्य म्द मध्यर्यामिति अनन्तर वेदनाप्ररूपिता साच लेख्यात्रत् एव भवतीति

गन्तते किंसीतंवेयणंवेयंति उसिणं वेयणं । सीतोसिणवेयणं । गोयमा नेरइयाणुवंचेव वेयणापदंज्ञाणियहं ।

साता साततेअनुक्रमे उदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलनो भोगिवो । सुखदुःखते परेउदीर्यमाण वेदनीयकर्म पुद्गलनो भोगिवो । तथा अम्बुवगसुवक्त्रमियति । विहु प्रकार वेदनी अम्बुपगमिका अनेउपक्रामिका । पहिलीवेदना आगमीने ले एतले स्वीकारकरीनेले । जिमयतीशिरलीचादिकनी वेदनावेदे । वीजी सेउदी रणाकरने तथा पीते आपणे उदयत्रावी वेदनावेदे । तिहां तियंच पचेन्द्रिय मनुष्य विहु वेदना आगमीनेले जिमवेदनावेदे । तथा शीयाएत्ति । विहु प्रकार वेदना एकत्राभोगतः जाणयणेवेदे तेषीयावेदना । वीजी अजाणयणे वेदना तेअणियावेदना । तिहां सञ्जी पचेन्द्रियणियावेदनावेदे । असञ्जीअणियावेदनावे दे । हेपूज्यनारकी किम शीतवेदनावेदे । किवाउणवेदनावेदे किवाशीतोण वेदनावेदे । गौतम नारकीनी वेदना एहपत्रवणाना पैत्रीसमापदथकी भणिवो

लिखाप्ररूपपायाह कइणभंते इत्यादि इहस्थाने प्रश्नापनायाः सप्तदश षड्दशैकं लेखाभिधानं पद मध्येतव्यं तच्चास्ताभि रतिवहुत्वा दृश्यतेपि न लिखितमि
 ति यतएवा वधारणीय मिति अनन्तरं लेखा उक्ताः सालिशाएवचाहारयती त्याहारप्ररूपणाय अणतरायत्यादि द्वारस्त्रीकामाह तत्र अणतराय आहार
 चि अनतराद्याव्यवधानाआहारविषये अनतराहाराजीवा वाचाइत्यर्थः तथा हारस्त्राभीगताअपिचि वचना दनाभीगताच वाचा तथा पुत्रला न्न जा
 नयेव एवकारा न्न पश्यतीति चतुर्भङ्गी सूचिता तथा अर्धवसानानि सत्यक्तञ्च वाच्यमिति तत्राद्यद्वारार्थमाह नेरइत्यादि अनतराहारएति उपपातकेनप्रा
 प्तिसमय एवा हारयतीत्यर्थः ततोनिव्वत्तणयाएइति ततः शरीरनिवृत्तिः ततोपरियाइयण्यति ततः पर्यापान मङ्गप्रत्यङ्गैः समग्ता त्यानमित्यर्थः ततोपरिणा

कतिपञ्चतेलेसाउ प० गोयमालेसाउ प० तं० । किरहा नीला काउ तेउ पउमा सुक्का । एवंलेसापदञ्जा
 णियहं । अणंतरायअहारे अ्याहारभीगणाइया पोगलानेवजाणंति अण्जवसाणेयसम्भते ॥ १ ॥ नेरइ

हेभदत केतला प्रकारनी लेखाकही । गौतम ६ प्रकारनी कही । तेकहेछि । कण्णलेखा १ नीलेखा २ कापोतलेखा ३ तेजलेखा ४ पन्नलेखा ५ शु
 क्लेलेखा ६ एम लेखा पद सतरमी पन्नवणायी भणिवी । हिवे आहारनी अधिकार पूछेछि । जीव आंतरा रहित आहार करेछि । आंतरे आंतरे तथा
 आहारनी आभीगपणी जाणीने ले तेआभीग । बीजी अनाभीग । आहारना पुत्रलेने जाणके नजाणे । अर्धवसाय मनना परिणाम । तथा सत्यक्त । ए
 ह ५ पदकहिवा । नारकी जीव अनतर आहार करेछि । उपजिवाने क्षेत्रे जई जपनी तणे समये करे । तिबारे पछे शरीरनीपजावे । तिबारे पछे आ

मयस्ति ततः प्रवृत्तादि विषयोपभोगइत्यर्थः ततोपस्थादिविषयण्यति ततः पश्चाद्विभ्रिया नानारूपाइत्यर्थः हन्तागोतम एवमेतदितिभवः एवं सर्वेषा मन्त्रेन्द्रिया
 णां वक्तव्य नवरं देवाना पूर्वविकुर्वणा पश्चात्परिचाराणा शेषाणान्तु पूर्वस्मरिचाराणा पश्चाद्विकुर्वणा एकैन्द्रियादीनामध्येव मन्त्रे निर्वचनेतु यत्र वैक्रियसम्भवी
 नास्ति तत्र विकुर्वणा निषेधनीयेति एवमाहारपर्यभाण्यत्व्वति यथा द्वावरस्यप्रश्न उक्तं स्वथा तदुत्तरं शेषद्वाराणिच भणक्तिः प्रज्ञापनाया द्यतुस्त्रिप्रश्नस
 म्परिचारापदाख्य म्पदमिहभणितव्यमिति इदञ्चात्राहारविधारप्रधानतया आहारपदमुक्तमिति तत्पुनरेव मर्थतः तत्र आहाराभोगाण्यइयति एतस्यवि
 वरण नारकाणां किमाभोगनिवर्त्तित आहारो ऽनाभोगनिवर्त्तितोवा उभयथापीति निर्वचन मेव सर्वेषां नवर मेकेन्द्रियाणा मनाभोगनिवर्त्तित एवेति
 तथायोगलानेवजायंति तस्यार्थः नारका यान् पुद्गलान् आहारयन्ति तानवधिनापि नजानन्ति अविषयत्वात्तदवधे स्तेषा नपश्यन्ति चक्षुपापि लोभा
 ष्टारत्वात् तेषा मेव मसुरादय स्तौन्द्रियांताः कायमेकेन्द्रिया अनभोगाहारत्वा द्वित्रीन्द्रियाय मत्वज्ञानित्वा द्रजानन्ति चक्षुरिन्द्रियाभावाच्च न पश्यन्तीति
 चतुरिन्द्रियासु चक्षुः सद्भावपि मत्वज्ञानित्वात् प्रक्षेपाहारं नजानन्ति चक्षुपावुपश्यति तथा तएवलोभाहारभाश्रित्य नजानन्ति नपश्यतीति व्यपदिश्यते च
 क्षुपोधिपयत्वात्तस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याय केचिज्जानति पश्यन्ति चापधिज्ञानादियुक्ताः लोभाहारं प्रक्षेपाहारञ्च जानत्ववधिना नपश्यति चक्षुषा तथा
 अन्ये न जानति तत्र नजानन्ति प्रक्षेपाहार मत्वज्ञानित्वा त्पश्यति चक्षुपा तथा अन्ये नजानन्ति नपश्यन्ति लोभाहार निरतिगयत्वादिति व्यतरज्योति
 त्वा नारकवत् वैमानिकासु ये सम्यग्दृश्य स्ते जानति विधिष्टावधित्वात् परयतोचक्षुपीपि विधिष्टत्वात् मिथ्यादृष्टयसु नजानन्ति नपश्यन्ति प्रत्यक्षपरोक्ष
 ज्ञानयो स्तेषा मस्यष्टत्वादिति तथाश्रम्वसण्यति दार नारकादीना म्प्रस्ता प्रशस्तान्यसख्येयाव्यवसायानीति तथा समत्तेत्ति दार तत्र नारकाः कि
 सम्यक्ताभिगमिनो मिथ्यात्वाभिगमिनः सम्यक्तामिथ्यात्वाभिगमिनश्चेति त्रिविधा त्रयेऽ सर्वपि नवर मेकेन्द्रिया मिथ्यात्वाभिगमिनएवेति अनन्तर माहाराप्रश्न

पणा कृता हारवार्युर्बन्धवता मेव भवतीत्यार्युर्बन्धरूप णायाह कइविहेत्यादि तत्रायुषो वयनिषिक्त आयुर्बन्धः निषिक्तप्रतिसमय स्मृहीनहीनतरस्य द
 लिकस्या नुभवनार्थ रचना निधत्तमपीह निषिक्तउच्यते अतएवाह जाइनामनिधत्ताउए जातिनाम्नासह निधत्तम् निधित्त मनुभवनार्थ वल्ल्याल्यतरक्रमेण
 व्यवस्थापितमायुर्जातिनामनिधत्तायुः अथकिमर्थ ज्ञात्यादिनामकर्मणायु विशिष्यते आयुष्कस्य प्राधान्योपदर्शनार्थ यस्मा न्नारकाद्यायुर्दये सति जाल्या
 दिनामकर्मणा मुदयो भवति नारकादिभवीपग्राहक चायुरेव यस्मा द्वात्या प्रज्ञथामुक्त नेरइएभतेनेरइएस उववज्जइ अनेरइए नेरइएसउववज्जइ गीय
 मा नेरइएनेरइएसउववज्जइ नो अनेरइएनेरइएसउववज्जइ एतदुक्तभवति नारकायुः प्रथमसमयसवेदकालएव नारक इत्युच्यते तत्सहचारिणाञ्च पञ्चेन्द्रिय
 जाल्यादिनामकर्मणा मायुदय इति तथा गतिनामनिधत्ताउएत्ति गतिनारकगत्यादि तल्लक्षण नामकस्य तेनसह निधित्तमायुर्गतिनामनिधित्तायुः तथा
 ठिइकालनामनिधत्ताउएत्ति स्थिति यथास्थातञ्च तेन भविनायुर्दलिकास्य सैवनामपरिणामोधर्म्मइत्यर्थः स्थितिनाम गतिजाल्यादिकर्मणश्च प्रकृत्यादिभेदेन

विकुञ्जण्या हतागोयमाणुवञ्जाहारपदञ्जाणियहं । कइविहेणं जंते ज्ञाउगबंधपन्नते गोयमाळविहे पन्नते

हारलीभीहोय तेशरीने विषे परिणमवि । तिवारपछे विषय सेविवानी इच्छा । तिवारपछे विकुर्वणा करे । एहवो प्रस्य पूष्यापछे भगवत कहछे ।
 एमहीज हेगौवम जिमतूकहछे तिमजछे । इहा पन्नवणानी चीनीसमी आहार पद भणिवी । केतले प्रकार हेपूज्य अजखानीवध कछी । हेगौतम ६ प्र
 कारे । तेकहछे । जातिनाम साथे भोगिवाने अर्थे थाथी थोडी तथा घणी ते जातिनामनिधत्तायु १ । एम नरकगत्यादिक लक्षण नामकर्म तेहने साथे
 थाथी वाथी ते गतिनामनिधत्तायु २ । एम अजखाना दलनी जेणे भवे नियत रहिवीते स्थितिनाम अथवा गति जाल्यादि कर्मप्रकृति भेदकारी जे स्थि

षतुर्धितां यः स्थितिरूपेभेदं स्तुत् स्थितिनाम निधत्तमायुः स्थितिनामनिधत्तायुरिति पण्डितानामनिधत्तायुरिति प्रदेशानां स्मृतपरिणामानां
 मायुः कर्म दलिकानां नामः परिणामीदृयः तथात्प्रदेशेषु सम्बन्धनं स प्रदेशनामी जातिगत्ववगाहनाकर्माणां स्वा यत्प्रदेशरूपं नामकं तदप्रदेशनाम तेन
 सह निधत्तमायुः प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अणुभागनिधत्तायुरिति अनुभाग आयुः कर्मद्रव्याणां तीव्रादिभेदोत्सः स एव तस्य वा नामः परिणामी
 अनुभागनाम अथवा गत्यादीनां नामकर्माणां अनुभागनाम तेन सह निधत्तमायु रनुभागनामनिधत्तायुरिति तथा श्रीगाहणनामनिध
 त्तायुरिति श्रवगाहते जीवी यथा सा वगाहना शरीरमौदारिकादि पञ्चविध तत्कारण कर्माभ्यवगाहना तद्रूपनामकर्मा वगाहनाम तेन सह निधत्तमा
 युरवगाहनामनिधत्तायुरिति नेरइयाणमित्यादि सष्ट अनन्तरमायुर्बन्धुत्वात् नारकादिगतिषूपपाती भवतीति तद्विरहकालप्ररूपणाय

तंजहा । जाइनामनिहत्तायु गतिनामनिहत्तायु ठिइनामनिहत्तायु पण्डितानामनिहत्तायु अणुभागनाम

ति ते स्थिति निधत्तायु ३ । प्रदेश परिमाण जे आजखानादलनी परिमाण तेहने साथे बांधी आयु ते प्रदेश निहत्तायु ४ । आयु कर्मद्रव्यनी तीव्रादिक
 भेदे जेरस ते अनुभाग तेहने साथे बांधी आयु तेह अनुभागनामनिधत्तायु ५ । श्रवगाहीने रहे जीव जिहा ते श्रवगाहना श्रीदारिकादि ५ भेदे तेहनी
 कारण कर्म तेहीपिण श्रवगाहनारूप नामकर्म श्रवगाहना ६ । नारकीनी हे पूज्य केतले प्रकारे आजखानी वध कहिवी । हे गौतम ६ प्रकारे नारकीनी
 आजखानी वध ६ प्रकारे । तेकहेछे । जातिनाम निहत्तायु १ । गतिनाम निहत्तायु २ । स्थितिनाम निहत्तायु ३ । प्रदेशनाम निहत्तायु ४ । अनुभागना
 म निहत्तायु ५ । जिहांलगे श्रवगाहना निहत्तायु ६ भेदहेवि ६ । एम २४ दडके ६ भेदे आजखानी वध कहिवी जिहांलगे वैमानिक देवता आवे ।

निरयगतीणमित्यादि कथं नवरं यद्यपि रत्नप्रभादितु चतुर्विधतिसुहृत्तादिविरहकालो यथोक्तं चउवीसाइसुहृत्ता सत्तत्रहीरत्ततहयपद्मरसा मासीयदीयचउ
 रो कृष्णासाविरहकाली उपसि ॥ १ ॥ तथापि सामान्यगल्पेक्षया द्वादशसुहृत्ता उक्ताः तथा एवकारण य त्तिर्यग्नुशुगल्योः सामान्येन द्वादशसुहृत्ता
 उक्ताः तद्भक्ष्युक्तान्तिकापेक्षया देवगतीतु सामान्यतएव सिद्धिवक्त्राउल्लेखेति नारकादिगतिषु द्वादशसुहृत्ता विरहकाल उल्लेखनाया मिति सिद्धानां तद्व

निहताउए उगाहणानामनिहताउए । नेरइयाणंभते कइविहे अणुगबंधे पन्नेहे गोयमा ठाडिहे पन्नेहे ।
 तंजहा । जातिनामगतिनामठिइनामपएसनामअणुनागनामअणुगाहणानाम एवंजाबवेमाणियाणं निरयगइणं
 भते केवइयंकालं विरहिया उववाएणं । गोयमा जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसिणं वारससुज्जेहे । एवंतिरियग

इ मणुस्सगइ देवगइ सिद्धिगइणं भते केवइयंकालं विरहिया रिज्जयणा पन्नेत्ता । गोयमा जहन्नेणं ए
 ष्वि उपपात विरह स्यवन विरह आश्री प्रश्न करेहे । नरक गतिमांहि हे पूज्य केतली उपपात विरह । हे गौतम नारकीनी जघन्य उपपात विरह १ सम
 य एक नारकीने उपनापछी बीजो १ समयने आंतरे उपजे यद्यपि रत्नप्रभादिकने विवे २४ सुहृत्तादिका विरह काल कथीके यदाह । चीबीसायसुहृत्ता

सत्तत्रहीरत्ततहयपद्मरसा । मासीयदीयचउरो कृष्णामो विरहकालोउत्ति ॥ १ ॥ तीही पिण सामान्यगति अपेक्षायि १२ सुहृत्तकथा । उल्लेखपणे १२ सुहृ

त्त जाणत्ता । एम त्तिर्यवगति मनुथगति देवगति नीउपपात जाणिवी । हिवे सिद्धिगतिनी उपपात केतलेकाले सौम्वी कथी । हेगौतम जघन्य १ समये
 १ सिद्ध उपनापछे बीजो सिद्ध १ समयना अंतरथी उपजे । उल्लेख ३ मासनी विरह । एम जिम उपपात विरह तिमहीज स्यवनविरह । एक चथां पछे

॥ ३ ॥

पट्ट वज्र कौलिका षष्ठ्यञ्च ऋषभश्च नाराचञ्च यत्रास्ति तद्वज्रभनाराचं सहनन मर्कटकपट्टकौलिकारचनानुक्तः प्रथमी स्थिबन्धः मर्कटपट्टकौलिकाभ्यां द्विती
यः मर्कटयुक्तस्तृतीयः मर्कटकैकदेशबन्धनद्वितीयपार्श्वकौलिकासम्बन्ध इत्युच्यते अङ्गुलिद्वयसयुक्तस्य मध्य कौलिकैवदत्ता यत्र तल्लौलिकासहनन स्पष्टम यत्रा
स्थीनि चर्मणा निकोचिवादिनि केवल न्नात्सेवात्तं स्नेहपानादीना नित्यपरिशीलनसेवा तथा ऋत प्राप्त सेवार्त्तमितिषष्ट छणहंसघयशाणअसघयण्यत्ति उत्तरू
पाशां षष्ठां सहननानामन्यतमस्यायभावेन सहनिनी ऽस्थिसचयरहिता अतएवाह नवव्ही नैवास्थीनि तच्छरीरकेनेवच्छिरत्ति नैवशिराधमन्धः नैवहाउत्ति
नैवस्नायनीति कृत्वा सहननाभावः तत्साहितानाहि प्रचुरमपि दुःखत्रवाधाविधायिस्यात् नारकास्त्वत्यत शीतादिवाधिता इति नचास्थिसञ्चया भावे शरीरं

ठीहि एवं सेसाणविञ्चानुगा करिसाणि जाव वेसाणियाणं । कङ्कविहेणं जते संघयणे पन्तते । गोयमा ल
धिहे पन्तते । तंजहा वडरोसन्ननारायसंघयणे रिसन्ननारायसंघयणे नारायसंघयणे झुछनारायसंघयणे
कीलियासंघयणे छेवठसंघयणे । नेरइयाणं जते किंसंघयणी । गोयमा लणहसंघयणाणञ्चसंघयणी । णेव

वौजी ऋषभनाराच ते मर्कट किलिका सहित २ । वौजी नाराच संघयण मर्कट सहित ३ । चउथी अर्द्धनाराच एकपासे मर्कटबंध वीजिपासेकीली ४ ।

पाचमी कौलिका अंगुलवेने संयुक्तने मांहि कौलिका १ जिहांदीधी ते कौलिका सवयण ५ । सवर्त्त तेजिहां हाडिकाचर्मवीठी के छुत तैलना सेचैकरी
पास्यी ते सेवार्त्त सवयण ६ । हिंवे नारकी आञ्ची सवयण पूच्छे । हे भगवत नारकीमांहि के संघयण पांमिये । हे गौतम पूर्वोक्तछहुमांहि १ ह्ननपांमिये

हाडनही नाडीनही मोटीनगानथी जेनारकीना पुङ्गलछे तेअनिष्ट अवल्लभ अकात अप्रिय द्वेषकरवायोग्य अनदिय अशुभ प्रकृतिथीअसुदर अमनीञ्ज

नीपपद्यते स्तम्बवत्तदुपपत्तेः अतएवाह जेपीगलियादि येगुहला अनिष्टा अवल्लभाः सदैवैषां सामान्येन तथा अकाल्ता अकमनीयाः सदैव तद्भावेन तथा अ
 प्रिया द्वेषाः सर्वेषामिव तथा शुभाः प्रकृत्यसुन्दरतया अमनोरमाः कथयापि तथा अमणामा नमनःप्रिया धिक्तयापि तेएवभूताः पुहला खेषा नारकाणां
 असंघयणत्ताएति अस्थिसञ्चयविशेषरहितशरीरतया परिणमति कद्रविहंसंठाणेत्यादि तत्र मानोमानप्रमाणानि अनूनान्यनतिरिक्तानि अङ्गीपाङ्गानिच
 यस्मिन् शरीरसंस्थाने तत्समचतुरस्रं संस्थान तथा नाभित्तपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षण ऽविसंवादिनी ऽधस्तु तदगुरुपयत्तवति तत्रश्रीध संस्थानं तथा
 नाभित्तोऽधः सर्वावयवा चतुरस्रलक्षणाअविसम्बादिनी यस्मोपरिच यत्तदगुरुप नभवति तत्सादिसंस्थान तथाश्रीवाहस्तपादा असमचतुरस्रलक्षणयुक्ता
 यत्र सञ्चित विज्ञतच्च मध्ये कीटं तत्कुञ्जं संस्थान त्वथा यत्सञ्चणयुक्तकीटं चतुरस्रलक्षणोपेतं श्रीवाद्यवयवहस्तपादश्च तन्नामन त्वथा यत्र हस्तपादाद्यवयवा
जेवच्छिरा जेवरहाज जेपीगलाञ्चणिठा अकंता अर्पिया अणारुजा असुभा असुभा असुभा असुभा
तेतेसि असंघयणत्ताए परिणमंति । असुरकुमारारणं किंसंघयणा पन्तता । गोयमा बरहंसंघयणाणं असं
घयणी जेवठी जेवच्छिरा जेवरहाज जेपीगला इठा कंता प्यिया मणुसा मणान्निरामा तेतेसि असंघयण

अमनोरम । तेह नारकीने असंघयणपणे परिणमेछे । अस्थिसचयरहित शरीर परिणामे परिणमे । हेपूज्य असुर कुमार कोण संघयणे कहा ।
 हे गौतम हे सवयण मांहे असघयणी हाडनथी शिरानथी छोटीनयनथी बडीनयनथी असुर कुमारना जेह युद्दल पदार्थ के तेह इष्ट वल्लभ के कातकाम
 नौय प्रियमनोन्न मनीभिराम ते तेहने असघयणपणे परिणमे । एम नागकुमार थकी माडी जिहांलगे खनितकुमार दशमीनिकाय तिहांलगे असघय

ताए परिणमंति । एवं जावथणियकुमाराणं पुढवी किंसंघयणी पन्वत्ता । गोयमा ठेवठसंघयणी प० एवं
 जावसमुच्छिम पंचिदियतिरिक्कजोणियति । गप्पवक्कतिया ठिहिसंघयणी समुच्छिम मणस्साणं ठेवठ सं
 घयणी गप्पवक्कतियमणस्साणं ठिहिसंघयणे प० । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतर जौइसिय वेमाणि
 याय । कइविहेणं जंते संठाणे पन्वत्ते । गोयमा ठिहिसंघयणी प० तं० । सप्पअउरसे १ णिग्गोहे २ सा
 इए ३ खुज्जे ४ वामणे ५ ऊंठे ६ । णेरइयाणं जंते किंसठाणी प० । गोयमा ऊंठसंठाणी प० । अणसुर

णी कहिवा । हिंवे पृथिवी आत्मीपूच्छे । हेपज्य पृथिवीनी कोण सघयण हेगौतम केगुही सघयण । एस ५ थावर ३ विकलेंद्री समुच्छिम पंचद्विय ति
 र्यच योनिया जीव सर्व केगुहे सघयणे कहिवा । गर्भं व्युह्नात तिर्यचना ६ सघयण । समुच्छिम मनुष्यनी केवही सघयण । गर्भजना ऊहु सघयण जाणिवा
 जिम असुर कुमार असघयणी कल्ला तिमज वाणव्यतर ज्योतिषी वैमानिक देव जाणिवा । हिंवे सस्थान आत्मी पूच्छे । हेभदत सस्थान केतलच्छि ।
 हे गौतम सस्थान ते आकार विशेष ६ प्रकार कह्यो । तेकहेच्छे । मान उन्नाज प्रमाणपित आच्छा श्रविकानही अगोपांग जेहना तेसअचतुरस्र संस्थान १
 तथा नामि ऊपर सगला अवयव चतुरस्र हीय हीय ते व्यग्रीध परिसडल २ । तथा नाभियकीहेठे सगला अवयव चतुरस्र हीय
 नामि ऊपर मांठीहीय ते सादिसंस्थान ३ । तथा ग्रीवा हाय पाव समचतुरस्रहीय मध्यकीठी सबिय हीय नानूहीय ते कुज सस्थान ४ । तथा लच
 णोपेत कीठीहीय अने हाथ पग ग्रीवा तेछोटाहीय तेवामनसस्थान ५ । तथा हस्त पादादिअवयव अपमाणोपेत हीय तेहुडकसंस्थान ६ । नारलीनी ।

बहुप्राया प्रमाणविसम्वादिनश्च तद्गुणमिल्युच्यते कइविहेबेद्व्यादि तत्र स्त्रीवेदः पुंस्त्रामिता पुरुषवेदः स्त्रीकामिता नपुसकवेदः स्त्रीपुंस्त्रामितेति एतेच

कुमाराकिंशंठाणी प० गोयमा समचउरंसंशंठाण संशंठिया प० एवं जावथणियकुमारा । पुढवी मसूरियसं
 ठाणा प० । अण्ठियवुसंठाणा पन्वत्ता । तेउसूइकलावसंठाणा पन्वत्ता । वाळपठागसंठाणे पन्वत्ते । वण
 स्सई नाणासंठाणसंठिया पन्वत्ता । बेईदियतेइदियचउरिंदिय समुच्छिम पचेदियतिरिकाजंठसंठाणा प०
 गअवक्षतियावविहसंठाणा । समुच्छिम मणुस्सजंठसंठाणसंठिया पन्वत्ता । गअवक्षतियाणं मणुस्साणं छ
 विहासंठाणा पन्वत्ता । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतश्चोइसियवेसाणिया । कइविहेण भतेवेण प० । गो

हे पूज्य कोण सठाणकह्यो । हेगौतम हुड सस्थान कह्यो । असुर कुमार देवता समचउरंस संस्थान संस्थित कहा । जिहां लगे दशमी निकायना स्तनि
 त कुमार आवे । प्रथिवी मसूर धान्य ने सस्थाने संस्थित कह्यो । पांणीनी सस्थान पाणीनीपपीटी कह्यो । अग्निनी सस्थान सूचीकलाप सूईना समूहने
 सस्थानकह्यो । वायुनी पताका सस्थान कह्यो । वनस्यती अनेक प्रकारे संस्थितकह्यो । वेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूच्छिम पवेइती तियेचनी हुड संस्थान क
 ह्यो । गर्भज तियेच ई सस्थान संस्थित कहा । समूच्छिम मनुष्यनी हुंड सस्थान । गर्भजमनुष्य ई सस्थान संस्थित कहा । जिम असुर कुमार सस्य
 उरंस संस्थान संस्थित कहा तिमज वाण्ठ्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिक कहिवा । हे भदत वेद केतले प्रकारे कहा । गौतम ई प्रकारे कहा । ते कहेछे ।

पूर्वोदिता अर्थः समवसरणस्थितेन भगवता देशिता इति समवसरणवक्तव्यता माह । तेषामित्यादि इह एङ्गारी वाक्यालङ्कारार्थो वत स्त्रे इति प्राकृतत्वात् तस्मिन् काले सामान्ये दुःखमसुखमालक्षणे तस्मिन् समये विशिष्टे च भगवानेव विहरतिस्मिति कथञ्चन समोसरण नेयव्यति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण स

यमा तिविहेवेणु प० । इत्यीविणु पुरिसवेणु णंपुसगवेणु । नेरइयाणं ञंते किंइत्यीविया पुरिसवेया णंपुसग
वेया प० । गोयमा णोइत्यीविया णोपुरिसवेया णंपुसगवेया प० । अंसुरकुमाराणं ञंते किं इत्यीपुरिस न
पुंसगवेया । गोयमा इत्यीपुरिसवेया णो णंपुसगवेया । जावथणियकुमारा । पुढवीञ्जाजतेजवाऊवणस्स
ई बित्तिचउरिंदियसमुच्चिम पंचिंदियतिरिक्कसमुच्चिम मणुस्सा णंपुसगा । गण्णवक्कतियमणुस्सा पंचिंदिय
तिरियायतिवेया जहाअंसुरा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । तेणं कालेणं तेणं समणुणं कप्पस्ससमोसर

स्त्रीवेद १ । पुरुषवेद २ । नपुंसकवेद ३ । नारकोनो हे भदत स्यं स्त्रीवेद किंवा पुरुषवेद किंवा नपुंसकवेद । हे गौतम स्त्रीवेद नथी पुरुषवेद नथी नपुंस
कवेदहीय । असुर कुमारने हे पूज्य किस्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद हीय । गोयमा स्त्रीवेदहीय पुरुषवेदहीय नपुंसकवेद नहीय । एम जिहां लगी स्त्रि
तकुमार आवे तिहांलगी कहिबी । पृथ्व आऊ तेज वायू वनसत वेइन्द्री चीइन्द्री समूर्च्छिम पंचेदियतिर्यंच समूर्च्छिम मनुष्य एतलानो नपुंस
कवेद । गर्भजतिर्यंच गर्भज मनुष्य त्रिवेदी । जिम असुर कुमारमाहि पुरती वेवेद कक्षा तिम वाण व्यतर ज्योतिषी वैमानिक माहि कहिवा । तेणे का
ले चउथे आरि तेणे समये जेणे समये भगवंत विहार करे छे तेणे अवसरे कल्पभाष्यने अनुक्रमे अनयायी समोसरणनी वक्तव्यता कहिबी । वाचनातरे

मवसरणवक्तव्यता ध्येयासा चावश्यक्रीक्षां या नव्यतिरिच्यते बावनान्तरितु पर्युषणाकल्योक्तक्रमेणै त्यभिहितं कियदूरमित्याह जावगणित्यादि तत्र गणधरः प
 क्षमः सुधर्माख्यः सापत्यः शेषानिरपत्या अविद्यमानशियसन्ततय इत्यर्थः बोच्छिव्रत्ति सिद्धाश्चि तथार्हाह परिनिव्युयागणहरा जीवन्ते नायएनजशाओ
 इदंभूइसुहस्येय रायगिहिनिल्वएवीरिति अयश्च समवसरणनायकः कुलकराणा म्वरपुरषाणाश्च वतायतामाह जंबूद्विवित्यादि
 सुगमं नवर स्मढमेयविमलवाहण चक्लुमजसमचउलयमभिचदे तत्तोयपसेणइए मरुदेवेचैवनाभीयत्ति ॥ १ ॥ तथा चंदजसचदकन्ता सुरूवपडिख्वचक्लुंक्ताय

णं णेयह्वं । जावगणहरा । सावञ्चा निरवञ्चा वोच्छिक्सा । जंबूद्विविणंदीवे चारहेवासे तीयाएउस्सप्यिणी
 ए सत्तकुलगराहोत्या तं० । मित्तदामेसुदामेय सुपासेयसयंपन्ने विमलघोसेसुधोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥
 जंबूद्विविणदीवे चारहेवासे तीयाए उस्सप्यिणीए दसकुलगराहोत्या तंजहा । सयंजलेसयाऊय जियसेणाणंत
 सेणय कज्जसेणेभीमसेणे महासेणेयसत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे । जंबूद्विविणंदीवे चारहेवासे इमी

पर्युषणाकल्योक्तक्रमे जेकहोच्छिखविरावलीने अधिकारे तेसमं कहिवी जिहांलगे पाचमी गणधर सुधर्माखामी सतान सहित एतले शिय प्रशिया
 दिक्के युक्त शेष थाकता १० गणधर निरपत्य शियादि संपत्ति रहित हुया । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई उत्साप्यिणीये सात कुलकर हुया ।
 मित्रदाम १ । सुपार्ख २ । सुदाम ३ । स्वयप्रभ ४ । बली विमलघोस ५ । सुघोस ६ । महाघोस ७ । सातमी । १ । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई
 अवसाप्यिणीये १० । कुलकर हुया । स्वयजल १ । यतायु २ । अजितसेम ३ । अनतसेम ४ । कार्यसेन ५ । भीमसेन ६ । महाभीमसेन ७ । दढरय ८ । दशर

राहोत्या तंजहा । उसत्रञ्जियसंनव अग्निणंदणसुमइ पउमप्यन्नसुपास चंदप्यन्न सुविहिपुप्फदंतसीयल
 सिज्जसवासुपुज्ज विमलञ्चणंत धम्मसंतिकुंथु अर मल्लिसुणिसुव्वयणमिणिमि पासवहुमाणोय । एणसिंचउवी
 साणतित्यगराणं चउव्वीसं पुव्वन्नवया णामधेया होत्या तजहा । पढमेत्यवइरणान्ने विमलेतहविमलवाहणे
 चव । तत्तोयधम्मसीहे सुमित्ततहधम्ममित्तेय ॥ ११ ॥ सुंदरवाज्जतहदीह । बाज्जुगबाज्जलद्धवान्नय ।
 दिसेयइददत्ते । सुंदरमाहिदरेचव ॥ १२ ॥ सीहरहेमेहरहे । रुप्पीअसुदसणेयवोधव्वा । तत्तोयनंदणेखलु ।
 सीहगिरीचेववीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तुसंखे । सुदसणेनदणेयवोधव्वे । इमीसेउसप्पिणीए एणुतित्य

विधि वीजोनाम पुष्पदत्त ८ । शीतल १० । अयास ११ । वासुपूज्य १२ । विमल । अनंत १४ । धर्म १५ । श्रान्ति १६ । कुयु १७ । अर १८ । मल्लि १९ सुनि
 सुव्रत २० । नमि २१ । नमि २२ । पार्श्व २३ । वर्द्धमान २४ । एह २४ तीर्थकरना पूर्व भवनानामधेय एतले । जेणे भवे तीर्थकर नामकर्म उपाज्यो । तेह
 भवथी ३ भवकरे तेह पूर्व भवथयी । तेकहेछे । प्रथम आदिनाथनी जीव महाविदेह जेने ११ मेभवे बज्जनाभचक्रवर्त्तथयी तिहां २० स्थानक आराधीनि
 तीर्थ कर गीत्र उपाज्जन कियो तिहाथी सर्वाथ सिद्ध पहुता विहाथीचवी आदिनाथ यया एतले तीर्थ करना भवथी ३ भवमनुथनी तेपूर्व भवनि क्रमे २४
 कहेछे । पहिली वज्जनाभ १ । विमल २ । तथा विमलवाहन ३ । ततः धर्मसिंह ४ । सुमित्र ५ । धर्ममित्र ६ । सुंदरवाहु ७ । तथादीर्घवाहु ८ । युगवाहु ९
 लब्धवाहु १० । दिन्न ११ । इन्द्रदत्त १२ । सुंदर १३ । माहेद्र १४ । सिंहरथ १५ । मेघरथ १६ । रूपी १७ । सुदसण १८ । ततः नदन १९ । सिंहगिरी २० । ।

यथासा तिसलादेवीयज्ञिणमायति सक्वीडगसभाएखायाएति सर्वत्तुकाया सर्वेषु शरदादिषु ऋतुषु सुखदाया च्छायया प्रभया आतपाभावलक्षणया वा युक्ता इति
 कारणंतु पुष्टत्रया । एणुसिंचउष्टीसाणुतिल्यकरणं चउष्टीसंसीयाउहोत्या तंजहा । सीयायसुदंसणासुष्य त्राय
 सिध्थसुष्यसिध्थाय विजयायवेजयती जयती अुपरजियाचेव ॥ १४ ॥ अुरुणप्यत्रचंदप्यत्र । सूरप्यहअुग्गि
 सप्यत्राचेव । विमलायंपंचवक्सा । सागरदत्तायणागदत्ताय ॥ १५ ॥ अुत्रयंकरानिह्नुइकरी । मणोरमामणोह
 राचेव । देवकुरोत्तरकुरा । विसालचदप्यत्रातीय ॥ १६ ॥ एअुजसीअुज । सखेसिचेवजिणवारंदाणं । सब्
 जगवच्छलाणं । सखेउयसुखयलायाए । पुष्टिउखितामणु । स्सेहसाहठरोमकूवेह । पच्छावहंतिसीयं । अु
 अदीनयन् २१ । शंख २२ । सुदर्शन २३ । नदन २४ । एहअुनुक्रमे जाणिवा ॥ ८ ॥ एणी अुवसर्पिणीये तीर्थकरानां पूर्व भवनाम जाणिवा एह २४ तीर्थ
 करानो २४ शिविका दीक्षानो पालखीके । तेकहेके । सुदर्शना १ । सुप्रभा २ । सिद्धार्था ३ । सुप्रसिद्धा ४ । विजया ५ । वैजयती ६ । जयती ८ । अपराजिता
 ८ ॥ १४ ॥ अुरुणप्रभा ९ । चंद्रप्रभा १० । सूर्यप्रभा ११ । अग्निसप्रभा १२ । विमला १३ । पंचवर्णा १४ । सागरदत्ता १५ । नागदत्ता १६ ॥ १६ ॥ अुत्रयंकरा
 १७ । निवृत्तिकरी १८ । मनोरमा १९ । मनोहरा २० । देवकुरा २१ । उत्तरकुरा २२ । विशाला २३ । चंद्रप्रभा २४ । एह शिविकामाविसीने दीक्षा लीधी
 तेदीक्षा शिविका जाणवी । सर्व जगत त्रिभुवन वत्सल महाउपकारी असे जिनेद्रनी । शिविका केहवीके । सर्व शरदादिक ऋतु विषे सुखदायक छाया
 युक्त आतापना रंद्धिठ के । तेह शिविका पहिले र्धर्ष करी रोमकूप जिहना खुडा थया के एहवा मनुष्ये करी उपाडी पछे तेह शिविका प्रते अमरेद्र चमरा

ग्रीष्मः तथा साहसुरीमकूवेहिति साग्निविका यथां जिनोध्यारूढः हृष्टरीमकूपे सुदुषितरोमभि रिलयः तथा चलचवलकुण्डलधरति चलायते चपलकुण्डलधरायति
 वाक्य तथा स्वच्छन्देन सरथा विभ्रुवितानि यान्वाभरणानि सुकटादीनि तानि धारयति येते तथा असुरैद्रादयद्रतियोगः गरुलति गरुडब्जजाः सुपर्णकुमारा
 इत्यर्थः तथा सवेधिएगदूसेण निगयाजिणवराचउक्वीस नयणामअणालिगे नयगिहलिगेकुलिंगयति दूसेणति एकेनवरनेणैद्रसमर्पितेनोपधिभूतेन युक्तानि

सुरिदसुरिदनागिंदा ॥ १८ ॥ चलचवलकुण्डलधरा । सत्यविक्रुद्वियाज्ञरणधारी । सुरञ्चसुरवंदञ्चाणं । वहति
 सीञ्चिजिणंदाणं ॥ १९ ॥ पुरउवहतिदेवा । नाणापुणदाहिणग्निभासाम्नि । पञ्चत्यसेणञ्चसुरा । गरुलापुण
 उत्तरेपासे ॥ २० ॥ उसन्नोञ्चविणीयाए । वारवईण्चरिष्ठवरणेमी । च्चवसेसातित्ययरा । निरुक्ताजम्भञ्च
 मीसु ॥ २१ ॥ सद्येविणुगदूसे । णणिग्गयाजिणवराचउक्वीस । णयणामञ्चसुखलिणे । णयगिहलिगेकुलिंगे

दिक सुरेद्र सोधर्मादिक नागेद्र धरणेन्द्रादिक ॥ १८ ॥ एह असुरैद्र केहवा के चल हालता चपल जे कुडल तेहना धरणहार के । स्वच्छन्द आपणो रचीये
 करी विकुर्था आभरण तेहना धरणहार के । सुर देवता असुर भवनपत्यादिके करी बोव्या के । एहवा यईने जिनेद्रनौ शिविकाने उपाडे ॥ १८ ॥ आगदि
 चाले देवता नागदेवता दक्षिण पासे चाले पिक्काडौ असुरैद्र चमरादिक गरुड देवता सुपर्ण कुमार बली उत्तर पासे एतले डावे पासे ॥ २० ॥ ऋषभ आ
 दिनये विनीता नगरौये दौजा लोधी । द्वारिकाये अरिष्टनेमौये दौजा लोधी अने जाया सोरोपुरे । शेष २२ तीर्थकर जन्म भूमिये दौजा लोधी ॥ २१ ॥
 सषसाई तीर्थकर देवने इन्द्रे १ देवदुथ वल्ल दोधी तेणे सहित नीकथा अन्य लिङ्गे नही तथा गृहस्थ लिङ्गे नही केवली तीर्थकरने लिङ्गे कुलिगी शाका

ध्कान्ता इत्यर्थः नचान्यलिङ्गे स्वविरकत्विकादिलिङ्गे तीर्थकरलिङ्ग एवेत्यर्थः कुलिङ्गे शाक्यादिलिङ्गे तथा एकोभगववीरो पासोमभीयतिहितिसएहिं भय
 वपिवासुपुञ्जी छह्पुससएहिनिक्वतो ॥ १ ॥ उगान्भोगाणं राइसाणचखत्तियाणच चउहिसहस्सीहउसभो सेसाओसहस्सपरिवारा ॥ २ ॥ सुमइत्यनिच्च
 भतेण निगन्तीवासुपुञ्जजिणो चेत्येणपुणपासो मत्तीवियञ्चठमेणचिसाओ ॥ ३ ॥ क्खणति सुमति रच नित्यभक्तेनानुपोषितो निष्कान्तइत्यर्थं तथा सम्बच्छरे
 वा ॥ २२ ॥ एक्कोन्नगवंवीरो । पासोमक्षीयतिहितिसएहिं । नगवंपिवासुपुञ्जो । ठहपुससएहिन
 रकतो ॥ २३ ॥ उगान्भोगाणं । राइसाणचखत्तियाणच । चउसहस्सेहिउसओ । सेसाउसहस्सपरिवारा
 ॥ १४ ॥ सुमइत्यणिच्चत्ते । णणिग्गउवासुपुञ्जोचेत्येणं । पासोमक्षीयञ्चठ । मेणसेसाउठठेण ॥ २५ ॥
 एणसिणचउञ्चीसाए तित्यगराणंचउञ्चीस पठमन्निक्कादायारोहोत्या तजहा । सिज्जंसवन्नदत्ते सुरिंददत्तेयइं
 दिक ने लिंगे नही ॥ ५ ॥ भगवंत महावीर स्वामी एकला दीजा लोधी । पार्ष्णनाथ अने मत्तिनाथ त्रिण २ से पुरुष साथे दीजा लोधी । १२ वासुपूज्य ६
 से पुरुष साथे दीजा लोधी ॥ २३ ॥ उग्रवयना भोगवयना राजाना तथा सोटा बन्धिय एहवा ४००० पुरुष साथे आदिनाथे दीजा लोधी । शेष १६ । तीय
 कर १००० पुरुष साथे दीजा लोधी ॥ २४ ॥ सुमति नाथं नित्यभक्ते दीजा लोधी । वासुपूज्ये चउत्य भक्त १ उपवासे दीजा लोधी । पार्ष्णनाथ मत्तिनाथ त्रि
 हु उपवासे दीजा लोधी । शेष २० तीर्थकरे क्ख भक्त २ उपवासे दीजा लोधी ॥ २५ ॥ एह २४ जिनने २४ प्रथम भिजा दायक थया । ते कहे के । त्रयांश
 १ । आदिनाथने त्रयांशे पारणू करायो एम २४ जाणवा ॥ ब्रह्मदत्त २ । सुरिन्ददत्त ३ । इन्द्रदत्त ३ । पद्म ५ । सोमदेव ६ । माहेद्र ७ । सोमदत्त ८ ॥ २६

य भिक्षा लघाउसभेण लोगनाहेण सेसेहिंवीयदिवसे लघाओपठमभिक्षाओत्ति तथा उसभस्सपठमभिक्षा खीयरसीआसिलीगनाहस्स सेसाणंपरमसं अमिय

ददत्तेय । पउमेयसोमदेवे । माहिंदेसोमदत्तेय ॥ २६ ॥ पुस्सेपुण्हसूपुण । णंदसुणंदेजयेयविजयेय । तत्तो
यधम्मसीहे । सुमित्ततहवग्गसीहेअ ॥ २७ ॥ अुपरोजियविससेणे । वीसइमोहोइउसन्नसेणोय । दिखेव
रदत्तधणे । बज्जलीतहअणुपुणीए ॥ २८ ॥ एणुविसुअलेसा । जिणवरअत्तीइंपजलिउआउ । तकालंतसमय
पफिलअेईजिणवारिदे ॥ २९ ॥ संवच्छरेणअिका । लछाउसअेणलोयणाहेण । सेसेहिंवीयदिवसे । लछाउ
पठमअिकाउ ॥ ३० ॥ उसअस्सपठमअिका । खीयरसोअुआसिलीगणाहस्स । सेसाणंपरमसं । अुमियरस
रसोवमंअुआसि ॥ ३१ ॥ सअेसिपिजिणाणं । जहिंयलछाउपठमअिकाउ । वहियवसुंधराउ । सरीरमेत्ताउ

पुण्यदत्त ८ । पुनर्वसु १० । नद ११ । सुनद १२ । जय १३ । विजय १४ । तिवारपछे धर्मसिंह १५ । सुमित्र १६ । तथा वर्गसिंह १७ ॥ २७ ॥ अपराजित
१८ । विखसेन १९ । वीरमो ऋषभसेन २० । दित्र २१ । वरदत्त २२ । धन २३ । बहुल २४ ॥ एह अनुक्रमे २४ ॥ २८ ॥ एह दाताकेहवाछे भली लेखाना
धयी जिनवरनी भक्तियकरी प्रांजलि हाथजीडी आगलिरहा छे । तेणे काले तेणे समये जिनवरने आहारपाणोये प्रति लाभ देता हुया ॥ २९ ॥ ऋषभनाथ
परमेस्वरने १ वरसे भिचालीधी दीचानी पहिली पारणू थयी । शेषथाकता २३ तीर्थ करने वैजिदिन पारणूथयी । आदिनाथनी । इक्षुरसेकरी शेष २३ नेखी
रथी परमात्रथी पारणूथयी तेह परमात्र अमृतरसनी उपमानूछे ॥ ३१ ॥ सघलाईजिनने जिहां प्रथम भिक्षालीधी तिहा देवतासठे १२ कोडिसोनइयानी वृष्टि

रसरसीवमआसि ॥ १ ॥ सरीरमेत्तावति पुरुषमात्रा चेद्व्यरुक्त्विति बह्वपीठवृत्ता येषा मधः केवलान्युत्पन्नानीति वत्तीसाइ धण्यं गाहा निम्बीलगोति नि
 त्य सर्वदाऋतुरेव पृथादिकालो यस्यस निल्यर्तुकः अस्योगोति अशोकाभिधानो यः समवसरणभूमिमध्ये भवति ओच्छ्मोसालरुक्त्विति अवच्छन्नः शालहृत्वे
 वद्याउ ॥ ३२ ॥ एणसिंचउव्हीसाएतित्यगराणंचउव्हीसं चेइयरुक्काहोत्या तंजहा । णिगोहसत्तिवसेसा
 लेपियणपियंगुठत्ताए । सरिसेयणागरुक्के । मालीयपिलुंकरुक्केय ॥ ३३ ॥ तदुलपाठलजंबू । ज्यासत्येखलुत
 हेवदहिवसे । णंदीरुक्केतिलए । झुंवगरुक्केअसोगेय ॥ ३४ ॥ चंपयवउलेयतहा । वेतसिरुक्केयधायइंरुक्के
 सालेयवहुमाणे । चेइयरुक्काजिणवराणं ॥ ३५ ॥ वत्तीसाइंधणइं । चेइयरुक्कोयवहुमाणस्स । णिञ्चोअगो
 अंसोगो । उच्छ्मोसालरुक्केणं ॥ ३६ ॥ तिसेवगाउअ्याइं । चेइयरुक्कोजिणस्सउसत्तस्स । सेसाणंपुणरुक्का
 शरीरप्रमाणेउंचीकरी ॥ ३२ ॥ एह २४ जिनने २४ चैलहृत्त पूज्यवृत्त जेहेठे केवलज्ञान ऊपनी तेकहेछे । आदिनाथने न्यग्रोध १ । वडना फेडनीचेकेवलज्ञान
 उपनी एमअनुक्रमे २४ जने कहिवो । सप्तपर्यं २ । शालहृत्त ३ । प्रियालु ४ । प्रियगु ५ । छत्रहृत्त ६ । सरस ७ । नाग ८ । मालवी ९ । पीलुख १० । टीबळ
 ११ । पाडल १२ । जवू १३ । पीपल १४ । दधिपर्यं १५ । नंदीहृत्त १६ । तिलक १७ । आख्या १८ । अशोक १९ । चंपा २० । वकुल २१ । वितस २२ । धातकीआवला
 २३ । शालिहृत्त २४ । वर्द्धमानस्वामीनी चैलहृत्त २४ जिनना कथा ॥ ३५ ॥ ३२ धनुषप्रमाणे चैलहृत्त जे हेठे पृथिवीशिलापट्ट तिहांवैसी भगवतवर्द्धमानस्वामी
 व्याख्यान करे । नित्य वारेमासि फलो फूली अशोकहृत्त शालहृत्त करी व्याप्त एतले अशोकहृत्तने ऊपर शालहृत्तके । आदिनाथनी चैलहृत्त ३ कोस ऊंची एतले

महापत्नी हरिसेनोचिवरायसहस्री जयनामोयनरवई बारसमोबंभदत्तोय ॥ २ ॥ तथा पथावतीयंबो सोमोरुद्दीशिवोमहसिरीय अग्निसिहीयदसरही न

नारहेवासे इमीसेजेसप्यिणीए बारसचक्कावहिमाथरोहोत्या तंजहा । सुमंगलाजसवती अदासहेदेवी अइरा
सिरिदेवीतारा जालमिरावप्याचुल्लणीअपच्छिमा ॥ जंबूद्वीवे० । बारसचक्कावहीहोत्या तजहा । अरहे
सगरमघवं । सणकुमारोयरायसहूलो । संतीकुंथुअशरो । हवइसुन्नमोयकोरखी ॥ ४६ ॥ नवमोयमहापउ
मो । हरिसेणोचेवरायसहूलो । जयनामोयनरवई । बारसमोबंभदत्तोय ॥ ४७ ॥ एणसिवारसरहचक्कावही
णं बारसइत्थिरयणाहोत्या तजहा । पढमाहोइसुअदा । अइसुणदाजयायविजयाय । किरहसिरीसूरसिरी
पउमसिरीवसुंधरादेवी ॥ ४८ ॥ लल्लिमईकुसमई इच्छीरयणाणामाई ॥ जंबूद्वीवे० नववलदेवनववासु

जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान अयसर्पिणीये १२ चक्रवर्त्ति माताथई ते कहेछे । सुमगला १ । ययोमती २ । भद्रा ३ । सहदेवी ४ । अचिरा ५ । श्री ६
देवी ७ । तारा ८ ज्वाला ९ मेरा १० वप्रा ११ छेहली सुलणी १२ ॥ जंबूद्वीप संबंधी भरत क्षेत्रे वर्त्तमान अयसर्पिणीये १२ चक्रवर्त्त यथा ते कहे छे भरत १
सगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ राजा मांहि सिंह समान शंतिनाथ ५ । कुंयु ६ । अर ७ । सभूम ८ ॥ ४६ ॥ महापद्म । हरिसेन १० । जय ११ ब्रह्मदत्त
१२ ॥ ४७ ॥ एह १२ चक्रवर्त्तना १२ स्त्री रत्न यथा ते कहेछे सुभद्रा १ भद्रा २ सुनदा ३ जया ४ विजया ५ कृष्णश्री ६ सूर्यश्री ७ पद्मश्री ८ वसुधरा ९ देवी १०
४८ ॥ लक्ष्मीवती ११ कुरमती १२ एह स्त्री रत्नना नाम जाणिषा ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान अयसर्पिणीये ९ बलदेव ९ वासुदेवना पिता यथा

वसोभिर्णिश्रीयवसुदेवीत्ति ॥ १ ॥ जंबूद्वीवित्यादि दशाराणां वासुदेवानां मण्डलानि बलदेववासुदेवव्यहयलक्षणाः समुदाया दशारमण्डलानि अतएव दोदो
 रामकेसवत्ति वक्ष्यति दशारमण्डलाव्यतिरिक्तात्वाच्च बलदेववासुदेवानां दशारमण्डलागौति पूर्वमुद्दिश्यापि दशारमण्डलव्यक्तिभूतानां तथा विशेषणार्थस्माह दो
 यधेत्यादि तद्यथेति बलदेववासुदेवस्वरूपोपन्यासारमार्थः केचित्तु दशारमण्डलाइति तत्रदशाराणां वासुदेवकुलीनप्रजानां मंडना. श्रीभाकारिणो दशारमण्ड
 ना उत्तमपुरपाइति तोर्थकारादीनां चतुःपचाशत् उत्तमपुराणां मध्यवर्त्तित्वात् मध्यमपुराणां सौर्धकरचक्रिणां प्रतिवासुदेवानां च बलाद्यपेक्षया मध्यवर्त्तित्वात्

देवपितरोहोत्या तंजहा । पयावईयंबन्नो सोमोरुद्धोसिवोम्हसिरोय । अग्निगसिहोयदसरहो । नवमोत्रणि
 लयवसुदेवो ॥ ४९ ॥ जंबूद्वीविणं ० । णववासुदेवमायरोहोत्या तंजहा । मियावईउमाचेव पुहवीसीया
 यच्छबिया । लच्छिमईसेसमई केकईदेवईतहा ॥ ५० ॥ जंबूद्वीविणं ० । णवबलदेवमायरोहोत्या तंजहा ।
 नद्दातहसुजदाय । सुप्पन्नायसुदंसणा । विजयावेजयंतीश्च जयंतीश्चपराजिया ॥ ५१ ॥ णवमीयारोहिणीय

प्रजापति १ ब्रह्म २ सोम ३ रुद्र ४ शिव ५ महेश्वर ६ अग्निसिंह ७ दशरथ ८ नवमोवसुदेव ९ ॥ जम्बूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान काले ९ वासुदेवनी माता यई
 तेकहेच्छे मृगावती १ उमा २ पृथिवी ३ सीता ४ अम्बिका ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ केकई वीजोनाम सुमित्रा ८ देवकी ९ एह नववासुदेवनी माता यई
 देवनी माता कहेच्छे ॥ भद्रा १ सुभद्रा २ सुप्रभा ३ सुदर्शना ४ विजया ५ वैजयती ६ जयती ७ अपराजिता ८ रोहिणी ९ एह बलदेवनी माता जाणिवी ॥ २ ॥
 जंबूद्वीपना भरतने विषे एशी अवसर्पिणीये नव दशारना वासुदेवना मंडल वासुदेव बलदेव लक्षण समुदाय ते दशार मंडल थया तेकहेच्छे । उत्तम

प्रधानपुरुषास्त्राकालिक पुरुषाणां शीर्षादिभिः प्रधानत्वात् श्रीजस्विनी मानसबलीपेतत्वात् तेजस्विनी दीप्तशरीरत्वात् यर्षस्त्रिनः शरीरबलीपेतत्वात् यश
 स्त्रिनः पराक्रम प्राथमसिद्धिप्राप्तत्वात् क्षायंसिति प्राकृतत्वात् च्छायावन्तः शोभायमानशरीरा अतएवकान्ताः कान्तियोगात् सौम्या अरौद्राकारत्वात् सुभगा
 जनवत्सभत्वात् प्रियदर्शना चतुश्चरूपत्वात् सूर्पा समचतुरस्रस्थानत्वात् शुभ सुख स्वा सुखकरत्वा च्छील स्वभावो येषान्ति शुभशीलाः सुखशीला वा सुखे
 नाभिगम्यन्ते सेव्यन्ते ये शुभशीलत्वादेव ते सुखाभिगम्याः सर्वजननयनानांकान्ता अभिलाषार्थेते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः श्रीवत्सलाः प्रवाहवलाः अ
 व्यच्छिद्रवत्तलात् अतिवलाः शेषपुरुषवलानामतिक्रमात् महावलाः प्रशस्तवलाः अनिहता निरुपक्रमायुक्त्वा दुरोयुद्धिच भूध्यामपातित्वात् अपराजिता

वलदेवाणमायरो ॥ जंबूद्वीविणं० । णवदसारंज्जलाहोल्या तजहा । उत्तमपुरिसा मज्जिमपुरिसा पहाणपुरि
 सा उयसी तेयसी बच्चसी जससी ढायसी कना सोमा सुग्गा पियदंसणा सुहच्छा सुहसीला सुहान्निगम
 सब्जणयणकंता उहवला अतिवला महावला अनिहता अपराइयसत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमहणा सा

पुरुष ते मांहि वर्त्ति ते माटे बली मध्यम पुरुष तीर्थकर चक्रवर्त्त तथा प्रतिवासुदेवनी अपेक्षायि प्रधान पुरुष सौर्यशुणे करी युक्त श्रीजस्वी मनी
 बलेकरी सहित तेजस्वी दीप्ति युक्त शरीर धी वर्चस्वी शरीर सख्धी बलेकरी सहित यशस्वी जसना धणी शोभायमान शरीरोपेत कांतिवान् रुद्रा
 कार नही सहने वत्सभ देखवा योग्य समचतुरस्र संस्थानी सहने सुखकारी सुखे सेविवा योग्य सर्व लोकना नेत्रने कांत देखिवा योग्य बल जेह
 नो तूटे नही अति बलना धणी महाबली निरुपक्रम आयुना धणी वैरीये पराभव्या न जाय शत्रुनामर्दक रिपु सहस्त्रना मानने मथनहार नम

क्षीरेवयम्ना अराजितत्वात् एतदेवाह यत्रुमर्दना स्तच्छरीरतत्सत्वकदर्शनाद्रिपुसहसमानमयना स्तद्धांछितकार्यविघटनात् सागुक्रोशाः प्रणतेष्वद्रीहकत्वा
 त् अमत्सराः परगुणत्वस्यापि ग्राहकत्वात् अचपला मनोवाक्काय स्वर्यात् अवखा निष्कारणप्रवलकोपरहितत्वात् मिते परिमिते मञ्जुली कीमलप्रलापश्चा
 लापो हसितच येषान्ते अितमञ्जुलप्रलापहसिताः गम्भीरमदर्शितरोषतोषग्रीकाः द्विकार भेषनाद्व हा मधुरं अवरणसुखकर अतिपूर्णं अर्थप्रतीतिजनकं
 सत्य सवितथ स्वचन स्वाक्य येषान्ते तथा ततः पदद्वयस्यकर्मधारयः अश्रुपगतत्वला स्तत्समर्थनशीलत्वात् शरणा स्त्राणकरणेसाधुत्वात् लज्जयानि
 मानादीनि वज्रस्त्रिकचक्रादीनि वा व्यञ्जनानि तिलकसपादीनि तेषाङ्गुणा महर्द्धिग्राह्यादय स्तौ रूपेताः सङ्करादिदर्शनादुपपेता युक्ता लज्जणव्यञ्जनयुयो
 पपेता मानमुदकद्रीणपरिमाणशरीरता कथ सुदकपूर्णया द्रीणां निविष्टे पुरुषे यज्जलं ततोनिर्गच्छति तद्यद्विद्रीणप्रमाण स्या तदा स पुरुषो मानप्राप्त

**गुक्षीसा अमच्छरा अचपला अचंठा मियमंजुलपलावहसियगंभीरमधुरपठिपुससञ्चवयणा अश्रुवगय
 वच्छला सरसा । लक्ष्णवजणगुणोववेद्या माणुम्माणपमाणपठिपुससुजायसङ्गुंदरगा ससिसोमागारकं**

विषे दयावत परगुण ग्राहक मन वचन कायाये करो धैर्यवान निष्कारण कोप रहित मित ते शोडी मञ्जुल कीमल जे प्रलाप बीलवी अने हसिबी छे
 जेहनी वली गम्भीर रोष रहित मधुर सुखकारी प्रतिपूर्ण अर्थनौ प्रतीति उल्यादक सांचो विषटे नही एहवी छे वचन जेहनी तथा शरणाग
 तवत्सल शरण राखिवा समर्थ लज्जण तेखस्त्रिकादिक व्यञ्जन तेतिलक मसादिक तेहना गुण महाऋद्धि प्राप्ति लज्जण तेणे करी युक्त मान ते उदक
 द्रीण परिमाण शरीरने उच पणी उत्मान ते ऋद्धे भार परिमाणता प्रमाण ते अठीतर सी अगुलनी जज्ञ पणी तेणे मान १ उत्मान २ प्रमाणे ३

इत्यभिधीयते उभान महंभारपरिमाणा कथं तुलारोपितस्य पुरुषस्य यद्यर्धभार स्वीत्य भवति तदा सावुन्मानप्राप्त उच्यते प्रमाणमष्टोत्तरशतमङ्गुलानामु
 ष्यः सान्निमानप्रमाणैः प्रतिपूर्णमन्युनंसुजातमागर्भाधानात् पालनविधिनासर्वाङ्गसुन्दर निलिलावयवप्रधानमगशरीरं येषान्ते तथा यश्चित् सौम्याका
 रमरीद्रमवीभक्त्या कातदीप्तं प्रियंजनानां प्रमोदीत्यादकं दर्शन रूप येषान्ते तथा अमरिसणत्ति यमसृष्ट्याः प्रयोजनेष्वनलसात्रमर्षणावा अपराधिष्यपि
 कृतचमाः प्राकाण्डउल्लटोद्गणकार आम्नाविशेषी वा येषान्ते तथा अथवा प्रचण्डीदुःसाध्यसाधकत्वा इच्छप्रचारः सैव्यविवरण येषान्ते तथा गम्भीराञ्जल
 क्षमाणांतच्चित्तेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीया स्तः पदद्वयस्य कर्मधारयः प्रचण्डदृच्छप्रचारेण वा ये गम्भीरा दृश्यन्ते तथा तालीहृच्चविशेषी ध्वजा
 येषान्ते तालध्वजाः क्लदेवा उद्विष्टच्छ्रितो गरुडलक्षितः केतु ध्वजो येषान्ते उद्विष्टगरुडकेतवो वासुदेवाः तालध्वजाय उद्विष्टगरुडकेतवस्य तालध्वजोद्विष्ट
 गरुडकेतवः महाधनुर्विकर्षकाः महाप्राणत्वात् महासल्लक्षणजलस्य सागरा इव सागरा आश्रयत्वा महासलसागराः दुर्बरा रणाङ्गणे तेषां प्रहरतां केना

तपिथदंसणा अमरिसणा पयंरुदंरुप्ययारा गंभीरदरसणिजा तालच्छ्रुद्विष्टगरुलकेज महाधणुविकट्टया

करो मनिपूर्णं अत्युन । गर्भाधानशक्ती रूडोविधिये करो भलो नीपनेच्छे सर्व शरीरावयवै करी सुदर शरीर जेहनी । चद्रमानि समान सौम्य श्रुद्रुच्छे तेजा
 कार कात दीप्तिवत । प्रिय प्रेमोत्यादक दर्शनच्छे जेहनी । कार्यने विषे आलसी नही अथवा अमर्य रहित । प्रचड दुःसाध्यने साधे एहवेच्छे दडप्रचार
 सेनानी निचरवी जेहनी । गभीर कस्योनजाय दर्शन आकार चित्ताभिप्राय जेहनी । तालहृच्च ध्वजाच्छे जेहने तेतालध्वज गरुडनी रूपच्छे ध्वजाने विषे
 ध्वजा जचो करोच्छे जेणे । वलदेवने आगितालध्वज हीय वासुदेवने आगे गरुडध्वजहीय । तथासहाधनुषणा स्वाचणहार । महासल लक्षण जलना

पि धन्विना धारयितु मयकृत्वात् धर्तुर्धराः कीदृच्छप्रहरणा धीरेष्वेते पुरुषाः पुरुषकारवन्तो न कातरिविति धीरपुरुषा युद्धजनिता या कीर्तिं स्वत्प्रधा-
 नाः पुरुषा युद्धकीर्त्तिपुरुषाः विपुलकुलसमुद्भवा इति प्रतीतमहारत्न वज्रन्तस्य महाप्राणतया विघटका अद्भुष्टतर्जनीभ्या चूर्णका महारत्नविघटका वज्रहि
 अधिकरण्या धृत्वा अयोधमेना स्मोयते नच भिद्यते ताविवभिमत्तीति दुर्मदं तदिति अथवा महनीया आरचनासागरशकटव्यूहादिना प्रकारेण सिसृगाम
 यिषी सँहासैवस्य तां रणरङ्गरसिकतया महाबलतया च विघटयति वियोजयति ये ते महारचनाविघटका' पाठान्तरेण तु महारणविघटकाः अहंभरत
 स्वाभिनः सीम्या नीरुजः राजकुलवशतिलका' अजिताः अजितरथाः हलमुशलकणकपाणयः तत्र हलमुशलप्रतीति ते प्रहरणतया पाणौ हस्ते येषान्ते
 बलदेवा येषान्तु कणकावाणाः पाणौ ते शार्ङ्गधन्वानो वासुदेवाः शङ्ख पाञ्चजन्याभिधान चक्रान्तु सुदर्शननामकं गदाच कीर्त्तिदकी सत्रा लकुटविशेषः श

महासत्तसाञ्चरा दुधरा धणुधरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुद्भवा महारयणविहाङ्गा झृष्ट

समुद्र सरीखा समुद्र । रणांगणे दुर्हर कीर्त्तियी वासानजाय । धनुषनाधारणहार । धैर्ययुक्ते । युद्धे करी उपार्जी कीर्त्तिं तीरी करी प्रधान पुरुषे बडाकु
 लना उपना । महारत्न वज्रने अंगूठे करी चूर्णेन करणहार । अहं भरतना ३ खड्गना स्वाभी । सौम्य अत्यत ठंडा । राजकुलने बंधने विषे तिलकसमान
 अजितजेहथी जीय्या नथी । जेहनारयकहथी जीप्यानथी । तथा हल मुसलछे हाथने विषे ते बलदेव । अने कणककहीवाणछे हाथने विषे जेहने ते वासु
 देव । शख पाचजन्व चक्र सुदर्शन गदा कीर्त्तिदकी लकुट विशेष शक्ति त्रिशूल शक्ति नदकनासा खड्गना धरणहारछे । तथा प्रवर प्रधान उजली सु

लपोतकीशेयवाससः प्रवरदीप्ततेजसो वरप्रभावतया वरद्वीप्तितायाच नरसिंहा विक्रमयोगा न्नरपतयः तन्नायकत्वात् नरेन्द्राः परमैश्वर्ययोगात् नरवृषभा उ ॥
 त्वित्तकार्यभारनिर्वाहकत्वात् मरुद्वृषभकल्या' देवराजोपमा अथ्यधिक शेषराजेभ्यः राजतेजोलक्ष्मा दीप्यमाना' नीलकपीतकावसना इति पुनर्भणन नि
 गमनार्थं कथं तेन वेदाह दुर्वेदुर्वेद्यादि एवच नववासुदेव नववलदेवा इति त्रिविधुय यावत्पराणात् दुर्विदुय सयभपुरिसुत्तमेयुरिससीहे । तहपुरिसपुडरीये
 दत्तेनारायणेकहृत्ति ॥ १ ॥ अयलेविजयेभहे सुप्यभयसुदसणे आनद्रेणदणेपउभे रामेयावियपच्छिमेत्ति ॥ २ ॥ किन्तीपुरिसोणति कीर्त्तिप्रधानपुषाणाणामिति मह
 रायकृशनात्थू सात्रथोपोयणवरायगिह कायदोकासवो महिलपुरोहश्चिणपुरच तथा गाभिजुसगामे तहश्चिपराहश्रीरेगे भज्जाणुरागगीठी परद्वड्डीमाड
 याइयति तथा असगोवितारण मेरएमहुकेटभेनिसुभेय वलिपहिराएतह रावण्यनवसेजरासर्वेत्ति ॥ ३ ॥ एखलुपडिसत्तू किन्तीपुरिसाणवासुदेवाण सव्वेवि

रवसहा मरुवसजकण्या अङ्गहियरायतेयलच्छी पदिप्यमाणा नीलगपीयगवसणा दुर्वेदुवेरामकेसवात्राय
 रोहीत्या तजहा । त्रिविदुय जावकरहे अयलो जावराभेय अुपच्छिमे एगुसिणं णवरहं वलदेववासु

मांहि वृषभ समान के पाबी भार वाहवा समर्थपां थो । इन्द्र समान के । अथ राजा थकी अधिक राजतेज लक्ष्मीये पदीसमान के । नीला अने
 पीला के वस्त्र जेहना दी दी राम अने केशव दीनु भाद्र होय राम तेवलभद्र केशव तेवासुदेव दुमात पिताएक देगुभाई होय । एणीचीवीसीये ८ बलदेव
 ८ वासुदेव थया तेकहे के । त्रिपुठ १ । प्रथमथी यावत् शब्दे द्विपुठ २ । स्वयम्भू ३ । पुरुषोत्तम ४ । पुरुषसिंह ५ । पुरुष पुडरीक ६ । दत्त ७ । नारायण ८
 कृष्ण ९ इहालगे जाणवा ॥ अचल १ । यावत् शब्दे विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनद ६ । नद ७ । पद्म ८ । राम ९ । एहवलभद्र जाणि

देवाणं पुष्ट्रविद्या नवनामधेजाहोत्या तंजहा । विसन्नैपुष्ट्रयए धणदत्तसमुद्दत्तइसिवाले । पियमित्तललि
 यमित्ते पुणुसूगंगदत्तेय ॥ ५२ ॥ एयाइनामाइं पुष्ट्रवेअसिवासुदेवाणं । एत्तीबलदेवाणं जहक्कमंकित्तइ
 स्सामि ॥ ५३ ॥ विसनंदीयसुबंधू सागरदत्तेअसोगललिगुय वाराहधम्मसेणे अंपराइयरायललिगुय ॥ ५४ ॥
 एणसिनवरह बलदेववासुदेवाणं पुष्ट्रविद्यानवधम्माथरियाहोत्या तंजहा । संनूण्यसुन्नदे सुदसणेसियकरह
 गगदत्तेअ । सागरसमुद्दनामे दुमसेणेणवामिणुहोइ ॥ ५५ ॥ धम्माथरियाकित्ती पुरिसाणवासुदेवाणं ।
 पुष्ट्रवेएअसि जल्यनियाणाइ कासीए ॥ ५६ ॥ एणसिणंनवरहं वासुदेवाण पुष्ट्रवे नवनियाणन्नूमोउहो

वा ॥ एह बलदेव वासुदेवना पूर्व भवना ए नामधेय कहे के । विश्वसूति १ प्रव्रतक २ धनदत्त ३ समुद्रदत्त ४ ऋषिपाल ५ प्रियमित्र ६ ललितमित्र ७ पुन
 वसु ८ गगदत्त ९ । एह पूर्वभवने विषे वासुदेवना नाम थया । हिवे बलदेवना नाम कहे के । विश्वनन्दी १ । सुबधु २ । सागरदत्त ३ अशोक ४ ललित ५
 वाराह ६ धर्मसेन ७ अपराजित ८ राजललित ९ । एह ९ बलदेवना वासुदेवना पूर्व भवनेविषे धर्माचार्य हुआ ते कहे के । समत्ति १ समुद्र २ सुदर्शन ३ अया
 य ४ कृष्ण ५ गङ्गदत्त ६ सागर ७ समुद्र ८ दुमसेन ९ धर्माचार्य थया कौत्तिपुरुष ९ बलदेववासुदेवना । जिहां नियाणकौधा तेणे समये ९ पूर्वभवने विषे
 नियाणा भूमि थई ते कहे के । मथुरा १ यावत् शब्दे कनकवस्तु २ सावली ३ पीतनपुर ४ राजगृह ५ काकंदी ६ कोसंबी ७ मिथिला ८ हथणपुर ९

धकजीही सब्बेविहयारसचक्केहिति अणियाणकडारामा सब्बेवियकेसवानियाणकडा उट्टंङगामीरामा केसवसब्बेअहीगामीति आगमिस्सेगति आगमिथता कालेन आगमेस्साणंति पाठांतरे आगमिथता अविथता अन्धे सेत्स्यतीति जबूद्धीपरवते अस्या मवसर्पिण्णां चतुर्विंशति स्त्रींकरा असूवन् तांश्च सुतिघ्ता

त्या तंजहा । मज्जारजावहलियाणउरंच एतेसिणंनवरह वासुदेवाणं नवनियाणकारणाहोत्या तंजहा । गावी जुवे जाव माउअ्या । एगुसिं नवरहंवासुदेवाणं नवपरिसत्तूहोत्या तजहा । अ्यासग्गीवेजावजरासंधे । जा वसचक्कीहिं । एक्कोयसत्तमीए पंचयत्ठीए पंचमीएक्को । एक्कोयचउत्थीए करहोपुणतच्चपुढवीए ॥ ५७ ॥ अ्याणिदाणकळारामा सब्बेवियकेसवानियाणकळा । उट्टंगामीरामा केसवसब्बेअ्याहोगामी ॥ ५८ ॥ अ्याण्तकळा रामा एगोपुणवंजलोयकप्यम्मि । एक्कोरोगल्लवसही सिजिस्सइ अ्यागमिस्सेणं ॥ ५९ ॥ जंबूद्धीवे० एखए

लगे जाणथो । एह वासुदेवना ६ नियाणाना कारण थया ते कहे छे । गाइ १ यावत्थुअ्देयपुस्सम २ सयाम ३ स्त्रीपरामव ४ रंग ५ स्त्रीनोराग ६ गोष्ठी ७

परच्छु ८ मातापरामव ९ । एह वासुदेवना ६ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव थया ते कहे छे । अखग्गीव १ यावत्थुअ्देवतारक २ भेरक ३ मयुक्कैठम ४ निशुभ ५ वलि ६ प्रल्हाद ७ रावण ८ जरासंध ९ जाणवा ॥ एहप्रतिशत्रु कौर्त्तिपुरुष वासुदेवथी चक्केकरी युद्धकरे पीतानाचक्की मरे । पहिली वासुदेव सातमीये गयी पांच वासुदेव छठीये गया एक वासुदेव पांचमीये गयी १ चउथीये गयी ३ क्कण ३ जीये गयी । बलदेव नियाणा न करे सवला वासुदेव नियाणाना कारणहार केउच्च गति जाणहार राम नीचगति जाणहार वासुदेव । आठ राम बलदेव थकी माडी पहिला अतकृत थया मुक्ति गया । १ बलभद्र ३ मे ब्रह्म देवलीके गयी ।

॥
 ॥
 ॥

रेणाह तद्यथा चदराण्यंगाहा चदराण्यंसुचंदं अग्निसेणचनद्विषेणञ्च क्वचिदाकसेनीष्यय दृश्यते ऋषिदिवं व्रतधारिणञ्च वदामहे श्यामचन्द्रञ्च वंदामिगाहा
 वदेयुक्त्तिसेनं क्वचिदयं दीर्घबाहु दीर्घसेनोमीच्यते अजितसेनं क्वचिदयमतायु रच्यते तथैव शिवसेन क्वचिदयं सत्यसेनोभिधीयते सत्यक्त्तिसेति बुद्धवावागतत्वञ्च
 देवशर्माण देवसेनापरनामक सततसदावंद इति प्रकृतं निश्चितमश्वत्थं नामातरतः श्रेयांसश्च जलं गाहा असज्वल जिनवृषभं पाठांतरेण स्वयंजलं वंदे अंत
 जिन ममितज्ञानिन सर्वज्ञमित्यर्थः नामातरेणायं सिंहसेनइति उपयांतच उपशान्तसञ्च धूतरजसं वन्दे खलु गुप्तिसेनच अद्रपासंगाहा अतिपाश्वंच सुपाश्व

वासे इमीसेत्तसम्पिणीए चउष्ट्रीसंतिल्यगराहोत्या तंजहा । चंदाणणंसुचंदं अग्नीसेणचनद्विसेणच । इसिदि
 खंबयहारिं वंदामोसोमचंदंच ॥ ६० ॥ वंदामिजुत्तिसेणं अजियसेणंतहेवसिवसेणं । बुद्धचदेवसम्मसिद्धं
 निखित्तसत्थंच ॥ ६१ ॥ अस्सजलंजिणवसह वंदेयअणंतयंअमियणाणिं । उवसंतंचधुवरयं वंदेखलुगुत्तिसे

१ भव वासना अतरथी मोच जास्ये जवूहीपने विषे ऐरवते एणी अवसम्पिणीये २४ तीर्थकर इत्या ते कहे के चंद्रानन १ । सुचन्द्र २ । अग्निसेन ३ । नंदिसेन ४
 ऋषिदिव ५ । व्रतधारी ६ । एहोने वादुक्खु । सोमचद्र ७ ॥ ६० ॥ युत्तिसेन ८ । बीजी नाम दीर्घ बाहु दीर्घसेन अजितसेन २ बीजी नाम श्रतायु । शिवसेन
 १० बीजी नाम सत्यसेन । तपना जाण देवशर्म बीजी नाम देवसेन ११ । सीधाके सकलकार्यजिहना एहवी निखित्त शस्त्र बीजी नाम श्रेयांश १२ ॥ ६१ ॥
 असज्वल १२ जिन वृषभ बीजी नाम स्वयंजल १४ वांदी अनतक १४ अमित ज्ञानी नामांतरे सिंहसेन उपयात १५ । कर्मरज रहित वादी गुप्तिसेन १६ ।

देवेश्वरवदितं च मरुदेवं निर्वाणगतं च धरं धरसंज्ञं चीणदुःखश्यामकोष्ठं जियगाहा जितरागमग्निसेनं महासेनमपरनामकं वंदे चीणरजस मग्निपु
त्र च व्यवकृष्टप्रमेदेष च वारिषेणं गत सिद्धिमिति स्थानान्तरे किञ्चिदन्वया प्यानुपूर्वीनाम्ना मुपलभ्यते महापद्मादयो विजयात्मा श्रुतुर्विशतिः एवमिदं सर्वं

णच ॥ ६२ ॥ अतिपासंचसुपासं देवेश्वरवदितंचमरुदेवं । निघ्नाणगयंचधरं स्त्रीणदुहंसामकोष्ठंच ॥ ६३ ॥
जियरागमग्निसेणं वंदेस्त्रीणरयमग्निउत्तंच वोक्त्रसियपिज्जादोसं वारिसेणगयंसिष्ठं ॥ ६४ ॥ जबूहीवि०
अगमिस्साएउस्सिप्पणीए नारहेवासे सत्तकुलगरान्नाविस्सति तंजहा । मियवाहणेसुभूमेय सुप्पन्नेयसयंपप्पे
दत्तेसुज्जमेसुबंधूय अगमिस्साणहोस्सति ॥ ६५ ॥ जबूहीविणदीवे अगमिस्साए उस्सिप्पणीए एरवाए वासे
दसकुलगरान्नाविस्सति तंजहा । विमलबाहणे सीमंकरे सीमंकरे खेमंधरे खेमंधरे दसधणू दढधणू सयधणू

॥ ६२ ॥ अतिपार्श्व १७ । सुपार्श्व १८ देवेश्वरेवदित मरुदेव १९ निर्वाण प्रात एहवा धर २० । दुःखरहित एहवा श्यामकोष्ठ २१ ॥ ६३ ॥ राग द्वेष रहित ।
अग्निसेन २२ बीजो नाम महासेन जय गईच्छे पापरज जेहनी एहवी अग्निपुत्र २३ । दूर कियाच्छे राग द्वेष जेणे एहवी वारिसेण २४ ॥ ६४ ॥ जबूहीपना
भरतने विषे आगामी उत्तर्पिणीये ७ कुलकर थास्ये ते कहे छे । मितवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ सूत्र ६ । सुबंधु ७ । आवती चो
बीसीये ७ एह कुलकर थासे ॥ ६५ ॥ जबूहीपना ऐरवतने विषे आगामी काले १० कुलकर थासे ते कहे छे । विमलबाहन १ । सीमंकर २ । सीमधर ३ ।

पठिसुई सुमुइइति जंबूद्वीविणंदीवे नारहेवासे अगमिस्साए उस्साप्विणीए चउवीसं तिल्यगरान्नविस्संति
 तंजहा । महापउमेसूदेवे सुपासेयसंयपन्ने । सव्वाणुअइअरहा देवस्सुएयहोस्सइ ॥ १ ॥ उदएपेढालपुत्ते
 म्ममे । चित्तउत्तेसमाहीय अगमिस्सेणहोस्सइ ॥ २ ॥ अममेणिक्कसाएय निष्पलाएयनि
 रहा अणंतविजएइय ॥ ३ ॥ संबरेअणियहीय विवाएविमलेतहा । देवोववाएअ
 गा ॥ ४ ॥ एणुवुत्ताचउवीस नरहेवासम्मिकेवली अगमिस्सेणहोस्सइ धम्मतिल्यस्सदेस
 गा ॥ ५ ॥ एणुसिणंचउवीसाएतिल्यकरणं पुव्वन्नविथाचउवीसनामधेज्जा नविस्संति तंजहा । सेणियसुपा

चेमकर ४ । चेमधर ५ । दडधनु ६ । दशधनु ७ । अतधनु ८ । प्रतिश्रुति ९ । सुमवि १० । जंबूद्वीपना भरतनेविषे आगामिकाले २४ तीर्थकर थासे तेकहेछे । महापद्म
 १ । सूरदेव २ । सुपाखं ३ । स्वयप्रभ ४ । सर्वानुभूति ५ । देवश्रुत ६ । उदय ७ । पेढाल पुत्र ८ । पीडिल ९ । अतकीर्त्ति १० । मुनिसुव्रत ११ । सत्यभाववि
 य १२ । निष्कसाय १३ । निष्पलाक १४ । निस्संम १५ । चित्रगुप्ति १६ । समावि १७ । संवर १८ । यशोधर १९ । अनर्धिक २० । विज
 से धर्मतीर्थना प्रवर्त्तक धर्मतीर्थना उपदेशक ॥ एह २४ तीर्थकरना २४ पूर्वभवना नाम थासे तेकहेछे । अणिकाराजा १ । सुपास २ । उदय ३ । पो

नंदमिते दीहबाह्ममहाबाह् । अद्बलमहाबले बलभदेयसत्तमे ॥ १ ॥ तिविठूयदुविठूय अगमिस्सेणव
 रिहणो । जयंतोविजएन्द्रे सुप्यत्रेयसुदंसणे अणंदे नदणेपउमे संकरिसणअपच्छिमे ॥ १ ॥ एणसिणंनवरहं
 बलदेववासुदेवाणं पुव्वन्नवियाणवनामधेज्जात्रविस्सति । नवधम्मायरियात्रविस्सति । नवनियाणअमूमीउ
 नवनियाणकारणात्रविस्सति । नवपणिसत्तन्नविस्सति तजहा । तिलण्यलोहजंघे वड्ढरजघेयकेसरी पल्हा
 एअपरजिणु मीमसेणेमहात्रीमे सुग्गीवियअपच्छिमे ॥ ॥ एणखलुपणिसत्तू कितीपुरिसाणवासुदेवाणं ।
 सव्वेविचक्कजोही हम्मिहतासचक्काहिं ॥ १ ॥ जंबूद्वीविणुवगुवासे अगमिस्साण उस्साप्यणीणु चउव्वीसंति
 त्यकरात्रविस्सति तजहा । सुमगलेअसिठत्थे णिव्वाणियमहाजसे धम्मज्जणुयअरहा अगमिस्सेणहोसकई १

य १ । विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनन्द ६ । नदन ७ । पद्म ८ । सकर्षण ९ । एह ९ बलदेव ९ वासुदेवना पूर्व भवनाम होस्ये । नवध
 माचार्य धर्मगुरू थस्ये । नवनियाणा भूमिहोस्ये । नवनियाणाना कारण होस्ये । ९प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव होस्ये । तेकहंछे । तिलक १ । लोहजघ २ ।
 वज्रजघ ३ । केसरी ४ । प्रल्हाद ५ । अपराजित ६ । भीम ७ । महाभीम ८ । सुग्रीव ९ । एह प्रतिशत्रुकीर्ति पुरुष वासुदेव ना सधलाइ प्रतिवासुदेव चक्र
 करी युद्धकरे आपणा चक्यौ मरणपवि । जंबूद्वीपना ऐरवत क्षेत्रे आवती उत्तर्षिणीयै २४ तीर्थकरहोस्ये तेकहंछे । सुमगल १ । अर्थसिध २ । निर्व्याण ३

सिरिचंद्रेपुष्पकेज महाचंदेयकेवली । सुयसागरेयञ्चरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ २ ॥ सिष्ठत्येषुष्पवोसेय
 महावोसेयकेवली । सच्चसेणेयञ्चरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ ३ ॥ सूरसेणेयञ्चरहा महासेणेयकेवली । सव्वा
 णंदेयञ्चरहा देवउत्तेयहोस्कई ॥ ४ ॥ सुपासेसुव्रएञ्चरिहा च्चरहेथसुकोसले । च्चरहाञ्चणंतविजए आगमि
 स्सेणहोस्कई ॥ ५ ॥ विमलेउत्तरेञ्चरहा च्चरहायमहाबले । देवाणंदेयञ्चरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ ६ ॥
 एणुवुत्ताचउट्ठीसं एरवयस्मिकेवली । आगमिस्सेणहोस्कंति धम्मतित्यस्सदेसगा ॥ ७ ॥ वारसचक्खवाहिणी
 ञ्चविस्सति वारसचक्खवाहिपियरोञ्चविस्सति । वारसइत्थीरयणा ञ्चविस्सति नवबलेदेववासुदेवपियरोञ्चवि
 स्सति णववासुदेवमायरो णवबलेदेवमायरोञ्चविस्सति । णवदसारसंठलाञ्चविस्सति । उत्तमपुरिसा मज्जि

महायश ४ । धर्मध्वज ५ । श्रीचन्द्र ६ । पुष्यकेतु ७ । महावद्ध ८ । श्रुतसागर ९ । सिद्धार्थ १० । पूर्णवोस ११ । महाघोष १२ । सत्यसेन १३ । सूरसेन १४
 सिद्धसेन वीजोनाम । महासेन १५ । सर्वानंद १६ । सुपार्श्व १७ । सुव्रत १८ । सुकोसल १९ । अततविजय २० । विमल २१ । उत्तर २२ । महाबल २३ । देवा
 नंद २४ । होस्ये । ऐरवतत्तेने २४ तीर्थंकर धर्मना उपदेशक । १२ चक्रवर्तना पिताहोस्ये । १८ वासुदेवनी माता ९ बलदेवनीमाता होस्ये । १८ दयारमडल होस्ये

सुगमं गंधसमाप्तिं यावत् नवरं प्रायाएत्ति बलदेवदेरायातं देवलीकादे श्युतस्य मनुष्यत्वाद्ः सिद्धिं यथारामस्येति एवं दीसुविति भरतैरावतयो रागमि
 ष्यती वासुदेवाद्यो भणितव्याः इत्येव मनकधार्थानुपदर्शा धिवातगथस्य यथार्थात्त्वभिधानानि दर्शयितुमाह इत्येतदधिकृतशास्त्रमेव मनेनाभिधानप्रकारेणा
 ऽख्यायते प्रभिधीयते तद्यथा कुलकारवंशस्य तत्तवाहस्य प्रतिपादकत्वात् कुलकारवंश इति च इतिकपदर्शने च शब्दः समुच्चये एवंतिल्यगरवंसे इयत्ति यथा देसे
 न कुलकारव्यप्रतिपादकत्वात् कुलकारवंश इत्येतदाख्यायते एवं देशत स्त्रीर्थकारव्यप्रतिपादकत्वा तीर्थकारवय इति प्राख्यायते एतदिति एव चक्रवर्तिवयइति
 च दशारवंशइति च गणधरवंश इति च गणधरव्यतिरिक्ताः शेषाजिनशिश्याः च्छपय स्वहंशप्रतिपादकत्वा दृषिवशइति च तत्प्रतिपादनं चान्न पर्युषयाकल्पस्य

मपुरिसा पहाणपुरिसा जावदुवेदुवेरामकेसवा नाथरोत्राविरसति णवपक्रिसत्तूत्रविस्सति । णवपुह्वन्नवणा
 मधेज्जा णवधम्माथरिया णवणियाणन्नूमीत्ति णवणियाणकारणा अ्याएएएवए अ्यागमिस्साए अ्याणियह्वा ।
 एवंदीसुवि अ्यागमिस्साए अ्याणियह्वा इच्चेयएवमाहिज्जाति तंजहा । कुलगरवंसेइय एवातिल्यगरवसेइय ।

उत्तमपुरुष मध्यमपुरुष प्रधानपुरुष यावत् शब्दे बलदेव वासुदेव भाई होस्ये । नव प्रतिशत्रुनाम । पूर्वभवनाम । धर्माचार्य । नियाणा भूमि नियाणानी का
 रण । बलदेवराजा आगामिकाले देवलीकादिक यकी चकी जिम मनुष्यभवे उपजस्ये सितथासे ऐरवतचेत्ते तेसर्वं भणिवी । एम भरत ऐरवत चेत्ते प्रा
 गाभिकाले बलदेववासुदेव होस्ये तेसर्वं भणिवी । अनेकप्रकारे एम अंगीकृतशास्त्र एणे प्रकारे काहिये तेकाहेछे । कुलकारवय एम तीर्थकारवय चक्रवर्त्तिवंश

समस्तस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रतिक्रमेण भणितत्वा दत्तएव यतिवंशी मुनिवंश चैतदुच्यते यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात् तथा श्रुतमिति चैतदाख्यायते परोक्षतया त्रैकालिकार्थविवोधनसहत्वात् तदाश्रुतागमितिवा श्रुतस्य प्रवचनस्य पुरुषरूपस्याङ्ग मवयवइतिक्रत्वा तथा श्रुतसमासइति समस्तसूत्रार्थानां मिह सत्त्वेपिणाभिधानात् श्रुतसूत्रधत्ति वा श्रुतसमुदायरूपत्वात्स्य समाएवति समवायइति चासमस्ताना जीवादिपदार्थानां मभिधेय भगवता नेह श्रुतसूत्रत्वहयादिखण्डनेना चारादिव दङ्गतेतिभावः तथा अङ्गयणतिचि समस्त मेतदध्ययन मित्याख्यात नेहोद्देश्यकादि खण्डनास्ति श्रृंखप

चक्रवाहिवंसेइय दसारवंसेइय गणधरवंसेइय इसिवंसेइय जइवंसेइय मुणिवंसेइय सुइवा सुञ्जगेइवा

एमदशारवंश तेवासुदेव वलदेव वंश गणधरवंश एम ऋषिवंश यतिवंश मुनिवंश एह सर्वनां वंश एह समवायांगने विषे कथाछे तेमाटेएहना नामकाहि वा। यद्यपि यतिवंशमुनिवंश एह वेहुं ऋषिवाचीछे तथापि आचारे विषे यत्करे तेयतीं अर्थ जाणे तेमुनीतेहना ज्ञान एहमांकथाछे तेमाटे श्रुतकाहिये । परोक्षपणे त्रिकालनी अर्थावबोध । श्रुत पुरुष अंगनी अवयव सरीखी अवयव तेमाटेऽश्रुतांग । समस्त सूत्रमाहि संचेपे कहिवाथी श्रुत समास कहिये । श्रुतना अंगनी समुदायरूप तेमाटे श्रुतसूत्रं कहिये । समस्त जीवादि पदार्थ एह माहि अवतरा तेथी समवाय कहिये । एकादिक कोटाकोटि लेगे

रिश्नादिशिवे तिभावः इतिशब्दः समाप्तौ बेमिति किलसुधसंखामी जंबूस्वामिनंप्रत्याहसात्रवीमि प्रतिपाद्यास्यतप् श्रीमन्महावीरवर्षमानस्वामिनः समी
 पे यदवधारित मिलनेन गुरुपारम्पर्यं मर्थस्य प्रतिपादित भवति एवञ्च शिष्यस्य ग्रन्थे गौरवबुद्धि रूपजनिता भवति आत्मनश्च गुरुषु बहुमानोद्दिष्टौ त औप
 लक्ष्य परिहृतं अयमेवार्थः शिष्यस्य सम्पादितोभवति सुसूत्रणा चायं मार्गं इत्यावेदितमिति समवायाख्य चतुर्थमङ्गं स्वृत्तितः समाप्तम् ॥ ३३ ॥

सुयसमासेइवा सुयसंधेइवा समण्डवा संखेइवा ॥ सम्तमंगमस्कायंञ्ज्जयणत्तित्तिवेमि ॥ ॥

॥ इति समवायं चउत्थमंगं सम्तम् ॥

सख्या एहमा कर्ही तेषी सख्यकग्रथ काहिये । परिपूर्णं एह चौथी अंग भगवते कक्षी । एह अध्ययन समस्त कक्षी इति शब्द समाप्ति वाचक अथ
 किल सुधमास्वामी जंबूस्वामीप्रते कहिता हुआ ॥ ॥ जिम भगवान महावीर स्वामि समीपे सामख्यो तिम तुमारि आगलि कक्षी एणे करी गुरुपा
 रंपर्यपणी गुरुने बिषे बहुमानपणी देखाळी ॥ इति समवायाग सूत्रव्वाधं सपूर्णथयो ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥
 श्रीपार्श्वचंद्रसूरि संतानीयेन मुनिग्रयणस्य शिष्येण गणि मेघराजेन कृतोयं । ट्वायं श्लोक संख्या ५६५७ अस्मैव टीकां विलीक्य प्रज्ञानुसारिण लिखितोय
 यद ज्ञानभावा दशुषं लिखितं तन्मे मिथ्यादुष्कृत विप्रोधीनीय च धीधने रिति ॥ सूत्रव्वाधसंख्या ७१३५ ॥ * ॥ * ॥

श्रीकृष्णसागरपुरी ज्ञानमन्दिर
द्वारा संप्रेषित

॥ इति टीकावार्त्तिकसंबलितं श्रीसमवायाख्यं चतुर्थाङ्गं समाप्तिमगमत् ॥

श्रीयुत रायचनपतिसिंह बहादुर की तरफसे कायागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

नागकवचद्वयती

